



सच्ची राजभक्ति ।



कला ।

श्री हरिश्चन्द्र कला

अथवा

गोलोकवासी 'भारतभूषण' भारतेन्दु श्री हरिश्चन्द्र का जीवनसर्वस्व

तृतीय भाग ।

जिसमें

उक्त महामान्य सुप्रसिद्ध कवियर लिखित राजभक्ति-  
सूचक ग्रन्थों का संग्रह है ।

हिन्दी भाषा के प्रेमी तथा रसिकजनों के मनोविलास  
के लिये श्री म० कु० वा० रामदीन सिंह "सतिर्य-पत्रिका"  
सम्पादक ने संग्रह कर प्रकाशित किया ।



पटना—“खड्ग विनास” प्रेस बाकीपुर ।

साहिबप्रसाद मिह ने मुद्रित किया ।

हरिश्चन्द्र चवत् ८ ] १९४८ [ मम १९८२ इस्वी

दाम २) रुपये

डाकमहमूल ।)



# भूमिका ।



भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी के अमूल्य और अनभ्य नाटकीय तथा ऐतिहासिक रत्नों का उपहार प्रथम और द्वितीय भाग में सुजन रसिकों को समर्पित कर चुका हूँ, सम्मति इस खण्ड में उन की अपूर्व राजभक्ति का स्वरूप दर्शन कराया जाता है। ग्रन्थकार के विषय में लोगों का चाहे जो विचार हो परन्तु वास्तव में वह अन्तःकरण से भारतीय गवर्मेण्ट के परम शुभचिन्तक भक्त थे। जब २ फ़ोर्ड हर्ष वा शोक का अवसर उपस्थित हुआ, माननीय ग्रन्थकार ने यथोचित रीति पर आन्तरिक आनन्द वा खेद सूचित किया, और सब से भारी बात तो यह थी कि जो कुछ वह करते थे श्वासहित करते थे। चक्रवर्त्तिनौ महारानी भारतेश्वरी के राजकुल तथा शासन विषय में बाबू हरिश्चन्द्र जी को कितना प्युराग था वह सहजही में द्रा ग्रन्थों के पढ़ने से ज्ञात हो सकता है विशेष कहने की आवश्यकता नहीं, कहावत प्रसिद्ध है कि हाथ कगन को आरसी क्या है।

प्रकाशक,

## ग्रन्थसूची ।

- |                           |  |
|---------------------------|--|
| १—विजयिनी विजय वैजयन्ती । | ८—मनीमुकुलमाला ।                                       |
| २—भारत वीरत्व ।           | ९—मानसोपायन ।  |
| ३—भारतभिक्षा ।            | १०—सुमनोऽक्षलि ।                                       |
| ४—विजय बहरी ।             | ११—जातीय सगीत ।  |
| ५—मुह दिखावनी ।           | १२—श्रीमान् प्रिन्स आफ् वेल्थ के पीडित होने पर कविता । |
| ६—ओरिपनाटक ।              |  |
| ७—ओराजकुमार स्वागतपत्र ।  |  |





## PREFATORY NOTE.

---

A special meeting of the Benares Institute was held on the 22nd September 1882 at 6 P M in the Town Hall to express our joy at the recent success of the Indian army in Egypt. Almost all the Ruses, Civil, Revenue, and Judicial officers, Pandits Professors, Members of Municipal and District committees and Scholars were present. The Hall was full and many were obliged to hear the recital from the Veranda. The Honorable Raja Sivaprasad C S I was unanimously voted to the chair.

Babu Harischandra read an excellent poem in Hindi on the subject. The opening stanzas of the poem explain the cause of India's unusual cheerfulness. It is the signal success of the Indian army in Egypt. A vivid contrast is drawn between the past and present conditions of India and the victory of the British nation in Egypt is described.

The gentlemen present expressed their unqualified applause at the recital and the hall resounded with cheers. The Honorable Raja Sivaprasad C S I then described the importance of Egypt as a high way to India and said that the British conquest has been extremely rapid. He thanked Babu Harischandra for his excellent poem.

Mr Bullock, the Collector warmly thanked Raja Sivaprasad and Babu Harischandra for sentiments of loyalty to the British Government, expressed by the people of Benares.

H H The Maharaja of Benares was unavoidably detained at Ram Nagar on account of some religious ceremony but he has expressed his full sympathy with the object of the meeting.

---



# ॥ विजयिनी विजय वैजयन्ती ॥

कहो कहा यह सुनि पखी , जाको सबहि चछाह ।  
 हरखित आरज मात्र मे , जिय बढाइ प्रति चाह ॥ १ ॥  
 फरकि उठी मघ की भुजा , खरकि उठी तरवार ।  
 क्यौ आगुहि ऊचे भए , आर्य मोंछ के वार ॥ २ ॥  
 जे आरज गत आजु मौं , रहे नवाए माथ ।  
 तेहू सिर ऊचो किए , क्यौ दिखात एक साथ ॥ ३ ॥  
 क्यौ पताक लहरन लगी , फहरन लगे निसान ।  
 क्यौ बाजन बजिबे लगे , घहरि घहरि एक तान ॥ ४ ॥  
 क्यौ दुटुभि दकार सों , छायो पूरि अकास ।  
 क्यौ कम्पित करि पवन गति , छई नफोरी आस ॥ ५ ॥  
 वृष्टि सुग्रासित भूमि में , रन रस उमगे गात ।  
 सबै कहत जय आजु क्यौ , यह नहि जानी जात ॥ ६ ॥  
 कुटत तोप गभीर रव , वध्व नाद सम जोर ।  
 गिरि कम्पत धर धर खरे , सुनि धर धर धर सोर ॥ ७ ॥  
 विन्ध्य हिमालय नील गिरि , सिखरन चढे निसान ।  
 फहरत "रुन त्रिष्टानिया" , कहि कहि भेष समान ॥ ८ ॥  
 अटक अटक लौं आजु क्यौ , सगरो आरज देस ।  
 अति अनन्द मै भरि रह्यौ , मनु दुख को नहिं लेस ॥ ९ ॥  
 क्यौ अजीव भारत भयो , आजु सजीव लखात ।  
 क्यौ मसान भुव आजु बनि , रग भूमि सरसात ॥ १० ॥  
 महमन बरसन सों सुन्यौ , जो सपनहु नहि कान ।  
 सो जय भारत शब्द क्यौ , पूख्यौ आजु जहान ॥ ११ ॥

शाखा ।

कहा तुम्हें नहि खबर खबर जय की इत आई ।  
 क्षीति मिसर में शत्रु सैन सब दर्द्र भगाई ॥ १ ॥  
 तडित तार के द्वार मिल्यो सुभ समाचार यह ।  
 भारत सैना कियो घोर सग्राम मित्र मह ॥ २ ॥



जूनरल मकरसैन आदिक जी सैनापति गन ।  
 तिन लै भारत सैन कियो भारी अति ही रन ॥ ३ ॥  
 बोधि भारती सैन दयो आयसु उठि धाथी ।  
 अभिमानी अरवी वेगहि वेगहि गहि लाथी ॥ ४ ॥  
 सुनि कौ सब ही परम बीरता आजु दिखाई ।  
 शत्रु गनन सी सनमुख भारी करी लराई ॥ ५ ॥  
 किन में शत्रु भगाइ गछौ अरवी पास कइ ।  
 तीन सहस रन बीर करे बहुआ सगर मइ ॥ ६ ॥  
 आरज गन को नाम आजु सब ही रखि लीनो ।  
 पुनि भारत को सोस जगत मइ उन्नत कीनो ॥ ७ ॥

### आरम्भ ।

कित अरजुन कित भीम कित , करन नकुल सहदेव ।  
 कित विराट अभिमन्यु कित , द्रुपद सन्ध नरदेव ॥  
 कित पुरु रघु अज यदु कितै , परशुराम अभिगाम ।  
 कित रावन सुग्रीव कित , हनुमान गुनधाम ॥  
 कित भीष्म कित द्रोन कित , सात्यकि अति रनधीर ।  
 कित पौलस कित चन्द्र कित , पृथीराज हम्पीर ॥  
 कित सकारि विक्रम कितै , ममर सिंह नरपाल ।  
 कित अन्तिम नर बीर , रन जीत सिंह भूपाल ॥  
 कहहु लखहि सब आइ निज , सन्तति को उत्साह ।  
 सजे साज रन को खरे , मरन हेत करि चाह ॥  
 स्वामि भक्ति किरतज्ञता , दरसावन हित आज ।  
 छाडि मान देखहि खरो , आरज बस समाज ॥  
 तुमरी कीरति कुल कथा , साची करवे हेतु ।  
 लखहु लखहु नृप गन सबै , फहरावत जय केतु ॥  
 भेटहु जिय के सत्य सब , सफल मरहु निज नैन ।  
 लखहु न अरवी सो खरन , ठाढी आरज सैन ॥

### शाखा ।

सुनत बीर इक लख गन की सगुण्य पायो ।

प्रेत सिंह जिमि गुहा छाडि बाहर दरसायो ॥  
 सुभ्र मोह फहरात सुजस की मनहु पताका ।  
 सेत केश मिः लसत मनहु धिर भई बसाका ॥  
 भरुन वदन टिंग सेत केश सुन्दर दरसायो ।  
 धीर रसहि भनु घेरि रछी रस सान्त सुहायो ॥  
 रवि ससिमिन्न एक ठौर उदित सी कान्ति पसारे ।  
 पीन हृदय भाजानु पाहु स्विताम्बर धारे ॥  
 कटि पै भाया कन्य धनुष फर में करवाला ।  
 परी पीट पै डाल गुलाबी नैः विशाला ॥  
 सिंह ठवनि निरभय चितवनि चितवत समुहाई ।  
 सन दुति फेन्ही कूटत परत धरनी पर भाई ॥  
 नभ मधि ठाढ़े होइ कही यह घन सम बानी ।  
 प्रति गभीर कछु करुना कछुक धीर रस सानी ॥

### कीरस ।

क्यौ बहरानत भूठ मोहि , धीर, बटावत सीग ।  
 सब भारत में नाहि वे , रहे धीर जे लोग ॥  
 जो भारत जग में रछी , सब सों उत्तम देस ।  
 ताही भारत में रछी , भवनहि सुखकी लेस ॥  
 याही भुव में होत है , हीरक आम कपास ।  
 इतही हिमगिरि गङ्गजन , काव्य गीत परकास ॥  
 याही भारत देस में , रहे कृष्ण मुनि व्यास ।  
 जिन के भारत गान सों , भारत बदन प्रकास ॥  
 जासु काव्य सों जगत मधि , ऊर्ध्व भारत सीस ।  
 जासु राज बल धम्मा की , तृपा करहि अथनीस ॥  
 सीई व्यास अथ राम के , धर्म सबै सन्तान ।  
 अब ली ये भारत भरे , नहि गुन रूप समान ॥  
 कोटिकोटि ऋषि पुन्यतन , कोटि कोटि ऋष सूर ।  
 कोटिकोटि बुध मधुर कवि , मिले यहा की धर ॥

## आरम्भ ।

हाय वही भारत भुव भारी । सब ही विधि ते भई दुखारी ॥  
 रोम ग्रीस पुनि निज बल पायी । सब विधि भारत दुखित बनायी ॥  
 अति निरबली स्वाम जापाना । हाय न भारत तिनहु समाना ॥  
 हाय रोम तू अति बड भागी । बरबर तोहि नाख्यो जय लागी ॥  
 तोडे कीरति खम्भ अनेकन । टाहै गढ बहु करि जय टेकन ॥  
 सबै चिन्ह तुव धूर मिलाए । मन्दिर महलनि तोरि गिराए ॥  
 कहु न बची तुव भूमि निसानी । सो बरु मेरे मन अति मानी ॥  
 पै भारत भुव जीतन हारे । थाप्यो पद या सीस उघारे ॥  
 तोखो दुर्गन महल ढहायो । तिनही मैं निज गेह बनायो ॥  
 ते कलङ्क सब भारत केरे । ठाटे अजहू लखी घनेरे ॥  
 हाय पञ्चनन्द हा पानीपत । अजहु रडे तुम धरनि बिराजत ॥  
 हाय चितोर निजज तू भारी । अजहु खरो भारतहि मभारी ॥  
 जा दिन तुव अधिकार नसायो । ताही दिन किन धरनि समायो ॥  
 रघ्यो कलक न भारत नामा । क्यों रे तू बाराणसि धामा ॥  
 इन के भय कम्पत ससारा । सब जग इन की तेज पसारा ॥  
 इन के तनिकहि भौंह हिलाए । थर थर कम्पत नृप भय पाए ॥  
 इन के जय की उल्लल गाथा । गावत सब जग के रुचि साथी ॥  
 भारत किरिन जगत उजियारा । भारत जीव जियत ससारा ॥  
 भारत भुजबल लहि जग रच्छित । भारत विद्या सौं जग सिच्छित ॥  
 रहे जबै मनि क्रीट सुकडल । रघ्यी दड जब प्रबल अखण्डल ॥  
 रघ्यी रुधिर जब आरज सीसा । ज्वलित अनल समान अवनीसा ॥  
 साइस बल इन सम कोउ नाहीं । जबै रघ्यी महि मण्डल माहो ॥  
 तब इनहीं की जगत बडाई । रही सबै जग कीरति छाई ॥  
 तितहो अब ऐसी कोउ नाहीं । सरै किमहु जो सगर माहीं ॥  
 प्रगट बीरता देइ दिवाई । छन मह मिसरहि लेइ कुडाई ॥  
 निज भुज बल बिक्रम जग माडै । भारत जस धुन अविचल गाडै ॥  
 यवन हृदय पची पर बरवस । निखै लीह लेखनि भारत जस ॥  
 पुनि भारत जस करि विस्तारा । मम सुख फेर करै उजियारा ॥

## शाखा ।

ज्ञाय ॥ सोई भारत भूमि भई सब भाति दुखारी ।  
 रघ्नी न एकहु वीर सहसन कोस मंभारी ॥  
 होत सिद्ध की नाद जौन भारत बन माही ।  
 तह अब ससक सियार खान खर आदि लखाही ॥  
 जह भूमी उज्जैन अवध कन्नौज रहे घर ।  
 तह अब रोषत सिवा चहू दिशि लखियत खडहर ॥  
 धन विद्या बल मान वीरता कीरति छाई ।  
 रहो जहा तित केवल अब दीनता लखाई ॥

## कीरस ।

अरे वीर एक बेर उठहु सब फिर कित सोए ।  
 लेहु करन करवान काटि रन रङ्ग समोए ॥  
 चलहु वीर उठि तुरत सबै जय ध्वजहि उडाओ ।  
 लेहु म्यान सो खड्ग खीचि रन रग जमाओ ॥  
 परिकर कटि कसि उठौ बटुकन भरि भरि साधौ ।  
 सजौ जुह वानो सब ही रन ककन बाधौ ॥  
 का अरवी की वेग कडा वाको बल भारी ।  
 सिद्ध जगे कहु खान ठहरिहै समर मभारी ॥  
 घट तन इन कह दलहु कीट लन सरिस नीच चय ।  
 तनिकहु सक न करहु धर्म जित जय तित निचय ॥  
 जिन बिनही अपराध अनेकन कुल सहारे ।  
 दूत पादरो बनिक आदि बिन दोसहि मारे ॥  
 प्रथम जुह परिहार कियो विश्वास दिवाई ।  
 पुनि धोखा दै एका एकी करी सराई ॥  
 इन को तुरतहि हतौ मिलै रन कै घर मांही ।  
 इन छनियन सो पाप किये हू पुन्य सदाही ॥  
 उठहु वीर तरवार खीचि माडहु घन मगर ।  
 लोह लेखी सिखहु आर्य वक्त लवन हृदय पर ॥  
 मारु बाजे बजे कही धीसा घहराही ।

उडहि पताका सलु हृदय लखि लखि धहराही ॥  
 चारन, बीलहि, विक्रय सुजस बन्दो गुन गावै ।  
 कूटहि, तोप घन घोर सबै, बन्दूक, चलावै, ॥  
 श्वमकहि असि भासै दमकहि ठनकहि तन बखतर ।  
 ह्रीमहि, हय भूमकहि रथ गज चिह्नरहि समर धर ॥  
 नासहु अरबी शत्रु गनन कह करि छन मूढ छय ।  
 कहहु सबहि विजयिनी राज मह भारत की जय ॥

आरम्भ ।

सुनत उठे सबे' बीर बर कर मह धारि छपान ।  
 कियो सबन मिलि जुझ हित धारि उमग पयान ॥  
 पहिनि निरह कटि कसि सबै तौलत चले छपान ।  
 'लै' बंदूक साधत चले खच्छ बीर बलधाने ॥  
 निरभय पग आगहि परत मुखे ते भोखत मार ।  
 चले बीर सब नरत हित मिसरिन सों इक बार ॥  
 'चन्द्र मूर्थि बमी' जिते प्रमर अनज चौहान ।  
 घोडन चढि आए सबै छत्री बीर सुजान ॥  
 सुमिरि सुमिरि छत्री सबै निज पुरुषन की बात ।  
 धाए ऐठत भोछ निज उमगि बीर रस गात ॥  
 उमगि भारत सैन जब समुद सरिस घनघोर ।  
 तब मिसरी चीनी कहा का सैधव की जोर ॥  
 बली हटिग रन दुदुभो गरजे गहकि निसान ।  
 कपे थर थर भूमि गिरि नदी गगर असमा ॥

शाखा ।

उगागा सगाई बजाओ बजाओ । अरे राग गारु सुनाओ सुनाओ ॥  
 सबै फौज आगे बढ़ाओ बढ़ाओ । अरे जै पताका उडाओ उडाओ ॥  
 कहा बीर हौ बेग धाओ सुधाओ । अरे बीरता को दिखाओ दिखाओ ॥  
 अरे न्यागों शम्भ खीलो सु खीलो । अरे मार मारी धरी मार मोली ॥  
 अरे मसुकी मोस काटो सु काटो । अरे कापरे दीरि डाटो सु डाटो ॥

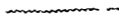
निसाना सबै नै लगाओ लगाओ । अरे लै, बटूकै चलाओ चलाओ ॥  
सबै जुद भारी मचाओ मचाओ । अरे शत्रु, सैनै, भगाओ भगाओ ॥

### कोरस ।

भगी शत्रु की सैनै रह्यो कह्यु नाहि ठिकाना ।  
को जम पुर को गिरि वन कंदुरन कियो पर्योना ॥  
सुख सौं बस्यो खदेव प्रजा गन प्रति सुख पायो ।  
द्विटिश क्रोध को फल सब कह परतच्छ लखायो ॥  
मथ्यो समुद्रहि जिन द्विटानिया निज कटाक्षबल ।  
जग सह जिनको निरभय विरचत कठिन प्रबलदत्त ॥  
जिन भारत सह चाइ तोप बल दछ्यो बज्र कह ।  
अग्नि बाण जय पत्र लिख्यो जिन भारत जग सह ॥  
कठिन छत्रियन जोति गए जिन बहु गठ सहजहि ।  
सिखन टोनी द्वार कियो सुलतान तनिक चहि ॥  
तर्जनि अग्र हिलाइ लखनऊ किन सह कीनी ।  
तनिक दृष्टि को कोर सकल राजन बस कीनी ॥  
कठिन सिपाही डोह अनल जा जल धननासी ।  
जिन भय सिर न हिलाइ सकत कह्यु भारत बासी ॥  
घासु सैन बल देखि रुम सहजहि जिय हास्यो ।  
बरलिन सधिहि मागिकोऊ विधि समयहि टाय्यो ॥  
सहजहि निज बस कीनी जिन सिप्रस को टाप ।  
छाइ दियो सब नृप गन पै निज प्रबल प्रताप ॥  
काबुल अरु कन्धार कठिन सह हलघल पाय्यो ।  
शेर अली याकूब अयूबहि सहज उखास्यो ॥  
खैबर दर अरगना कठिन गिरि सरित करारे ।  
सत्रु हृदय सह तोड़ि तोड़ि रिजु कीन्है सारे ॥  
रूम रुस उर सुल दियो ईरान दबायो ।  
द्विटिश सिह को अटल तेज करि प्रगट दिखायो ॥  
सिह चिन्ह को धुजा चढी बाला हिसार पर ।  
जय देवी विजयिनी सोर भी काबुल घर घर ॥

ताके आगे कहा मिनिर का परयो की वन ।  
 इन सी मपगहु वैर किए पावे परतछ फल ॥  
 वज्यो हटिग डका गहकि धुगि छारै चहु पीर ।  
 लयति राज राजेग्वरी कियो सबनि मिति सोर ॥

इति



## ॥ भारतवीरत्व ॥

“कहो आज का सुनि परत भारत भूमि मभार ।  
चहूँ भीर तेँ घोर धुनि कहा हीत बहुवार ॥  
वृष्टिग सुशासित भूमि में रन रस समगै गात ।  
सबै कहत लय आज कबी यह नहि जान्यो जात ॥

शाखा ।

जितन हेतु अफगान चढत भारत महरानी ।  
सुनहु न गगनहि मेदि हीत जैजै धुनि वानी ॥  
जै जै जै बिजयिनी जयति भारत सुख दानी ।  
जै राजा गन सुकुटमनी धन बल गुन खानी ॥  
सोई वृष्टिग अधीश चढत अफगाण जुह दित ।  
देखहु उमद्यो सैन असुद उमद्यो सब जित तित ॥

पूरनकोस ।

अरे ताल दे लै बटाओ बटाओ । सबै धाइ कै राग मारू सुगाओ ॥

आरम्भ ।

“कहा सबै राजा कुशर और अमीर नवाब ।  
कहौ आज मिलि सैन में हाजिर होहु सिताब ॥-  
धाओ धाओ वेग सब” पकरि पकरि तरवार ।  
लरन हेतु निज सलु सौं चलहु मिन्धु के पार ॥  
चटि तुरङ्ग नव चलहु सब निज पति पाछे लागि ॥-  
“उडुपति सग उडगन सरिस नृप सुख सोभा पागि” ॥३॥  
याद करहु निज वीरता सुमिरहु कुल मरजाद ॥-  
रन कहन कर बाधि के लरहु सुभट रन खाट ॥  
यक्यो वृष्टिग उह्ला अबै गह गह गरजि-निमान ।  
कपे घर घर भूमि गिरि नदी नगर असमान ॥

शाखा ।

“राज सिह छूटे सबै करि निज देश उजार ।  
लरन हेतु अफगान सौं धाए बाधि कतार ॥



## पूर्णकीरस ।

सुन्दर सैना सिधिर सजायो । मनहु वीर रस सदन सुहायो ॥  
 छुटत तोप चहु दिसि अति जङ्गो । रूप धरे मनु अनल फिरङ्गी ॥

ह हा कोई ऐसी इतैना दिखावै । अबै भूमि के जो कलकै मिटावै ॥  
 चलै सग मै जुड को स्वाद चाखै । अबौ देस की लाज को जाइ राखै ॥  
 कहा हाय ते वीर भारी नसाए । कितै दर्प ते हाय मेरे बिलाए ।  
 रहे वीर जे मूरता पूर भारे । भए हाय तेइ अबै कूर कारे ॥

तब इन हो की जगत बडाई । रही सबै जग कीरति छाड ॥  
 तित हो अब ऐसी कोउ नाही । लरै छिनहु जो सगर माही ॥  
 प्रगट वीरता देहि दिखाइ । छन मह काबुल लीड छुडाई ॥  
 रूस हृदय पची पर बरबस । लिखै लोह लेखनि भारत जस ॥

## धारम्भ ।

परिकर कटि कसि उठी धनुर्ष पै धरि सर साधी ।  
 केसरिया बानी सजि कर रम ककन बांधी ॥  
 जासु राज सुख बस्थी सदा भारत भय त्यागी ।  
 जासु बुधि मित प्रजा पुज रजन मह पागी ॥  
 जो न प्रजा तिय दिखि सपनहु चित्त चलावै ।  
 जोन प्रजा के धर्महि हठ करि कबहु नसावै ॥  
 बांधि सेतु जिन सुरत किए दुस्तर नद नारे ।  
 रचा सडक वेधडक पथिक हित सुख विस्तारे ॥  
 ग्राम ग्राम प्रति प्रबन्त पाइरु दिए बिठाई ।  
 जिन के भय सों चोर वृन्द सब रहे दुराई ॥  
 नृप कुल दत्तक प्रथा लुपा करि निज थिर राखी ।  
 भूमि कोप को 'सोभ तज्यो' जिन जग करि साखी ॥  
 करि बारह कानून अनेकन कुलहि सचायो ।  
 विद्या दान महान नगर प्रति नगर चलायो ॥  
 सप हो विधि हित कियो विविधि विधि नीति सिपाई ।  
 समय बाइ की छाड सबदि सुख दियो सीपाई ॥

जिन के राज अनेक भाति सुख किए सदाहीं ।  
 समर भूमि तिनहीं छिपनी कहु, उत्तम नाहीं ॥  
 जिन जषनन, तुम, धरम नारि धन तीनुहु सीनो, ।  
 तीनुहु के हित आरज गन गिज असु तजि दीनो ॥  
 मान सिद्ध बङ्गाल क्षरे परताप सिद्ध संग ।  
 राम सिद्ध आसाम बिजय किय जिय उछाहरग ॥  
 छत्रसाल छाडा जूझ्यो दारा हित कारी ।  
 नृप भगवान सुदास करी सेना रखवारी ॥  
 तौ एत के हित क्यौ न उठहि सब बीर बहादुर ।  
 पकरि पकरि तरवार लरहि बनि युद्ध चक्रधुर ॥

शाखा ।

सुनत उठे सब बीर वर कर मह धारि कृपान ।  
 सजि सजिसहित उमङ्ग किय पेशावरहि पयान ॥  
 चली सैन भूपाल की वेगम प्रेषित धाइ ।  
 अन्तवर भों बहु ऊट चटि चली वीर चित चाइ ॥  
 सैन सख धन कोष सब अर्पन कियो निजाम ।  
 दियो बहावलपूर पति सैन सहित निज धाम ॥  
 बीस सहस्र सिपाइ दिय जम्बू पति सह चाइ ।  
 सैन सहित रनहित चञ्ची आपुहि नाभा नाइ ॥  
 मण्डी जौद सुकेत पटिभाला चम्पाधीस ।  
 टीक सेन्धिया बहुरि करपूरधला भवनीस ॥  
 जोधपुराधिप अनुज पुनि टीक चचा सह साज ।  
 नाहन मानारकोटना फरिद कोट के राज ॥  
 साजि साजि निज सैन सब जिय मैं भरे उछाइ ।  
 उठि कै रनहित चन्तत भे भारत के नरनाइ ॥  
 'दिसबायाल' हिदुन कहत कहा मूठ ते लोग ।  
 दृग भर निरखहि आज ते राजभक्ति सजीग ॥  
 निरभय पग आनीहि परत सुख ते भाखत मार ।  
 चली वीर सब नरन हित पच्छिम दिसि इकवार ॥

पूर्ण कीरस ।

दोहा—इटी तोप फदरो धुगा , गरजे गदकि निमाग ।  
 भुवमण्डल खनमास भयो , भारत सेग पयाग ।  
 इति । -

---

# भारतभिक्ता ।

अहो आज का सुनि परत भारत भूमि मभार ।  
 अहूँ और आनन्द धुनि कहा हीत बहुवार ॥  
 वृटिन सुशासित भूमि में आनन्द उमगे गात ।  
 सबै कहत जय आज कहीं यह नहि जान्यो जात ॥  
 वृटिन राज चिन्हन सजी नगरा अटा अटारि ।  
 धुजा पताका फरहरहि सदसन आज सवारि ॥  
 गङ्ग जमुन गोदावरी पथ छै छै बहु जान ।  
 कहीं सब भावत है सजे देव बिमान समान ।  
 घर बाहर इत उत सबै सजे बसन मनि साज ।  
 चातिक और चकोर-से खरे अरे कौ आज ॥

श्राव्हा ।

गावत भारत आज कुनर वृटिनहि सुखदायी ।  
 सुनहु न गगनहि भेटि हीत जैजे धुनि बानी ॥  
 जै जै जै विजयिनी जयति भारत महरानी ।  
 जै राजा गन सुकुटमयी धन बल गुन खानि ॥  
 जाकी कृपा कटाघ चहत सिगरे राजा गन ।  
 जा पट भारत भुवन लुठत बस छे कपत मन ॥  
 आपत सोई वृटिन कअर जल पथ सुनि एहि छन ।  
 ठाढो भारत मग में निरखन मिस पुलक तन ॥

पून कोरस ।

मृदङ्गादि बाजे बजाओ बजाओ । सिताराटियन्वै सुनाओ सुगाओ ॥  
 अरे तानदै लै बढाओ बढाओ । बधाइ सबै धाइ अओ सुगाओ ॥  
 कहा है रवावी मृदङ्गी सितारी । कहा है गवैवे बडा नृत्तकारी ॥  
 कहा आज मौलाबकस बाजपेई । कहा बाट है उत्रमोदन गुमाइ ॥  
 कहा भाट गोटकपतो स्वागधारी । कहा नृत्तुनी चट करै मदतयारी ॥  
 कहा रागिनी आज भारी जमावै । मिट्टे चक्रे में नु गावे बजावै ॥

कहा भाड कल्यक छिपे हे बुलाओ । सुवारक कहाओ बवाई गवाओ  
 कहा हैं सवै सुदरो वार नारी । कहौ पेमवाजै सजै आज भारी  
 लगे दून में आज अवाज प्यारी । सरझी बजै राग रझी सवारी  
 छिडै भैरवी सारगी सिन्ध काफ़ी । जमै जोगिया पुरीया औ धनाओ  
 रहै कान्हरा देश सोरठ बिहागा । कलिगा किदारा परज आदि रागा  
 भिले तान लै राग रगै जमाओ । मिले मान समीत भावै दिखाओ  
 रहै लाग डाटौ डरप तिर्प सगा । रहै तत्यई तत्यई नृत्य रगा  
 दिखाओ कुमारै कला आज धाए । बडे भाग सौ पाहुन गेह आए

### आरम्भ ।

कहा सबै राना कुवर और अमीर नवाब ।  
 गजराज दरबार में हाजिर होहु सिताब ॥  
 सिरन भुकाइ सलाम करि सुनरा करहु जुहारि ।  
 जटितहु जूतन त्यागि कै स्वच्छ बूट पगधारि ॥  
 जानु सुपानि नवाइ कै पद पै धरि उसनीम ।  
 चूमि चूमि वर अभय प्रद कर जुग नावहु सीस ॥  
 परम मोक्ष फल राज पद परसन जीवन भाहि ।  
 बृटन देवता राजसुत पद परसहु चित चाहि ॥  
 कित हुनकर कित सेन्धिया कित वेगम भूपाल ।  
 कित काशीपति कित रहै मिक्तराज पटियान ।  
 कित नायन ईजानगर मानी नृप मेवार ॥  
 कितै जोधपुर जैपुरी तायकोर ककार ।  
 जाट भरतपुर धोजपुर राना कित तुम जाम ॥  
 कित सुहम्दिग के पती दक्षिण राज निजाम ।  
 धाओ धाओ वेग मव पहिरि पहिरि पौसाक ॥  
 पगरी मोतोमाल गन्व माजि साजि इक ताक ।  
 गने बाधि इष्टार सब जटित हीर मनि कोर ।  
 धावहु धावहु दोरि कै कलकत्ता फी चोर ॥  
 चडि तुरग बगीन पर धावहु पाछे नागि ।  
 उडुपति मग उडग मरिच नृप सुप्र सोभा पागि ॥  
 राण भेंट समझी जागे अही अमीर नवाब ।

शात्रिण छे भुकि भुकि करी सबै सलाम भदाव ॥

शाखा ।

राज सिंह छुटे सबै करि निज देश उजार ।

मेवग हित नृप घर कुपर धाये बाधि कतार ॥

तनि अफगाणिस्तान को धाये पुष्ट पठान ।

हिमगिरि को छै पीठ किय कश्मीरेम पयाग ॥

नाभा पटियान्ता अमृत-सर जग्गु अस्थान ।

कच्छ सिधु गुजरात मेवाडरु राजपुताग ॥

कोलापुर ईलागर काशी अरु इन्दौर ।

धाण नृप एक साथ सब करि सुनो निज ठौर ॥

लखि कुन दीपक राज सुत धाये भूप पतङ्ग ।

रुके गिरिवर नगर नद समुद जसुा जल गङ्ग ॥

कहा पण्डु जिा हस्तिनापुर मधि कीर्ती जाग ।

राजसूय साचो लखै हटिन रचित बल भाग ॥

पूनुं शीरस ।

अति सुन्दर सोझी सजायो । आज कलकत्ता जगत सुहायो ॥

हार हार पर मन्दन मान्ता । रग रग बसन फुल दल जान्ता ॥

कल्लो खम्भ पात घरहरही । पद भय हिलि ३ मनु मगहरही ॥

फर फर फहरत धुजा पताका । चम चम चमकत कलस बनाका ॥

अटा अटारी बाहर भोखन । छल्लै छातन गोख भरोखन ॥

दीपङ्गि दीपक परत लखाई । मनु नभते तारावलि आई ॥

टिगकोरविआकाशलखिलजित । मनहु हीर गिरि खण्डन मज्जित ॥

कुटत अतमबाजी रग रगी । गगन प्रकट मनु अनन्त फिरगी ॥

नय तारे प्रगटहि नसि जाही । उडत बान इभि गगन नखाही ॥

गजसितारनि की छवि भारी । तम मनु तीजोमय फुलवारी ॥

धन कलकत्ता कलि रजधानी । जेहि लखिकै सुरपुरी नजानी ॥

चलत कुपर चट्टि चपल तुरगनि । सग सोभित दल बल चतुरगनि ॥

नृप मन धावत पाछे पाछे । अथ चटे मनि काछे आछे ॥

ताजन पर कलगी घर हरइ । नृपगत दल दल सोभा करई ॥

घलछि गगर दरघा दित धारै । भूमक भूमक बाजनी बजाइ ॥  
 बगत वृटिस भैरो घहराई । काटर सग सुनि सुनि घहराई ॥  
 रून वृटानिय रूल दि वेवस । तात तरङ्ग बगत अति रा रम ॥

### आरम्भ ।

उठहु उठहु भारत जानि नैह कुअर भरि गोद ।  
 आज जगि तुव भाग फिर गागु सग अति मोद ॥  
 करि आटर मृदु वेन कहि बहु विधि देहु अमीस ।  
 चिरदिननौ मिसुमुखनय्यो नहि तुम मोद अमीस ॥  
 सेज छाडि माता उठहु उदित अरुन तुव देम ।  
 मिटे अमङ्गल तिमिरि सग राजकुमार प्रेस ॥  
 मति रीओ रीओ ग तुम जानी व्याकुल होय ।  
 उठहु उठहु धीरज धरहु लैहु कुअर सुख ज्ञोय ॥  
 तुम दुखिया बहु दिग की मटा अच आधीन ।  
 मदा ओर के आसरे रहो दीन मन खीन ॥  
 तुम अचना हत भागिनी सदा अनाथ दयाल ।  
 जोग भजन भूलो रहत मधे जिय की बाल ॥  
 सो दुख तुमरी देखि मङ्ग रानी कारुण धारि ।  
 गिज प्राणोपम पुन तुव ढिग पठयो मनुहारि ॥  
 रिपु पद के बहु चिन्ह सब कुअरहि देहु गिनाय ।  
 काढ करिओ आपनो देहु न सुतहि दिखाय ॥  
 सदा आदर जो सहाँ मही कठिन रिपु जात ।  
 सो छत देहु दिखाय अब करहु कुअर मी बात ॥  
 उठहु फेर भारत जानि छै प्रसन्न इका चार ।  
 लोहु गोद करि नृप कुअर भयो प्रात उजियार ॥

### शाखा ।

सुनत सेज तजि भारत भाई । उठी तुरन्तहि जिय अजुलाइ ॥  
 निविड केश दोड कर तिरुआरी । पीत बदन की कान्ति पसारी ॥  
 भरि नेत्र अमुयन जन धारा । लै उमाम यह वचन उचारा ॥  
 वी आवत इत नृपति कुमारा । भारत में छायो अधिआरा ॥

कहा यहा अब नखिवे जोगू । अब नाहिन इत वे सब जोगू ॥  
 जिन के भय कपत समारा । सब जग जिन की तेज पसारा ॥  
 रहे शास्त्र के जब आलोचना । रहे सबे जब इत पट दरशन ॥  
 भारत विधि विद्या बहु जोगू । गहि अब इत केवल है सोगू ॥  
 सो अमूल्य अब लोग इतै गहि । कहा कुधर नखिवै भारत मधि ॥  
 रहे जबै मनि कीट मुकुण्डल । रह्यो दण्ड जब प्रथम अखण्डल ॥  
 रह्यो रुधिर जब आरज सीसा । ज्वलित अनल समान अबनीसा ॥  
 माहम बन इन मुमक्षीउ ताही । जमे रह्यो मधि मण्डल माहीं ॥  
 जब मोहि ये कहि जननि पुकारै । दण्डू दिशि धुनि गरजा पारै ॥  
 तब में रही जगत की माता । अब मेरी जग में कह वाता ॥  
 कखिहै का कुमार अब धारै । गोद बैठि हसिहै इत आरै ॥  
 जब पुकारिहै कहि मोहिमाता । आनन्द सो भरिहो सब गाता ॥  
 युरपअमरिका इहिहि सिद्धाही । भारत भाग मरिस कोउ नाहीं ॥  
 पूर्व सप्तो मम रोम पियारो । मरि कै बाचि उठो फिरि वारो ॥  
 सोसहु पुनि निज प्रानल पायो । हाय अकेली हमहि बनायो ॥  
 भग्न दण्ड कपति कर धारो । कब लीं ठाटो रह्यो दुखारो ॥  
 भग्न सकल भूषण तन माली । दाम जननि कहवै हौ लाजी ॥  
 गिरे भागा जीतन हारे । थाप्यो पद मम सीस उघारे ॥

### आरम्भ ।

मुनि बोली आरज जननि थाये कहा कुमार ।

थाये किन आथी निकट पुत्र जननि अकवार ॥

रहत निरन्तर अन्तराहि कठिन पराजय पीर ।

थायो सुत मम हृदय लागि सीतल करहु सरीर ॥

लेहु माय काहि मोहि पुकारी । सोइ भावन जिसि निज महतारी ।

सत सबत लीं रह्यो अधूरो । कबो न आज भाय सोइ पूरो ॥

अतिहि अकिचा भारत वासा । अतिहि छीन हिटुन की आमा ॥

भूति वृटिसवन धारि सनेहु । भारत सुतन गोद करि लेहु ॥

कहि कथ्य इहै मनि तुच्छ करो । गहि कीटहु तुच्छ विश्वार धरी ॥

इहू कह जीवण देह, टया । इनहु कह आत सनेह मया ॥



इन्हू कह नाज टपा ममता । इनहू कह क्रोध सुधा समता  
इनहू तन शोणित हाड तुचा । इनहू कह आखिर ईश रचा

कबहु कबहु अबहु सोई उदय होत चित आम ।  
इनधी करहु न कुअर तुम कबहु नीय उदास ॥  
सोई परम पवित्र भुव भाये अहो कुमार ।  
ताहि न समझहु तुच्छ तुम सो सम्बन्ध विचार ॥  
पालत पच्छिहु जो कुअर करि पिजरन मुह बन्द ।  
ताहु कह सुख देत नर जामे रहै अनन्द ॥  
सोई सुख लहि घरहु मे गावत विविध विहग ।  
जतनहि सो बस होत है बन के मत्त मतग ॥  
कोकिल स्वर सब जग सुखी वायस शब्द उदास ।  
यह जग तीं कह देत है वह का खेत निराम ॥  
केवल यह भाखै मधुर वह कंठोर रव निरत ।  
तासों जग चाहे सबै मधुर सरल बस चित्त ॥

हम तुव जननी की निज दासी । दासी सुत मम भूमि निवासी ॥  
तिन की सब दुख कुअर हुडावो । दासी की सब आस पुरावो ॥  
मेठहु भय कर अभय दिखाई । हरहु विपति बच मधुर सुनाई ॥  
बृटिस सिद्ध के बदन कराना । लखि न सकत भय भीत भुषाला ॥  
फाटत हिय जिय थर थर कपत । तेज देखि कै दृग जुग भूपत ॥  
कहि न सकत मन को दुख भारी । भरत गयन जुग अविरल बारी ॥  
सौदागर मेलुषा जहाजी । गोरा धरमपती जग काजी ॥  
सबहि राज सम पूजन करही । सब को मुख देखतही डरही ॥  
तेज चण्ड सो हरहु कुमारा । पीछहु मम दुख की जन्त धारा ॥  
ले भारतवासी मम सुत टिग । बैठहु छिनक लखहु छविभरि दृग ॥  
लखहु लखहु सुत आनन्द भारी । कौसी छायो भुवन मभारी ॥  
तुमहि देखि सय पुलकित गाता । गद्गद गल कहि सकहि न बाता ॥  
कहहि धन्य यह रैन धन्य दिा । धन धन घरी आज धन पल छिन ॥  
प्रेम अशु जन्त सबहि नैन ते । जिअहु कुअर सब कहहि वैन ते ॥  
फिरहु कुअर जन्त जननी पासा । कहियो पूरहि मम मन आसा ॥

मिथ्या नहि कहु याके माही । राजभक्त भारत सम नाही ॥  
 लेहि प्रात उठिके तुव नामा । करहिं चित्र तव देखि प्रनामा ॥  
 तुमरे सुख सी सब सुख पावै । छल तजि मदा तुवहि गुन गावै ॥  
 यह कहि भारत नै भरि , आचर बदन छिपाय ।  
 दै असीस जिय सी नृपहि , भई अदृश्य सुहाय ॥  
 बजे वृष्टि डड्डा सघन , गहगह भन्द अपार ।  
 जय रानी विकटोरिया , जै जुवराज कुमार ॥

पूर्ण कीरस ।

उदयो भानु है आज या देग माही । रह्यो दु ख को लेसहू भेस नाही ॥  
 महाराज अलवर्त या भूमि आयै । अरे लोग धायो बजायो बधायै ॥  
 कुटी तोष फहरी धुजा , गरजे गहकि निघात ।  
 भुवमण्डल खलभक्त भयो , राजकुमार प्रयान ॥

इति ।



# विजय बल्लरी ।

—०\*०—

अही आज आनन्द का , भारत भूमि मंभार ।  
सब के हिय अति हर्ष क्यौ , वाटरी परम अपार ॥  
आर्य गनन की का मिल्यौ , जो अति प्रफुलित गात ।  
सब कहत जै आजु क्यौ , यह नहि जान्यौ जात ॥  
सब के मन सन्तोष अति , सब के मन आनन्द ।  
सब ही प्रसुदित देखियत , ज्यौ चकोर लहि चन्द ॥  
कहा भूमि कर उठि गयो , कै टिक्स भो माफ ।  
जन साधारन की भयो , किधौ सिविल पथ साफ ॥  
नाटक अरु उपदेश पुनि , समाचार के पत्र ।  
कारामुक्त भए कहा , जो अनन्द अति अत्र ॥  
कै प्रतच्छ गोबधन की , जवनन छोडो वानि ।  
जो सब आर्य प्रसन्न अति , मन मह मगल मानि ॥

कहा तुम्हें नहि खबर खबर जय की इत आई ।  
जीति देश गन्धार शत्रु सब दिए भगाई ॥  
सब शीगुन की खानि अयूब भज्यौ असु लैके ।  
प्रविसी सैना नगर माहि जय उका देके ॥  
भैरट कारागार बस्यौ याकूब अभागो ।  
और सबे बबर दल इत उत बल इत भागो ॥  
गो भक्तक रक्षक बनि अंगरेजन फल पायो ।  
तोसो करि अति क्रोध शत्रु गन मारि भगायो ॥  
पचम पांडय जिमि सकुनी गन्धार पहायो ।  
हृदिश रिपभ सितमि खरज काबुली मभ्यम मायो ॥  
रूम रूस उर सूल दियो ईरान दबायो ।  
हृदिशसिद्ध को अटल तेज करि प्रगट दिखायो ॥  
प्रथम जयै काबुलपति कहु अभिमान जनायो ।  
तथे हृदिश हरि गरजि कीपि वापि चदि धायो ॥

जेर अली भजि मांद समाधि प्रवेश कियो तत्र ।  
 ठहरि मकत कह्यु अली रग नायक उमडै जय ॥  
 रुस हूम टै घूम प्रथम तहि पास बटारै ।  
 धोखा दैके अन्त घुस बनि पीछ दमारै ॥  
 खैबर दर अरगला कठिन गिरि सरित करारै ।  
 शत्रु हृदय सह तोडि तोडि रिजु कीन्हें सारै ॥  
 काबुल का बल करै सृष्टि हरि गरजि चटै जय ।  
 बन गरजि केहरो भजहि भट खर खच्चर सब ॥  
 नीति विरुद्ध सदैव दूत बध के अघ सानै ।  
 रुस कुमति फसि हंस आप सो आप नसानै ॥  
 सिद्ध चिन्ह को भुजा चट्टी बालाहिसार पर ।  
 जय देवी विजयिनी सोरभो काबुल घर घर ॥  
 पुनि परतिष्ठा चेति सत्य सों बदन न मोड्यो ।  
 खल दल बल दल मलि लन सम अफगानहि छोड्यो ॥  
 नृप अबदुल रहमान कियो आदेश सुनाई ।  
 युद्ध सत्य अरु दान बीरता लतय दिग्बाई ॥  
 तजि कुदेश निज सेन सज्जित सब सेनापति गन ।  
 भारत में फिर आइ बसे जय कहत मुदित मन ॥  
 ताहो को उत्साह बढ्यो यह चहु दिशि भारी ।  
 जय जय घोसत मुदित फिरत इत उत नर नारी ॥

नहि नहि यह कारन नहीं , अहै और ही बात ।  
 जो भारत बासो सबै , प्रमुदित अतिहि लखात ॥  
 काबुल सौ इन को कहा , हिये हरख को आस ।  
 ये तो निज धन नास सों , रन सों और उदास ॥  
 ये तो समुझत व्यर्थ सब , यह रीटी उतपात ।  
 भारत कोष विनाश सों , हिय अति ही अकुलात ॥  
 इति भीति दुष्कान भी , पीडित कर की सोग ।  
 ताहूँ पै धन नास को , यह बिनु काज कुयोग ॥  
 छेचो डिजरैली लिटन , चितय नीति क जाल ।

फसि भारत जरजर भयो , काबुल युद्ध अकाल ॥  
 सबहि भाति नृप भक्त जे , भारत वासी लोक ।  
 शस्त्र और सुद्रन विषय , करो तिनहु को रोक ॥  
 सुजस मिलै अङ्गरेज कीं , होइ रुस की रोक ।  
 बटै वृटिश वाणिज्य पै , हम कीं केवल सोक ॥  
 भारत राज सभार जीं , कहु काबुल मिलि जाइ ।  
 लज्ज कलकटर होइहैं , हिन्दू नहि तित धाइ ॥  
 ये तो केवल मरन हित , द्रव्य देन हित हीन ।  
 तासों काबुल युद्ध सीं , ये जिय सदा मलोन ॥  
 इन के जिय के हरख की , और हि कारण कोय ।  
 जो ये सब दुख भूलि कै , रहे अनन्दित होय ॥

अब जानी हम बात जौन अति आनन्द कारी ।  
 जासों प्रसुद्धित भए सबै भारत नर नारो ॥  
 नृप रहमान अयूब दोऊ मिलि कलह मचाई ।  
 अन्त प्रबल छै लिय अयूब गम्भार छुडाइ ॥  
 आदि वश नव वश दोऊ काबुल अधिकारी ।  
 जाहि जाति गन चहै करै निज नृप बलधारी ॥  
 यामें हमरो कहा कउन उन सीं मम माता ।  
 भार पडै मिलि लडे भिडै भगडै सब भ्राता ॥  
 दृष्ट करि भारत सौम बसै अंगरेज सुखारे ।  
 भारत असुवसु हरित करहि सब आर्य दुखारे ॥  
 शत्रु शत्रु लडवाइ दूर रहि सुखिय तमासा ।  
 प्रबल देखिए जाहि ताहि मिलि दीजै आसा ॥  
 लिबरल दल बुद्धिभीन शान्तिप्रिय अति उदार चित ।  
 पिछली चूक सुधारि अबै करिहैं भारत हित ॥  
 खुलिहै " लोन " न युद्ध विना लुगिहै नहि टिकस ।  
 रहिहै प्रजा अनन्द सहित बढिहै मन्त्रो लस ॥  
 यहै सोचि आनन्द भरे भारत वासी जन ।  
 प्रसुद्धित इत उत फिरहि आज रच्छित लगि निज धन ॥



# मुंहदिखावनी ।

राजकुमार श्रीङ्गुक अफ एडिनवरा की नववधू को ।

आजु अतिदि आनंद भयो बाव्यी परम उखाह ।  
राजदुहारी सीं सुनत राज कुवर को व्याह ॥ १ ॥  
राज घर वसें सुख भयो मिटे सकल दुखदुन्द ।  
मेरी बहू सुलच्छनी प्रजन दियो आनन्द ॥ २ ॥  
हार बधाई तोरनै मनि गन सुकता माल ।  
धाई धाई फिरत हैं कहत बधाई बाल ॥ ३ ॥  
विद्या लक्ष्मी भूमि अरु तुव प्यारी तरवारि ।  
राज कुवर । ये सीत लखि मोही हारि निहारि ॥ ४ ॥  
“देह दुलहिया की बढै ज्यौं ज्यौं जीवन जीति ।  
त्यौ त्यौ लखि सीतैं सबै बदन मलिन दुति हीति ॥ ५ ॥  
मानौ सुख दिखरावनी दुलहिन करि अनुराग ।  
सास सदन मन लखन हू सीतिन दियो सुहाग ॥ ६ ॥  
महारानी विकटोरिया । धन धन तुमरो भाग ।  
लख्यी बधू सुखचन्द तुम पूग्यो भाग सुहाग ॥ ७ ॥  
रुस रुस सब के हिये भय अति ही हो जौन ।  
बधू । तुम्हारे व्याह सीं उखी फूस सी तीन ॥ ८ ॥  
धन यह सबत मास पख धन तिथि धन यह बार ।  
धन्य घरी छिन लगन जेहि व्याहे राज कुमार ॥ ९ ॥  
आए मिलि सब प्रजा गन नजर देन तुव धाम ।  
ठाठे घनसुख देखिये नवत पुहारत नाम ॥ १० ॥  
कोउ मनि मानिक सुकृत कोउ कोऊ गल को हार ।  
कनक रीप्य मदि फूल फल लै लै करत जुहार ॥ ११ ॥  
तब हम भारत की प्रजा मिलिके सहित उखाह ।  
लाए “आशा” दासिका लीजै एहि नरनाह ॥ १२ ॥  
सेवा में एहि राखियो नवल बधू के नाथ ।



यहू भाग नीज माणिके छनक न तजि है माथ ॥ १३ ॥  
 रूस मिले सी रेल के आगम गमन प्रचार ।  
 धन जन बल व्यवहार ने छोड़ी यह सुकुमार ॥ १४ ॥  
 तासों तुम्हरे कर कमल सौपत एहि नर नाह ।  
 जब लौ जीवै कीजियो तब लौ कुधर । निवाह ॥ १५ ॥  
 यह पानी सब प्रजन अति करि बहू लाह उमाह ।  
 अति सुकुमारी लाडिली सौपत तोहि नर नाह ॥ १६ ॥  
 यह बाहर कहू नहि भई सही न गरमी सीत ।  
 आदर दै कै राखियो करियो नित चित प्रीत ॥ १७ ॥  
 जौ यासौ जिय नहि रमै वा कहू जिय अकुलाय ।  
 सौति बधू वा एहि लखै तौ हम कहत उपाय ॥ १८ ॥  
 जब हम सब मिलि एक मत है तोहि करहि प्रनाम ।  
 फेरि दीजियो तब हमै दै कहू और इनाम ॥ १९ ॥  
 जब लौ धरमो सेस सिर जब लौ सुरज चन्द ।  
 तब लौ जननी सह जियो राज कवर सामन्द ॥ २० ॥

इति ।

# श्रीरिपनाष्टक ।

जय जय रिपन उदार जयति भारत हितकारी । जयति सत्यप्रथपथिका  
जयति जन शोक विदारो ॥ जय सुद्रा स्लाधीन करन साम्ना दुखनाशना ।  
भृग्यवृत्तिपद जय पीडित जन दया प्रकाशन ॥ जय प्रजा राज्यस्थापन दरन  
धरन दीन भारतविपद । जय भारत यासिद्धि देन नव महा न्यायपति  
प्रथम पद ॥ १ ॥

जय जय चिन्तू चञ्चति पथ चबरोध मुक्तकर । जय करबन्धन सन्धर कर  
जय जयति गुणाकर ॥ जय जन मिच्छन हित समिति मिच्छा सत्यापक ।  
जय जय मेतासेत वरन सम समत मापक ॥ जय राज्य धुरधर धीर जय  
भारत शिल्पोन्नति करन । जय परम प्रजावत्सल सदा सत्य प्रिय जय  
श्री रिपन ॥ २ ॥

राजतत्र के पण्डित तुम जागत प्रयोग खट । स्तम्भन कीनो राजदाक्य  
करि अटल भीति अट ॥ जनदुख मारन उच्चाटन हैविह भाव जग । विद्वे-  
पण स्वारथी मिसित दन मङ्ग न्यायमग ॥ आकर्षण मन सब जनन की निज  
उदार गुण प्रगट कर । जय मोहन मत्र समान निज वाक्य त्रिमोहित देश  
वर ॥ ३ ॥

जय भारत नव उदित रिपनचन्द्रमा मनोहर । शुक्ल कृष्ण समतेज  
तदपि जस अपजस विधि कर ॥ जस चन्द्रिका विदासि प्रकाश्या उन्ति  
मारग । वाक्य भ्रमृत वरसाइ किए भाल्हादित तर जग ॥ ससत्रक बग-  
विल सी लसत जनमन कुमुद प्रफुल्ल तर । सत्ताइस रैन प्रकास सम सत्ता-  
इस शुभ कर्म कर ॥ ४ ॥

जय तोरथपि रिपन प्रजा अघ शोक विनाशक । गग जसुन सम मि-  
लित तदपि जान्हवि मरजादक ॥ अचयवट सम अचल कीर्ति थापक मन  
पावन । गुप्त मरस्तति प्रगट कमीशत मिस दरसावन ॥ कलिकलुष प्रजागन  
भीति की सघ विधि मेटन नाम रट । जय तारन तरन प्रयाग सम जस  
चहु टिसि सब पै प्रगट ॥ ५ ॥

जदपि बाहुबल क्लाइव जोत्वी सगरो भारत । जदपि धीर लाटा हू  
की जा नाम उचारा ॥ जदपि हेसटिग् आदि साथ धन लै गये भारी ।

जदपि लिटन दरवार कियो सजि बडी तयारी ॥ वै हम हिन्दुन के हीय  
की भक्ति न काहू सग गर्ई । सो केवन तुमरे सग रिपन छाया सो माथिन  
भई ॥ ६ ॥

शिवि दधीच हरिचन्द कर्ण बलि नृपति युधिष्ठिर । निमि हम इन के  
नाम प्रात उठि सुमिरत है चिर ॥ तिमि तुम हू कह नितहि सुमिरि है  
तुव गुन गाई । यासी बटी अनुराग कही का सकत दिखाई ॥ हम राज-  
भक्ति को बीछ जो अब लौ वर अन्तर धर्यो । निज न्यायनीर सो सींचि  
कै तुम धामैं अकुर कख्यो ॥ ७ ॥

निज सुनाम के बरन किए तुम सफल सबहि विधि । रिप सब किए  
उदास दर्ई हिय राजभक्ति सिधि ॥ महरानी को पन राख्यो निज नवल  
रोतिबल । परि मध न्याव तुला के नप राख्यो सम दुहु दल ॥ सब प्रजा  
युजसिर आप को रिन रहि है यह सर्व छन । तुम नाम देवसम नित जपत  
रहि है हम है श्रीरिपन ॥ ८ ॥



# श्रीरिपनाष्टक ।



जय जय रिपन उदार जयति भारत हितकारी । जयति सत्यपथपथिक  
जयति जन शोक विदारो ॥ जय सुद्रा स्वाधोन करन सालम दुखनाशन ।  
भृत्यवृत्तिप्रद जय पीडित जन दया प्रकाशन ॥ जय प्रजा राज्यथापन करन  
हरन दीन भारतविपद । जय भारत वासिष्ठि देन नव महा न्यायपति  
प्रथम पद ॥ १ ॥

जय जय हिन्दू उन्नति पथ भ्रष्टरोध मुक्तकर । जय करबन्धन मन्थर कर  
जय जयति गुणाकर ॥ जय जन सिच्छन हेत समिति सिच्छा संस्थापक ।  
जय जय सीतासेत वरन सम समत मापक ॥ जय राज्य धुरधर धीर जय  
भारत शिल्पोन्नति करन । जय परम प्रजाबल्लन सदा सत्य प्रिय जय  
श्री रिपन ॥ २ ॥

राजतन्त्र के परिणेत तुम जानत प्रयोग खट । स्तम्भन कीनी राजवाक्य  
करि अटलनीति अट ॥ जनदुख मारन उखगटन हँविव्व भाव जग । विद्वे-  
पण स्वारथी मिलित दल मह न्यायमग ॥ आकर्षण मन सब जनन को निज  
उदार गुण प्रगट कर । जय मोहन मन्त्र समान निज वाक्य विमोहित देश-  
वर ॥ ३ ॥

जय भारत नव उदित रिपनचन्द्रमा मनोहर । शुक्ल कृष्ण समतेज  
तदपि जस अपजस विधि कर ॥ जस चन्द्रिका विकासि प्रकाश्यो उन्नति-  
मारग । वाक्य अमृत वरसाइ किर आह्लादित नर जग ॥ ससन्नक अग-  
बिल सो लसत जनमन कुसुद प्रफुल्ल तर । सत्ताइस रेन प्रकास सम सत्ता-  
इस शभ कर्म कर ॥ ४ ॥

जय तीरथपति रिपन प्रजा अघ शोक विनाशक । गग जमुन सम मिलित  
तदपि जान्हवि मरजादक ॥ अक्षयवट सम अचल कीर्ति थापक मन पावन ।  
गुप्त सरस्वति प्रगट कमोशन मिस दरसावन ॥ कनिकलुप प्रजागन भीति  
को सब विधि भेटन नाम रट । जय तारन तरन प्रयाग सम जस चहु दिम  
सब पै प्रगट ॥ ५ ॥

जदपि बाहुबल क्लाइव जीव्यो सगरो भारत । जदपि श्रीर लाटन हू  
को जन नाम उचारत ॥ जदपि वृष्टिग आदि साय धन लै गये भारी ।

अदपि लिटन दरवार कियो सजि बडी तयारी ॥ पै हम हिन्दुन के हीय  
को भक्ति न काछू सग गई । सो केवल तुमरे सग रिपन छाया सो साधिन  
भई ॥ ६ ॥

शिवि दधीच हरिचन्द कर्ण बलि नृपति युधिष्ठिर । जिमि हम इन के  
नाम प्रात उठि सुमिरत है चिर ॥ तिमि तुम छू कहँ नितिहि सुमिरिहँ  
तुव गुन गाई । यासों बढि अनुराग कहो का सकत दिखाई ॥ हम राज  
भक्ति को बीज जो अब लौ उर अन्तर धखी । निज न्यावनीर सों सींचि  
कै तुम वामें अकुर कखी ॥ ७ ॥

निज सुनाम के वरन किए तुम सफल सबहि विधि । रिपु सब किए  
उदास दई द्विय राजभक्त सिधि ॥ महारानी को पन राख्यो निज नवल  
रीतिबल । परि मध न्याय तुला के नप राख्यो सम दुहु दल ॥ सब प्रजा  
पुजसिर आप को रिन रहि है यह मर्व छन । तुम नाम देवसम नित जपत  
रहिहँ हम छे श्रीरिपन ॥ ८ ॥

---

# श्रीराजकुमार सुस्वागत पत्र ।

जाके दरमन हित मदा नैना मरत पियास ।  
मो सुख चद बिनोकि है पूरी सब मन आस ॥  
नैन बिछाए आगु हित आवहु या मग होय ।  
कमल पावडे मे किये अति कोमल पग जोय ॥

हे हे लेखनी आज तुम्हें माननी बनना उचिन नहीं है । क्योंकि इस भूमि के नायक ने चिर समय पीछे अपने प्यारी की सुधि ली है ।

आज तू भी आगत पत्रिका बन और सोरही शू गार करके इस पत्र हपी रगशाला में ऐसी मनोहर और मदमाती गत से चल के सब देखनेवाले मो हित ही ही के मतवाले से भूमि लगे और ऐसी फूलों की झडीलगा जिससे महाराज कुमार के कोमल चरनों की यह पत्रिका एक फूलके पावडे सी बन जाय ।

आज क्या कारण है कि उपवनों में कोकिलने धूम सी मधारवली है और भरी मदमाती होकर उधर से उधर दौड़े दौड़े फिरते हैं, वृक्षों की ऐसा कोन सा सुख हुआ है कि मतवालों की भाति झुक झुक के भूमि चूम रहे हैं और नता सब ऐसी क्यों प्रसुदित है कि कुलटा नायका की भाति लाज छोड छोड के अपने नायक से झिपट रही है और फूलों ने ऐसा क्या सुख पाया है कि अपना स्थान छोड छोड के उमने हुए पृथ्वी पर टपके पडते हैं और फूलोंने किस के आने का समाचार सुन लिया है कि फूल नही समाते हैं, मालिनै शू गार करके किस के हेतु यह कोमल और अनेक रगके फूलों की मासा गूथरही है और यह ठठी पीन किस के अग को छूके आती है कि सब के मन की कली सो खिनी जाती है, नदियों और सरोवरों के पानी क्यों उछल उछल के अ पना आनन्द प्रकाश कर रहे हैं और उन में कवक की कालिया किस की स्तुति के हेतु हाय, वाधे खडो है इस और चकोर ऐसी कुल्ले ल क्यों करते हैं और बरपा दिना भोर क्यों नाच रहे हैं, पक्षी लोग बडे उत्साह से किसके आने की ब ईधा गाते हैं और हिरन लोग अपने बडे बडे नेत्रों से किसके दर्शन की

आशा में टण छोड़ छोड़ के खड़े हो रहे हैं, गिडकियों में स्त्री लोग किमके हेतु पुतली भी एकाग्र चित्त हो रही हैं और मंगल का सब साज किसके हेतु मंगा है सुना है कि हमलोगों के महाराज कुमार आज इधर आनेवाले हैं फिर क्यों न हम भारतवर्ष के उद्यान में ऐसा आनन्द सागर समगै ॥

भारतवर्ष के निवासी लोगों को अब इन्हीं विशेष और कौन आनन्द का दिन होगा और इसमें बढ के अपने चित्तका उत्साह और अधीनता प्रगट करने का और कौन भा ममय मिलेगा। कई सौ वरम से हमलोग चातिका की भांति आमा लगाए थे कि वह भी कोई टिन इश्वर दिखावेगा जिस टिन हम अपने पालनेवाले को इन नेत्रों से देखेंगे और अपना उत्साह और प्रीति प्रगट करेंगे। धन्य उस जगदीश्वर को जिसने आज हमारे मनोर्थ पूर्ण करके हम को उस अपूर्व निधि का दर्शन कराया जिसका दर्शन स्वप्न में भी दुर्लभ था। धन्य आज का दिन और धन्य यह घड़ी जिसमें हमारे मनोर्थ के वृक्ष में फल लगा और अपना राजकुंवर को हमलोगों ने अपने नेत्रों से देखा, इस ममें हमलोग तन मन धन जो कुछ लोकावर करे थोड़ा है और जो आनन्द करें सो बहुत नहीं है। इश्वर करे जबतक फूलों में सुगन्धि और चन्द्रमा में प्रकाश है और पद्मिनी नायक मूर्त्य जय तक उदयाचल पर उगता है और गंगा जमना जबतक अमृतधारा बहती है तबतक इनके रूप बल तेज भी राज्य की वृद्धि होय जिसमें हमलोग इनके कर कल्पवृक्ष की छाया में सब मनोर्थ में पूर्ण होकर सुख पूर्णक निवास करें।

कवित्त ।

जनम लियो है महारानी कोख मागर तें जामे ती कलन कोन लेसह लखायो है। सुभट समूह साथ सोहत है तारागन कुमुदहि तू न द्विप हरप बढायो है ॥ चाहि रहे चाह सों चकोर है प्रजा के पुज बैरो तम निकर प्रकाश तें नसायो है आनद असेम दीवे हेत द्विद बीच आज कुंवर प्रतापो नखतेस बनि आयो है ॥ १ ॥

कोकिल समान बोलि उठे हैं सुकवि सबै कामदार भौर से बधाई ले ले थाए हैं। लागि उठी लाय बिरहीन कीसी बैरिन कीं बीरि उठे हाकिम र साल से सुहाए है। फूलि कै सफल भे मनोरथ सबाही के नाचि उठे मोर से प्रजा के मन भाए हैं। सालि कै समाज महारानी के कुंवर आजु दीवें सुख साल रितुराज बनि आए हैं ॥ २ ॥

## दीहा ।

परो आज सभ्रम कडा, जान परत कहु नाहि ।  
 बीरे से दीरे फिरत, फूले अग न माहि ॥ १ ॥  
 धावत इत उत प्रेम सी, गावत हरख बढाय ।  
 आवत राजकुमार यह, कहत सुनाय सुनाय ॥ २ ॥  
 करत मनोरथ की लहर, सागर मन समुदाय ।  
 राजकुवर सुखचन्द लखि, उमगि चलो अकुनाय ॥ ३ ॥

## अथ षट् ऋतुरूपक—धमन्त ।

आनद सो बीरो प्रजा, धाये मधुप ममाज ।  
 मन मयूर हरखित भण, राजकुवर रितुराज ॥ ४ ॥

## श्रीधम ।

तपत तरनि तिभि तेज अति, सीखत बैरि अपार ।  
 जीवन में जीवन करत, श्रीधम राजकुमार ॥ ५ ॥

## वर्षा ।

प्रजा कृपिक हरपित करत, वरसत सुख जलधार ।  
 उमगाव मन नटिन की, पावस राजकुमार ॥ ६ ॥

## शरद ।

फूले सब जन मन कमल, नभ सम निरमल देख ।  
 बिकसित जस की कौरवी, आयो शरद नरेस ॥ ७ ॥

## हेमन्त ।

मुरभावत 'रिगु बनज बन, अरिन कपावत गात ।  
 राजकुवर हेमन्त बनि, आवत आज लखात ॥ ८ ॥

## सिसिर ।

पीरे सुख बैरी परै, पिक्कन बधाई दीन ।  
 सीरे धर सब जन भये, सिसिर कुमार नबोन ॥ ९ ॥

## विनय ।

विनयत जुग प्रफुलित जलज, करि कलि कौक समान ।  
 धुजा भुजा की छाड़ मै, देहु अभयपद दान ॥ १० ॥





# मनोसुकुलमाला ।

अर्थात्

राजरাজेश्वरी आर्येश्वरी भारताधीश्वरी श्री १०८ विजयिनी  
देवी के चरणतामरस में हरिश्चन्द्रसमर्पित  
वाक्यपुष्पोहार ।

अथ इङ्गलेडी पारसीक वर्ण चिह्निता \*  
राजरजिप्रवरी आशी ।

Gवहु Eस अCस बल हरहु प्रजन की Pर ।  
सरU जमुना गग मैं जब लौ धिर जग नीर ॥ १ ॥  
J Kवल तुव दास हैं नासहु तिन की R ।  
बढे सY तेज नित Tकी अचल लिलार ॥ २ ॥  
भारत के Aकव सव Vर सदा बलPन ।  
Bसहु बिखा ते रहैं तुमरे नितहि अधोन ॥ ३ ॥  
ह ) उ ट ) सबै ँ ) बिना कJ ।  
गले ७ नहि सहु को तुव सनमुख गुन धाम ॥ ४ ॥  
अई कीरति छई रहै अटहराज ।  
र र वरनत सबै ८ कबि यार्ते पाज ॥ ५ ॥  
था ७ धिर करि राज गन अपने अपने ठौर ।  
तासों तुम ७हि भई महारानी जग और ॥ ६ ॥

\* कीबहु ईस असीस बल हरहु प्रजन की पीर । सरयू जमुना गगमें जबलौ धिर जग नीर ।  
जे शकल तुव दास हैं नासहु तिनकी पार । बढे सवाइ तेज नित टीकी अपल लिलार ।  
भारत के एकव सव और सदा बलभीन । कीबहु बिखा ते रहैं तुमरे नितहि अधोन ।  
सेरे से छरे सदे तेरे बिना कधाम । गले दाज नहि सहु को तुव समुख गुनधाम ।  
अभीमई कीरति छई रहै अभी महाराज । तेरे तेर वरनत सदे ये कबि यार्ते पाज ।  
यामे धिर करि राजगन अपने अपने ठौर । तासों तुमको नहि मह महारानी जग और ।

अथ अङ्कमयी \*

## राजराजेश्वरी स्तुति ।



|  |       |
|--|-------|
| करि बिध देख्यो बहुत जग बिनु रस न १                         | ।     |
| तुम बिनु हे विकटोरिये नित ६०० पय टेक                       | ॥ १ ॥ |
| इइ तुम परसैन लै ८० कहत करि १००इ                            | ।     |
| पै बिन७ प्रताप बल सखु मरोरे भौह                            | ॥ २ ॥ |
| सो१३ते लोग सब विल१७त सधेन                                  | ।     |
| अ११ती जागती पै सब ६न दिन रैन                               | ॥ ३ ॥ |
| लखि तुव सुख २६मि सबै कै १६त अनद                            | ।     |
| निहचै २७ को तुम में परम अमद                                | ॥ ४ ॥ |
| जिमि ५२ के पद तरें १४ लोक लखात                             | ।     |
| तिमि भुव तुव अधिकार मोहि बिसे २० जनात                      | ॥ ५ ॥ |
| ६१ खल नहि राज में २५बन की बाय                              | ।     |
| तासो गायो सुअस तुव कवि ६ पद हरखाय                          | ॥ ६ ॥ |
| किये १०००००००००००००० बल १०००००००००० के तमिकहि भौह मरोर ।   |       |
| ४० को नहिं अरिन की सैन सैन लखि तोर                         | ॥ ७ ॥ |
| तुव पद १०००००००००००००००० प्रताप को करत सुकवि पि१०००००००० । |       |
| करत १०००००००० बहु १०००००० करि हीत ठज अति थोर               | ॥ ८ ॥ |
| तुम ३१व में बडी तारें विरच्यौ छन्द                         | ।     |
| तुव जस परिमल ॥ लहि अंक चित्त हरिचन्द                       | ॥ ९ ॥ |

करि बिध देख्यो बहुत जग बिनु रस न एक । तुम बिनु हे विकटोरिये नित गव सौ पय टेक ॥  
 इतीन तुम पर सैन लै असौ कहत करि सीह । पै बिनसात प्रताप बल सखु मरोरे भौह ॥  
 सोते रहते लोग सब विलसत रहत सधेन । अग्या रहती जागती पै सब छन दिन रैन ॥  
 लखि तुव सुख लखि सबै कैसी रहत अनद । निहचै सधा रूस को तुम में परम अमद ॥  
 जिमि भावन के पद तरें भीदह लोक लखात । तिमि भुव तुव अधिकार मोहि बिसे बीस जनात ॥  
 इकसठ खल नहि राज में पची सवन की बाय । तासो गायो सुअस तुव कवि पदपद हरखाय ॥  
 किये खरब बस अरब के तमिकहि भौह मरोर । लखि सको नहि अरिन सैन सैन लखि तोर ॥  
 तुव पद पय प्रताप को करत सुकवि पिकरोर । करत कोटि बहु लख करि हीत ठज अति थोर ॥  
 तुम ३१वीं सब में पची तारें विरच्यौ छन्द । तुव जस परिमल पीन लहि अंक चित्त हरिचन्द ॥

## भाषा सहज ।



कविता ।

|  |       |
|--|-------|
| धन्य धन्य दिन आजु को धन धन भारत भाग      | ।     |
| अतिहि बढायो सहज जिन दीऊ दिमि अनुराग      | ॥ १ ॥ |
| आजु मान अतिही लछ्छी आरज भारत देस         | ।     |
| भारत को राजखरो भए अनन्द बिसेस            | ॥ २ ॥ |
| प्रथम शमीरामा * भई दूजी भई न और          | ।     |
| सो पूजी तुम विजयिनी महारानी बनि ठौर      | ॥ ३ ॥ |
| विजयमित्र जयविजयपति अजय कृष्ण भगवान      | ।     |
| कारहि विजयिनो विजय नित दिन दिन सह कल्याण | ॥ ४ ॥ |
| नारो दुर्गा रूप सब † राजा कृष्ण समान ।   | ।     |
| शक्ति शक्तिमत तुम दीऊ यासो अतिहि प्रधान  | ॥ ५ ॥ |
| और देश के नृप सबै कहयावत महाराज          | ।     |
| सो मेटौ जिय सब्य तुम छैके राजधिराज       | ॥ ६ ॥ |
| होइ भारताधीखरी आरजस्तामिनि । आज          | ।     |
| तुम हो ‡ आरज जाति कह भिनयो धन यह राज     | ॥ ७ ॥ |

रगचित्र ५

—लित —मुख मसि लाय ।

पीरजन लित— हि इत पठयाय ॥ १ ॥

\* पद्मपुराण में भारत को जीतने वाली शमीरामा नामक देवी का विजयदशमी के दिन शमी वृक्ष में पूजन का विधान है जिस की इतिहास में Queen Semiramis कहते हैं।

† लिय समस्त सकला जनस, दुर्गापार।

‡ नराणां च नराधिप, श्री गीता ।

॥ हिन्दू और अंगरेज ।

( १ ) ( २ ) । लिखित ( कारे ) मुख मसि लाय ।

( ३ ) पीर जन ( ४ ) लित ( ५ ) लित ( ६ ) लित ( ७ ) लित पठयाय ।

## श्रीराजराजेश्वरी स्तुति ।

मस्तुत छन्द ई ।

श्रीमत्सर्वगुणाम्युर्ध्वजमनोवाणोधिद्रुराकृते  
 नित्यानन्दघनस्य पूर्णकरुणाऽऽसारेर्जगान् मित्रत ॥ १ ॥  
 शक्ति श्रीपरमेश्वरस्य जनताभाग्येखातोदया  
 साम्राज्यैकनिकेत्या पितृयिनी देवी यरोदृष्यते ॥ २ ॥  
 नागादीपतिवामिनो नृपतय स्यैरुत्तमाङ्गेनतै  
 रादेशाक्षरमानिका यदुदितां मानामिवाभिधति ॥ ३ ॥  
 यत्कीर्तिं शरदिन्दुसुदगरुचिर्ध्याप्रोति क्लृप्ता मष्टीं  
 सेय सर्वजनातिगम्यविभया कामां गिरा गोचर ॥ ४ ॥  
 एषा यद्यपि सायभीमपदकीं प्राप्ता प्रतापैर्निजे-  
 र्वरिवातमहीधरागनिसमेर्भूपालनेकव्रतै ॥ ५ ॥  
 श्यायावर्तजमत्स्यभाग्यनियहेर्भूयोऽधुनोदित्वरे  
 स्वीकृत्याजनयन्मुट मनसि न साऽऽयंश्चरीति प्रथाम् ॥ ६ ॥  
 कर्णाकर्णिकया गते श्रुतिपथ याताऽऽनृतेऽस्मिन्वय  
 विन्दामो यममन्दमात्तपुलका श्रानन्दे सततम् ॥ ७ ॥  
 अप्राप्यातितनी तनाववसर तेनेष सचोदिता  
 श्रीमत्या परमेश्वराच्चिरतर सप्रार्थयाम शिवम् ॥ ८ ॥  
 दीनानाथजनावनोद्यतमना मानादिनानाविध-  
 श्रीमत्सर्वगुणावनिर्नयघना समोदयित्री बुधान् ॥ ९ ॥  
 जीयादुञ्जलकीर्तिरार्तिगमिनी श्रुतिं परस्येशितु  
 पुत्रैरात्मसमै सम विजयिनी देवी सहस्र समा ॥ १० ॥

عزل بادو ہر سچندر صاحب

رسا لکھنؤ

سادک نارنج

وڈو، ناسا ساہاں ہندوساں

سہ ۱۸۷۶

- ۱ اوسکو شاہنسی ہر بار مبارک ہوئے
- ۲ حیر ہند کا دربار مبارک ہوئے
- ۳ بعد مذہبے ہن دہائی کے ہرے دن پارت
- ۴ بخت طاؤس۔ طلاکار مبارک ہوئے
- ۵ باعداں بھولوں سے آباد رہے جس چمن
- ۶ مانڈو گلے حار مبارک ہوئے
- ۷ ادک اسدوومیں ہن شمع و برہمن درہوں
- ۸ سنیہ انکو اردہیں ردار مبارک ہوئے
- ۹ مزہ ادل کہ بھر آئی ہی گلسداندیں بہار
- ۱۰ میکسو جانڈ حمار مبارک ہوئے
- ۱۱ دوستو کے لیٹے شادی ہوعدو کو عم ہوئے
- ۱۲ حار اردکو ادہیں گنار مبارک ہوئے
- ۱۳ رمرسولے ندرے نس کوئیے اس اندر سا
- ۱۴ یہ مبارک بیری گنار مبارک ہوئے

स्वर्गवासो ।

कुमार श्री अलवरत वर्णन ।

अन्तर्लोपिका ।

छप्पय ।

बस हित सानुस्वार देव बाणी मधि का है ?  
 अद्यहि भाषा माहि कहा सब भाखन चाहे ? ।  
 को तुव हाख्यौ सदा ? टान तुम नितहि करत किमि ? ।  
 का तुव मीठे सुनत ? कहा सोहत नागिन जिमि । ।  
 महरानी तुम कह का कहत ? अरि सिर पै तुम का धरत ।  
 का जल की सोभा ? कोन तुव सैन सदा निज भुज करत ? ॥ १ ॥  
 तुम खमारि में कहा ? कोन रच्छा तुव करई ? ।  
 का करि के तुव सैम सब, को बल परिहरई ? ।  
 कैसो तुव जन द्वियो ? ततो बाचक का भाषा ? ।  
 तुव अरि सिर नित कहा ? कोन जल बरमत खासा ? ।  
 तुव पग सगर में का करत ? कोन प्रथम पाताल कहि ? ।  
 आमोदित कासों तुव बसन ? का ह्वै परदल परत महि ? ॥ २ ॥  
 तुव धन कासों है बढि ? को पुनि देश जधन को ? ।  
 कोन सुखर ? तुम करत कहा अरि देखि भवन को ? ।  
 तरु की सोभा कहा ? होत तन से कह तुव धरि ? ।  
 पर सों कायर कहा न ? तुम किमि चलत सैन दरि ? ।  
 तोहि बान चलावन की सदा कहा परी पर फोज लखि ? ।  
 कह बाजि उठत घन गाजि जिमि साजत तोहि रन लखि हरखि ॥ ३ ॥  
 कह सितार को सार ? शत्रु के किमि मन तेरे ? ।  
 काको मार प्रहार सीस अरि हने घनेरे ? ।  
 का तुम मनहि देत सदा उनतिसए ही दिन ? ।  
 कहा कहत स्त्रीकार समय कहु भवसर के छिन ? ।  
 को महरानी को पति परम सोमित स्वर्गहि छै रघो ? ।  
 अनवरत एक छत्तीस इन प्रश्न को उत्तर कह्यो ? ॥ ४ ॥  
 ( यथा = अन, अय, अर, अत इत्यादि क्रम से छत्तीसो प्रश्न के उत्तर  
 केवल अनवरत इन पावही अचरो में से निकलने हैं )

## श्रीराजकुमार शुभागमन वर्णन

—०००—

स्वागत स्वागत धन्य तुम भावी राजधिराज ।  
 भई सनाथा भूमि यह परसि चरन तुव आज ॥  
 “ राजकुअर आओ इतै दरसाओ सुखचन्द ।  
 बरसाओ हम पै सुधा वाओ परम अनन्द ॥  
 नैन विछाए आपु हित आवडु या मग होय ।  
 कमल पावडे ये किए अति कोमल पग जीय ” ॥  
 साचहु भारत मै बढ्यौ अचरज सहित अनन्द ।  
 निरखत पच्छिम सौं उदित आजु अपूरव चन्द ॥  
 दुष्ट नृपति बल दल दनी दीना भारत भूमि ।  
 लहिहै आजु अनन्द अति तुव पद पङ्कज चुमि ॥  
 बिकसित कीरति कैरवी रिपु बिरही अति छोन ।  
 उडुगन सम नृप और सब लखियत तेज विहोन ॥  
 खवत सुधा सम वचन मधु पोखत श्रीपधिराज ।  
 वासत घोर कुमित्र खल नन्दत प्रजा समाज ॥  
 चित चकोर हरखित भए सेवक कुमुद अनन्द ।  
 मिथ्यो दीनता तम सबै लखि भूपति सुखचन्द \* ॥  
 मन मयूर हरषित भए गए दुरित दव दूरि ।  
 राजकुअर नव घन सरस भारत जीवन मूरि ॥  
 हृदय कमल प्रफुलित भए दुरे दुखद खल चोर ।  
 प्रसख्यौ तेज जहान रवि भूपति आगम भोर ॥  
 नन्दनपति प्यारी सचो दड बज्ज गज जाग ।  
 मत्रोवर सुर सह लसत नृपसुत इन्द्र समान ॥



- ५ भये लहलहे नर सबै उलछौ प्रजा समाज ।  
 बन्दी पिक गावत सुजस राजकुधर रितुराज ॥  
 बिदलित रिपु गज सीस नित नख बल बुद्धि प्रभाव ।  
 जन बन पथि मम अति प्रबल हरि भावी नरराव ॥  
 मेलाहू सों बटि सबै सज्यो नगर को साज ।  
 बुढवामगल तुच्छ कह लखि नव मगल आज ॥  
 ललित अकासो धुज सजे परकासी आनन्द ।  
 राका सी कामी पुरी लखि भूपति मुखचन्द ॥  
 नौबत धुनि मजौर सजि अचल धुज फहराय ।  
 कासी तुमहि मिनार मिसु टेरति हाथ उटाय ॥  
 मरवट मथिए बसन धुज मीरी तोरन लाय ।  
 दुनही सी कासी पुरी उलही नव बर पाय ॥  
 जिमि रघुवर आए अवध जिमि रजनी लहि चन्द ।  
 तिमि आगमन कुमार के कासी लछौ जनन्द ॥  
 मधुवन तजि फिर आइ हरि ब्रज निवसे मनु आज ।  
 ऐसी अनुपम सुख लछौ तुम कह निरखि समाज ॥  
 घरघर में मनु सुत भयो घरघर मै मनु व्याह ।  
 घरघर बाटी सम्पदा तुव आगम नरनाह ॥  
 जैसे आतप तपित को छाया सुखद गुनात ।  
 जवनराज के अन्त तुव आगम तिमि दरशात ॥  
 मसजिद लखि विमुनाथ टिग परे हिए जो धाव ।  
 ता कह भरहम चरिम यह तुव दरसन नरराव ॥  
 कुधर कहा हम लेहि तोहि ठौर न कहू लखाय ।  
 दृग मग छे हमरे हिए बैठहु प्रिय तुम आय ॥  
 कुधर कहा आदर करें देहि कहा उपहार ।  
 तुव सुख ससि आगे लसत लन सम सब भसार ॥

पे केवल अति सुख जिय करि यह देखि असीस ।  
 सानुज माता सहित तुम जीघी कीटि घरीम ॥  
 जबलौ वानो वेद को जघनौ जग को जाल ।  
 जबलौ नभ ससि सूर अरु तारागन को माल ॥  
 जबलौ गङ्गा जसुन जल जबलौ भयौ नदीम ।  
 जबलौ कवि कविता सुधिर जबलौ भुव अहि सोस ॥  
 जबलौ सुमन सुवास पर मत्त भवर सचार ।  
 जबलौ कामिनि नयन पर होहि रसिक बलिहार ॥  
 जबलौ तत्व सब मिले गठे सबे परमानु ।  
 जबलौ इश्वर अस्तिता तवनौ तुम नरभानु ॥  
 जिथो अचल लहि राजसुख नीरुज विना बिबाद ।  
 उदय अस्त लौ मेदिनो पासहु सहि सुख खाद ॥  
 पहरु कोउ न लखि परे होय अदालत बन्द ।  
 ऐसो निरुपद्रव करौ राज कुभर मुखकन्द ॥  
 लोहा गृह के काम मैं कलह दम्पती माहि ।  
 बाद बुधनहीं मैं सदा तुव राजत रहि जाहि ॥  
 जाति एक सब नरन को जदपि विविध व्योहार ।  
 तुमरे राजन लखि परे नेहो सब ससार ॥  
 रसना इक आसा अमित कहलौ देखि असीस ।  
 रहौ सदा तुम छत्र से होइ हमारे सीस ॥  
 भ्रात मात सह सुतन जुत प्रिया सहित जुवराज ।  
 जिथो जिथो जुग जुग जिथो भोगी सब सुखमाज ॥



अग्रजोपम स्नेह पूजास्पद प्रिय कुमार

जब आप से कुछ भी कहने की इच्छा करते हैं तो चित्त में कैसे विविध भाव उत्पन्न होते हैं। कभी भारतवर्ष के पुरातत्त्व के प्रारम्भ काल से आज तक जो बड़े २ दृश्य यद्वा घीते हैं और जो महा युद्ध महा शोभा और महा दुर्दशा भारतवर्ष की हुई है उन के चित्र नेत्र के सामने खिख जाते हैं, कभी हिन्दुओं की दीन दशा पर करुणा उत्पन्न होती है। कभी स्नेह कहता है कि हा यही अयसर है खूब जी खोल कर जो कुछ हृदय में बहुत काल से भाव और उद्धार संचित हैं उन को प्रकाश करो पर साथ ही राजभक्ति और आप का प्रताप कहता है कि खबरदार इद से आगे न बटना जो कुछ विनती करना बड़ी नस्त्रता और प्रमाण के साथ। इधर नई रौशनी के शीघ्रित युवक कहते हैं "दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा" सुनते सुनते जो थक गया कीर्ति मस्तिष्क की बात कहो। उधर प्राचीन लोग कहते हैं हमारे यद्वा तो सर्व देव मयोन्मत्त लिखा ही है जितना बन सकै इनका आदर करो। कितने यद्वा के नियासी ऐसे मूढ हैं कि इन बातों को अब तक जानते ही नहीं। जाने कद्वा से हजारों वरम में राज सुख से वचित हैं। आजतक ऐसा शुभ संयोग आया ही न था कि आप सा सुखद स्वामी इनके नेत्र गोचर हो। इसी से तो आप के आगमन से हम लोगों को क्या आनन्द हुआ है वह कौन जान सकता है। प्रिय! हम सब स्वभाव सिद्ध राजभक्त हैं। विचारे छोटे पद के अगरेजों को हमारे चित्त की क्या खबर है ये अपनी ही तीन छटाक पकाने जानते हैं। अतएव तो दोनों प्रजा एक रस नहीं हो जाती, आप दूर बसे, हमारा जी कीद देखने वाला नहीं बस छुट्टी हुई। आप के आगमन के केवल धरण से हृदय गद्गद और नेत्र अश्रु पूर्ण हमी लोगों के हो जाते हैं और सहज में आप पर प्राण लोकावर करने वाले हमी लोग हैं क्योंकि राजभक्ति भरतखड की मिट्टी का सहज गुण और कर्तव्य धर्म है पर कीर्ति कलेजा खोल कर देखने वाला नहीं। जाने दो इन पचडों से क्या काम। जब आप का आगमन सुना तभी से आप के यश रूपी कीर्तिस्तम्भ को आप के शुभागमन के स्मरणार्थ स्थापन करने की इच्छा थी पर आधि व्याधि से वह संयोग तब न बना। यद्यपि कविता कनाप तो उसी समय समाचार पत्रों में सूचना दे कर पकल किया था परन्तु उन का प्रकाश न भया था सो अब जब कि हम दोनों की अबलम्ब अस्व थीमती महारानी ने

भारतराजराजेश्वरी का पद सङ्गण किया और इस महत् मान से भारतवर्ष को अपनी अपार कृपा से सङ्गल कृतकृत्य किया तो इसी उभ मंगल अवसर पर यह पुस्तक प्रकाश करके हम भी आप के कीमत् चरणों में समर्पित करते हैं कृपा पूर्वक स्वीकार कीजिये और इस को कविता नहीं बरञ्च अपनी प्रजा के चित्त का पूर्ण उद्गार और समुच्छ्वास समझिए। जिस तरह आप और अनेक कौतुक देखते हैं कृपा पूर्वक इस प्रजा के चित्त रूपी भातशी शीशे से ( क्योंकि वह आप के वियोग और अपगी दुर्दशा से सतप्त हो रडा है ) बनी हुई सैरबीन को भी सैर कीजिये और उस परिश्रम को क्षमा कीजिए जो इस के पटने में हो क्योंकि हमने तो चाहा कि थोडा ही लिखे और यह बहुत थोडा ही है पर आप को श्रम देने को बहुत है।

१ जनवरी  
१८७७ ई०

}

हरिसुन्दर

# मानसीपायन ।

हिंदी भाषा ।

श्रीमन्महाराजाधिराज परमप्रतापी त्रियुत महाराजकुमार प्रिन्सभाफ  
वेल्लम शभागसन सम्बन्धी कविता श्री बद्रीनारायण कृत ।

दीहा ।

राज कुमारा गमन सुनि , बाव्यो चित मै चाह ।  
कीरति यश बरणन करत , तासु सहित उल्साह ॥ १ ॥  
इक सुख सौं क्यों कहि सकू , कीरति अमन अपार ।  
सेस सकै नहि गाय करि , सीस हजार हजार ॥ २ ॥  
तदपि यथा मति कहत हौं , श्री गुरु चरणहि ध्याय ।  
जिमि पिपील जलजलधिककु , अम करि चाहत त्याय ॥ ३ ॥  
महरानी विकीरिया , लण्डन जासु निवासु ।  
रिपु चखचौधी देत रण , युद्धि प्रभाकर जासु ॥ ४ ॥  
जासु राजसी साज लखि , सुरपतिहू सरमात ।  
धर्म राज से जात ठगि , देखि अदालत बात ॥ ५ ॥  
पोनलकोडरु पुलिस पुनि , मैजिसट्रेटी देखि ।  
निज करतव गुनि वृथा यम , सम अमलन अवरेखि ॥ ६ ॥  
धूआकस तोपें घड़ी , रेल तार सुधिमेखि ।  
विद्युकर्मा धीरे भये , किलन पुलन अवरेखि ॥ ७ ॥  
शोक व्याधि से असित मे , धन्वन्तर ऋषि राज ।  
लखि महौषधाशयन मह , डाकतरन के काज ॥ ८ ॥  
शारद शुक्र गजाननहु , सेसहु समय विसेखि ।  
कालिज युनीवरसिटिन , इस्कूलन अवरेखि ॥ ९ ॥  
छोट करेन्सी प्रमिसरी , टिकट स्टामप टेर ।  
देखि चरित्र देख यह , सीपत खरे कुवेर ॥ १० ॥  
अत्यागमन जहाज को , सिन्धु माह लखि निस्त ।  
त्याग भवन भगिणो चाहत , वरुण सगकित चित्त ॥ ११ ॥

## सीरठा ।

देवन की यह छान , श्री उपमन की को गने ।  
 रानी परम कृपान , श्री कूडन विकटोरिया ॥ १२ ॥  
 सबैया ।

जाकी प्रजा सदा निर्भय सीवती काटती द्योस सदा मा मानी ।  
 बट्टी नारायन न्याय प्रबन्ध सी कोऊ न काहू सी वैर सनानो ॥  
 तो सम कोऊ न राज लख्यो थक्यो टूटि मिनै नहि दुष्ट निसानो ।  
 ही टक्टोरिया या जग में चिरजीव रहो विकटोरिया रानी ॥ १३ ॥  
 दोहा ।

जिन माख्यो सब दुष्ट जन , भनी भाति दै टण्ड ।  
 जयति कूडन विकटोरिया , परम प्रताप प्रचण्ड ॥ १४ ॥  
 न्याय चन्द पङ्कज यमन , नामि शस्त्र हिम पाहि ।  
 भारत कुमुद विकासि निज , राज यामिनी माहि ॥ १५ ॥  
 जासु राज में सब प्रजा , भोजत नर्भय होय ।  
 जासु राज में दुष्ट जन , काटत नीव न रोय ॥ १६ ॥  
 जासु राज में यमन सब , बोलत सीधी बैन ।  
 जे नित छूरी देखते , अब शीश उभरैन ॥ १७ ॥  
 जे नित लाखत जीव को , हतत हते विन काज ।  
 सीधी भूषण धारिते , निसदिन पटत निवाज ॥ १८ ॥  
 जे छा की युगतो नखत , लेत छैठ कर मूळ ।  
 ते अब नजर बचावते , जात दबाये पूछ ॥ १९ ॥  
 देवालाय विच सुसि करत , लीन विविध उतपात ।  
 ते उत तनिक विनोक्तहि , कीडन धक्के खात ॥ २० ॥  
 अग्नि मांदि जरि लाइयो , इजह हनी निवाह ॥  
 तह विधवा युवतीन के , होते पुनर विवाह ॥ २१ ॥  
 जहि भय बस भारत सुता , जल्पत तुरत मरात ।  
 ते तिमक अब पटा हित , इस्कृगन में जात ॥ २२ ॥  
 कह नग वरणा कीजिये , कीरति अमन अपार ।  
 भवतही शक्ति गुरु , पै नहि पै पार ॥ २३ ॥

तासु पुत्र आगमन में , मंगल मै चहु ओर ।  
 करव सभै सत्कार बहु , दे दै ,धाहि अघोर ॥ २४ ॥  
 अब ह्या तो धन रह्यो नहि , तसो आशिय कोर ।  
 है प्रसन्न खोजत करो , यह बिनऊ कर जोर ॥ २५ ॥

सवैया ।

लहि नीति भले प्रजा पालिके आछे वनी सदा भारत प्रानपियारे ।  
 जोयो हजार बरीस ल्यो दोस हजार, बरीस समान जे भारे ॥  
 बट्टीनारायन होय प्रताप अखड , महा महाराज हमारे ।  
 यो चिरजीवी सदाइ रही मुख सौं बिकटोरिया के लु दुलारे ॥ २६ ॥

श्री रामराज सुख प्रिन्स,आफ वीन्स ।

दोहा ।

राजा महाराजा महत , जे स्वाधीन प्रधान ।  
 दर्शन अभिलाषी सकल , प्रिन्सविल्स सन्मान ॥ १ ॥

सोरठा ।

धन्य धन्य शिव देश , धन्य मही धनि महिपतो ।  
 सुन्दर सुखद सदेश , रामानन्द ह्यित सुनत ॥ २ ॥

त्रौपाई ।

काशी परम प्रकाशित प्रेमी । जपत प्रिन्स जसु मिलि बस जेमी ॥ ३ ॥  
 रामराज जिमि अंध तयारी । काशी तस निज पुरी सवारी ॥ ४ ॥  
 आगस गहजादा सुख माची । काशिराज प्रेमी , शचि साची ॥ ५ ॥  
 रामनगर शोभा सुख रासी । राजभवन को शोभा खासी ॥ ६ ॥  
 बाट घाट मन्दिर कुनवारी । रचि रचि काशीराज सवारी ॥ ७ ॥  
 दोष दान शुभ देखि तयारी । उज्जित होय दिवारी हारी ॥ ८ ॥  
 दर्शन हेतु सुखी नर नारी । उज्जल करि करि भवन अटारी ॥ ९ ॥  
 श्री काशी काशीपति राजा । प्रिन्स विल्स दर्शन के काजा ॥ १० ॥  
 साजे रूई सुन्दर सब साजा । आगम महित जगत महाराजा ॥ ११ ॥  
 को वरनै शोभित सुख सारी । काशिराज निज भवन तयारी ॥ १२ ॥



आनन्दित सब पुर नर नारी । बाल हृद सुनि देखि सुखारी ॥ ११ ॥  
जो सब गगा निकट दिवालय । जग मग मन्दिर घाट दिवामय ॥ १४ ॥

दोहा ।

प्रिन्स अफ वेल्स प्रताप तें , जगमग जगमग जोति ।  
परत चरन जेहि नगर में , सब सपति शुभ होति ॥ १५ ॥

सोरठा ।

सुर नर देत अशोथ , राजा महाराजा सकल ।  
अजर अमर जगदीश , रामानन्द सहाय शुभ ॥ १६ ॥

चौपाई ।

जागे भाग जगत के भीके । पूजे सकल मनोरथ जीके ॥ १७ ॥  
उपजे सुख सब के मन पाहीं । शुभ चर्चा माची जन माही ॥ १८ ॥  
शानी विकटोरिया प्रवीणा । ताके सुत युवराज नवीना ॥ १९ ॥  
श्रेष्ठ सुपूत सुसील गभीरा । तेजवान विज्ञान सुधीरा ॥ २० ॥  
कोमल शोभनीय सब भाती । माननीय सद्गान सुजाती ॥ २१ ॥  
सुधा वचन परमारथ साधु । रामानन्दित प्रेम अंगधू ॥ २२ ॥  
जग जन के सुद मगल दाता । धन्यसराहिय पितृगुरुमाता ॥ २३ ॥  
धन्यभागजन निसदिनलेखत । अष्टपहर खोचन भरि देखत ॥ २४ ॥

राग बहार ताल तिताला ।

धन प्रिन्स वेल्स आये काशी धाम । सब के मन भाये पूर काम ॥ २५ ॥  
मगल तिथि नौमी शुक्ल साक्त । उन्निस सौ बत्तिस पूस माक्त ॥ २६ ॥  
अठरह छिहतर ईसवी साल । जनवरी चौथ तारीख हाल ॥ २७ ॥  
मिले राज घाट सब विविध भूप । दर्शन सुन्दर शोभा अनूप ॥ २८ ॥  
सब दीप दीप के बादशाह । तामध शोभित इगलडनाह ॥ २९ ॥  
बाजत बाजे बहु विधि प्रकार । रामानन्दित मगलाचार ॥ ३० ॥  
श्री विश्वनाथ आनन्द रूप । निजधाम देखि इगलड भूप ॥ ३१ ॥

चौपाई ।

रामानन्द विनय कर जोरे । आशिख देत बहोर बहोरे ॥ ३२ ॥

रामानन्दराय

साविक सब डिपटी इन्स्पेक्टर मिरजापुर श्रीर बांदा तथा सुनशी गदर  
बारास ।

## सौरठा ।

जय जय जय जुवराज , सहित सहित जननी जियहु ।  
 राज काज के काज , सह समाज राजत रहहु ॥ १ ॥  
 जब तैं तुमरो राज , आरज भूमी में भयो ।  
 तब तैं दरसन आज , पायो धन धन भाग मम ॥ २ ॥

## दीहा ।

मुकुट त्रिटिम की प्रथम मिर , जब धरिहौ युवराज ।  
 मुमिरेहु हमरे प्रेम की , थीयुत सहित समाज ॥ ३ ॥  
 बदन इन्दु सुन्दर रदन , कुन्द कानी की पाति ।  
 देखि आख साखी भरत , सील न कहो सिराति ॥ ४ ॥

## सौरठा ।

तरनि बरनि नहि जात , आना माना जोग जो ।  
 पेखि प्रजा बन जात , बिकसत इत उत मन सुदित ॥ ५ ॥  
 भूमि चूमि कै नाथ , दाय बाधि विनती करीं ।  
 यहि समाज के माथ , पहुचत जननी टिग कहेउ ॥ ६ ॥

## दीहा ।

भाभी भारत बरस की , जस दरसति सति भाय ।  
 शुभ चिन्तकता चिन्तिउर , उचित कहेउ समभाय ॥ ७ ॥  
 अब सब के अगमन परी , पूरे पूर प्रतीत ।  
 राजदरस मानस सरस , बिकसे बनज बिनीत ॥ ८ ॥  
 राजमुकुट को अटल है , सिर धरि हौ युवराज ।  
 घट घट व्यापी सी रटत , रहत रावरे काल ॥ ९ ॥  
 तुमरी थी जननी सुगी , है स्वामिनी हमार ।  
 तासुताय ययनन निरखि , हरखत हृदय अपार ॥ १० ॥  
 राज इस सम राज गुन , राजत गात गभीर ।  
 नीरक्षीर मिथित बिषय , बिलगावत धरि धीर ॥ ११ ॥  
 दरस पियासे आप के , सरस प्रेम अनुराग ।  
 बरसत नयनामृत सुषट , जागि उठे जनु भाग ॥ १२ ॥  
 राजसिंहासन मह जगहि , राजीगे युवराज ।

इन दीनन की दीनता , भूखी मत महाराज ॥ १२ ॥  
 बिन देखेहु इगलेंड में , सुत सो लेखेहु मोहि ।  
 इन नयान ते निरखि कै , फिरि कस दयान हीहि ॥ १४ ॥  
 भरतखंड इगलेड दीड , हैं भुज दड प्रचड ।  
 दच्छिन को दच्छिन भयो , पाइ पच्छ वरिवड ॥ १५ ॥  
 आनन्द बन को बनत नहि , बरनत अति आनन्द ।  
 शुभागमन ते भोगुनो , बढौ आज स्वच्छन्द ॥ १६ ॥

सौरठा ।

बहुत दिनन में जात इन नयन कह निधि जु मिल ।  
 निरखत नही अघात , कासी बासी जन सकल ॥ १७ ॥

दीहा ।

फिर कबहू अवसर मिले , दरभ दीजियो नाथ ।  
 यह दिनवत कर जोरि कै , धारि चरन पर माथ ॥ १८ ॥  
 धन्य धन्य वे धन्य है , रहत रावरे साथ ।  
 दयायुक्त दाता निरखि , कोन पमारत हाथ ॥ १९ ॥

कल्लू जी हनवाई की कविता ।

दीहा ।

सकल प्रथा आसीस यह , राज कुपर को देत ।  
 बढै राज यस धर्म बुधि , ईश्वर भक्ति समेत ॥  
 बहुत कान तक जीवहू , करहु अमित सुख भोग ।  
 कगहु न कोउ कह रिपुर है , मित्र होय सब भोग ॥  
 उचित युक्ति अरु न्याय ते , देवहु मजहि अनन्द ।  
 अति उज्जल निशि को करै , ज्यो पूो के चन्द ॥

पडित नानविहारी शक की कविता ।

कविता ।

बघी सुरराज चतुरगिनी समाज करि जोति सब राज दिक्पालन सो

साज्यों है । साज के समाज महाराज सब राजा के जील्यौ छितिपाल कवि  
छोनिही मे छाज्यौ है ॥ पाख्यौ प्रजा पूर्वही परीक्षित सुधर्म कर्म वैसही  
पुनीत पीत शास्त्रमो विराज्यो है । ऐसो महाराज अधिराज प्रिन्स आफ  
वैल्स राजन के राज युवराज आज राज्यो है ॥ १ ॥

महि में भरजाद महाराज मम राज नित्य राखत महाराज महाराजो  
मनभाया है । आनन मम इन्दुकात राजित जस विन्स वस उदभव गोरख  
खण्ड पृथ्वी सब पाया है ॥ साजित दल चार तामे राजित भुक्तुमार प्रिन्स-  
आफवैल्स राज राजकाज हू में काया है । ऐसो धराधीर धर्म कर्म हू में बीर  
सर्व सपत के बीर वेद वर्ण हू में गाया है ॥ २ ॥

श्रीनारायण कवि कृत ।

### दीहा ।

महारानि विकटीरिया , ताको सुत समरधथ ।  
मनु मुलुक देखन चख्यो , करि करतूत अकधथ ॥ १ ॥  
परम प्रससित जासु गुन , अरि गसित रणधीर ।  
अस धरे मनु इस को , प्रिन्स बहादुर धीर ॥ २ ॥

### सोरठा ।

देखत देस अनेक , मिलत नरेसन सौं चख्यो ।  
धरे हीय में टेक , पुरी काशिका में अयो ॥ ३ ॥  
परम प्रताप पसार , प्रजा पुज पालन करत ।  
महा मोद मन धार , करि काशी आगमन सो ॥ ४ ॥

### दीहा ।

लगमगात चहु ओर तें , जोतिमद भई आज ।  
आवन सुनि लुवराज को , काशीपुरी दरान ॥ ५ ॥  
खासी कासी गुनभरी , रासी सुख की होय ।  
अभिलासी भासी सुनत , प्रिन्स आगमन जोय ॥ ६ ॥  
निपुन पीति निरमल नयो , नरपति को ले सग ।  
पैम पिदाहत में दियो , कर काशी में रग ॥ ७ ॥

## कवित्त ।

लाट रजिडट जरनेन करनेस कइ सुवेदार मूवा सब साहव सोहायो है ।  
 तुपक तमचे तोप आदि तरवार चार कौयक सवार भेगजीन मन भायो है ॥  
 छायो है सुवेस देस देस के नारायण जू अजब नरेम सोभा सान सरनायो है ।  
 प्रिस जुवराज रणरगी सैन जगी खिये अगी सो फिरगी मग काशी बीच  
 आयो है ॥ ८ ॥

## कुरुण्डनिवा ।

छायो है कीरति कलित होनहार येसाह । प्रिन्स वहादुर वीरवर नर  
 नाहन को नाह ॥ नरनाहन को नाह देम अवगाहन चारे । मारे शत्रु  
 अनेक मित्र मन सान सवारे ॥ नारायण सजि साज गाज काशी मह प्रायो ।  
 सुंदर सुखि सुकुमार मार से अति छवि छायो ॥ ९ ॥

चतुवेद्युपाह्व श्रीलोकनाथ शर्मा ॥

॥ अथ युवराज शुभागमन वर्णन ॥

## दोहा ।

जयति जयति अति सति विमन , श्रीसति सुत युवराज ।  
 प्रजा विपति कापति खरि , नरपति पति सिरताज ॥ १ ॥  
 तव शुभ आगमनै सुनत , गमन अशुभ पुर पुण ।  
 भारत खड अखड तें , है रहे भारत कुज ॥ २ ॥  
 सकल प्रजा गन सुमत तें , सुमन वृष्टि भरलाय ।  
 करत गान चौगान बिच , अति अरमान जनाय ॥ ३ ॥  
 अस बुधि मन्त हिमन्त की , द्वियो वसन्त बनाय ।  
 सन्तत सन्त सबै सुदित , खग मृग लन्तु जाय ॥ ४ ॥  
 कुज पुज पुर पुर सकल , मजु प्रजा गन कीन ।  
 कज खज अलि गज सम , नर नारी रम भीन ॥ ५ ॥  
 देवारी वारी सुखि , सुघर (सवारी लोग ।  
 वारी तन मंग धन सबै , नर नारी जेहि योग ॥ ६ ॥  
 यह कलि काल करान बिच , लखि अधियार अपार ।

दीपावलि भलि भात सलि , कुवर कोरु उलियार ॥ ७ ॥  
जब प्रभु भारतखड के , होहु अखड नरेश ।  
तबहु छपा ऐसिहि रतेहु , गुनि शुभ चिन्तक देश ॥ ८ ॥  
शुभचिन्तकता मित्रता , सहित नृपति जे होहि ।  
ताकी गुरुता सुहितता , कीजी निज पैद जोहि ॥ ९ ॥  
परम भलि अनुरक्ति युत , प्रजा अशक्ति जुदीन ।  
ताय ह्मपाऽऽकर छपा कर , दया मया रस भीन ॥ १० ॥

—०००—  
मुनधी कामनाप्रसाद छत ।

जाहिर जहान ऐसी कोऊ न सुन्योरी कान नाम इङ्गलखड जग विदित करायो है । चारी ओर समुद्र सुखाई सी बनी है तेसी तट वप्र बलय सु दुर्ग छवि लायो है ॥ रच्छा करे लाखन चहाज जासु सलि बलि शत्रु को विनास करि भय की नसायो है । तेज भी प्रताप लखि मूरहु नै जा यल पै होइ मन्द दीधित सुरथ की चलायो है ॥ १ ॥

सवैया ।

बालक मोच की त्यागि भई तिन की जानी बस जन्म निदानी ।  
पालन पोषन तैं परजात की जात परी सोइ मातु समानी ॥  
दु ख कलेस को सव्द बच्यो इक वास्तव मै कहु नाहि लखानी ।  
भाखैं कहा कहु ताहि बनै जग ऐसी हमारी अहै महरानी ॥ २ ॥

कवित्त ।

हुट जा दापो तिमि कीरति सुयस थापो कवर प्रतापो अभिलाख मन भरि रह्यौ । पाइ कै रजायसु त्यों मातु महरानीहु तैं भारत विशोकन की इच्छा दृढ करि रह्यौ ॥ बडेबडे पद युत लार्ड ओर अकन लै इत की तयारी करि साज बाज धरि रह्यौ । ऊच गोच लहु बड सब ही सभा जन तैं धन्य धन ऐसी चहुदिस तैं उचरि रह्यौ ॥ ३ ॥

दोहा ।

धन्य धाम धन भूमि सोइ , धन नगरी धन देस ।  
विचरि जहां सुख देइहैं , जनु रोहिनि नखतेस ॥ ४ ॥

## कथिच ।

होइ रही सुदर सफाई देस देसन में अति ही आनन्द प्रीति प्रजा मन पाई है । गूजि रही स्वागत मुधुनि जाइ नमहू लीं नगर वगर माभ वाजति बधाई है ॥ फूले फूले डोले फिरैं इत उत राजा राउ आनद की सरिता चहू घा उमडाई है । बिजै की निसानी महारानी के कुवर जू की भारत में देखी अब हाल ही अवाई है ॥ ५ ॥

गृह न पुतावी तिमि महल सजाओ चारु स्वच्छ करवाओ अरु बीधिन सिगारोरी । तोरन टगाओ कुभ मगल धराओ तैसे केतु फहराओ दीप चौ सुख उजारोरी ॥ दूब दधि अच्छत श्री रोचना सुधादिक लै द्रव्य सब थारन में सुन्दर सवारोरी । प्रान रखवारे प्यारे भारे महाराज हेत तन मन धन सब धार फेर डारोरी ॥ ६ ॥

## कृष्ण ।

मिटै दिवाकर भले जो सब ब्रह्मण्ड प्रकासक ।  
घटे निसाकर कला सबै जो जग दुख नामक ॥  
जुग जुग तें चलि अये चहै जग नियम उलटै ।  
गग जमुनहू सोखि अमृत जल चहै बिघटै ॥  
तिमि टूटिपरै तारा नखत भूमि बटै सागर घटे ।  
पै राजरोति मरजाद सीं इनकी दृढपगनहिहटै ॥ ७ ॥  
सन्तति सम्पति सुखी भये पालै नित सोई ।  
प्रीति प्रजा को अधिक सदा राजा मै हीई ॥  
इत भीत आदिक रुज कबहू नही सतावै ।  
है सुतन्त्र निरभालस सब उन्नति जिय लावै ॥  
तजिखेतै कृष्णससयसवै राजकरी दिनदिनअचर ।  
कमलाकर हम मागत यहै सदा ईस सीं जोरि कर ॥ ८ ॥

## राजस्तोत्र कृष्णय कृद ।

बुध जा कर मध्यस्य भाय तज पचपात दिन ।  
प्रतिबिंब बैा सत्य रूप मन सत्य गद्ये बिन ॥

कवियन गूथित ग्रन्थ बहुत ही दृग गत आये ।  
 पराचीन परिमाण नृपन के यश जेह गाये ॥  
 तुम कविजनवचन बिलासकी रसिक चासनहि उरधरो ।  
 लाख चरित सबनके सुभ असुभ नीति रूपनिरणय करी ॥ १ ॥  
 निज कुल धन निज काज धर्म निज निकट वर्तिजन ।  
 किन तिन की नहि पक्ष कियो सुभनीति छाडमन ॥  
 किन परहित परदृष्टि करी निज अर्थ गौण कर ।  
 किन लीनो संकोच राज कर सौं अघाय कर ॥  
 हम जो देखा मो आप का धन व्यय का लेखा करै ।  
 नहि तनक प्रजा को ओर भी हान लाभ देखा करै ॥ २ ॥  
 औरन की यह कही कछू अब वर्तमान की ।  
 श्रीमतमहाराजी प्रसिद्ध यश गुण निधान की ॥  
 विक्टोरियाप्रशंस नाम सुभ असुभ नसानी ।  
 योरूपी इंगलैंड देश लदन रजधानी ॥  
 जो सतति कर बहु काल सौं सतापित चासितहुती ।  
 सोभारत हू जिस कौ भई दृग शसि सौं अमृतवती ॥ ३ ॥  
 जिस की दृष्ट तुना के हैं द्रोऊ समपक्षे ।  
 निच उच में तदुनाश पासग नहि भक्षे ॥  
 अपनी सी दुख करै दिये लखि पीर पराई ।  
 सुनै विन सौं अधिक नेह धर दीन दुहाई ॥  
 मनु प्रजा वात्सल्य अग की सचसुच इक मूरत ठई ।  
 धरमिनदया लताहित निमितसोचतहै नितविध नई ॥ ४ ॥  
 भारत की सब प्रजा अविद्या रोग ग्रसित लख ।  
 वैद्यराज समताह निमित उपचार कियो लख ॥  
 हृद रूप उपचार दृष्टि आवत प्रति अहनिच ।  
 तोभी केषल अरुज भयो नहि यह अभाग तिस ॥  
 नितलखउचति जुगराज की वर्ततहै आनदुनिसी ।  
 सो देखसु हित रैयत तनी परिफुलितमनहैतिसी ॥ ५ ॥  
 यहाँ न हीय दोनों पर सम सतुष्ट सुभावी ।  
 दोनों का हित जान परस्पर अविना भावी ॥



मोहन मंत्र समान प्रज्ञामग मोहन काजा ॥  
 लोकीत्तम गुण राग लोक प्रिय यह युवराजा ।  
 हैतक्षणप्रताप सुतरुणवयतरुणारुणप्राक्तन कला ॥  
 सब रिपुगणकर धरदृगनपर देखवक्तभुवजनाजला ॥ ६ ॥  
 भारत भुवतिय भाग जगो इस निश्चै आयो ।  
 प्राणगाथ घर हीनहार सी सगम पायो ॥  
 यहदपति सयोग सखी सुरवानी लख कर ।  
 सी सी सगुन मतावत मगलरूप विघन हर ॥  
 इस कामनिके मन उमगकीजानतहैसबरीत यह ।  
 इस सी पावै निज पोपना मानदान सदेह काह ॥ ७ ॥  
 राजकुमार श्रीमान प्रेसभफवेल्म सदा ही ।  
 रही जदपि इडलेंड बमो भारत मन माहो ॥  
 सुभ विचार दित रही रही सज्जन चितबल्लभ ।  
 दुरजन जन को छिद्र हीरा हो अति दुलभ ॥  
 तुमसुनतसार सुभभागमन रोमाचित जनहिदके ।  
 है रकराव सब मधुपगण लुब्धित पद अरविद के ॥ ८ ॥  
 घाति कर्म छयकार परम भट्टारक जिनवर ।  
 वीतराग सर्वज्ञ वीर अतिम तिर्य कर ॥  
 करो राज निर्विघ्न हरो रिपु गण दुख कारा ।  
 बर्हमान ऐश्वर्य भोग सपति परिवारा ॥  
 कहे सतनाम निरपछही सत्यरूप अनुभव किया ।  
 सुनसतपुरपनके चरितको पावत है आनन्दजिया ॥ ९ ॥

श्री राज कुमार चन्द्रोदय ।

व्रजचन्द कृत ।

सौरठा ।

राज कुशर सुखचन्द , जगनगात काशी पुरी ।  
 पुलकित लक्ष्मिसुदक्षन्द , चसित चकोरसुजान जग ॥ १ ॥  
 चिरजीव सुकुमार , रजित नित नव राजश्री ।

जीवा वेल्म अधार , वद्ध सुस्रभवसुकविनसपन ॥ २ ॥  
 तुग तरग उमग , निरखि बख्यो अतिमुदसमुद ।  
 चहकित तट बहुरग , देत रत्न दीपावली ॥ ३ ॥  
 पूर्ण प्रकाश ।

सोरठा ।

ओरह कला निधान , श्रीकाशी राका शशी ।  
 राज कथर सुख जान , जान शिरोमणि राव कोड ॥ १ ॥  
 पाये मान प्रजान , अमृता कला प्रभाव तै ।  
 श्री काशी पति मान , राख्यो कला सु माउदा ॥ २ ॥  
 तुष्ट भये सब दासु , तुष्टि कला अवलोकि की ।  
 भई पुष्टता आसु , पुष्टिकला जिन जिन लखी ॥ ३ ॥  
 बेरिहु चित अति प्रीति , प्रीतिकला निरखत नयन ।  
 मेमग हिय रस रीति , जगमगति लखि रतिकुला ॥ ४ ॥  
 लजे सर्व कवि धाम , चिन्तकत चित लज्जा कला ।  
 छाई श्री सब ठाम , उन्नत सुहावनि श्रीकला ॥ ५ ॥  
 दृष्टि पितर लखि नैन , स्वधाकला सुमरीचिका ।  
 विश्रामो सुद दैन , राति कला कर विमल वर ॥ ६ ॥  
 हरनि सकल परिताप , निरखहु जोतिझाकला ।  
 मिटत मछा तम ताप , हसवती कर परसतै ॥ ७ ॥  
 गे कविता हरियाय , पाइ कछुक छायाकला ।  
 पूरन सुद दरसाय , कला पूरनी सौ सदा ॥ ८ ॥  
 सज्जहि सुपद सुभाय , वामा अभिरामा कला ।  
 निरखहु अतिचितपाय , आलु हुइ निर्भर निकार ॥ ९ ॥

सब कह जीवन दात , अमा कला परिमान गत ।  
 जानहु अति अवदात , यह चन्द्रोदय उदित नित ॥ १० ॥

श्रीहरियन्द्र कृत ।

आओ आओ हे जुवराज ।

धन धन भाग हमारे जागे पूरे सब मग काज ॥

कह हम कह तुम कह यह धन दिन कह यह सुभ सयोग ।  
 कह इत भाग भूमि भारत की कह तुम से नृप लोग ॥  
 बहुत दिनन की सूखी दाढी दोना भारत भूमि ।  
 नहि है अमृत वृष्टि सी आनन्द तुव पद पकज चूमि ॥  
 जेहि दलमन्थी प्रबल दल नै कै बहु विधि जवन नरेस ।  
 नाखी धरम करम सबहिन के मारि उजाग्यी देस ॥  
 पृथोराज के मरे लख्यी नहि सी सुख कबहू नैन ।  
 तरसत प्रजा सुनन की नित ही निज स्वामी के बैन ।  
 जदपि जवन गन राज कियो इत ही बसि कै सह साज ॥  
 पै तिन की निज करि नहि जाख्यी कबहू हिनदु समाज ।  
 अकबर करि कै बुद्धिमता ककु सी मेखी सदेह ॥  
 सोष दाशमिकोह लौ निवही श्रीरग डारी खेह ।  
 श्रीरहु श्रीरगजेव दियो दुख सब विधि धरम नमाय ॥  
 निज कुल की मरजाद मान बल बुधिहू साथ घटाय ।  
 ता दिन सी दुरलभ राजा सुख इन हि इकन्त निवास ॥  
 राज भक्ति उखाहादिक को इन कह नहि अभ्यास ।  
 जदपि राज तुव कुल को इत बहु दिन सी बरसत छेम ॥  
 तदपि राज दरसन विनु नहि नृप प्रजा माहि ककु प्रेम ।  
 सो अभाव सब तुव आवन सी मिथ्यो आज महाराज ।  
 पुग्यौ प्रेम देस देसन में प्रसुदित प्रजा समाज ॥  
 आवहु प्रिय नैनन मग बेठी हिय मैं लेहु छिपाय ।  
 जाहु न फिरि तजि भारत की तुम हम सी नैह लगाय ॥

# मानसोपायन ।

पञ्चाशो भाषा ।

दोहा ।

चारे पासे सुणीदा , अज्ज मगलाचार ।  
सब नादे दिन खिडपए , खिड दीजिवे बहार ॥ १ ॥  
नान खुमी दे पूरिया , मारा हिन्दुस्ता ।  
दूणी छवि ही निकली , जिऊ मुड हो आलु भाग ॥ २ ॥  
होया चानण जगत विच , नाले बडा अनद ।  
जिउ चमकत असमान विच , सौ सूरज ते चद ॥ ३ ॥  
सरपर दे जन निर्मले , खडीया सब गुनजार ।  
बीलण नान उमगदे , पै छीवही डार ॥ ४ ॥  
होया आण अचाणचक , सब गानू उतसाह ।  
वगिया दरिया खुशीदा , जिसटा पवेन थाह ॥ ५ ॥  
कोडी दे घर आप जो , आवै चहत्त रेण ।  
क्यो ना मन्ने आपणे , धन्न भाग धन नेण ॥ ६ ॥  
मिहर नजर कर आइया , जिमटा शाहनशाह ।  
परजा भारत खड दी , किऊ न करे उतसाह ॥ ७ ॥  
नान सफाइ देस जे , केहे सभो देस ।  
गम उड गया जहा न थी , कर पै छीदा भेस ॥ ८ ॥  
धन लच्छमी रूप है , उह मनिका जग मात ।  
जग सवाइया खावदा , जिस दी दिती दात । ९ ॥  
जिस देकु खोजर मियां , केही चगी रुचु ।  
होया टिक्का जगत विच , इह मल कादा पुचु ॥ १० ॥  
नेणादा फल मिलूगा , माडे बडे नसीब ।  
दरसन देण जु आइया , सातू जाण गरीब ॥ ११ ॥  
सारी परजा चाहदी , एहो कर इक चित ।

किरपा चाडे तेकरी , दरसन देवी नित्त ॥ १२ ॥  
 राजी हिदुस्तान दे , होही बडे गिहान ।  
 चले अग्नी लैण नू , लशकर फौजा नाल ॥ १३ ॥  
 पहिला सजबज खलिया , महाराजा कश्मीर ।  
 बडा सिह जो सूरमा , आखीदा रणबोर ॥ १४ ॥  
 धन्न महिदर सिह जी , पटियाला महाराज ।  
 शहजादे दे मिलण नू , चले कर के साज ॥ १५ ॥  
 धन्न जगत बिच जाणिये , उपकारी दा जन्म ।  
 इक शहजादे दे सबब , होए किन्ने कम्म ॥ १६ ॥  
 असपतालहन बण गए , कइ नवेहुण होर ।  
 जिल्ये होसी दुखीटा , दास भावें चोर ॥ १७ ॥  
 कई वण इम्कूलहन , शहजादे इकवाल ।  
 जिल्ये होसी इलमदी , चरचा बडी कामाल ॥ १८ ॥  
 छापे खाणे बण गए , कई नवेहुण , होर ।  
 देखी टूणा हो गया , अखबारादा जोर ॥ १९ ॥  
 मुहताजादे वास्ते , बहुते बण मकान ।  
 जिल्ये होवेगी सदा , रोटी टी गुजरान ॥ २० ॥  
 कइ मदरसे हुनर दे , बण दे रंगारंग ।  
 लुडोया सिध्या वास्ते , हुदा किते उमंग ॥ २१ ॥  
 शहजादे दा प्रावणा , होहा सुहादा मूल ।  
 वरती टड लु सुखक बिच , मिट गए सभे मूल ॥ २२ ॥

कवित्त ।

होए धन्न भाग मिल गाधनी सुहाग अज्ज सुख पए जाग मुण शहजादे  
 व्यावणा । हुदीया तियारी किते दीप भाला दीया भारी मालीया नेधागानू  
 यो खुब है मजावणा ॥ गाठदोया गोरीया पजाव दीया घर घर देखी केहा  
 देस सब्यो होया है सुहावणा । राजी कश्मीर जालियावणा है अग्नी धसा  
 अज्जता जरुर फलु अखिया दा पावणा ॥ २३ ॥

धन्न महारानी विकटौरिया सुनखणी है लच्छमी टा रूप जिनू वड्डे  
 लींग गावदे । जिमदी दुहाई अज्ज फिरदी है लग सारै राजी रक दीर्थे लीनू  
 इको जैरे भावदे ॥ प्रोस भाफ वेल्ल ठोदा आखीदाए टिका पुत्त एही

पातशाह हिन्दवाली छोदे थावदे । राजे देसा देसा दे जा ल्यावदे नी बग्गी  
 डोनू वड्डीया बहारा नाल सैलानी करावदे ॥ २४ ॥

एसते मिह्र अज्ज आय करतार दीये मोला कला सपूरन सग्गे गुण जा  
 णदा । सेउदा धरम सदा प्यार है इल्लम नाल नदन दी सोणीयादा प्राण  
 पूरे हाणदा । प्रिन्स आफ वेल्स विच इक्की गुण लख्ख जेहा आपणे परेमी  
 यादे प्रेम नू पछाणदा ॥ आखे बडा निक्का एदा तुरे जग सिखा जीवे मलका  
 दा टिक्का जग मौजा चिर'माणदा ॥ २५ ॥

कवित्त । प्रेम विच भिन्ने चम्मे फोर्जा नू सजा के राजे वज्जदे नी दाजे  
 बग्गी केहे मन भावदे । चलदीया तोपा भारी करण सलामी खुश भातो भात  
 दीया सग्गे नजरां चढावदे । होया उतसाह साडा एही पातशाह धन्न प्रिन्स  
 आफ वेल्स अज्ज सेलनू जी आवदे । पावदे परम प्रेम परजा दे लोग सारे  
 दिलदे उमग नाल नित गुण गावदे ॥ २६ ॥

अङ्गिल ।

निग्घिर रहिसी धरति जलवगन उदाली ।  
 हा असमानी चद सुरज चीनाले ॥  
 आखे सुकव निहग प्रेमि मंतवाला ।  
 ही सच्चा सतगुर तेरा रखवाला ॥ २७ ॥

दोहा ।

उचीसी वत्ती, वर्डा, गिरकत्ते दा माह ।  
 प्रिन्स वेल्स दी इहुरची, कविता कव उतमाह ॥ २८ ॥  
 मित्र असाडा जाणियो, कवियादा सरदार ।  
 आखे थो हरिचन्द दे, इह कुज कीती कार ॥ २९ ॥

इति श्री महारानी विकटोरिया राजकुमार, श्रीयुक्त प्रिन्स आफ वेल्स  
 समागमोत्साह वर्णा पंडित सतोप्रसिद्धशर्मारचित समाप्तम् ।

किरपा चाडे तेकरी , दरसन देवी नित्त ॥ १२ ॥  
 राजे हिदुस्थान दे , होही बडे निहान्न ।  
 चले अग्नी लैण नू , लशकर फौजा नाल ॥ १३ ॥  
 पहिना सजबज खलिया , महाराजा कशमीर ।  
 बडा सिंह जो मूरमा , खाखीदा रणबोर ॥ १४ ॥  
 धन्न महिदर सिंह जी , पटियाना महाराज ।  
 शहजादे दे मिलण नू , चले कर के साज ॥ १५ ॥  
 धन्न जगत विच जाणिये , उपकारी दा जम्म ।  
 इक शहजादे दे सबब , होए किन्ने कम्म ॥ १६ ॥  
 असपतालहन वण गए , कई नवेहुण हीर ।  
 जित्ये हीभी दुखीदा , दारु भावें चीर ॥ १७ ॥  
 कई वणे इस्कूलहन , शहजादे इकवाल ।  
 जित्ये होसी इलमदी , तरचा बडी यमाह ॥ १८ ॥  
 छापे खाणे वण गए , कई नवेहुण हीर ।  
 वेखो टूणा हो गया , अखबारादा जोर ॥ १९ ॥  
 सुहताजादे वास्ते , बहुते वणे मकान ।  
 जित्ये होवेगी सदा , रोटी दी गुजरान ॥ २० ॥  
 कइ मदरसे हुनर दे , वण दे रगारग ।  
 कुडोया सिरया वास्ते , हुदा किते उमग ॥ २१ ॥  
 शहजादे दा आवणा , होहा सुखादा मून ।  
 वरतो टड लु सुख विच , भिट गए सभे मून ॥ २२ ॥

कवित्त ।

होए धन्न भाग मिल गाउनी सुहाग अज्ज सुन्न पए जाग मुण शहजादे  
 आवणा । हुदीया तियारी किते दोष माला दीया भारी मालीया नैवागानू  
 थो खुब हे मजावणा ॥ गाठदीयां गोरीया पजाव दीया घर घर वेखी केहा  
 देम मव्यो होया हे मुहावणा । राजे कशमीर जानियावणा हे अग्नी असा  
 अज्ञता जर फलु अखिया दा पावणा ॥ २३ ॥

धन्न महाराजो विकटोरिया सुनवणी हे लच्छमी टा रूप जिनु वलडे  
 भाग गावदे । जमदी दुहाइ अज्ज फिरदी हे लग मारे राजे रक दीधे ली  
 जया जेहे भावदे । प्रेम भाफे वेन्ग ठोदा खाखीदाए टिका पुत्त एही

पातशाह हिन्दुवाली डोदे प्रांवदे । राजे देमा देमा दे जा ल्यावदे नी भग्नी  
 डोनु बड्डीयां बहारा नाम सैजानी करावदे ॥ २४ ॥

एसते मिह्र अज्ज भाय करतार दीये सोना कमा सपूरा सग्गे गुण जा  
 णदा । सेउदा धरम सदा प्यार है इत्तम नाम नदा दी सोणीयादा प्राण  
 पूरे हाणदा । मिन्स आफ वेल्स बिच इहो गुण लख्ख जेहा भापणे परेमी  
 यांदि प्रेम नू पछाणदा ॥ आखे बडा निक्का एदा तुरे जम सिक्का जीवे मसक्का  
 दा टिक्का जग मौला चिर माणदा ॥ २५ ॥

कवित्त । प्रेम बिच भित्ते खल्ले फौजा नू मजा के राजे बज्जदे नी याजे  
 भग्नी केहे मन भांवदे । चलदीया तीपा भारी करा सलामी खुश भातो भात  
 दीया सग्गे नजरां चटावदे । होया उतसाह साडा एही पातशाह धन मिन्स  
 आफ वेल्स अज्ज सैलनू जो भावदे । पावदे परेम प्रेम परजा दे लोग सारे  
 दिलदे उमग नाम नित गुण गावदे ॥ २६ ॥

अष्टुल ।

निग्घर रहिसो धरति जलवगन उदाली ।  
 हा असमानी चद सुरज बीनाने ॥  
 आखे सुकव निहग प्रेमि मंतथाना ।  
 हो सच्चा सतगुर तेरा रखवाना ॥ २७ ॥

टोहा ।

उचीसो यत्ती, वर्हा, गिरकत्ते दा माह ।  
 प्रेम वेल्स दी इहुरची, कविता कव उतसाह ॥ २८ ॥  
 मित्र असाडा जाणियो, कथियादा सरदार ।  
 आखे थो हरिचन्द दे, इह कुज कीती वार ॥ २९ ॥

इति श्री महाराजी, विकटोरिया राजकुमार, श्रीयुक्त मिन्स आफ वेल्स  
 समागमोत्साह वर्णन पंडित सतोपसिंहशर्मा रचित समाप्तम् ।



# मानसोपायन ।

गुजराती भाषा ।

गरवो हरियन्द्र कृत ।

आवो आवो भारत राज , भारत जीवानी ।  
दई दरसन दुख एनू , जगम जनमनो खीवानी ॥  
व्यम चन्द्रोदय जोई , चकोर जिय राचे रे ।  
व्यम नव घन आतां नखी मोर वा नाचे रे ॥  
तेहू भारत बासी जनी , तवागम चाहे जी ।  
लखि सुख ससि राज कुमार , मुदित मन माहे जी ।  
आवोआवोप्याराराजकुमार , नई दऊ जावा ने ।  
वान्ना भारत मां सुख बसो , सनेइ बधावा ने ॥  
नई भियू प्रानप्रिय आजि , अरज करू बोलीने ।  
देऊ आज लखाडी तमने , हिरदो खोली ने ॥  
म्हारा भारत बासी अनाथ , नाथ बने नाथे जी ।  
तेथी कोवर बिराजो अइज , अम्हारे साथे जी ॥  
ज्यारे जवन जलधि जले , प्रथीराज रवि नास्थी रे ।  
आजे त्यारं थकी नईं भारत , तेज प्रकास्थी रे ॥  
ते तुव पद नख ससि किरिणे , बाणो वायो जी ।  
फरो फखा भाग्य भारत ना , आनद छायो जी ॥  
वाला दीठखी नव मुखचन्द , कामणगारा नैणावे ।  
धारी थवण पद्या थवणे , तव अमृत बैणा वे ॥  
आजे उमग्यौ आनन्द रस सुख , चारे पासे छायो छे ।  
तेथी तव जस परम पवित्र , कविये गायो छे ॥

# मानसोपायन ।

महाराष्ट्री कविता ।

पण्डित दामोदर शास्त्री कृत कैका छन्द ।

आशिर्वाद ।

असो प्रभुवरा धरा तव यथा यथा सर्वदा ।  
रुसो न कधिही अधी तव प्रजा निजा गर्वदा ॥  
कसो न अरिही करी तव नया जया पाहुनी ।  
फसो न खन दुर्गलग्रहि महीस्थते राहुनी ॥ १ ॥

प्रार्थना ( श्लोक )

आनन्द चा दिवस अज चा सर्व आम्हा जनाशी ।  
स्वामिनभाग्ये उदित जहाला सर्व दु खा विनाशी ॥  
विद्या मपद दिधलि, हरिले आणि मनाधनाशी ।  
होते हेची छान्गुनि मतत दु ख याकी मनाशी ॥ २ ॥

देशदशा ( श्लोक )

दैन्ये भारतवर्ष हे विभुवरा प्राणायजीतेपहा ।  
घेडनी शिरीशोतपर्वतमहा मिधु बुडे की अहा ॥  
आले सर्वकडून पाणिछमणुनी भालेविकीषाकती ।  
पाहीराजपती धरीहतिअतादावी तुभीसक्कृती ॥ ३ ॥

घनाचरी ।

घेडनी शिरी हीम पर्वता । असहुनी महा दैन्यकर्षता ॥  
बूडते महाहिदि सागरी । यासि तूतरी शीघ्र उदरी ॥ ४ ॥

श्रीवी ।

एशिया खड महान् करि । शुडा हिदुस्थान धरी ॥  
पशाव गडस्थले साजरी । पुष्कर सिङ्गन पैण्याचे ॥ ५ ॥

आर्या ।

नमउनिशुडादडादैवमूकहावदेतुनाहस्ती ।

घस्तीनेभवलीकुनिमाभिदशाहीधरीमनाहस्ती ॥ ६ ॥

साँकी ।

पुष्करमाभेछेदुनिकेलेमजलाहीपकल्प ।

भूपाधिपाकरिमजहीपाभाँलीकीबहुअप ॥ ७ ॥

# मानसोपायनम् ।

श्रीपण्डितवरवापूदेवशास्त्री ।

भूगोलपृष्ठेऽङ्गलदेशकेन्द्रे वृत्तात् कृतात् खाङ्गलैर्दले ये ।  
गोलस्य तत्रोद्धर्दले समग्र प्राय स्थलशोऽस्यधरेजलाश ॥ १ ॥  
एव समस्तस्थलभागनेन्द्रेऽधिष्ठाय देवी जयिनी नयेन ।  
धर्मेण चान्यानपि भारतादीन् देशानप्रती नितरा विभाति ॥ २ ॥  
यो भूमिगोलप्रयवानशेषास्तत्केन्द्रनिष्ठान् कृतवान् परेश ।  
सोऽर कुपृष्ठेऽप्यखिलस्थलानि करोतु तत्केन्द्रपतेर्वशानि ॥ ३ ॥  
यद्भारतेऽत्राङ्गलदेशराजो नाद्यापि कोपि स्वपद दधान ।  
तदद्य तस्याद्यसमागमोऽय जानेऽस्मदीयाभ्युदयाय नूनम् ॥ ४ ॥  
सोऽय जयिन्या शमर्म्मत्रत्या ज्येष्ठस्तनूजो युवराजवर्य ।  
सार्धं जनन्यानुभवन् स्वराज्यारोग्यादिसौरय सुचिराय जीयात् ॥ ५ ॥  
इति भारतप्रपायजनकल्याणलोक्युप ।  
अह विश्वेश्वर काश्या वापूदेवाभिधोऽर्यये ॥ ६ ॥

पण्डित सखाराम भट्ट ।

श्रीमद्राजाधिराजस्समवरणितले राजते राजसङ्घैर्नानाधर्मप्रचारो विभुभगण-  
निभै राम एव द्वितीय । पारात्रारान्तपृथ्वीतलगतप्रसुधापालकाना किराटैर्नित्य  
देदीप्यमान प्रपदगतनखो रम्यसेनापरीत ॥ १ ॥ पट्टशास्त्राभ्यासजयानुभव-  
तरणिभिर्नष्टद्वान्तकश्च सट्टख्यावद्ग्रासमानानप्रतररूपया सश्रुतो भूतलेस्मिन् ।  
सर्वाभिश्चप्रचाभिर्निजनिजललना पुत्रदासीयुताभि स्मम्यक् प्रस्तूयमानस् सुललित  
चरित स्वीय भक्ताप्रिगम्य ॥ २ ॥

वेङ्कटेशशास्त्री ।

श्रियायुक्ता भूमि परमयुर्वति सततामिमा वृणान सद्रष्टु प्रथमभुपगठान्ह वर ।  
सक्तामोसौ जीयात् परमयुराज सुकृतिनो हरेरश श्रीमान् सत्त्वविभवेर्न दनपति ॥ १ ॥

गूढप्रथमपादचित्रम् ।

वेङ्कटेशविनुधादिनाञ्जले शर्मदादिनिनुवातिमङ्कटे ।  
वाग्विवेकसाहितातिहर्षत स्तीतिनिशूळतयाविलै पदै ॥ २ ॥

पण्डित विष्णुदत्त ।

जलस्थलचलद्वलाललितनीतिलीलाऽमला स्वकीयमुयश श्रिया जयति कापि विजुटोरिया ।  
यया स्वतनयाप्रज सदभिसभ्यमूचे वच प्रयाहि सह सेनया सलिलयानमारोहित ॥ १ ॥  
स एपनखेपभृद्वरतभूपभूमीमिमा विभूपयति भूतिभि शुभदशुद्धपद्म्या स्पृशन ।  
शचीपतिमचीकरच्चकितचारुचक्षु श्रिय श्रिया जितमय हिया विदितमद्य पृथ्वीगतः ॥ २ ॥

सोम व्योम्नि चिर चक्रोराशिशोऽर्कं चक्रनाकार्भका  
हर्षं यादृशमाविशन्ति जलद दृष्ट्वा मयूरात्मजा ।  
सद्यस्तादृशमद्य मादृशजनो भूजानिमाजमत  
प्रिन्स प्रेक्ष्य समक्षमेति यमय भूयोपि त पश्यतु ॥ ३ ॥  
कापि क्वापि कत्रे कदापि क्वयिता नैतादृशी विश्रुता  
या मिथ्या न पर पगन्तु न पुन प्रिसप्रशस्ताश्रिता ।  
यस्या भास्कर एष तस्कर इव प्राप्योदय प्रथया  
त्सन्धौ वद्वकरोऽपि मुञ्चति महाराज्ये न कारागृहम् ॥ ४ ॥  
पायादपायास्तदुपासितो ऽय श्रीश स्वय श्रेयसि दत्ताचित्त ।  
श्रीप्रिसमुप्रेट्खति य पुरोगमरोगमेन पथि रिणुदत्त ॥ ५ ॥

पण्डित गोरैदित्युपनामकराजाराजशर्मा ।

श्रीमद्भूपतिवृन्दवन्दितपदद्वन्द्वानाह्लादिका  
युद्धे राजकाजितगी रिजयिनी राज्ञी सुमेव्या जनै ।  
तत्पुत्रोयुवराजशुभ्रकिरण कादया प्रविष्ट सुग  
सेयो वेत्सजनप्रभुहि रिमलोविद्वच्चक्रोरै सदा ॥ १ ॥  
य कामिनीभिर्मन्त्रो हि जज्ञे पश्यन्ति काल रिपवो ऽभिय य ।  
नर्त्यञ्च जानन्ति सरोरहाणि राजानमास्क्षतु मामय स ॥ २ ॥

कानिकपाठशालाया न्यायशास्त्राध्यापक श्रीकैलासचन्द्रशिरोमणि ।

श्रीटुर्गा पुगभित्प्रिया मुगभित्तो लक्ष्मीभिर्देवा स्वय ।

वीक्ष्यानन्यसदृक्षप्रैभ्रमसौ शङ्क्येति या भूतले ॥  
 सर्वे सा जयति श्रिया विजयिनी देवी तदङ्गप्रभौ ।  
 यस्मिन्नास्ति पितर्कणा तनुभृता मार कुमारो ऽथवा ॥ १ ॥  
 अरातितमसि प्रभाकर इत्थं य प्रोदगात् ।  
 प्रजाहृदयनैरवे ऽविलम्बलाभिपूर्णा शशा ॥  
 नृपालनिवहोत्तमाङ्गमुकुटाङ्घ्रिपीठो महान् ।  
 प्रभाजयतेतरामानिशमालयर्त श्रिया ॥ २ ॥

पण्डित बालकृष्णभट्ट प्रयाग ।

प्रत्याधाक्षितिपालमौलिमणिभानीराजिताङ्घ्रिद्वय ।  
 श्रीप्रिन्सो जगता हिताय सुहृदामायाति सम्प्रेक्षक ॥  
 सत्प्रत्ताञ्जिजधर्मपालनरतान् सम्वर्द्धयन् सम्पदा ।  
 भूत्वा राजपुरन्धर सुमरल सम्राट् चिर नन्दतु ॥ १ ॥

पण्डित बालवीर्यगढाधरशर्मा प्रधानाध्यापक मिर्जापुरस्कूल ।

समुष्णन् प्रभया विपक्षधरणाजानान्द्रतारावली  
 राष्येदीनरमण्डल विकासित कुर्व्यञ्जिभ्यो भाजनम् ।  
 श्रुद्रोद्धृत्तमदेहदुर्जनतमाम्युत्पाटयञ्जीमती-  
 खान्तानन्दकरशिर विजयता प्रिन्साभिधानो रवि ॥ १ ॥  
 श्रीमद्भारतमण्डलयजनतादु ग्वान्धकारावली  
 निर्मोकरतदाक्षितो विजयते विक्टोरियानदन ॥  
 यस्यावागमनोत्मवप्रमुदिता आप्यास्तिमैस्ता वय ।  
 खसोद्वाक्षणजनमन. सफलता, सौख्यसमामन्हे ॥ २ ॥

इन्द्रदीकरीपनामक आवाशास्त्री ।

र्मार्थिनामैमिल्लै परम्पर कृतावतार किमु मङ्गलश्री ।  
 अतर्क्यविद्यानयभूतितेजा आलम्बभपालमणिध्वजाग्नि ॥ १ ॥  
 विद्यानारिधिचन्द्रमा नयसुपाप्रागपरो धीरधी  
 हलानिर्जितदुर्जयारिनिहो टाक्षिष्यदीक्षागुरु ।  
 क्षमाभूत्वोदिकदग्न्मानससरोहम प्रमादोमुप

श्रीराज्ञीतनयो जयत्यनुदिन त्रैलोक्यभूपामणि ॥ १ ॥  
 किं साक्षात्सप्रिता न शीतलरचिश्चन्द्रो न पूर्ण सदा  
 प्रद्युम्नो न च मूर्तिमान्वररचिर्नैवाश्विनेयोऽद्वय ।  
 किम्वा लोकचमत्कृतिं प्रिदप्रता तत्सारभूता श्रिय  
 हृत्वा निमित्त एव पद्मजनुषा राज्ञीसुतो राजते ॥ २ ॥  
 यत्क्रोतिव्रजवर्णने त्वपितधी शेषो ऽतल सेवते  
 यत्सपत्परिदर्शनाक्षमतया शक्रोपि नाक गत ।  
 यत्कान्त्या परिनिजितौ रविशशी पर्याटतो द्योतले  
 यत्काव्य गुरुकाव्यविस्मयकर स्फार समातन्यते ॥ ३ ॥  
 भूमिं चङ्क्रमणेन राजनिग्रह क्षेहेन विद्वग्जनान्  
 मानैरार्थकुलानि दाननिकरैर्लोकान् कृपालोकनै ।  
 नेतु सत्कृतकृत्यता त्रिजयिनीराज्ञीजनुज्योतिभू  
 जम्बूद्वीपतले ऽभियाति तनुभृद्भाग्य प्रजाना परम् ॥ ४ ॥  
 राज्यसपत्कल्पवल्लीवोहित कल्पभूरह ।  
 जयिनीभाग्यदुग्धाब्धिसमुद्भूतो विराजते ॥ ५ ॥

चतुर्वेदीपाङ्ग त्र्योपण्डितविहारिशर्माण ।

अपयगामिनृणा परमाहित सुपथि साधु यता तु सखेऽमित ।  
 ससमये नुगतेन्दुहरिप्रभ । विजयसे धरणीनखबलभ ॥ १ ॥  
 सखीक्षणे दीवरवृ दमण्डिनीत्रिपक्षत्रक्ताम्बुजकांतखण्डिनी ।  
 त्वदाननेन्दुयुतिः कौमुदी सदा दृशां प्रजानां भयतात् सुखप्रदा ॥ २ ॥  
 धृत्वानन शीर्तिसमृद्धं वहीमनन्तया सार्द्धमन तमेतत् ।  
 विभाति रूढार्थकता दधान नाचेतनस्येदमयुक्तमस्ति ॥ ३ ॥  
 नापिया स्थितिधरात्रिणाग्नि यानसन्तिसुरात्रिष्टपनाभि ।  
 ता श्रिय स्थिरयितुप्रभवित्री त्वामियपतिमुपेत्यधरित्री ॥ ४ ॥  
 प्रतापभानौ स्फुरति त्वदीये दिवानिश भूमितले ऽखिलेपि ।  
 दिरायमानेपि जनो त्रिभाशा दिनेशितुर्नस्मरतीहकाले ॥ ५ ॥

पण्डित गोपानशर्मा जयरायण पाठशालाध्यापक ।

श्रीमद्गीतगोपाजिमुकुटामक्तेंद्रीपालिभि

पाथोजायितमुन्दराग्निगुणल श्रीराजराजोपम ।

यस्मिञ्छ्रीश्च सरस्वती च नियत भिन्नास्पदे तिष्ठत

एकस्थे जयतात् प्रकाशचरितो देव्या कुमारो दयम् ॥ १ ॥

यद्दोकपालागभवत्वमस्तीतिरेपु भूपेषु तदस्तु नाम ।

अत्रोद्धते तद्विपरोतमेप यद्दोकपालान् स्वयमेव शास्ति ॥ २ ॥

किं वर्णयियमहमस्य महाप्रभाव लोकातिग सदुदय त्वापि कोमलाशु ।

यद्देशगस्तपति नो तपन स जीयान्नाराजिताग्निरमलेर्नृपमौलिरक्षै ॥ ३ ॥

देशे देशे भ्रमन्ती पतिमसुसदृश नापनुवाना त्यजन्ती

स्थानेस्थाने सुरूपान् कुललधनिनोयातिचक्राम भूपान् ।

सा कीर्त्तयै वर श्रीसकलगुणगणै पूरित प्राप्य हृष्टा

श्रीप्रिन्साप्सुवेत्सकारय नृपनृपमचलाभूदह त समीडे ॥ ४ ॥

पण्डित लक्ष्मीनाथशास्त्री द्विविड ।

कीर्त्ति कन्दलयन् नयन् धवलता कापा दिवो दुपयन्

शोभा भारतभूमिमीक्षणरसे सिञ्चन् ययौ काशिकाम् ।

आरद्यायमत समस्तसुधासाम्राज्यसिंहासने

सम्राज्ञीतनयो निरामयतनुर्जीव्याञ्छत वत्सरान् ॥ १ ॥

देव तत्परिपन्थिमार्थतरणीहृद्दीप्तशोकानले

माचिव्य वहति त्वदागमरिविश्वन्द्रे च नीरोचिपम् ।

अस्माक तु धराधिराज भयतो भद्रागमस्त्वर्माणि-

श्वतोम्भोरहर्षणीरुपदर्शिनू न समारोहति ॥ २ ॥

पुरा सदृशरत्नम चिरतरादनाप्यावनि-

त्रियुक्तपतिकेय या मलिनिताशया ऽखिद्यत ।

अत्राप्य पतिमीदृश शुण्वरेष्यरत्नान्तरम्

भयन्तमिह शोभते नृप पतिरेवाधुना ॥ ३ ॥

पण्डित रामचन्द्रशास्त्री ।

वर्षेऽस्मिन् रत्न भारते ऽखिलनणामानन्ददात्री सदा

स्वीये सदृणमौक्तिके सुरचिता कातिम्वज त्रिभ्रती ।

न्यायायायचिचारशालिभचिप्रेर्व्याप्ता समाप्तिता



सा देवी जयतात्सदा त्रिजयिनीत्याग्या पर प्राप या ॥ १ ॥  
 रयात् श्रीयुवराजराजतिलक्त प्रिन्साफवेल्साभिधो  
 भास्वान् भारतभूपणो ऽनुलयशा प्राप्तो ऽस्ति वाराणसीम्  
 ज्ञात्वैप क्रियते ह्यमु प्रभुवर सर्वे समेत्यार्प्यते  
 शब्दाना स्फुरदर्थरत्नखचितस्तूत्कोचरूपो मया ॥ २ ॥  
 पौराणिकेत्युपाह्वेन रामचद्रेण शास्तिणा  
 याच्यते सुच्चिर राजजीवित शरदाशतम् ।

स्वावपञ्चक ।

महोदार सर्वेश्वरो वारशान्त गुणोपेतसाधुर्भयान् लोकान्त ।  
 नरेशाधिनाथ प्रजादु खहारी सदा सद्विचारी दरिद्रोपकारी ॥ १ ॥  
 महाराज राजेंद्र भूभ्यम्बुधीश खलु त्व नियन्ता गरीयान् सुधीश ।  
 भवानेव भूभृद्गणापीडहीर समीट्यो हि सप्रामासिहस्सुवीर ॥ २ ॥  
 खलुत्व प्रपूज्य प्रजाशान्तिदाता व्यग्रस्थाधिकर्त्ता प्रजावर्गपाता ।  
 वरास्य प्रजानाथ वृन्दो त्रिनीत भयात्ते यवैषस्तु सिंहेन् भीत ॥ ३ ॥  
 प्रजावर्गकल्याणदाता त्रमेको नृप त्व प्रजाना शुभाम्भोधिरका ।  
 प्रतापान्च सौदामिनी कम्पिता ते इहागच्छ राजन्यथैनश्चभा ते ॥ ४ ॥  
 त्रिलोक्य त्रिकाना महीनाथ दी एय प्रदेहि प्रजानाञ्च सर्वस्य सीर्य ।  
 समागच्छते भारते प्रार्थ्यमान भुजङ्गप्रयात गमेद गृहाण ॥ ५ ॥

विनीतस्य

श्री, ज, च्च, स, ची, देव कापि काञ्चनशेखरस्य ।  
 बोयालिया राजशाही वेङ्गाल ॥

विषाठी पण्डित रामशरण

चञ्चच्च द्रमरीचिचारचमीरे ससक्तदेहेर्मुहु-  
 रश्वैस्मादियुतेर्भृतस्मुगतिकैर्नातातिपातत्रने ।  
 धीमद्राजममाजमौलिमुमुट्टे ससेवित पादयो  
 लोहेर्गेचनभोवरा वरुणिय कुर्वन् वृताथार्था प्रात ॥ १ ॥  
 क्षोणीमग्नुस्त्रनिभैरिभार्के कुर्वन् नभोवद्भृश

सैन्योद्यै सुररेणुभिविघटयन् पृथ्वीं नभो वाजिनाम् ।

एष श्रीक्षितिराजराजतनयो निर्भापयन्दीनता

भास्वान् गाढमिव प्रकृष्टतिमिर देदोप्यमानै करै ॥ २ ॥

पङ्घा सैन्याविभूषण प्रभुवरो भातीय भामण्डलै-

र्जेतु वैज्रधर प्रतापनिचयैरेयाधुना निर्गत ।

शौष्योदार्य्यदयापर रतिमिम तापैरिना य नु वा

तारेश हाथया कलङ्करहित सन्तर्कयन्ते बुधा ॥ ३ ॥

### रामचद्रस्य श्लोक ।

महान्विजयिनोसुत सकलविद्विषा शासक

स्वधर्मनिरत सदा विमलपण्डिताना प्रिय ।

कलासु निपुणो ऽन्वह निखिलशास्त्रनिद्विर्बुधै-

रल्लुतयशोगुणो विजयते हिमाशुर्यथा ॥ १ ॥

### अनन्तराम भट्टभट्टस्य ।

राज्ञया कुमारो युवराजकारय आशाङ्गनासंचितनैजसग्य ।

आत्मीयभूलोकनिलोकनीत्क क्वात्या मृगाङ्कोपम एधता स ॥ १ ॥

### मैथिलचिचधरस्यायमाशीर्व्याहार ।

तुपारे चाग्नेय्या समुदयमयाप्याखिलजगन्मन क्लेशस्तोमप्रब्रलतिमिर जाड्यमपिच ।

अशम्य दूरेण प्रसभमतिनिदशेपमधुनासक्कद्धमौ गत्या य इह समयन्नुष्णकिरण ॥१॥

अपा पत्युर्जाड्य शमयितुमिवास्वैर हरित गमिष्यत्योजस्वी प्रभुविजयिनीपुत्रकपटात् ।

सदा सर्वाशाना स भवतु जयीशान इति मे शुभाशीर्व्याहार शिव शिव दिशत्याशुरसना । २ ।

त्रिवाडीन्नुपनामकस्य गोविन्दशम्भयो ऽय श्लोक ।

गोविन्द खलु याचते परमिभु निद्वेश्वर शूलिन

होन सर्वगुणैर्युत विजयिन श्रीसयुत धामिकम् ।

रक्ष त्व गिरिजापते सुनदन राज्ञीसुत सर्वदा

नो चेद्धर्मविचारशूयहृदया नष्टा भवामो वयम् ॥ १ ॥

पण्डित माधवराम जिना मिर्जापूर ।

उद्दण्डोद्दण्डतेजा निगमघनकलाक्रान्तमुद्धिप्रमुद्ध

शुद्ध शुद्धाभियुक्त समभिभवयुतः प्राप्तसिद्धिप्रसिद्ध ।

युद्धे धीरातिधीरो विजयफलयुत सर्वराजोपरिष्टान्

यायात् भृगाधिराज प्रभुकुलचनन श्राजयिन्या कुमार ॥ १ ॥

भवानीप्रसादशर्मा ।

नतोन्नताशान् परमान् समञ्च त्रिलोक्य राज्ञातनयस्य साधो ।

गुणेषूपूर्णान् गणितादल्ग्यान् बुधा शमिच्छन्ति च तस्य शम्भो ॥ १ ॥

श्री वेत्सदेशाधिपते सहर्षा दृष्टिप्रसादाद्गणकेन्द्रपूज्या ।

आनन्दयन् स्वा जननीं जनान् स ईशादितोच्छन्ति शत मुजीव्यात् ॥ २ ॥

रामप्रसाद मिश्र ।

दयामयनिजाशया भद्रदया महीपावले श्रिया परमया युता विजयिनी सदा राजते ।

यदीयभटमण्डलीकरानि नूतखङ्गाहातिक्षणक्षुभितरीरेणामयनतामनास वनम् ॥ १ ॥

यदीयतनुजो भुजो जितपराक्रमोत्तापितद्विपन्नृपतिमण्डलो विजयते धराखण्डल ।

स एष सुचिर महीमनतु पालयन् सज्जनान् प्रसादचरमाभिधो वदति राम एव गिरम् २ ॥

मिश्रोपाह्वरामगोविन्दशर्मण ।

येनेय वसुधाचराचरधरात्नानि दोदुह्यते

जित्त्रानेकनृपाथ सयति बलात् कृत्या तु वत्सान् प्रजा ।

वैनश्चैत्र यथा प्रकल्प्य विनुधान् वत्सान् पुरादद्दुहत्

स श्रीमान् युवराजसाहवयरस्मद्दर्मना वर्त्तताम् ॥ १ ॥

शोकान् सशमयन् प्रजाभिरधिक हर्षान् समुद्धर्षयन्

सर्वाधर्मपत्रप्रहान् कुधिपणान् सताडयन् धर्मत ।

यस्पेहागमन करोति सतत विद्योतमान जगत्

स श्रीमान् युवराजसाहवयर सर्वद्वता सर्वदा ॥ २ ॥

पण्डितश्रीधर मैथिलस्य ।

प्रोचद्गीभूपवृन्दप्रणुतपद धराधीशमौलिम्यहीर-

व्योत्सानीराजिताग्रे वरणिधर तत्र प्रसिपती धीरवीर ।

नृत्यङ्गिर्गोत्रिषु खरखुरनिवहैर्द्धू तूलीसमूहे ।

मप्राप्ता मृन्मयास्ते जलनिधिनित्चयाश्चित्रमेतन्महत्किम् ॥ १ ॥

पण्डित गान्धिग्राम ।

यस्या शौर्यनिधे प्रतापमहिमा जागर्ति भूमीतले  
यत्कार्यार्थाऽमलया दिशो धवलिता नाचै कृता शत्रव ।

सा प्रासूत सुत युत बहुगुणैर्निदशोपयन्त रिपू-  
निन्द्राणीपजय तमात्मसुहृदामानन्दद नित्यश ॥ १ ॥

तीर्थोचिकीर्तुर्भुवन ममप्र सुगोत्रजो गाल्पभिदादिशस ।  
मन्ये प्रतप्ते निजराजधानीं कर्तुं कृतार्था सकला कृपाटु ॥ २ ॥

वीक्ष्यैन जयशालिन कृतधियो ऽमन्यन्त जात रघु  
दानृत्प समवेक्ष्य सजगदिरे कानीनमेन बुधा ।

दृष्ट्वा चास्य दयालुता शिबिरिति प्राज्ञा परे मेनिरे  
मन्ये पाटयमीक्ष्य चास्य कतिचिद्धर्मीयमूचु स्वयम् ॥ ३ ॥

रघ्वादयो नृपाश्चास्यासरयेयगुणवत्तया ।

शालिग्रामसुधीर्नृते कला नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ४ ॥

श्रीहरिनाथशर्मा द्विवेद ।

श्रीमद्विजयिनी देवी वर्द्ध्वात् सूनुभिश्चिरम् ।

यत्कुक्ष्यान्विजनुश्चन्द्रोहार्निश काशतेतराम् ॥ १ ॥

सङ्कोचयन्वैरिमुखाम्बुजानि प्रकाशयन् कौमुदमाममुद्रम् ।

सर्पाडयन्दुर्नयसैहिकेय नरो विनखान् भुवि यत्प्रताप ॥ २ ॥

अत्युत्सुक् मस्कृतगग्भनाय लघुत्वहृद्दर्शनता प्रजाराड् ।

वर्द्धिष्णुकामो निजत शुभाव टङ्को द्विपा देशत एनसा माई ॥ ३ ॥

गोस्वामिरामगोपालशर्मा ।

जिेश्वरीमुततपान्त निता ततात तापान्त काभितचल्चपलाम्प्रान्त ।

ननाब्धिसिन्धुरपयोधरराजिराजौ सृज्यात् प्रजीशिविसुख भवद्रागमोयम् ॥ १ ॥

मिह द्विपात्रिपद्मकदम्बयात पात क्षिति क्षितिपरराजिविराजितातम् ।

त्वा शौर्यतामरपानिम्प्रपतिरेष्य लसा ऽमरुत् शुभार्वा भवतीति युक्तम् ॥ २ ॥

रूपे स्मर तेजासे भानुमन्त नये गुण लोकाजिते क्षमायाम् ।  
 आरोहणे ऽश्वस्य नल भयतमाहुर्न के नाम जना अत्रत्याम् ॥ ३ ॥  
 निराश्रयत्वेन चरन्नितस्तत आशाहतोऽन्यत्र यियामया रिपत ।  
 भ्रन्तमुत्पाद्य दयावतामतो वात्रा ध्रुव वीररसो ऽनुकम्पित ॥ ४ ॥  
 त्रया भाति मही नात्र मखा भाति भवानपि ।  
 भास्वता नलिनी भाति नलिन्या भाति भास्कर ॥ ५ ॥  
 त्वदागमनजीजाभिरीहाभिरतिभासिता ।  
 काशी श्रयति राजेद्र साम्प्रत्यर्पितामियम् ॥ ६ ॥

ईश्वरदत्तशर्मण इन्म् ।

श्रीमन् समाट्विनेकिस्तत्र सुभुज तल्प्राप्य सर्वापि पद्या  
 वारिद्धयन्ता मशिला बहु वमुनिचय सूयते शश्वदद्य ।  
 श्रीकृष्णम्येव सत्याहितवृतजनुपोमह्यमारातिवृन्दै-  
 र्चानावर्मप्रचारैस् सकलजनहितस्यात्र लोके समस्ते ॥ १ ॥  
 विद्यानाञ्चापि सद्यो भुवनपरिमिताना ग्रहीतुस् सलील  
 राजन्याना ममूहेन्निजकृतलयुताना परीतस्य पातु ।  
 नित्य मर्षप्रजानामवनप्रसुकरस्याद्य भीमादिगोणे-  
 र्हुस्माध्याश्चर्यक्रमेप्रातदिनकरणैर्लाकित्तस्य भर्तु ॥ २ ॥

षण्डितदामोटरशास्त्रिक्तता कविता युवराजवेनसाधिपस्याशीर्वाद ।

आगमे रमया विशाममपुरे वागधराकारक  
 साराचादिमुरामुराद्विजपरैराराप्यमानो विभु ।  
 आगम मुन्दरायुत्र परतर कुर्वन्नराणा पर  
 पूर पूर्णरूपामरस्य हृतान् शिमन्परिस्ते सुखम् ॥ १ ॥

यशोवर्णन ।

चन्द्रोय त्रिभिः व्यप्रापि यदय भ्राम्यन्नमा प्रोप्येन  
 पथीशम्य यत्र माम्भुवनस्थाश्चापि गोकान् सदा ।  
 एतकार्यदृत्त विभु प्रवितया गयामितथाभित  
 पते भेदगतिना सुनिहितैर्गण्डायविनाशित ॥ २ ॥

देशीक ।

युक्त्या त्रिलोक्य जन प्रभुधूर्वाहाव आराद्धिमोचय महान्यसनाग्निरग्म् ।  
 अपिदने कुरु मनस्यजं चालसादीन् राजाधिराज शृणु पाल पले पलेऽपि ॥ ३ ॥  
 अद्यानन्ददिन समस्तजगतस्तत्तापि नो भो प्रभो  
 किं कुर्मस्तत्र चादर स्मरणकृत्कर्मोत् न ज्ञायते ।  
 सत्या प्रतिरोपकानि बहुलान्यलेयमेका त्रपा  
 दारिद्र्यस्य सुता त्रिलापतगता हिंस्नुपा यापुना ॥ ४ ॥  
 प्रार्थयामहे त्रिभो सुशिक्षयेति ता त्रपा ज्ञानु चायदेशमत्र वासकारिणा भवेत् ।  
 सपरेण मात्रपद्यया वय सुपालिता कृता च या सुबन्दिना खदश एव ते त्रिभो ॥ ५ ॥  
 प्रताया सुखदुःखाम्या यद्राजा सप्रशस्यते  
 अतस्मा प्रार्थयामो भो पाहि दानान् जनानिमान् ॥ ६ ॥

रामकृष्णशास्त्रिण पट्टवर्धनस्यैते श्लोका ।

सा मानिना त्रिचयिना जननी जनाना सम्मोत्पिनीजनिजुपा जयति प्रजानाम् ।  
 राजपतीं त्रिदधना त्रसुभा मय या ममाष्टि वोरैरनितानयनाञ्जनानि ॥ १ ॥

भट्टीपाङ्ककान्तानाथभट्ट ।

श्रामद्विपुत्रविजया त्रिन्साफूलेसाग्व्ययुरराज ।  
 दयया भारतत्रप य स्वागमनात् कृतार्वयति ॥ १ ॥

श्रीभीष्मपाङ्कशिवनारायणशम्भण ।

आशिञ्जद्वनगुत्तमनागनिचया त्रिस्तीर्णकर्णप्वरम्  
 ज्यानि स्वानमशेषन्दुभिनदैरारयातमुनीपयन् ।  
 वेन्द्रीपगनी कल्पुनि तरैश्शूरोत्रिपुष्पन्महीम्  
 सप्तकाल कठोरपक्तत्रिपमन्यापील्यमानामित्र ॥ १ ॥  
 यम्पेहातुलमञ्जसा जगति सचात प्रभुत्व परम्  
 वैरिज्ञानत्रिनाशने पटुतर त्रिभ्राचमाण भगम् ।  
 स्वर्ग देवगणैस्सुरेन्द्रमहितेस्सङ्गीयते माम्प्रतम्  
 तस्मै श्रीयुवराजमाहवरायेशेन अ दीयताम् ॥ २ ॥  
 श्रीमन्माहत्रय्या चायात्रिचारचारमाति ।  
 धामान त्रिसत्रापजेल्मो त्रिजयत्रात्रर्द एत्रर्द ॥ १ ॥

श्रीमद्राजाऽधिराजप्रकरमणिकराजा तपोऽसि प्रताया  
 श्रीमाद्विकृटोरिआभा बुधरनिकरश्लोकसुश्लोकिताया ।  
 पुत्रो जीव्यात्पात्रिश्चिरमितिजयतुप्रिन्सआकृत्रेल्मनामा  
 पाण्डित्यौन्नत्यमौरयाद्यरिलगुणगणाऽलकृतोऽलकृतोश्चि ॥ २ ॥

रिमान्नीपनामकत्रीविश्वताथगम्भा ।

दिङ्मण्डलात्रिस्तृतीयासस्तत्रप्रतापानलदीप्तहेती ।  
 पततु सर्वे शलभारयस्त्व भूयाश्चिरायु क्षितिपालदेव ॥ १ ॥  
 दर प्रेम्णो निधाने गतयति हि जने धूतानि गेपभूपा  
 योपाऽशोभेय माऽवी समजनि जगती या पुरा त्वा विना सा ॥  
 धयीभनेयमूर्ध्वा तत्रचरणरजोमञ्जुसिन्दूररामे  
 सरक्तस्थीयसीमाभिनत्रपरिणयेयाद्य भपालमौले ॥ २ ॥

भरद्वाजोपतामकगोविन्दकृता ।

शौयादिगुणतुरङ्गा प्रोत्तुङ्गा मिन्दुलट्घने यस्या ।  
 जयति विजयिना जयिनी जगतीतलमयगा देवी ॥ १ ॥  
 गाम्भीर्यैकानिकेतनो रिपुकुलध्रान्तैकविर्बामन  
 शान्तेश्चाकर एष दान्तिनिचयो दाक्षिण्यरारानिधि ।  
 श्रान्तिध्रान्तनिरारणे दिनमणि सौख्यप्रदो देहिना  
 वाणी यस्य सुधासमा विजयते श्रीराजचूडानणि ॥ २ ॥  
 हर्षं सप्रर्धयन्नो निखिलरिपुकुल खण्डयन् शस्त्रसधै  
 राज्ञो राज्येनियुञ्जन् मङ्गलगुणगणागारराजाधिराज ।  
 मप्राप्तश्चक्रता विप्रिप्रथपरैरभ्युपेतोश्वमधै  
 कर्तुं चक्षु कृतार्थं स जयतु विजयी यौनराज्येभिपिक्त ॥ ३ ॥

रामब्रह्मशास्त्री ।

रामन्यार्यमिनीतराटति महारामोपि संरक्षण  
 कर्तामौ समलोचनव्यतिमहान् त्रैपम्यहीनान्छट्कू ।  
 जेता मित्रजिद्रोजमापि मत्तन जेताह्यमित्राणि य  
 स्तम्पायात्परमेश्वरो विजयिनीदेवासुत मर्त्या ॥ १ ॥

श्रासावभामातनयस्य तस्य प्रभूतसम्पद्विततातरम्ये ।  
श्रीभारते रत्ननिधानखण्डे शुभागमस्सर्जनप्रियोभूत् ॥ २ ॥

टण्डिमट्टोपनामक विज्वनाथशास्त्रिण श्लोक ।  
सन्नाटसुन्दरवक्त्रकान्तिविजये वध्यादर सर्वदा  
सस्नान सरसीजले यमकराहारम्मनोहारि तत् ।  
चीव्रतत्तप आचरत्परिभ्रमप्राप्तन्तत सेवते  
श्वेत उग्रभिषेणतन्मुखमहो रम्यम्प्रसादोत्तलम् ॥ १ ॥

श्रीपरमेश्वरमैथिल ।

आशास्यास्ते नृपेन्द्रास्समुचित फलदा देवता सन्तु सेन्द्रा  
स्वामात्या वा वितन्द्रा निखिलखलहरास्तद्युदेवास्मचन्द्रा ।  
पूर्णाशास्त्रहारिद्रा प्रपलरिपुगणा कुम्भकर्णासनिद्रा  
सेनास्तेपाममान्द्राइव जगति यशोराशय सन्तु सान्द्रा ॥ १ ॥  
क्षोणीपालघटेभसोत्कटसटश्मपालमौलिस्थलो  
ट्टासिप्रोच्छलदच्छरत्ननिकरैर्जाराजिताङ्घ्रे प्रभो ।  
चञ्चल्लोकचकोरलोचनचलञ्जेकाचले चन्द्रमो  
नाम्ना श्रीपरमेश्वर स्पृहयतीत्येव मुदा मैथिल ॥ २ ॥  
त्यय्युदिते गुणसिन्धौ निजजनचेत कुमुद्वतीबन्धौ ।  
जगति कदारितमिस्त नाम्नापि श्रूयते कापि ॥ ३ ॥  
माद्यदन्तिघटात्रिशिष्ट मणियुग्घण्टाटणत्कारत-  
स्तञ्जीत्कारमयाच्च दिशु सतत दिग्दन्तिनो यान्ति के ।  
किंचान्ये प्रतिपक्षिण क्षितिभुजो यस्य प्रतापानल  
प्रोद्गच्छन्ललाभात् भान्ति स पुन किम्बर्ष्यते मादृशं ॥ ४ ॥

नारायणविरचितम् ।

यस्या कीर्तिगभस्तिभाभिरखिल प्रोद्भासित भूतल  
ध्येया या सदसाद्विवेकममये शास्त्रान्विपार गते ।  
यामामाद्य खतोयन्धानिलभूगोत्रान्वश चक्रिरे  
सा श्रीनन्दनवामिनी विजयने श्रीनारायणाय नमः ॥ १ ॥



श्रीमत्यास्तनयाजिताखिलगुणस्तामन्तराजापित  
 खान्लोकानतिहर्षयञ्छगवरो राजासङ्घानिप्र ।  
 प्रिन्साफ्वेल्समिति यस्य नाम ललित शार्दूलविक्राटित  
 किं कुर्वन्निव यो ऽखिला खयमिला द्रष्टु समाक्रामनि ॥ २ ॥  
 श्रुत्वा तस्य समागम त्रयमिहात्यन्त सहर्षा यत  
 श्रीराजागमनेन सर्जगता सन्मङ्गल वद्धते ।  
 सिव्यन्त्याश्रयिणानृणामविरत सर्वेभिलाषा यथा  
 व्यानेनाखिलदेवत्रयत्रपुपो नारायणरयेति शम् ॥ ३ ॥

विजयनाथशर्मा ।

श्रीमच्छ्रीकटोरिया विजयनी राजाभिराजेश्वरा  
 प्रिन्साफ्वेल्ससमाह्वय सुसुपुत्रे पुत्र सुरेशोपमम् ।  
 धन्या मा नृपराजिराजितपदा यस्या प्रमादात्प्रजा  
 खेलन्त्यो निनरा चरन्ति त्रिपिने देशे त्रिदेशेप्यलम् ॥ १ ॥  
 कामारे भारतेस्मिन् स्वबलदलचयैर्भूपपद्मप्रकाशा  
 भीमोपान्ये त्रिपक्षक्षितिपातिशशभृदेवता मुद्रितास्ती ।  
 गेहेगेहे द्विजाद्याम् स्वत्रिभवावनयै रत्वितायष्टुकामा  
 प्रिन्साफ्वेल्से हिमर्ना समुदयति रयो चित्रमेतत्सगरतम् ॥ २ ॥  
 यस्मात्कोपि न तादृशा भुवि भुव सपालने भूमिपा-  
 स्तस्मान्निलमल करोतु नितरा राज्य महीमण्डले ।  
 श्रीराजे द्रकिशोरसिंहसुमहाराजाज्ञया वर्णन  
 तत्सेवी जयनाथशर्मग्रहजित् कृत्वेश्वर प्रार्थये ॥ ३ ॥

रुहेनखण्डरामपुरतप्यान्तर्गत खातो नगरग्रामवासिभ्यो

नन्दकुमारशम्भण पार्थनेयम् ।

धर्मोदय कर्तुमधर्ममर्म्म ऋते च यो भूमितले ऽप्रतीर्ण ।

श्रीमान् समस्तक्षितिप म भूयात् प्रिन्मश्विःजीवितर सुर्वा च ॥ १ ॥

वरेलीनगरप्रान्ते राज्येयजनसात्कृते यत्रनैर्द्विपतो धर्म्मा द्विजाना परिलोपिता ॥२॥

यत्पामीचन्द्रद्राय तदा सर्वे मुग्धामिन अनुना हेमजा केव बद्धाग्ने ऽतो दया नुर ३

मित्रोपाहसोऽहमशर्मवैद्यस्य ।

व्याधिप्रस्तसमस्तनिर्जरगणान् नीरोगयन्त्रौपधे-  
 दिव्यैर्भव्यसुधाढ्यकुम्भरश्मिद्वाहुर्महेन्द्रस्तुत ।  
 नित्य मर्त्यकुलप्रपालनपर सतापयन्त परान्  
 श्रीमन् वेल्मनसुन्धरानरपते त्वा पातु धन्वन्तरि ॥ १ ॥  
 स्तुत्वा या वाश्विनेयी त्रिदशपरिवृढाद्या सुपर्णौघमुख्या  
 मिद्धि त्रिन्दन्ति देवी सहपरिचरणौ रूपाशी सुवैद्यी ।  
 वेल्सक्षोणीश गुण्य द्विपदनलजल ख्यातकीर्त्तेशधिकर्द्ध  
 त्रायिता त्वा मितान्त भणति भिपगिमामाशिप शोभनारय ॥ २ ॥

भट्टशास्त्री अष्टपुत्रोपाह ।

या पुर्णशीलास्ति दयाप्रधानैर्गुणै समस्ती स्वकुलोचितैश्च ।  
 सापालन लोकाहिताय राक्षी करोति भातेन सुतस्य नित्यम् ॥ १ ॥  
 शान्त्यादिभि सर्वगुणैर्विभूषितो ज्येष्ठोस्ति तस्या स्तनय सदा भृश ।  
 काशीपुरीं द्रष्टुमिहागतोस्ति वै भृत्यैस्समेतो युवराजशब्दभाक् ॥ २ ॥  
 श्रीमन्मातृकुलोचितैर्गुणगणै शौर्यादिभिर्भूषितो ।  
 नानानीतिविशारदोतिमतिमान् पूर्णप्रतापोज्वल ।  
 येनेद परमण्डल तु मङ्गल हस्तेन नम्रीकृत  
 तेनामौनृपमण्डलेषु यशसा चन्द्रोपम शोभते ॥ ३ ॥

इन्द्रप्रस्थनिवासिपण्डितविश्वेश्वरनाथनवल्लगोस्त्रामिन कृतिरियम् ।

युवराज चिरजीव रक्षतु त्वा स ईश्वरः । भवदागमनेनेह प्रहृष्टा सर्वजन्तव ॥ १ ॥  
 हे लण्डनाधीश्वर ते चरित्र वक्तु त्रिचित्र भुवि क समर्थ ।  
 स्रतेजसा शत्रुगणा जितास्ते त्रिविष्टपेशेन तु शस्त्रसधै ॥ २ ॥  
 हे लण्डनाधीश्वरि ते प्रतापादिट् लण्डदेशप्रभवा मनुष्या ।  
 विद्वान्वितास् सर्गुणोपपन्ना शूरा प्रजाना हितकारकाश्च ॥ ३ ॥  
 हे लण्डनाधीश्वर पूर्वभूषा न केपि जग्मुस्समता त्वदीयाम् ।  
 ते धूमयान न च तारयन्त स्वमेप्यपश्यन् सुखद प्रजानाम् ॥ ४ ॥  
 देवस्यागमा श्रुत्वा जाता भारतभूरियम् अपूर्वा नूतना देवी भुक्ता यद्यपि राजभि ॥ ५ ॥

उदयानन्द शर्मा ।

यस्योच्चलञ्जलधिलङ्घनविक्रमस्य राज्ञोऽसुतस्य यदि सङ्गमतो धारिणी ।  
युक्त सुमङ्गलवर्ता भवति प्रपूर्णा हृषेण सोऽस्ति त्रिदितो दयितो यतोऽस्या ॥ १ ॥  
यद्वक्त्रान्तिजितरोचिरय सुधाशु सलज्जितो ऽहनि न दर्शयते स्वदेहम् ।  
सञ्चारदाभ्रमिपतो ऽम्बरतो निजास्य सञ्चार कैरवपतिर्भ्रमति क्षपायाम् ॥ २ ॥  
कीर्त्या सुधाशुसितया विशदोऽकृतस्य क्षोणावरेन्द्रतनयास्तनभूपकस्य ।  
हारस्य सम्प्रति धिया गल्पन्नगेश त्यक्त्वा शिशो मृगयते शिखरे तमेव ॥ ३ ॥  
जावतात् स्वजननीं सरुलाना तोपयन्निजगुणैस्मकलानाम् ।  
आश्रयो जगति सन्मतिमान्य प्राणिनामधिपतिर्मतेमाय ॥ ४ ॥

समस्यापूरण ।

त्यक्त्वा प्रियामाङ्गलदेशजाता यदार्यभूमे प्रणयाभिलाषी ।  
भवानहो तद्धि महत्कुनूहल गौरोमुख चुम्बति वासुदेव ॥ १ ॥  
शृणोम्यह भारतदेशराज समागमिष्यत्यधुना दयालु ।  
अहो भवित्री सधया धरित्रीं सिन्धूर त्रिन्दुविधवा ललाटे ॥ २ ॥  
क वा क्य हीनतमा दरिद्रा क वा भवान् भूपनिपेविताग्नि ।  
अत्यद्भुतस्सङ्गम आवर्षीर्यत् पिपांलिकाचुम्बति चन्द्रविम्बम् ॥ ३ ॥

राजेश्वरशास्त्री द्राविड ।

श्रीमद्वीरमहोपगृन्दमुकुटस्तसुसुमक्ताफलै ।  
पूर्णा राजसभा यदायकरणा माकाङ्क्षते सादरम् ॥  
सम्यक्प्राप्तनयस्तदीयतनयो त्रिश्वातिशायी गुणै ।  
शौर्यादार्यदयादिभिविजयता माहेति राजेश्वर ॥ १ ॥  
असौ सकलसज्जनान्त्सुखयुजांनितन्वश्चिर  
निरन्तरमिमांमहामुदाधिमेखला पालयन्  
दयासमुदयोदयाद्विकलदु खिदीनाननन्  
समाअनुपमा शतम्भवतु राजराजाधिप ॥ २ ॥

केशवशास्त्रिण' पर्वतीयम् ।

जम्बूद्वीपमहाधिराजविलस माणिक्यमौलिस्थला-  
सद्गद्गामनराजमानचरणद्व द्वाभिनव्याम्बुजा ॥

|  |       |
|--|-------|
| निःशेषोदयदेयभोगाविषये मन्निर्मिता प्रहणा         | ।     |
| देवी सर्पहीतीपिणी विजयिनी वर्षात्त समाट्पदे      | ॥ १ ॥ |
| एतस्यास्तनुजस्ममस्तवगति श्रीप्रिन्सआफूवेल्लिमिनि | ।     |
| नाम्नाक्ष्मापातिमर्वमॉलिमणिभाप्रोद्गामिपादाम्बुज | ॥     |
| सम्बद्धैक्रमके भुजाग्निनभयुक्ते मुकाशापुरीं      | ।     |
| सभृष्यागमनेन केशवकृतिं प्रेम्णा दरीदृश्यताम्     | ॥ २ ॥ |

वाशिकरोपनामकाशीनाथभट्टस्य ।

|  |       |
|--|-------|
| श्रीश्रीश्रीयुतराजवन्दितपदद्वन्द्वो जनाह्लादको   | ।     |
| विद्वत्कम्पजमय सदा विकचयन्देवांसुत मादरम्        | ॥     |
| श्रीदानेन सदा जनान् प्रमदयन् कात्या युतोनायक     | ।     |
| पूर्णचन्द्र इरौजमा विजयता श्रामविभीम प्रभु       | ॥ १ ॥ |
| धाराज्ञीतनय सुरै स्तुतगुणो युद्धेषु नात्यायुषै   |       |
| श्रोतृग्वातप्रतिरोपिताक्षितिपता राजन्यमान्य पर   | ।     |
| लोके श्रीश्वपलेत्यर्जांतराखिला सत्कर्मणा नाशिता  | ।     |
| साद्विद्या प्रलय गता प्रकाटिता येनेश्वर पानु तम् | ॥ २ ॥ |

गन्धर्वकृपाह्ववापूषर्मण ।

|   |       |
|---|-------|
| उद्यन्त ज्योम्नि कृत्स्न क्षितितेजसमलैरशुभिर्भासयत    | ।     |
| कीर्त्तान्दु ते जिगीषन्नुदिनमेयते वृद्धिमाद्ये दलेयम् | ॥     |
| पश्यन् पर्वण्यनुने निजधृषि विगुर्लभ्य मापत्तप म्      | ।     |
| पक्षेऽन्ये याति काश्य युवनृप महता कि पर मानहाने       | ॥ १ ॥ |
| स्थानेऽय युवभूपतेऽभ्युदयत स्वातप्रमादो नृणा           | ।     |
| धन्याऽसुत सुते नताप्रनिभृत राज्ञा भवन्त यत            | ॥     |
| भास्वद्भानुकरैस्तम शमकरैरभोरुहाणा तते                 | ।     |
| रन्हायोपमि सत्समुन्नातिपिथी प्राचीनिदान स्फुटम्       | ॥ २ ॥ |

श्रीपण्डितश्रीतन्नाममादशभोग ।

विमद्गङ्गाज्ञानय गपतो र्शशातुप्रतेण जानाह्लात्ता वयमिह जगद्रभय प्रार्थयाम ॥

यावत् कूर्मा धरते धरणी तावदाह्लादयन् खा- ।  
मन्नामस्मान्नतु सतत वेल्सदेशाविनाथः ॥ १ ॥

प० गणेशदत्तशर्मा ।

विकटोरिया या त्रिदिता पृथिव्या सा सत्कवाना वितनोतु मानम ।  
कुर्व्याच्चक्षुः बहुधा प्रजाना यतो नृपेन्द्रस्य हि धर्म एव ॥ १ ॥  
प्रिसफ्वेल्साभिधो नित्य विश्वेशस्य प्रसादत ।  
दोर्घायुर्भ्रतु प्राज्ञ सर्वभूपालानन्दत ॥ २ ॥

द्विवेदपण्डितवस्तीरामशर्माण ।

फुल्लचम्पकरागिघोटकचयप्रोत्तुङ्गहैमासनासांनैरकमयार्द्धचन्द्रात्रिकसत्तारागणिते फलै  
चञ्चच्चारतडिलतातिवेचलान्निर्देशभाभिर्भृश नैशङ्कालमिवातपरणवरैस्मन्दर्शयद्भिर्भेदे  
युक्तश्यामलनारिदौघसदृशे र्मित्तमनृन्दैर्मुहु कुर्वन्भूतलमेव पुष्करमिनायो पञ्चलालङ्कृत  
एव श्रीयुवराजराजतिलकसशुद्धपाष्णदशरदृष्यत्तामरमाननो विजयते काम शुभयु कृताः

भारद्वाजदामोदरशास्त्रिण ।

यत्कीर्तिर्विमला प्रयाति तरसा स्वर्गैरुसा मालिनी ।  
हन्तु सज्वलति प्रतापदहन शत्रून् समूल सदा ॥  
सा राज्ञीमिपतस्मतीविजयिनी चिन्तित्तराया खय ।  
दण्ड्यान् दण्डयितु सतस्सुखयितु चर्वातिभूमीतले ॥ १ ॥  
तस्या वरिष्ठो युवराजसिंह । क्षान्त्या युतो दान्ततर प्रशान्त ॥  
सुत समालोकयितु प्रयातो । वाराणसीं शम्भुपुरीं दयालु ॥ २ ॥

काशीस्थपाठशालाया शब्दशास्त्राध्यापक शिवकुमारमिश्र ।

कान्तिङ्कामाप कामकामितल्वामाविभ्रदात्माधिप- ।  
प्रेन्म प्रोक्षितुमेव नूनमनिश क्षोणी तपस्यत्यसी ॥  
इन्दुङ्गजमिनञ्च दीपममलान्नक्षररूपाक्षतान् ।  
दत्त्वशेषाय हिमाद्रिहाटकगिरी हस्ती विधायोन्मुखौ ॥ १ ॥  
श्रीमन्तयुवराजबालतपन प्रोचन्तमैन्द्र्या दिशि ।  
भ्राजद्वास्तभूतडागजनताबालान्जमुजीवितम् ॥

दृष्ट्वा खेदतमो विनष्टमसिलङ्घिञ्चेदमञ्चत्यलम् ।  
विश्वश्रीमरितोजलेननयने रञ्जैरशेषजगत् ॥ २ ॥

इदन्तु न विचित्रित क्षितिपते यदीपद्भवत्कटाक्षचलनाद्भुज सकलमीहित मिष्याति ।  
भयादशरमापते कृतिरियम्मही श्रुयते श्रुतापिति दृढा मतिदिशन्कुमारमिश्रस्य मे ॥३॥

विकटोरीलतिनाऽतिकीर्त्तिसुमनस्तौरम्यसम्भावित-  
क्षोणीमण्डलपण्डितादृतयश पुष्योत्मनाऽऽभोदवान् ।  
श्रीमङ्गीविलियम्महाऽमरतरोस्सन्तानदेवद्रुमो  
भूयाद्भारतभूमिभूरिविभनाऽऽनिर्भानभूरिश्रवा ॥ १ ॥  
जीव्यादुन्मिपदक्षरक्षितनिजप्राज्यप्रजामानस-  
ध्वान्तध्वत्सदिदृक्षुमज्जनमनोमाद्यच्चक्रोरोत्मन  
आनन्दाऽम्बुधिपूरनर्द्धनसुहृद्द्वाराणसीवासिना-  
ञ्चक्षुस्तर्पनिरानारिण्युकिरणश्रुव्योततसुधो राजराट् ॥ २ ॥  
राज्ञा सन्ततिनिविशेषममुया पालिष्यमाणा प्रजा  
प्रागेन प्रभुणा विमृश्य जगताञ्चक्रे न भेदस्तयो ।  
स्याने सस्कृतयागतो विभजते ताम्यान्न नून च ते  
सन्तत्या प्रजया सहाऽस्ति न भिदा सा सैव सा सैवयत् ॥ ३ ॥

पुरातत्तत्प्राज्ञाऽस्तमनसमयाऽनन्तरनिशा नृपैरक्ष प्राथे परिणत निशीथान्धतमसाम् ।  
प्रगाढव्यामूढा चिरमधिशायाना ऽ तपने प्रतापे विकटोर्ष्या उदित इव जागर्त्ति जगती ४ ॥

धन्ये भारतभूमि दृष्य गजनीभूपैश्च नोपप्लुता  
शेते सम्प्रति सूर्यसूनुसदने चङ्गेजलान राल ।  
लीन काऽपि कलङ्कपङ्ककल्पपस्ताहिव्किरा गूरका  
चित्ते न स्मर कैरुनादरुकुनुदीनालगानामपि ॥ ५ ॥  
काफरो मलिकः प्रसह्य भवतीं क्रीनोऽपि सम्भुक्तवान्  
इत्येपैव कथा मृषा ननु कथद्विबो हि भोक्ता भवेत् ।  
।चन्तामुञ्ज मुवारकागमनजा ह्योदीकुलनाऽभुना ।  
दीने दुष्टमना पुनर्नहि अलाउद्दीन उरपत्स्यते ॥ ६ ॥

राज्ञाधरशास्त्रो तैन्नङ्ग ।

यश शशिशतायते सुरनगायते याचक कृपाणलतिनाऽऽग्राम् ॥ ७ ॥

मतिश्च धिपणायते मधुरमायते यस्य रागसौ विजयिनीमुनो मम दृशो मुधीधायते ॥१॥  
 गन्धर्वाघरुरक्षतिभुभितया धृत्याऽम्बुधौ योऽर्पयन् ।  
 गाधत्व ह्मतीन् सेतुकरणप्रातश्रम राघवम् ॥  
 धर्म्यं कर्म दिवानिश्च विपुलयन् विद्वज्जनान्मोदयन् ।  
 रक्षद्गीयुनराज एष जगतामन्द्राञ्छत जीवतान् ॥ २ ॥

रामकृष्णशास्त्रिण पदवर्धनस्यैते श्लोकाः ।

सुनुस्तस्या भारतीं मेदिनीं यो यातो यातोऽक्रोचयुग्राजपुञ्ज ।  
 द्रष्टुं राज्य यौवराज्ये विराजन् जेजेत्याया नातिविद्याप्रगल्भ ॥ १ ॥  
 मोय सदा विजयता जयता वरिष्ठो यो नेत्रयुग्मगमताक्तमेवातनोति ।  
 राजवतीं विरचयन् भुवमित्यजता कार्यापतेः नमभिलष्यति रामकृष्ण ॥२॥

पण्डित राजारामशास्त्री मेहेंदलीपद्म ।

यदा प्रिमाफूलेस्स सुरधुनिपरम्पारमभज-  
 त्तदस्यातिथ्यर्ष स्वजनसहिता काशिकपुरी ।  
 ज्वलद्दीपच्छन्नोज्वलकनकमूर्ति धृतवती  
 तदस्मै भव्या सा पितरति पुरोप्रोक्तपुष्या ॥ १ ॥

राममिश्रशास्त्री साव्यशास्त्राध्यापक ।

कुवन् कामपि कौमुदीं सुमनसा सम्मोददानव्रता  
 सान्द्रानन्दत्रिपक्षभूपरमणामन्तापचिन्तामणि ।  
 शृङ्गारागमदेशिकस्त्रिजगतामानन्दनाडिधमो  
 रुन्द्धा मार्कटिकीं निरन्तरतमस्तन्द्रालुता पाथव ॥ १ ॥  
 तापोन्मुक्तन्दिवसमाखिल अर्वरो नाति शीता  
 स्थाने स्थाने स्वयमिह जनास्सर्पविद्या पठन्ति ।  
 सिंहैस्सार्द्धं विहरति गणः मैत्रुर शान्तवैर-  
 स्तत्ते वीव्यरिह परिणत भारत वर्षमेतन् ॥ २ ॥  
 चिरायुस्तञ्चिर पाप्मि निरविला मेदिनीमिमाम् ।  
 चिग्न्न सकलान् शार्धि कायाशास्त्रयि युज्यताम् ॥ ३ ॥

हृत्क्षरानुपासीयम् ।

दुरोदरदरी दारी दुर्दुरादरदुर्दरी । ददारोदारदोदूरादादरादरदाददा ॥ १ ॥  
 दुरोदरेति दुरोदरस्य दरी दारा अतिशयेन दारक स्यन्तु  
 दुर्दुरात्तन्नामकपर्वताददरमन्यून यथास्यात्तथा दुर्दरः  
 दुष्प्रक्रम्य एतादृशोभयान् आदरात् अर अन्यन्त दाद दान  
 ददातीति अरदाददा आदरपूर्वकातिशयदानकर्त्ता सन्  
 उदारद महादानिन दूरान् ददार व्यजयत इत्यर्थ ॥  
 चिरत्नैरक्षीषैः सवलिनिलयोन्मीलनाधिधौ ।  
 विधातात्रैदग्धौ व्यदधत न किं वाथ निकलाम् ॥  
 इमा कीर्ति कीर्त्या कविसमुचित रत्नानिचय  
 नचेय तद्वर्त्तेऽप्यथ च खलु नीचैविरचनम् ॥ २ ॥  
 अस्यार्थं विधात्राहि प्रथमतो वलिनिल्य सृष्ट्वा कविसमुचितेन  
 रत्नेन्नपूरणाय पुरितचेत्रीचैर्नस्थापनायमेव भवत्कीर्त्या ।  
 धवलीकरणाभावप्रसङ्गात् नहि भक्तकीर्तिरधोध प्रविशति  
 महात्मना कीर्त्तेः सभावतएवोद्भूतोद्भूतक्रमणस्य सिद्धत्वादिति ॥ २ ॥

मरयूपसादस्याशिपसुस्यन्तुतराम् ।

स्वास्तिश्रीमानुदन्वत्परिखवसुमतीमण्डलऽऽखण्डलश्री-  
 रदण्डाऽऽखण्डयदण्डो भुवनजनशिरोमण्डनहृण्डनश्री ।  
 विद्वद्दृन्दप्रवन्द्य प्रविदितसुयशोराशिरिण्डसम्राट्  
 मनुर्विकृोरियाया जगति विजयता प्रेसआफूवेल्सवीर ॥ १ ॥  
 आदितसप्तशनप्रजात्वचिक्रुपा हीनोजहांगीरशा-  
 हीरङ्गजेपिकीर्तिवृत्तिविमुख शाहोबहादुर्तथा ।  
 फरुहनीयरनादिरावहमदोऽब्दालीमुहम्मद्महा-  
 रात्रीयाश्वगुलामकादिर इमे भूपा विलोपङ्गता ॥ ८ ॥  
 एतेऽन्ये च भवद्भुजो निजभुजप्राज्यप्रतापोदयाद्  
 दुर्दर्शननकान्तयोऽपि मलिना लीलानना पातकै ।  
 ये त्वाभ्यावितवन्त उष्णरुधिरैस्तात्प्रजानाञ्च तान  
 खादन्त्यथ तवोदरात्त सतीहृत्त क्रिमीणाङ्गणा ॥ ९ ॥



त्वामत्यन्तमुपप्लुतामशरणान्निर्द्वार्यविश्वम्भरो  
 रक्षाकर्मणि ते न्ययोजयदये विश्वम्भरेऽनुग्रहात् ।  
 विक्रोरीममृतायमानचारिता श्रोतु श्रुतौ श्रीमतीम् -  
 देवैश्चाद्यविगीयमानयशमम्पातालआशीविषै ॥ १० ॥

पण्डितश्रीतनप्रसादचिपाठिन ।

श्रीमद्विजयिनीनाम देवी विजयतेतराम् ।  
 विभक्तिं भारत वर्षे या दूरस्थापि मातृघत् ॥ १ ॥  
 तदात्मज श्रीयुतपेल्लसनाथएट्टर्द्धआल्वर्द्धशुभाभिधान ।  
 दिदृक्षया भारतभूमिमेतामलङ्करोति स्वपदाबुजाम्याम् । ॥ २ ॥  
 यस्य स्फुरच्चन्द्रकराभिराम यशोत्रिकीर्णं भुवनत्रयेऽपि ।  
 सुराङ्गना नन्दनकोलिकाले सार्द्धं स्वकान्तेरुपवीणयन्ति ॥ ३ ॥  
 यस्य प्रचण्डाशुनिभ प्रतापो निमीलयञ्छात्रवकैरवाणि ।  
 विकासमासादयाति प्रकाम समस्तसामन्तसरोरहाणि । ॥ ४ ॥  
 यस्मिन् समाकाङ्क्षति देशमेत निरीक्षितु देवसमप्रभापे ।  
 काले ववर्षुर्जलदा जलानि जाता धरित्री च समृद्धमस्या । ॥ ५ ॥  
 यस्य दर्शनदानेच्छानुग्रहेण महात्मन ।  
 एतस्मिन् भारते वर्षे परा प्रीति प्रतीत्यते ॥ ६ ॥  
 हे श्रीमद्युवराज ! राजनिवहै ससेव्यपादाम्बुज  
 पातु त्वाजगदीश्वरो जगदिद य खेच्छया सृष्टवान् ।  
 यावद्भूमिमिमा विभक्तिं भुजगस्तावज्जनन्या हृदि  
 प्रेमाण परम सृजन्निजजनानस्मान् सदा पालय ॥ ७ ॥

\* इन्दौरनिवासि श्रीमकरध्वजसिंहप्रेषितम् ।

हिन्दुस्थानमिदम्पदासुखकर सर्वैर्गुणै सयुत  
 नानोत्पन्ननिधिं महाधनखनिं सहृदिसभूपितम् ।  
 इल्लंडीयनृपेण क्षत्रपातिना सन्मानित सत्कृत  
 तस्मिन् या निवसन्ति तत्प्रकृतयो वर्तन्तु नाथोचितम् ॥ १ ॥  
 अस्मिस्तु भारते वर्षे बहवो लघुदेशपा ।  
 तेषां तु नरदेवाना स्वामिनी सगुणा समा ॥ २ ॥

\* एतस्य कविताया सुखान्, पात्र, इत्यादानि बहूनि स्फलितानि सन्ति ॥

विकृरिया महाराणीलेडैलदनपालिनी युरोपामेरिकाराज्ञी चैशियाफूकभागपा ३ ॥  
 आसूत्रेलियालभूपाला श्रीलदननिवासिनी ननत्रालयुता मा'वी प्रिसाल्वर्तस्य कामिनी ४  
 लदनराजधानीय द्वीपेप्रेट्ट्रिटने स्थिते एतद्राष्ट्रस्य भूपालस्तृतीयोजार्जउच्यते ॥ ९ ॥  
 तस्य पुत्रो ऽस्ति चेड्रर्टा ट्यूकआफ्केण्ट उच्यते खनेत्रवासिन्दुमिते सने क्रिस्तक्षमानिधै ६

नष्टो ऽयल दनाधीशस्ततो ज्येष्ठोऽस्य नदन-

जार्जश्चतुर्थो भूपालस्तद्विलियम् चतुर्थक ॥ ७ ॥

अयजार्जनुजश्चापि नष्टो ऽभूत्तदनन्तरम्

तत सिहामन प्राप चैय विकृरिया नृपा ॥ ८ ॥

नयैनाष्ट्रैकसरयाके सनेऽस्या जन्मवर्णितम्

तथा सप्तत्रिंशन्दिो सन प्रोक्तोऽभिपिचने ॥ ९ ॥

तत साराजराजेशा शक्तिमाञ्छक्तिरूपिणी

॥ जर्मनीसाक्सकोवर्गसस्थानाधिपयराज ॥ १० ॥

प्रिसाल्वर्त पार्ते चक्रे शिद मत्वाशेनाभवत्

पचकन्याश्चतु पुत्राश्चालभदैवयोगत ॥ ११ ॥

तेषा ज्येष्ठ श्रेष्ठदाक्षिण्यशीलो विद्याप्रज्ञोवीरतौदार्यपात्र

॥ नातिज्ञानी वर्मपाल सदा य, सर्वे प्रेय सूनृतागीर्यथैव ॥ १२ ॥

किं वर्णयामि तव राष्ट्रगुणानृपाल किं वर्णयामि तव राष्ट्रसुखान्कृपाल

किं वर्णयामि नयनीतिगुणप्रकारान् वृत्तान् पुरा नृपतिभिः कविभिश्चप्रोक्तान् १३ ॥

भो राजन् भयता भयञ्जनपदेष्यागम्यते साध्विद

॥ म्यातव्य सुचिरसु भूमिषु सुख समुज्यता भोजनम् ।

श्रोतव्य शुभगीतकीर्तिपटल सर्वेशनामामृत

भोक्तव्य निखिलोपभोगभुवन सतुष्यता भारतम् ॥ १ ॥

पाण्डेया श्रीकन्दैयात्ताशशर्माण ।

कुचियाकोलः श्रीमशुभराजप्रशस्तिः ॥

इलण्डस्य शिखामणिर्नृपगुणग्रामस्य धामाद्भुत-

मापन्नास्तिहर नपराक्रमघनः सौजन्यवारा निधिः

ज्येष्ठोऽय नरराजभूषणमहाराज्ञीकुमारः सुधी-

र्जीयाद्वर्षगत स्ववशतरणिः श्रेष्ठो गुणप्राहिणाम् ॥ १ ॥

मसपदसमेनाकुलकालितचतुःसीमभूभागमर्ष्य,  
 मन्नाहन्यासभामैरसगचिरवर्ः सादिभेः शोभमानः ।  
 नेत्रैश्चापायमानो रजनियातरिवप्रोत्सुकैर्मातवानाम् ,  
 भावो भर्ता पृथिव्या अधेनगारिवसन् ज्वताक्षः मुग्धाय ॥ २ ॥  
 द्वारे द्वारे पताका नयतरणिलसद्रक्तग्रासा मुहासा ,  
 पूर्णैः कुम्भैश्च पीनोन्नतकुचसदृशैराचिताहारिहारा ।  
 रम्भा स्तम्भोरजातिर्हृतजननयना चारुदापात्रतसा,  
 हृष्टा यसङ्गमे च प्रकृतनववधुभूषणा राजधाना ॥ ३ ॥  
 दत्ता चेद्भवताऽप्रयत्नमुलभा दृष्टिश्वरप्राथना  
 राजन् भारतमातर क्षणमिह स्थित्वा कटाक्षीकुरु ।  
 एषा कोणगता यशःपारिमलं रापूरयन्ता दिशः  
 हा कष्ट सुतटुःखदर्शनरुशा शीकाग्निनादक्षते ॥ ४ ॥  
 त्व चेत्प्रातिमुराकरोपि नितरामाखेटलीलादिपु  
 गन्ताक प्रति शोकदग्धहृदया दुर्नातिभिः पाडिता ।  
 श्रीमन्भारतकामिनीउदचकसन्तापमावेदयेत्  
 तेनप्राथितदर्शनः सकृदहो किञ्चिद्भवानुच्यते ॥ ५ ॥  
 दीनाना खलुजीर्णकपटभृता क्षुत्पीडिताना गृहे  
 गत्वा सा त्वनगारिणा द्विगुणित दुःख त्वदालोकनान् ।  
 दैवाह्योचनागोचरो हि शमयेरित्येन सप्रार्थ्यसे  
 किं काथ्य नु भेदोद्वेलोक्य धनिना प्रासादशोभा गते ॥ ६ ॥  
 यास्मिन् राजगुणोज्ज्वला नृपतयः श्रीरामचन्द्रादयो  
 वीरा वीर्यविभूतिभिरणाविधौ क्लृप्तामरोवल्लभाः ।  
 जाता लण्डनशुक्तिमौक्तिकमणे भीमादयो यत्र च  
 तस्मिन् राजशिखामणिप्रणयिनी ह्याज्ञा जनन्यास्तव ॥ ७ ॥  
 तस्यास्त्र हि सुराजनातिकुशलो यातो ऽसि सत्पुत्रताम्  
 सा श्रीमन्नृपमालिभूषणमणी राज्य यथा रक्षति ।  
 राज्य प्राप्य तथैव दीनहृदयानन्दो भवान् रक्षतु  
 वाक्चेनस्तर्नुभिस्तमेत्र सतत सर्वेश्वर प्रार्थये ॥ ८ ॥

पण्डितवेचारात्रिपाठी ।

|  |       |
|--|-------|
| भियमतिरचिरै स्वकर्मजातैर्धशमुर नांतप्रतोऽतिप्रिक्रमस्य                           | (     |
| उदयमुपगतस्य यौवराज्ये महति पदे स्पृहणीयदर्शनस्य                                  | ॥ १ ॥ |
| जगति प्रिदितमागम निशम्य क्षितिरियमस्ति विशेषहर्षपूर्णा                           | ।     |
| निजपतिमभिलक्ष्य भाग्यलभ्य कृतमतिमात्मनि रागरम्पहपा                               | ॥ २ ॥ |
| यमजीजनन्निखिलभूत्रलय किल शामती स्वयशमा धवला                                      |       |
| स्पृहणीयशासनमदभ्रगुणं स जयेदुदग्रभुजदण्डयल                                       | ॥ ३ ॥ |
| जाता मुदा नयनपदमचय रचयति सप्रति कृतातिदयम्                                       | ।     |
| प्राति य तुलोकाधिपयालिलय प्रिक्रमन्तमाजिप्रिहितारिजयम्                           | ॥ ४ ॥ |
| सकलानिमङ्गलमयान्यत्रनात्रलोन्म हृष्यति समस्तमन                                   | ।     |
| वरराजराजिरनुनाधिक्रया प्रभया विभाति हितभूषणया                                    | ॥ ५ ॥ |
| कारिवृन्दवृ हितमजस्वरत हरिहेपित हृदयहारि ततम्                                    | ।     |
| वणिजा विभाति महता मुदिता प्रतिरध्यमालिराधिक्रिद्धिचिता                           | ॥ ६ ॥ |
| सकला गृहा अमितभामहिता महिमावदातयुवराजकृते  | ।     |
| नगरी प्रमाधनमुपेत्य भृश निजनाथदर्शनमहोत्सवमैत्                                   | ॥ ७ ॥ |
| समेपामस्माक समुदयमय वाञ्छितुमना इशा स्वीयान् द्रष्टु कृतमतिरदाराकृतिगुण ।        |       |
| दधान कारण्य स्वयमयति मन्ये क्षिातिरिय भिजित्री पूर्णाद्धिनिजधनमुयोगात्तमहिमा ॥८॥ |       |

श्रीमच्छ्री १०८ युवराजार्थ लवपुरख्य श्री सद्गोन्धामिचीफ

स्वर्गवासिपण्डितराधाकृष्णविरचिता श्लोका ।

|   |       |
|---|-------|
| श्रीलण्डनेशपदवीयदपीहत्रिज्ञैर्दुरस्थितैर्दुरधिगम्यतया दुरापा                | ।     |
| तावत्तथापि मनसामरमोत्सुकाना सकल्पकल्पलतिकेयमनोर्धदात्री                     | ॥ १ ॥ |
| महाराज्ञी धन्या यदनुमतितः सर्वजगता शुभ जात सर्वे विविधसुखसिद्धयैतरूपया ।    |       |
| भवेद्रीशूख्वृष्ट परमकरुणापुक्तमनमा सपुत्रा सामात्या निजजनगणैर्मङ्गलयुता ॥३॥ |       |
| तयेत्प्रमानान्दिनमानयेत यतो नतेनन्दनतेनतोय                                  |       |
| नयेततयन्नियततयेन चक्रासतेमप्यमतेसकाच  | ॥ ४ ॥ |

एकाक्षर ।

ततात्त तेतुत्तीत ततोतिततितताततम् । तातात्तुनतुतातेतुतेः नुःतत्तुत्तात्ता ॥२॥  
समायात दृष्ट्वा निजनृपवर लोकनिचया महन्नाग्य गन्ध दृपिनगगन्धदृष्ट्वा ॥३॥

दृढा सप्रार्थ्यते भवतु चिरजीवि जमतुल यतास्माकजमेभप्रतुकम्णापालनकृतेः ॥६॥

सृष्ट्यैगुणानामतिहर्षवृष्ट्यै तुष्ट्यैगणानामुमदोतिपुष्ट्यै ।  
 दृष्ट्यै प्रभूणा मप्ररोतिदृष्ट्यै जुष्ट्यैसता गद्यत्रिगेषदृष्ट्यै ॥ ७ ॥  
 श्रीलण्डनेशस्य कृपाकटाक्षैर्लक्ष्मप्रतिष्ठा सतत प्रवृत्ता ।  
 तत्क्षेत्रयोगाद्वयमत्र मान्या ईशो भवेदत्र सुसिद्धिकर्ता ॥ ८ ॥

लक्ष्मीनिर्वेददक्षैर्बहुतगरिरुत्तराश्रयी भाव्यमानो  
 मानीष्वानम्रमौलिन्युतजलजरजोरत्रिजताद्विविपक्षै ।  
 पक्षैः मत्कायकक्षैरधारितसकलद्वेषभाजा निताता  
 तान्ता यस्माद्विभक्तिर्भुवि वत युषराट् वर्त्ततात्सोलवर्त ॥ १ ॥

शृङ्खलायमकीयम् ।

साम्राज्यश्रियमाश्रिता परिपतपृथ्वीन्द्रमौलिपुन-  
 स्तग्विस्त्रम्भपरिसुखलत्पदयुगश्रुत्यत्तरामिधसम् ।  
 हास्यालक्तपरपरेवपरितः कीात्तप्रनापद्वयी  
 सूर्याचि द्रममौस्यय मुमनसामख्यातुमारोहति ॥ २ ॥  
 लोकालोकनलोलोचनचण प्राणन्तियद्विदिनो  
 वृन्दीभयात्रिभावयान्त वदनमन्दादरचान्दरे ।  
 युक्त युक्तिभिरुक्तिभक्तविजय जेगीयमानयशः  
 सान्द्र यन्नृपचन्द्रच द्रकचलत्सञ्चामर नामरे ॥ ३ ॥  
 हस्तालभविलम्बलवनपरैराजोपराजै पुरा-  
 सौभाग्यातिशयाचयाय धार्णी विश्रामितानश्रमम् ।  
 शेषोशेषविशेषशेषेमुपिरपि स्वीयोत्तमाङ्के दध-  
 द्दस्तेनैत्रमस्तप्रस्तुसपादि श्रीमानमीमदधे ॥ ४ ॥  
 भूमपणैराजकराजधानी विधानकीर्तेः परिकीर्तयतः ।  
 आधानयुष्णीयमिपादशीर्णाः समन्त्रिणोमिलिविधीविदधुः ॥ ५ ॥

काशिकपाठशालाया न्यायशास्त्राध्यापक, कान्हीप्रसादशिरोमणि ।

पृथ्वीशप्राप्तलज्जस्तत्र वितरणमदर्शनात्कल्पवृक्षो  
 नैति क्ष्नामण्लेस्मिन् विपुरपि भवतः कीर्त्तिर्दीप्तीसर्माक्ष्य

चिन्ताकृष्टः क्रमेण क्षपति मलिनतामेति चेति द्विजोहम्  
 धीरःकालिप्रसादस्तव शिवमानिश प्रार्थयामीहकाश्याम् ॥ १ ॥  
 कीर्त्तिकीर्त्तयितु क्षमो भवति कस्ते भारते साम्प्रत  
 नैपाभून्नभविष्यताहि नभवत्ययापि कन्याप्यहो ।  
 श्रीनिश्वेशसमीपतः प्रतिदिनयाञ्चा ममैषा शुभा  
 भूयात्माभवताश्चिर शुभकरीदिङ्मण्डलव्यामिनी ॥ २ ॥

श्रीमत्कविनक्ष्मीनाथविरचितम् वादशास्त्राष्टकमिदम् ।

वातो वाति भयेन यस्य शशभृत्पुष्पाति सर्वापिर्धा-  
 म्मार्त्तण्डस्तपति त्यजन्यतितरा नो स्वाधि वाग्धिः ।  
 हेमाद्रिप्रमुखा धरा गुरुभरा विभ्रत्यगास्सर्वदा  
 तत्स्वाम्पात्रविनोशिकिञ्चनमहः पृष्नीन्द्रब्रूडामणे ॥ १ ॥  
 हेभूपेन्द्र महेन्द्रतोऽपिभवतः श्रीरस्ति दिष्ट्याधिका-  
 सर्वे भूपतयोऽर्पयन्तिमनति दिष्ट्या वलन्ति मुदा ।  
 श्रीमन्मतिभृद्भवद्वपुरिद दिष्ट्या समालोकित  
 दिष्ट्या तत्करुणेदृशी समुदिता स्वम्या प्रजाया प्रभो ॥ २ ॥  
 शीताशोरिवकैरजाणि सरसीजन्मानिजाहर्षतेः  
 क्षुत्क्षामा अमृतोपमातिरुचिरस्वच्छाशरशोरि  
 उद्विग्नाश्च पिपासयेन सरसोनिस्स्वाद्योच्चैनिधे-  
 ह्योभादैवकृतानृपेन्द्र भयतस्तुष्टानि चेतामि नः ॥ ३ ॥  
 शौर्य्यादार्यगभीरतादिसुगुणप्रामाभिरामः पाति-  
 ह्येन्द्रोऽमाभिरयेनया दृगुनात्रशावतसोभवान् ।  
 पूर्वैःपर्वतरैरपीहमनुजैः किम्प्रापितादृक्पति-  
 र्भयाभयत्रिभागतोहि नियते स्मर्सेस्मप्राप्यते ॥ ४ ॥  
 पृश्वाचक्रसमस्तशक्रमुकुटप्रद्योतमानामल  
 प्राच्यानर्धमणिच्छत्रिजलसत्पादाब्जसत्पीठिका ।  
 श्रीराज्ञी नृपदेवता ससमये प्रामूत राजेन्द्रय  
 सन्वपातुमिहगतोऽसि यदि न श्रेय परकित्त ॥ ५ ॥  
 सर्वलाचक्रशक्रप्रमुदितमनस्ते वय वीक्षणोया  
 गागीर्गाम्मडाया कल्याणु भवति प्रोटमद्भव्यरागिभ ॥

प्रन्यर्थस्तोमद्राप्रप्रशमनवघनेस्वानुवायाश्चिमोमे-  
 सोमेशाद्या श्रियस्वामपिच दिधनुत्वरूपास्तत्प्रजाम् ॥ ६ ॥  
 स्वस्तिश्रीमद्भुवसुप्रथितगुणगणै रशोभिताभूमिरेवा  
 मूर्द्धानो मदमद विकीर्णतमनमां श्रीमतासञ्चलित  
 मोदतेन पुवर्गास्मगितानिग्रह श्याघते भाग्यवत्ता  
 विद्वासस्मश्रयते प्रमदभरभृतप्राज्यदानादतत्राम् ॥ ७ ॥  
 सार्द्धमन्त्रिणर्गैरप्य वत्प्रिधैश्रीर्ष्यप्रयम्सर्म वै  
 रेतयालोत्सवानामनुभामुत्तितस्सत्तृत्सर्मभूपे  
 एतामासप्रतानामयचयमभिनो वर्द्धयित्वाऽनुलोके -  
 श्रीराज्ञीदृक्मरोत्प्रतिक्रमनरुनेनतनोऽर्कोभ्राशु ॥ ८ ॥  
 लक्ष्मीनारायणकारिप्रिचितमष्टकमिदयथाधिपणम्  
 सादस्मन्लोत्रपर मुदितोभूयानृपप्रवर ॥ ९ ॥  
 दृग्वहूयङ्महीमाने घत्सरे वैक्रमेशुभे  
 पीपेमामिमितेपक्षे भौमेऽष्टम्यामिदकृतम् ॥ १० ॥

पण्डित माधीदास जिज्ञा स्कूल भागर ।

इङ्गलण्टीयगिरा क्रियेटरडाति प्रस्तयते योर्धद  
 श्रीशोवर्णचतुष्टयेथ यत्रनेयोहापिमर्कात्स्यते ।  
 स्त्रेयात्सो \* रमनामने मम तत्रादेयाज्जेमङ्गल-  
 माधोत्तममनोपिधि द्गणपदान्त्यर्हतात्राळति ॥ १ ॥  
 श्रीश्रीश्रीमोत्पदान्जेद्यनुपमादिभोऽनेष्टताम् याद्वितीये  
 प्रार्थ्यन्नेब्रव्यधीर्नेतिनितितातिभिः राजलक्ष्म्योभवा ये ।  
 यामाळायातलस्था श्रुतिगतकुनृपप्राणहृन्नीतिजाल  
 उगालामात्तितप्ताः शिशिरतरमरन्मुन्तापासुखपन्ति ॥ २ ॥  
 स्वस्तिश्रामद्राजराजावतस प्राप्तप्रोद्यत्सन्मणिद्योत्तिताघ्नी  
 चञ्चद्रश्मिप्रोत्तमन्जालमालास्तोमव्योमाश्रीशसोमातपत्रे  
 शुद्धश्यामाहरित्रयामागराजन्तुश्वह्वीजच्चांमरैरौज्यमाने  
 श्रीमद्राज्ञीकीर्णनिरुटोरियास्तेभूयो भूयः स्वस्तिभुयात्प्रतापे ॥ ३ ॥

श्रांप्रिसाफरेल्मसूर्यो निजकरानिकरैज्योतय योदिगतान्  
 स्वीयानुत्फुल्लकाजानापरिथचरणान्मोदयन्योजयन्य ।  
 प्राज्येराज्येशुभेस्मिन् प्रतपतिजनितानन्दकन्दान्वहनसन्  
 \* सस्सूर्योप्यस्यराज्ये वितरति किरणान् प्रत्यह नास्तमोते ॥ ४ ॥  
 यद्दोर्दण्डप्रचण्डाडिडिमडमत्कारप्रतापानल-  
 ज्यालाजर्जरिताभवन्तिरिपवो येराजनातिप्लकाः ।  
 येचान्येचमहीभृतप्रभृतयो यस्यानुकम्पाधिना  
 प्रत्यर्चन्तिनमति य सुबलिभिर्जायतिक्षितीमण्टन ॥ ९ ॥  
 श्रीमन्मार्तण्डप्रिन्साफ्रिलसकरचयैरन्मिपन्नैत्रमाल्  
 श्रीङ्ग्यूकोडिन्ऱेन्टुप्रमुदितहृदयो नष्टतामिन्त्रजाल  
 भ्राजत्सेनृजोन्सशालापठितविविधसन्छास्त्रजालसुसुभाल  
 माधोदास प्रणामरचयतिसततशिक्षक सागरस्य ॥ ६ ॥

श्री वै० वा० प० राधाकृष्णकृत वैधाद्विक वर्षम् ।

राजाधिराजोयुवराजमुच्यः प्रिसारययेनेल्सनामधारी ।  
 जीयाच्चिरमातृसुखार्थसिद्धौ लोकोपकारायचण्डिताना ॥ १ ॥  
 सन्मित्रन्धुसुहृहामनस प्रसादे सोत्साहसजनसुसभ्यसमाजजुष्टे ।  
 तुष्टेतथानिजगणेविविधोपचारैर्वैवाहिकोत्रिधिरभूदतिमङ्गलाढ्य ॥ २ ॥  
 योजागजानेकसुपोतयुक्ता डैमार्कदेशाधिपराजकया ।  
 तन्नैतुमुत्कान्नपिलण्डनेशाः प्रत्युद्गमार्थययुरादिवर्गाः ॥ ६ ॥  
 कुमारिकापाष्टिमिता सितैश्च बस्त्रै सपुष्पैरपिपुष्पपात्रै ।  
 युक्ता सहर्षा प्रतिमङ्गलार्थमुपस्थितामार्गगताधिरैजु । ॥ ४ ॥  
 तल्लोकमभ्रमिलद्रुहस्तिबाजिसघट्टमकुलतरनृपमार्गमामी ।  
 चात्रद्रुःसमिपरिहासुवर्गमुन्मैरत्तुङ्गवाहिशकटीपुरमापपत्युः ॥ ९ ॥  
 सौभाग्यभाग्यादपदेसुमुख्येगताःममाजागिरिजाश्रयेतु ।  
 वैसाहिककर्मतदात्रभूत् तद्रीतित्रिज्ञैरतिमुच्यवर्गै ॥ ६ ॥

गधशारिकृतेनसेचनकर्मणाभृतयाशुक मार्जनीवृत्तशोधने सततपथोविमलीकृत ।  
 गत्राहसुगन्धगधितगधमोदमनोहर वारारणशारिभिःत्रिचतमार्गमप्यमुदेशक ॥७॥

\* चिन्त्यम् ।



|                                     |                                     |        |
|-------------------------------------|-------------------------------------|--------|
| वाद्यस्वनर्गायत्रागानशब्दै          | बन्दीरवैलाकसद्वक्तिभिश्च            | ।      |
| वह्न्यस्त्रयन्त्रादिकृतस्तथा        | मूतद्रूपानिनादिरतिकौतुकच            | ॥ ८ ॥  |
| गजावलीभिश्चहयावलीभिश्च              | हयावलीभिर्जनावलीभिर्वनितावलाभि      | ।      |
| दोषावलीपुष्पफलात्रलीभिः             | सशोभितरत्नरावलीभि                   | ॥ ९ ॥  |
| हर्षाद्व्यसपन्नसमाजयुग्म्           | योगेतिशोभात्रिशदातदाभूत्            | ।      |
| यल्लोककल्लोलप्रिलोललालालि           | ल्लालालालेतेममात्रे                 | ॥ १० ॥ |
| काचादिदीपामधुकिट्टत्र्यो            | रत्नप्रभाभान्तिप्रेशेपरुषाः         | ।      |
| वर्णरनेकैर्बयताभिरामा               | वैनाहिकेमङ्गलकर्ममुरये              | ॥ ११ ॥ |
| वरेवरस्थानगते जनाना                 | प्रसन्नतिभूद्वनितागणाना             | ।      |
| सुवासिकर्पूरसुगन्धैस्तै             | र्मनोहरसर्पमभूत्तदानीम्             | ॥ १२ ॥ |
| नानासुगन्धान्वितपुष्पमाला           | पिरत्नयुतमौक्तिकमुख्यनद्धा          | ।      |
| वत्वावरस्यमुकुटोतुमापरिपा           | णिपोडेर्राडेत्रध्वजरगतेसुखदेजनानाम् | १३ ॥   |
| रणरणोचितचारुचमत्कृते                | गतसुरङ्गममतिगणैर्युते               | ।      |
| वरवराहसुदक्षिणराक्षिते              | जनरवःशुशुभेसुरसत्पथे                | ॥ १४ ॥ |
| जज्वल्यमानात्रलतेनसाक्षा            | त्प्रद्योतिताभूदतिचन्द्रिकेव        | ।      |
| दृष्टिप्रसादायसुधाशुतुल्या          | वर्याकृतिस्तत्रमुखाविचित्र          | ॥ १५ ॥ |
| इत्थान्निर्वाहेविधोषचारै            | शोभाप्रशेषेणममप्रमासीत्             | ।      |
| आसीदतीनादरजातिराद्या                | मुरयेपुयोग्येपुयथायथहि              | ॥ १६ ॥ |
| आरोग्यतास्याच्चिरजीविताच्च          | भूयात्ततोवृद्धिरनेकरूपा             | ।      |
| प्रीत्यैचकन्यात्रयोर्द्वयोहि        | सरक्षणचापिनिभोःप्रसादात्            | ॥ १७ ॥ |
| यद्यप्यहोलण्डनेलोकसद्यै             | र्दृष्टसुखनेत्रपथात्तुसाक्षात्      | ।      |
| आनन्दजाताहितथापिचात्र               | सप्राप्स्यतेतद्वदनेकरूप             | ॥ १८ ॥ |
| प्राप्तव्यराजेधिगतेस्वमानु          | कारिष्यतेनेकविधासुदृष्टि            | ।      |
| स्वातन्त्र्यभावेचविशेषबोधे          | भविष्यतीहलण्डजनैस्तुल्य             | ॥ १९ ॥ |
| प्राप्तस्वलोक्यस्यदिदृक्ष्योत्क्र   | स्यामात्यवर्गीयुत्रराजमुख्य         | ।      |
| समीश्र्यतेभरतवर्षलोकः               | प्राप्स्यन्तिहर्षविविधार्थवृद्धम्   | ॥ २० ॥ |
| वित्राहेलण्डनेशस्य त्रिपट्टैकत्रसरे |                                     | ।      |
| गार्चमासेदशारयेहि                   | गृष्टसत्रसरेभवत्                    | ॥ २१ ॥ |
| खयुगमनन्दैकमितेनुवर्षे              | तथात्रिपट्टारभुत्र प्रसिद्धे        | ।      |
| सपादितसत्कपनीयमुरये                 | वैनाहिकत्रर्णनमङ्गलहि               | ॥ २२ ॥ |

## गोमृत्त्रिका ।

|    |    |     |      |   |    |    |    |     |   |    |   |    |    |   |   |
|----|----|-----|------|---|----|----|----|-----|---|----|---|----|----|---|---|
| षा | या | ति  | श्री | म | तो | मू | तु | सु  | ब | ना | न | न् | दा | य | क |
| पा | या | त्त | श्री | म | तो | मू | तु | विं | ब | या | न | न् | दा | य | क |

सप्तमति ।

|        |       |        |         |       |       |       |       |
|--------|-------|--------|---------|-------|-------|-------|-------|
| आ १    | या १८ | ति ३   | श्री २० | म ५   | तो २२ | मू ७  | तु २४ |
| ख ८    | का १६ | ना ११  | न २८    | न् १३ | दा ३० | य १५  | क ३२  |
| पा १७  | या २  | त्त १८ | श्री ४  | म २१  | तो ६  | मू २३ | तु ८  |
| विं २५ | ज १०  | या २७  | न १२    | न् २८ | दा १४ | य ३१  | क १६  |

षायातिश्रीमतीसूत्रं खञ्जानन्ददायक ।

पायात् त श्रीसतीसूत्रविंशयानन्ददायक ॥

प० मात्तवीय गदाधरशर्मा

प्राधानाध्यापक मिर्जापूर स्कूल

|    |    |    |    |      |     |    |    |     |
|----|----|----|----|------|-----|----|----|-----|
| षा | या | पा | ति | श्री | त्त | सु | ब  | विं |
| म  | तो | म  | म  | म    | म   | मू | तु | मू  |
| ना | न  | या | न् | न्   | न्  | न् | न् | न्  |
| दा | दा | न् | दा | दा   | दा  | दा | दा | दा  |
| य  | य  | य  | य  | य    | य   | य  | य  | य   |



حلق و سیتا و مہر و مروت میں کیا سلام  
و ایسا ہی مرندہ سے بھی ہرانگ۔۔۔۔۔۔۔

گامی نہ ہو اگر ہو خواہر حرائے میں  
اسا رئیس کوئی نہیں اب زمانے میں \*

قطعه نارنج بنیاد شفاخانہ میں تصدیف میرزا مسعود  
\* برکت الہہ رنگ منحصص نہ صیا \*

تہہ کس کئی زرشبی ہر سو عیاں ہی

\* مندور آن دون ہندوستان ہی \*

جہاں ہی شفاخانہ کبی بنیاد

\* تصدق اوش رسن ہر آسمان ہی \*

صیا کو مکر نارنج از سو جہد

\* برس آف ونلس کا کنا حوش دشاں ہی \*

سنہ ۱۸۷۶ عیسوی \*

\* قطعه نارنج دیگر بنیاد شفاخانہ \*

دارالشفای عام نارس میں انگ بنا

دی آپے دست خاص سے شہزادہ نے بنا \*

نارنج صاف آفابہ نے ساختہ ہوئی

\* اب کیا دشاں حوش ہی برس آف ونلس کا \*

سنہ ۱۸۷۶ عیسوی \*

\* قطعه نارنج نریا فارسی \*

بہند آمدہ چوں پردس آف ونلس

\* جہاں را نامدہ دل شان کرد \*

برائے مرقصاں چو شد چارہ خو

\* دلالت چہ شور و مرنان کرد \*

شکستہ پٹے سال شد بے ماں

\* شفاخانہ حرم بنیاد کرد \*

سنہ ۱۸۷۶ عیسوی \*

ہندستان سے ابھر رہی۔ محسوس و بوجھوں میں رہی  
 سکھ اسی کے لڑنے کے ہندوستان میں تھی۔  
 بنگلہ علاقہ سے جو فرانس طغر بغداد  
 سرکش کو راز راستہ دکھاؤں، ہر ایک باد  
 چمکی ہی معرکہ میں جو اکثر یہ برق باد  
 چہپ چہپ گئی ہی کانپنے بجلی بس سحاب  
 درنا کا دل نگہل گیا ہی اس کے آف سے  
 موحوں کے تاروں تکمہ نہیں اضطراب سے  
 رستم کا دل بگڑنا ہی روح ایسی رزق  
 اک اک جوں ہی آسٹہ مدانگی میں عرق  
 ہاتھوں میں بیج بے ہر مار رزق  
 جس کی بہادری کا ہی عل نایہ عرصہ و شوق  
 دشمن بغیر جنگ و جدل ہیں مرے ہوئے  
 سرکش جہاں کے تاروں پہ ہیں سر دھری ہوئے  
 بس روک بے عنان کثیت علم امیر  
 شہ سو وصف کا کیا ہوا رقم امیر  
 حائق سے ہاتھ اڑتھا کے بہ کہ دمدم امیر  
 بانا رہے سناڑا جاہ و حشم امیر  
 مالک بہ نکت و ناک کے تا عروشاں رہیں  
 حب تک کہ مہر و ماہ و رمیں آسمان رہیں  
 لاکھوں میں سیکڑوں میں ہزاروں میں اسیاب  
 حنا لپٹیں ہی مہر کھڑچندر کا حواہ  
 روش ہی ویسے ان کا نبی مانند آمدان  
 اہل کمال ان کے ندوات ہیں کامیاب  
 بنکر ہی تھیں جو کوئی مشہری بہو  
 ہدیے کی قدر کیا ہو اگر حوہری بہو  
 جس کے بہت ہوا بہ مسدس کا اینظام  
 ہوا ہی درج صحیحہ آخر میں ان کا نام

لائے ہیں حاقق کے روسا - مسرت سے بجراح  
 ہی کوں اور مالک اولیم و مسرت و نوح \*  
 لے رنج و عم - ہواک رحمن رحماں میں ہی  
 بدل ان کا بس محیط زمین آسماں میں ہی \*  
 آرام سے ہی حاقق خدا ان کے عہد میں  
 پہنچے مراد کو عربا ان کے عہد میں \*  
 نکالیں۔ سب امیر و گدا ان کے عہد میں  
 ملنا ہی زندگی کا مرا ان کے عہد میں \*  
 کیوں کر نہ گردن ان کے حواں و مس دہرے  
 سندھی ہوئی نصیباً کہ ہم سب کے دن دہرے \*  
 اندیشہ لوٹ مار کا نہ رہی کا قر  
 سونہ لکائے جائے جنگل میں لے حطر \*  
 طاقت کسی کی ہی کہ معادل کرے نظر  
 وہ اومت اور بہا کہ نئے شہر آجوتے گہر \*  
 اب حواں بھی بند نہی۔ روبر ناکا ہن  
 اصناف کہتے رہا ہی کہ بہہ بادشاہ ہن \*  
 لکھا ہوں اب شجاعت و حرارت کا۔ کچھہ ہن  
 کاندہ نہ سر بگنا ہی کلک گہر مشاں \*  
 ہی۔ عالم ہراسن میں ہر پیر و۔ بو حواں  
 دنا نہی۔ ایک طرف ہو تو ان سے مفر کہاں \*  
 مانگس آمل تہاڑ ہی سر انا ٹیک کے  
 دھاگن حریف بیع و سدرن میں دھیک کے \*  
 تنع۔ اتسی برق دم۔ کہ سدر طالبہ، بناہ  
 کوہ گراں نہی ہو تو کئے صلہ برگ کاہ \*  
 کبھی اگر حال میں مانس درم کما  
 پہلو میں آفتاب کے چہب جائے قرص ماہ \*

پہلی ہی۔ قہقہوں کی سی۔ منراوں بلک  
 حرشید کی چہکتی ہی ہر مریدہ بلک \*  
 بارے حجل ہنس گرا میں پیدا ہی وہ جنگ  
 چہک چہک کے دنگہتا ہی رمن کو مہ بلک \*  
 ہی۔ چاندی بی ہوئی درنا کی موج در  
 درے نہیں رمن کا ستارہ ہی اوج در \*  
 ان کے مقابلہ میں پہلا کیا کسی کی بدر  
 ہر جا کہ بادشاہ بشید۔ معام صدر \*  
 وہ در مع حکم ہوئے بے حوالہ بدر  
 ہر ایک نیش پانی مٹانا دروج بدر \*  
 دہلی مہ۔ ررشدی رح در آب و تاب کی  
 دروں بے چہن لیا ہی سیا آفتاب کی \*  
 کیا اصل ہی طلا کی حواہر ہی گر نو کیا  
 کم مادہ جانے ہیں سب اختیار کا \*  
 مہ بادشاہ وقت ہنس دگر ان کا کیا پہلا  
 اسباب ظاہری سے نعر رہا سدا۔ \*  
 ان خونوں سے عقل کہہ و مہ کی دنگ ہی  
 سادہ ہی گر کناس۔ مگر لاکھ رنگ ہی \*  
 سانی وہ می دلا کہ طبیعت کو خوش ہو  
 دنیا کی کچھ نہ مگر نہ عملی کا ہوش ہو \*  
 مانند گل عروس سچ سچ ہوش ہو  
 نائل ہی رزمہ میرا۔ جس کر حموش ہو  
 کہنا ہوں وصف حسرو عالی جناب کا  
 قرطاس س گیا ہی ورق آفتاب کا \*  
 لوس بادشاہ کا وصف ہی منظور طبع آج  
 حس کا۔ نام مسروق و معرفت بلک ہی راج \*

بہہ وہ چس نہیں کہ حوِ حواہاں ہو آب کا  
 بہولا ہوآ ہی باع میں بختہ گلاب کا \*  
 با رب حوشا رماں و ربے ساعتِ سعید  
 ہنگام آمد شہ ہندوستان رسد \*

می داشت چشم مردم دہرہ شوق دند  
 ورنہ ہزار حال کم عیاں شد ہلال عید \*  
 مسمر ملک شدہ و سنارہ سند ساحت  
 مہر مدنی نشان حالات بلند ساحت \*  
 حو دل کا مدعا بہا برآنا ہزار شکر  
 رور سعید حق لے دیکھانا ہزار شکر \*  
 رندہ رمتن لے عرش کا نانا ہزار شکر  
 لندن سے ناشہ مدرا آنا ہزار شکر \*  
 کس طرح چس ولس کو دیکھے بعر ہو  
 سا مل کے بہہ کہو کہ سدا اون کے خیر ہو \*  
 دشوار ہی ثنائے حجاب وئی عہد  
 سرمہ ہی خاک نائے حجاب وئی عہد \*  
 باندہ ہی لوائے حجاب وئی عہد  
 عل ہی تمام آئے حجاب وئی عہد \*  
 حلفت کا چار سمت ہراس ہجوم ہی  
 ہر لب وہ ہادساہ سلامت کی دھوم رہی \*  
 ہرشی جہاں من آج ہی مصروب۔ اہتمام  
 گویں جھکا ہوآ ہی مٹاد بٹے سلام \*  
 بارے اوزارنے کو کئے ہی مہ تمام  
 کربی ہی کہکشاں بھی۔ رمیں سے بھی کلام \*  
 آدکھیں ملبوں نشان۔ حو ملے اون کے دارن کا  
 حورشد حلیہ مرش کرب دھوب چہارن کا \*



شدم وہی آب ناش خدا ہی چمن حسن  
 قمری کے سرور بہہ خدا ہی چمن حسن \*  
 دلا ہی رنگ اب چمن روزگار کا  
 لو بلداں وہر آگیا موسم بہار کا  
 نازک خیال دیکھیں بہہ دیرنگ روزگار  
 سورج مہربی سے ہر گل حورشید شرمسار \*  
 ہر شاخ کے گلے میں بڑا ہی گلوں کا ہار  
 شاداب نحل بڑی بانگنی ہوں وہوہار \*  
 طامسہ ہیں سرور باغ حو برسوں سے آب کے  
 شدم لوتہا رہی ہی قرانے گلاب کے \*  
 نیکے ہیں نیکے سرور سپہ قد ادھر ادھر  
 برگس کے شرق دند میں ہی چار سو نظر \*  
 علیچے وہی مسکراتے ہیں آنہں میں ہمدگر  
 چہرے گلوں کے سرخ حوشی سے ہیں سرسہر \*  
 بلبل چمن میں کلمہ بوحید حق بڑے  
 سعدی سے کہندو لائے گلستاں سلق بڑے \*  
 رنگس وہ لفظ دس حو گل ناسن کا لطف  
 دکھلائی ہی کسش وہی خدا مانگس کا لطف \*  
 شکرور کہو رہا ہی عدسوں میں کا لطف  
 مصرعوں نے گردن کرنا سرور چمن کا لطف \*  
 عدسوں نے رح سے بہینک دی چادر حجاب کی  
 کلباں چنگ رہی ہیں چمن میں گلاب کی \*  
 ہر بدت نظم طبع کے سانچے میں ہوں ڈھلی  
 حس طرح ساح گل سے چہہ ناعداں کالی \*  
 رنگس بیانیوں سے ہی عالم میں کھل بائی  
 حامہ دکھا رہا ہی سواد حقی حلی \*

- کہ ای حسرتوں ملک ہند و برنگ جہانت مسخر ہوئے درنگ
- خلافت دیوند خطا و حس حکمت دلچند سر جو ہشن
- در دولت و فتح باری دہد ہمیشہ طغر کامٹاری دہد
- مبارک برا سدر ہندوستان مبارک قدوم بو نا ہندناں
- درحساں ہون بحم اقبال بو منور ہون عالم ار نور او

سامی مجھے سہو سے مٹی سرح نام دے  
 • سر مست ہوں وہ دادہ گلگون کا حام دے  
 آنکھوں کو آفتاب کی طلعت مدام دے  
 • عقیقہ نحر ہو وہ زمانے میں نام دے  
 ثمرہ ملے رخص کا ہندہ قبول ہو  
 • حو لفظ ہو وہ بارہ گلستان کا بہول ہو  
 دل چسپ فصل ابر کی آمد ٹی صا  
 • حاس نیش طائراں چس کا ہی چہچہا  
 دھڑی ہی چہرہ گل برا عطر سے صفا  
 • سدرہ سے بھی زمیں کا ہی داس ہرا بہرا  
 • ہبک کے ڈالیوں کے سعادت حصول کی  
 • ندی کوئی گرمی بو مہکا آئی بہول کی  
 ہی حاسنا نہ چہانو گہندری گلوں کی بو  
 • نارش سبحان رحمت حق کی ہی چار سو  
 لالہ دنکھا رہا ہی حداد - داع آرزو  
 • گلگشت کر رہی ہی نسیم حسدہ حو  
 آنٹی ہی چس کے بہولوں کی حوشو دماغ میں  
 • طانوس مست جہومتی بہری ہیں باع مس  
 ہر انک بہال جہوم رہا ہی حس چس  
 • حاروب کش روش نہ صفا ہی چس چس

- درین سال، آن شاه عالیجناب  
 روانا دشمن حق کارسار  
 حوشه هرنگی را سرافراز کرد  
 بخدمت درگاه گردون اساس  
 که ای شاه واثا بودادی سما  
 درین شهر با مادد ای شهریار  
 ضرورتست تعمیر دارالاسفا  
 ر دست مبارک شه حوشه حاصل  
 خوب رسد کعبه سال باز صحرای  
 مذکور آن شاه دعبدل و حرد  
 ر نور قدومش بهنگام شام  
 چنان بود لطف چرامان عیان  
 بر اثری که شه حاکمه امروز شد  
 شد حال رحسار که همه رحان  
 رح ماه از حسن در یافته  
 حو در لکهدو برنده بازگاه  
 شد از مقدم بحسروی کانه نور  
 دهلی و کشمیر و شهر حموی  
 دلاهور و اطراف معروف دندار  
 ارو اکثر آباد آباد شد  
 مهر سرزمین حش شاهانه دند  
 باصلاح مسپور هندوستان  
 شد آراسته رحسول حسروی  
 می و مطرف حام و میناب می  
 مهنا در آن محفل خاص شد  
 ر دندار شه عالم گسیت شاه
- شهر مبارکش در آمد شتاب \*  
 - نهادند سر نورمن دیار \*  
 - در لطف دروے شان بار کرد  
 - دروے ادب کرد حلق النماس \*  
 - مرخص حصول فدموس را \*  
 - برا نا قدام جهان ناگار \*  
 - که باشد مفید مرخص بلا \*  
 - نامکند نیک آن اسپتال \*  
 - مگو این شعاخانه گشته بنا \*  
 - تماشاے شهر مبارکش نمود \*  
 - شده لطف صبح مبارکش نام \*  
 - ر که شد بحکم داع دل آسمان \*  
 - شب از روشعی صورت رو رسد \*  
 - سوندای دایه ووشدلان \*  
 - برای ر دور جدا نایه \*  
 - دل و دند که حلق شد و رش راه \*  
 - محل نشاط و معام سرور \*  
 - شده نکت و اقبال سه رهموی \*  
 - نمود آن شهنشاه سدر و شکار \*  
 - رعانا ر دندار او شاد شد \*  
 - هم آبادی را حیوانه دند \*  
 - که رفت اسهدشاه گندی سدان \*  
 - بصدرب و برئس شاه سہمی \*  
 - راستای عیش و طرب حمله شی \*  
 - ر مرط حوسی رهرة ریاض شد \*  
 - روان دعا و بنا بر کندی \*

نارنج بهشت ام انگلستان و درول مواکب نصرت نسان بملک هندوسان و  
 بنای دارالشما بطور یادگار بشریف آوری وایعهده ساطیت حصرو عالی  
 حداد هر رابل هائیدس الترت اندرین بریس آیب وبلر حلد الیه ملکه از بدائع اوکار  
 صواری بجم الدس اشرف جانصاحب متخاص بجم ساکن مقام برابی عدالت  
 شهر مدارس \*

- دنام حدائده نامش بکوست  
 حدادند روه رمس و ملک  
 مسیم که از باع بندش ورن  
 ر دست حسینان رنگین ادیا  
 ارو سفره رونده روه رمس  
 ر ماهی همه ما به صد آمدند  
 ده بدی که از عدلی شاه فرنگ  
 ولعهده آن شاه کسورکشا  
 که آری بقول بزرگان سحر  
 مرا هاف عفت داد ای حنر  
 مروں در هر ار حساس عدید  
 سحر کرد حسرو درور سعید  
 ندوان و مصر و دیگر شهرت بیز  
 در آورد انکه بملک عدس  
 مافال و حاه آن شه نعل روز  
 طلال همانوں دروس مرر نوم  
 بحسین مافال و مر شهبی  
 راه سردب - شاه رمس  
 مس ارسیر منصور و هم معدراس  
 اگر هست صد آوری در هر ار
- همه اوست هم جمله عالم اروست  
 شه مالک ملک و ملک و ملک  
 ارو عدیه مدعا بشکعد  
 سونش دن مرع رنگ جنا  
 رنگ خط عارض نارنس  
 بلیط بزم هر ملک شه آورد  
 چه هندوستان نامده است آب و رنگ  
 سوئے هند گردند بهشت نما  
 داندل ست در راه کسب طفر  
 شون سال آعار بهشت اگر  
 بدن بدح و هعدک و هم هشت صد  
 بلی سمر ملک قریب و بعید  
 دیلهائے محبون گسته عرب  
 در مدعا در کیف حوشتن  
 بهید آمد ار راه دریای شور  
 عکند ار قدوم مسرت لروم  
 رچو تسریف آورد در بیتی  
 دموده بماسه ملک دکی  
 دککنده آمد شه جوع شناس  
 و ترون سار هعدک و شش در سمار \*

بد بخشش ہی کیا اورنگا کہ اس ویس تالم ہی ۔  
 نہ خاک آبرو درناکمی ہی جس سے سخاوت منں •  
 کرس کیا دگر ہم بخشش کا ارے کے سر قلم سے  
 بڑا پہلے ہی بارس حاک اوسے خاک ندامت منں •  
 کہاں ہی مرع روح حاتم طائی کہ خواہش ہی  
 بچشم حود اوسے دنکہوں نسا دام ححالت منں •  
 رھے مندہ میں سوال سادلاں اور ہو عطا سب کچنہ  
 طربہ حامکر بخشش کا ہی بہہ اورنگی عادت منں •  
 درا دقت بہن باریکی طائم سے انسان کو  
 چراغ انصاف گاہی حدس۔ روشن اس ولایت میں •  
 حدر سکر بھمی ہندوستان سے ظلم کی آتش  
 صحت خدکی ہی اورنگی آف شمسدر سیاست منں •  
 براہ سہو گر آوسے بہاں مند سال منں طالم  
 منا کا سامنا ہو جائے اوسکو ایک ساعت منں •  
 ہی کسریں کا سا عادل اس عروس ہند کا نوشہ  
 گہ ہی ناں بھی وہی آئیں حوبہا اوسکی عدالت منں •  
 کئے ہنں مدرسے دہات منں ناں تک ہی جاری عام  
 وہنں شاہوں سے کوئی ہمسر اورنگا اس ادا صت منں •  
 حو ہی نادب اور تعلیم یوں مند نظر ہر دم  
 ہی اورنگو۔ اسلئے کوشش بہت دفع بہالت منں •  
 بہہ بھرس کیا ہنں اوسے ہنں بہہ جسمے بیٹکے جاری  
 دفع اسے رمیدداروں کو ہونا ہی رراعت منں •  
 جس اے روک لے جامہ ہی کوسوں مندرل تعریف  
 کہ ہو نکایف قاصد کو رنادہ بر مساوت میں • بعد۔

حدر مطلق بہنس بیہی بہہ اچانک آگئی آوار  
 رہاں حلق سے۔ گوش نمنا کی سماپت منں \*  
 کہ ارس کے نو بہال گلشن اقبال کا ہی قصد  
 بہہ باع ہند ہی حس باعداں کی اب حفاظت منں \*  
 ولعہد اس حلاوت کے وہ رسا باح شایہ ہیں  
 ہنس مردہ ہی اونکے آئے کا اس بادشاہت میں \*  
 قام ای بسہ سحر ستانش بوش کر دانی  
 کہ ہی۔ آف در درباے معنی اب لطامت منں \*  
 ہی حامہ عاشق حس صفت حویکا سحر کو  
 ہوا گروہ وہ رحدر مضامن کی حراست منں \*  
 دیاں وصف کیا شدرس ہی اونکا حسے باعث سے  
 بفرق قد بر رکھ سچیں میرا حلاوت میں \*  
 ہی شور آمد آمد اونکا اب حلمت منں شور انبیر  
 نہاد حلق حئی رہی ہی ظل حماست منں \*  
 بہہ مالک ہند ہی دارالسرور آج ارنی آمد سے  
 کمر بسہ مالک حور انبی ہی حئی اطاعت منں \*  
 بہر کی صدف کے لے بہا در ہیں کہ عالم میں  
 بہادر ہیں کوئی ہمسر بہن اونکا حلاوت منں \*  
 انبی حایے برس حو ابر بیساں کہاں اونکا  
 صدف ساں سینہ دشمن کا بہرے تیر حراحت منں \*  
 ابا ہو اونکی حرأت کی رہن آور سے کب معرفت  
 وہ لکھ گرچہ کیسا ہی تہا دہواں دحامت منں \*  
 بہہ مدحت نسر بروس منں سما سکتی بہن ہرگر  
 عطار حو ستانش اونکی لکھ اس عذارت میں \*  
 بہن ہورے درست اک سعہ دہی نظم برنا سے  
 ددر آسماں لکھ قصیدہ گر شجاعت میں \*

- دردِ دورہ ملے نہ فرشتوں سے ڈھی مراح درویش صفت سپہ ہی دل دردِ بہار ہی \*
- دندانِ دوری عیشگو بہہ سلطنت نہیں۔ شوقِ عروڑ حکم نہ دل خواستگار ہی \*
- مانندِ ناعدان کے ہی ماسدانِ حلقہ بریسا بر نظر رہے ایل و بہار ہی \*
- انہی برس ہی دنوں تم مقسم اولیں۔ بدودن میں شجر کے سنگ دستکار ہی \*
- نالدانِ حوٹرمیں بہادت لدرتھیں۔ اوں کے نگاہد اشیتِ مقدم شمار ہی \*
- موروں کرے ہی گانگے سر سرتلند کا۔ خو حار صفت ہی وہی آریکہومنس خار ہی \*
- میرشد زمانِ حداب و کیبہد حسکا ادک۔ درنایے سلطنت کا در شاہوار ہی \*
- نرکس خیال فکر سا نکتہ شمع ہی۔ عالی۔ دماغ منکس۔ روزگار ہی \*
- ہر علم کی رمورشناسد میں عقل گل۔ تھر ہور کی سمیہہ منس سلیمہ سعار ہی \*
- بص و عروڑ و کیبہد و عصبہ حسکا وری۔ درہ نلک دہی انکا نہ دل بر عدار ہی \*
- احلا گرم حوشی اشفاق تا صفا۔ انسانیت منس مورومس یک دہی بنا ہی \*
- شدرس کلامِ حدبہ و شاداب رومی گل۔ نام مراح دیک نہ شرمسار ہی \*
- از بہر سد رھنگی بہہ شریف آوری۔ اس ناع ہند کے لئے لبر بہار ہی \*
- در ہر گل مران سے نہ اوں نام ہی۔ کتنا۔ دراز۔ داس امندوار ہی \*
- بہہ نور دند نمکو مدارک ہو دوستو۔ اثباتِ حد رخواہ ہی بالاعدار ہی \*
- اناب حسروانہ سے ہونا رکاب دوس۔ امی۔ ہندو بہہ سانگہ درونگار ہی \*
- بار ہو مسکاب و عاسنت اعل کی۔ بہہ شہد سناہ دھر ہو حب تک دعا رہی \*

در مدحِ حدابِ فصیحِ مآبِ درنسِ آفِ ولسِ صاحبِ بہادرِ دامِ اودانہ  
 بصرفِ خاکسارِ امیرِ حسنِ منکسِ بہِ حسنِ محررِ مں بہرِ بتصل  
 نگوڑ صلحِ سہارنپورِ واقعِ ممالکِ مغربیِ شمالی  
 قدم رکھا ہی کسے ہند کی راہِ مسامتِ من  
 جو ہی بڑھکر بہل کے حلقہ کا طالعِ سعادتِ من \*  
 ضرور آنا ہی کوئی مطہرِ انصافِ انسا اب  
 کہ حسدے عیسے سے گدروں دی ہو سا سے رعایتِ من

- بمادت مو بحال انام خلق امروں۔  
 مندورست ر انوار دہد او گیتی  
 رہے طہمت ناکش کہ صخرن عد عام  
 مدرسین و مدارس ہمہ و طالب علم  
 حکومت دار بعد باز بر ملک نکم  
 بنا کہ بیست بعد نو ما کجا احقو  
 برار دست دعا در حجاب ناک الہ  
 سمند اناں انام رور رامت رام  
 سر بر گندی و دہم ح ح نا باشد  
 برق ظل الہی صدام داد امروں
- حماست نو جہادرا دساظ امن و امن
  - نہ ہمنے ملک انار معدلش رحش
  - حصول و نواست احق ہمچداں ما آن
  - سناں معدم بحسرو بعد رلان گوداں
  - کہ شاعرانہ حناں بر سرم کند احسان
  - روصف بست چو بدوں صفات ہدوسداں
  - کہ ساہراہ ہعمر اند ہون شاداں
  - حرور حرح ہفرماندہی مہادہ عدان
  - نحت و امرا شہای گدی و حکم رواں
  - ردرار عمر برنسن آف و نلر نحت حواں

در مدح حکاک معلیٰ اعاب ملکہ معظمہ دام ابدانہا و دیر شاہزادہ وازہ نندار  
 ولدعمہ صاحب جہاد دام مہراندہ

- ابرارک شان قدر نہ آسان گذار ہی  
 اہل نظر ہرار کزو عور بر نظر  
 ہس واقعات ہد ہی اسکے بنوعنی  
 سیکے حو ہا سو ہما ہی ولے بعد دہو حراج  
 دیجم گرگ کدظرح صحہو عربوی  
 ہمردوسرنگا دور حلا ہانک کہ آح  
 ازسوقت کا وقوع ہرا درد حنر ہی  
 عن البحر انکو دہہ استک ہند من  
 دعوی کہ حسی ملکہ و کورہا کی سر  
 دہے ہی زور و روتقی نہ مال و جسم  
 وارث کدارہ نام بھی حسکا سعاید ہا  
 شاد آف ہر سے گشتش راز ہی  
 عی شہا شاہ دہر ہہ سکا معظمہ
- یہاں راہ امیدار عجب نچدار ہی
  - آبی نہ حو نمیں نہی حو کچہ ہونہا ہی
  - کاہی نس اور حال رماں درکنار ہی
  - گذرا حو حال اسکا رہ سخا آنکار ہی
  - بہا ہوا سنے حونکا دہی حرعہ حوار ہی
  - دوسرے سے ہسرت سے وہ فکار ہی
  - حسدن کی سنم کا گونا سال رار ہی
  - کسرا آمد بھی کہ حواس دن بہا ہی
  - دیو معالمت میں بہہ عالی دینار ہی
  - ہر اک بشر سلی اندر مال دار ہی
  - سب تہورنگ رہا بہ تجارت کا کار ہی
  - حن نکتہ گلاہ ایک کہ بیت گذار ہی
  - حسکا نہ ہسیر آح کوئی شہراز ہی



نام نامی را در آرزوم ر حرب مصعها  
 در مشم صنعت لفظ چه حورده منح و ناب  
 نا در آند بر سما هر رور و شب شمس و قمر  
 نا کسند عطار از گلهای نونا خوش گلاب \*  
 نامون در ساظنها حکم جاری از ملوک  
 نا نگرود در میثالس ساعر لعل مداب \*  
 عرم عالمگیرس را منح باشد هم عدان  
 سانه آن ربه عالم در شش گردد سحاب \*  
 آکه داد شاعران از داد داور میدهد  
 مددند طالب دعا گود الی مستجاب \*

مصدق مدحده در شان حضرت والا در زمان سلطان شاهنساء انگلند و هدرستل  
 حجاب منص مآب دریس آب و بلر و لندیک صاحب بهادر نام امدان و احلاله  
 رش رسائی تحت بلند هدرستان که سیاه بر سر ما اگند چندی سلطان \*  
 ز منص معدوم ان نادساره ادر نوال رمین هدد سده رشک روضه رضوان \*  
 پئم رماه رعابای هدد می آند هدد حسرو ایلکند و ساه هددوستان \*  
 در ابراه هدد گلگست هدد ناستی مگر نوحه شاهنسیه کشیده عدان \*  
 صدر آنده سدماش مطهر همه علم فاون حمله جهان در طبعمنس بهان \*  
 دریس رواج ندادار هر دانه که مال که تلم نابعه رودق حو حدس شعله نسان \*  
 حرد نکفت که اس سانه جدا باشد بردر سانه عدلس حکومتی سایان \*  
 یعنی شادی خاطر سرور جان و دل رسید مطلع بازه حو نامه جانان \*  
 رابنداب ناعه جهان ناس دوران کسی ندد چندی شاهزاده دشان \*  
 نگاه لطمه و گرم بر سر رعیت هدد گذار بحر عطا دان گیر انگستان \*  
 بعهد عدل حدس والی ولادت هدد که کوس نعدده دوازی بلند سردوران \*  
 هر بر مست کند گار را نهدنی سنم نسانه مظلوم حود نده حورن \*  
 شجاعت تو بعبر دعا عدو انگن سخاوت تو ر حاتم بلند کرد محسن \*

وام گستردش سلاطین حمله روما و سنام

برگ بوران شاه چین و راب هندستان شاد \*  
 لجر و در مفتوح شد از صدمه صرف جنگ

هند را حصص حصص مسمار آتش شد حراف \*

اس ندر سحر ر املاح حکیمان و رنگ

در جهان مشهور و اعدا را جگر گسته کتاب \*

روت هر کس در نگاهش نافه امن و آمان

در جهان لجر شد از جنگ با نوم احساس \*

از سر لطف و گرم بهرش عطا شد اس همه

منصبا و خاکد و خلعت هم وظیفه هم خطاب \*

اس ر انصاف ست و ربه سائنا در عهد خویش

قوم اسلام از سلاطین ظم کردند ارکاب \*

مت گده هم بت سگست اورنگ رس سنگدل

از ددر مستوش کرد و گشتا هندو بیحساس \*

لشکر از عربی کشید آن شاه محمود که بود

هر طرف عارب دموا و هند را کرده حراف \*

وس محمد شاه هم گر خاندان مهمی ست

حال او هم انگران را نو به بن اندر کتاب \*

شد کنون در عصر انگریزی نه بین اس انظام

میروه بیخوب باحر هم نه حشایی هم به آنا \*

تاریخی ریل و هم گشتی نحایی را به بن

حسب شروع نام برگوه اس همه عجب العجاب \*

تاریخیه غلش را دگر در شهرها

میر میانی در بر با نایف شد صدها کتاب \*

مسیح چری شده اندر قلمرو بیعدن

هر کس در رتبه علم سارن اکناس \*



শ্রীমান যুববাজের ভাবতবর্ষে

আগমনোপলক্ষে

# কবিতাবলী।

যুববাজ প্রিন্স অব্ ওয়েল্‌সের কলিকাতা আগমন।

ওই দেখাদিল ওই সিরাপিস # সহ  
অযুত অর্গবণোত, মুহূল গামিনী,  
ধাইছে কুলেব পাণে, নব ঘন যথা  
বদ্রিষাব কালে। অসংখ্য মানবদল  
গঙ্গাকূলে দাঁড়াইয়া, কাতারে কাতাব,  
অনিমেঘ চক্ষে, চাইছে জাহাজ পাণে,  
মানন্দ অন্তবে, গাইছে মঙ্গল গীত  
“যুবরাজ প্রিন্স অব্ ওয়েল্‌সের”।  
হেথায় গডের মাঠে ভীম কলেবব,  
অগণ্য গজবাজী, সৈনিক বিক্রব,  
সুসজ্জিত গরজিছে তৈরব নিবান্দে,  
তুলিছে ফলক বর্ষা তরবারি কেহ  
আকালিয়া ভয়ঙ্কর ভীমবণে যথা।  
ভাগীরথি,  
মবি কি আশ্চর্য্য শোভা কবেছ ধাবণ,  
কিবা রত্ন হাব সাজি পরিয়াছ গলে,  
সহস্র সহস্র পোত ভাসিছে তোমার  
বক্ষে, যো ভীমাকাবা হান্নরের প্রায়,  
অগণ্য মানবদল তটে দাঁড়াইয়া,  
পড়েছে তাদের বিশ্ব নির্মূল মলিলে,  
আকাশে নন্দ্রালা মবু কিরণ  
আনন্দে হ্রাসিছে সবে নন্দ মন্দ রূপে,

যুববাজ আগমনে, পড়েছে তাদের  
জ্যোতি বিশাল জলেতে, চেউতে পাচিছে  
যেন স্বর্গবিদ্যাধবী চঞ্চল অন্তবে  
ভাণ লয় সহযোগে। দীরে দীরে পোত  
সব, আসিতে লাগিল লয়ে যুবরাজ।  
বাজিল মঙ্গল গীত মধুর নিক্ষেপে,  
অশীল বহিল তাহা শব শব কবে,  
বঙ্গবাসীব কর্ণেতে দিল গিয়া চালি।  
লাগিল জাহাজ সব তটীর ভীবে,  
শোভিছে যথায় রাজধানী কলিকাতা,  
( কি ছার ঠহার কাছে দেবতা গোবব  
অগারবতী শচীন্দ্র পবিত্র বিলয় )।  
অকস্মাৎ তোপধ্বনি হইল নগরে,  
কঁপিল গঙ্গাব জল মানব সকল,  
সি হান্দে সৈন্য সব গর্জিল অমনি  
অখাবোচী পদাতিক সশস্ত্র হইয়া  
দাঁড়াইলা স্থানে আপনার, হুট্ট গানে।  
উপনীত হইলেন চারপাল ঘাটে  
স্বগণ সহিত পাইলেন সমানন্দ  
বাণ বৃদ্ধ আর যুবা সকলের কাছে।  
বাজিল ই রাজি বাদ্য চৌদিকে অমনি  
রথাব মুরজ মন্দিরা সেতারা আদি,  
আনন্দ বহরী তথা খেলিতে লাগিল।

\* যে জাহাজে যুবরাজ অসিয়াছিলেন তাহার নাম।

অলি গলি চারি দিক, আলোকমালায়  
 হয়ে শোভমান, ডাকিছে মানবে,  
 যো কবিত্তে আহ্বান যুববাজে। গেলা  
 তবে যুবরাজ গবর্ণমেন্ট হউ.স,  
 সম্বোধিলেন উচিত আদরে সবাবে  
 লইলা আশন তথা বসিবার ভরে।

যুববাজ।

চিবকাল ভিগাবিণী এই বঙ্গ নাটা, -  
 গাগিছে তোমার কাছে এই ভিক্ষা, তাব  
 বিবজ্জ্বী ভীর এই ভাবত সস্তা  
 সবে বহুবীর্ঘ্যসী, পালহ এদেব,  
 সত্যাব প্রায়, যশ সৌরভ মুখিবে  
 এ নৌব জগতে। এই যে নিরীহ  
 ভীর দেবিছ, বাঙ্গালি মঙ্গল কাণা  
 এরা সতত কবয়, সদা পক্ষপাতী  
 ব্রিটান রাজ্যেব। দেব একবার,

প্রভু। ভারতের দশা অজ্ঞানান্দ মূর্খ  
 সব ববে হয়। হায়। অধারেপড়িরে।  
 বিজ্ঞান আলোক যারা না জানে স্বপনে  
 কোথাং উন্নতি তার? নাশ সব হু  
 হ্রাপহ অগতে কীর্তিস্তম্র আপার  
 পালিয়ে প্রজায়বীতিমত অশাসনে।  
 এই মিত্তি করি পরে দৈশ্বেরেব পদে  
 মহারানী যেন থাকে নিরাপদে।

ভারতবাসি।

গাও সবে একতানে যুবরাজ জয়।  
 গাও সবে সর্বস্থলে মহাবানী জয়।  
 উঠেছবে গাও সবে ভারতের জয়।  
 জয় জয় জয় জয় বাঙ্গালীর জয়।

শ্রীযজ্ঞধব মুখোপাধ্যায়।

শ্রীশ্রীমন্মহাবাজাধিবাজীব জ্যেষ্ঠ তনয় যুববাজ  
 প্রিন্স অফ ওয়েলসেব শুভাগমনীয়  
 স্তবমালা।

কি শুনি মধুর বব শুভানন্দ মহোৎসব  
 সবনে সুবাদ্য সব বাজিল।  
 নীল পীত সীত বদ্রে শশজ ভূষণ অঙ্গে,  
 সেগাগণ অগণন সামিল।  
 যো ধুকতু বালী, উজরে আতস বাজি,  
 বদ্রে ভদ্রে গজবালী গাচিল।  
 ধত ধত বঙ্গ তুমি, কলিকাতা বঙ্গভূমি,  
 পতি সহ ধবা সতী সোক্তিল।  
 উপস্থিত ধরাধিপ, ব্রিটনের দীপ্ত দীপ,  
 প্রতাপ কিরণ রাশি অলিল।  
 ম্লিগিয়া তারকালা, ভূভাগে গ্যাগেব আলা।

অত্র পুঞ্জ সৌদামিনী উদিল।  
 কে বলে চপলা নাহি স্থির হয় কদা।  
 দেখুব সে শজ পুঞ্জে রহিয়াছে সদা।  
 কে বলে নবীন ধা গগনে উরজে।  
 কর্ণ পাতি শুভক সে বাণানে গবজে।  
 সুপ্রভাত প্রজ্ঞাদেব আজিকা হইল।  
 প্রিন্স'ক ওয়েল্‌স ভার ভারতে ভ্যতিল।  
 ছু ধের তিমির নাশ হইল ছু বিব।  
 দরশন রশ্মিবোণে প্রহ্লদ শরীর।  
 এস এস এস নাথ। দাও দরশন।  
 পাতিয়া বেখেছি মাত্র ভক্তি সি হাসা।

অত্র ধা গাই প্রভো কি দিয়ে তুষ্টিব ।  
 ববিতা কুম্ভে বাহা তোমারে পূজিব ॥  
 করহে করুণা দীনে কবণা আকর ।  
 কাঙ্গাল বলিয়া মনে চুপা গাই কব ॥  
 অমিত সন্তান বিধি করিলে অর্পণ ।  
 পিতার কর্তব্য নহে করিতে হেলা ॥  
 কব কত মনে যত আছে দুর্কামনা ।  
 অপ শুভ দুই হীন না পুবে বাসনা ।  
 অশম তথাচ ইচ্ছা লভিতে সহস্রে ।  
 কি জানি কে কুম্ভবরে হৃদয় সরোণে ॥  
 আশ্চর্য্য মানব ভাব আশ্চর্য্য সাহস ।  
 উড়িলা উসাহ বাপে মাস ফাস ॥  
 বহু দূব আস্ত বাস করি মর্ত্য লোকে ।  
 মুহুর্তে যাইতে ইচ্ছা ভায়ুর আলোকে ॥  
 অনাথের গাথ ভূমি ভারতের পতি ।  
 কর কর কব দূব মোদের দুর্গতি ॥  
 কেণে পাইব জাপ ছ খের সাগরে ।  
 তাব তাব তার ত্রাত একান্ত কাতেবে ॥  
 ভূমিত হুযোগ্য মহাবালা মহাবল ।  
 যা ইচ্ছা করিতে পার লক্ষ্যতা সকল ॥  
 অন্ধিত তোমার আজ্ঞা সব চিত্ত পটে ।

বাঘে ছাগে জল পান নবে এক ঘাটে ॥  
 বায়ু বহি শম্পা বদী তোমার ঘাবেতে ।  
 আজ্ঞা মাজ কার্য্য কবে অতীত গামিতে ॥  
 দূবস্ত দুর্গম বা সমুদ্র অপার ।  
 পোতাদি শবট বার্থী তিশে বরে পাব ॥  
 ভব ইচ্ছা হণে তাগা পণ্ডিতাব যথ ।  
 ভাবত হৃদয়ে কর শান্তি উদয় ॥  
 কুবেয় মহাস্বাদেব ভাভাব হইতে ।  
 অধিক তোমাব ধা তিশা শিক্ষা দিত ॥  
 শিল্পাদি বিবিধ বিদ্যা হুশিক্ষা দাতোতে ।  
 ঘূচাও অজ্ঞতা ধ্বাত প্রশান্ত ভাবেতে ।  
 সামান্তে কি হয় এই ভাবেতব বামী ।  
 হইবে ভবত তুমি অত্রমাণি আণি ॥  
 গাবহ প্রজাব স্থপ নৃপ চূডামণি ।  
 হুতে সাতাজ্ঞা ভোগ কবহ আপণি ॥  
 চিবলীবি হয়ে সদা থাকহ কুশলে ।  
 বাডুক অশেষ যশ এই ভূগুণে ॥

শ্রীনবদীপ চন্দ্র গদী ।

বিবাস জগতাই,

জিলা মুর্শিদাবাদ ।

যদিও প্রশাসনা বিবেক নয়নে ।  
 কবে তৃণজ্ঞান সদা এ ভব সম্পদ,  
 নহে অবিচাৰ গহে জম । শূণ প্রভাসন  
 মনে লোচা লোভা মাজ অশণি পতন  
 প্রায় শীঘ্র ধর্ম শিরে, তপাণি মন্যবে  
 বশ হায় সম্পদ এমন বোখা কেদেখেছ কবে?  
 পৃথিবীধর রাখিলা পৃথিবী নাম যাব  
 পৃথুবাজ, ভাবত বিখ্যাত হলো ভরত  
 শাগনে, গহুৰ বিধানে হয় মানব  
 আখ্যান শত্রাত পবশবাণ রাবণ দমা

আর কত ধর্ম অবতার পূা বত যে সত্রাট,  
 ধারা কবি শত অর্থবোধ থাকে পুণ্য ভূণি  
 গায় দিলা সমতনে, থাকিলে যয়নে  
 অন্য দেহিতেব তাঁরা, কি সাজে সাজিয়া  
 কিছা কত যে গৌরবে পূা বিবা বাহবশে  
 আব কত পুণ্য মনে আসেন ভাবেত আন  
 মহাবাণী হুত কেণে সমস্তনে, তগে  
 ধত্র ই লও ধত্র মঁহারী, প্রায়স অক্ষওত্রম  
 ধত্র, মানন্দ ভাবত অন্য বিবামদবাৰ ।  
 শ্রীহরিগাথ শিরোবন্ধ ভট্টাচার্য্য

১

কল্পনে। দেবেছ কি সে অমব উদ্যান,  
লজ্জিতে বিশ্রাম স্থখ, সে বৈকুণ্ঠ পুবে,  
যথা অমব রাজ, সহ দেবগণ  
অসংখ্য, আসেন ভথা প্রহুট অতবে ?

২

দেখেছ কি কভু সেই দৃশ্য অরূপম ?  
বিমানে পাতালে, তুমি সকল এবাধ  
কব মদা গতিবিধি, আহা। মনোবম  
করিব বল্লাগা প্রস্থ কবিতা সজ্জায়।

৩

দেখে খাব যদি তবে বল গো কল্পনে।  
উপমিতে পাব কি তা এমব ধবায় ?  
পাব কি দেখাতে লোক ভাবত উদ্যানো।  
দেবেছ সমান আজ নবেছ হেথায় ?

৪

পার যদি চল প্রিয়ে সামান্য সজ্জায়,  
সমস্ত ভাবতবাসী করি সহচর  
দেখিব সে হুব লোক, এমব ধরায়  
শচীপতি সম সেই বাহুবাহেশ্বর।

৫

জলধি অসিত জলে দেখ গো কল্পনে।  
কত সিত পোত হাব অই ভাগমান,  
আনান্দেয়ুবরাজ ভায়ত উদ্যানো  
আসিছো আরোহিয়া বুঝি বলয়ান।

৬

চিব জ্ঞানশক্তি আছে, মণি কণি পিরে,  
কে বল কল্পনে, তাহা দেখিছে নয়নে ?  
কিছু যদি বেহ তাহা পায় নিছ করে,  
কেমনে প্যাদেদায় হয় তাব মনে।

৭

সে আনন্দে এ ভাবত ছিল গো বঞ্চিত  
এত দিন, শুনিয়াছে সে গ্রেট ব্রিটনে  
আছেন ভাবতেশ্বর ভাবত বাহিত,  
এবে সিদ্ধ বাম হবে তাঁব দবশনে।

৮

এথা ভাবতবাসী, আনন্দে সান্তিয়া  
গাইবে বিজয় গান আকাশ অবনী,  
ধ্বনিত হইবে তাহে, তা সহ শিশিযা  
উঠিবে ড্রুমেব পদ বিউগ্লেব ধনি।

৯

কি আনন্দ শ্রোত আজ বহিবে ভাবতে,  
পাব কি ভাবতবাসী তাহা বর্ণিবাবে ?  
আব দেখি সেই চিত্র কল্পনা তুলিতে।  
সস্তাস ভাবতেশ্ববে সকলে মানরে।

১০

বহ আবাধনা পরে ভাবত সস্তাস  
পেবেছ অমূল্য নিধি, কৌস্তভ বচনে  
বহুতমে পায় যদি ভিখারি যে জন,  
ধবে কি আনন্দ তাব আশ্বাসিত মনে ?

১১

গাও তবে গাও মবে প্রমর্ত্ত হৃদয়ে  
তাঁহার বিজয় গান, গগেন্দ্র শিববে  
হইবে ধ্বনিত সেই সঙ্গীতের লয়ে,  
স্বর্ণ পথ হতে তাহা গুহন পাবে

১২

“এস বাহুবাহেশ্বর” বলিয়া সকলে,  
সাধর সস্তাসে তাঁর ডাক ঐক ভানে,  
এস রাজ রাহেশ্বর। দেখাও সকলে,  
অহুণ্য সর্গ শোশ আজ হিদুহানে।





# যুববাজ প্রিন্স অব এয়েশ্লেব ভাবত

## মাত্ৰাজ্যে শুভাগমন

১

সুদৰ্বে আকাশে এক নশত্ৰু উজ্জল  
 ঝলমলি গনে করে আশার সঞ্চার,  
 নয়ন রাগিয়া তায় নাবিক সকল  
 অতি ক্রমে উর্ধ্বমুখ ভীম পাবাবার ।  
 বায়ু কোণে উঠিমেষ চাৰিল আশাশ  
 যবন ভাবত রাজ্য নিল উড়াইয়া,  
 একট নক্ষত্ৰ পরে পাইল প্রকাশ,  
 ভাঙিল ঢাৰকা দীপ্তি ভারত ব্যাপিয়া ।  
 দুয়ের নশত্ৰু আজি ভারতে উদয়,  
 সকল ভারত গাও রাজ পুত্র জয় ॥

২

কল্পনার প্রিয় ধীর উজ্জ্বল বরণ  
 কল্পনা আঁকিছেঘীর প্রশস্ত ললাট,  
 বল্লভার পানোরম গমন রঞ্জন—  
 চিত্র আজি সজীবন ভারত সম্রাট ।  
 ভারত । প্রভাত তব হৃৎ বিভাবরি,  
 উদিত ভাবতরবি সহস্র লোচন,  
 গাচিবে সকল চিত্তে অনন্দ শহরী  
 আজি হতে ভারতের হৃৎ বিমোচন ।  
 প্রভা কর কর আজি ভারতে সদয় ।  
 সকল ভারত গাও যুবরাজ-চয় ।  
 অবনীক বণীয় নন্দা কানন,  
 পুষ্পনয়ী ফলবতী, অর্ণ প্রসাবিনী,  
 জ্ঞানের আকর, বাজ ভক্তি নিবেতা,  
 রাজ্যে্যেব বিহঙ্গর স্বলাণ দায়িত্বী—  
 স্যামিণ্ড ভারত আজি মনোহর বেষে,  
 বচিরা বিচিত্র বেণী শিখাণী হুণল,  
 দামিনী সীনম্ব শোণা বাড়াইবে বেষে,  
 নবীনিরম বন্দে করি স্বলমণ ।

ভাবত ভাবি সৌন্দৰ্য্য রবির উদয় ।  
 সকল ভারত গাও যুব রাজ জয় ।

৪

কলকল হবে আজি দেয় হৃৎকপি  
 কাবেরী ঘনুনা গঙ্গা ভাগী সবস্তী,  
 কবিছে মঙ্গল গান ভারত বণী ।  
 ভারতের ভাগ্যে ধন্য পূৰ্ণ বসুমতী ।  
 বিস্তারি সাগর বক্ষে আপন বদন,  
 চরণ চুমিছে স্বখে স্বখে শ্রহাসিনী,  
 স্বখে বিমোহিত সবে করে নিরীক্ষণ  
 অপ রূপ যুব রাজ সূর্য্য কাশ্ত মণি ।  
 ভারতের সৰ্ব্ব গাজ হোক গেজ মথ  
 দেখিতে রাজায় আজি সকল সমথ ।

৫

ভারত সজ্জিতা এবে বক্সিম বসনে  
 ঘোষিতে রাজার ভক্তি দেখাতে হৃৎকণ,  
 ভূষিতে রাজায় চিব দিন স্থির গনে,  
 ভারত যত । সদা ইচ্ছা অচরুণ ।  
 কামাল হস্তিনাপুৰী পাঞ্চাল শাহ্নার  
 দূবে গেছে সব এবে ভারত সজ্জিতা  
 ভুলিয়া আৰ্যেব নাম আৰ্যেয় আচার  
 গাইছে ভারত আজি রাজার হাশিয়া ।  
 বাজ প্রিয়া হতে এই দেখ সমুদয়  
 । গ্রীর ভারত সিদ্ধু গায় জয়জয় ।

৬

গায় তথ হিমাণয় উপত গ্রন্থব,  
 গায় জয় বিজয়গিরি বর্ধনা সহিত,  
 গঙ্গাপুত্র সিদ্ধনন্দ এক পুত্রশীৰ  
 গায় সবে এক মনে হয়ে অবহিত ।  
 কুমারিশ উল্লি ৭ মইয়া

গভিছে মুকুতা রাজী সিন্ধু হল সৈকতে ।  
 গভিছে হৃন্দর, স্থপে অঙ্গ চামি দিরা,  
 গভিছে মুকুতা হার রাজায় ভেটিতে ।  
 বঙ্গদেশ কোমণাদী দুর্কলসরলা  
 গায় জয় রূপে করি ভগত উজলা ॥

৭

সান্নে আণা গাজি দিল্লী গভিছে সকল,  
 দেখিতে বাসনা মনে নব হুবরাজ,  
 সকল গায়ী গায় রাজাব মঙ্গল,  
 গায় জয় গৃহে গৃহে পন্নীর সমাজ ।  
 বরণা অসি বেঠিতা পূণ্যানিকেতন,  
 গভিছে হৃন্দর রাজ তনয়ে দেখিতে,  
 বিবাহ আনন্দে যো আজি নিমগ্না  
 কানিনী সকল, বঙ্গ মেগেছে সান্নিতে  
 কোন দেশে রাজ ভক্তি ভারত সমান ?  
 ভারতে রাজার পূজা দেবের সমা  
 বলনে । কিরূপে আজ করিব বর্ণা  
 ভারতের রাজবাণী শোভার আলয় ?  
 হবে কি বর্ণনা তবে মনের মতন ?  
 করিব কল্পনাশ্রেয় বত শোভাময়।  
 ভারতের নাম শেষ তনয় সকল  
 ভারত ফেড়ের গার কুহু হৃন্দর—  
 রাজা রাজপুত্র, শুভবস্ত্র বিরাণ,  
 বিদ্যাকর রাজ ভক্ত, প্রমত্ত অন্তর,  
 বিদ্যান সকল বথ একজ হইবে  
 করলে সে বলিকাতা কিরূপে চিত্রিবে ?

৮

ভাবতের রাজধানী স্থথের আলয়,  
 ইহের অমরাবতী অথবা অলকা,  
 ধরায় বৈকুণ্ঠ শোভা হয়েছে উদয়,  
 উড়িতেছে গৃহে গৃহে পতাকা বশাবা ।  
 বয়েছে নক্ষত্র শোভা শশীর কারা,

উদয় হইবে শীঘ্র পূর্ণ শশ ধর,  
 আনন্দ আনন্দ যোত আনন্দে মগন  
 সবার হৃন্দর, বঙ্গ ভারত দ্বন্দর ।  
 রাজধানী সি হাসন বঙ্গের হৃন্দর  
 রাজ ভক্তি বঙ্গ তুল্য সকল সমর ।

৯

আনোক মালায় দীপ্ত সকল প্রদেশ  
 তাগাহতে সমুজ্জল রাজ পুত্র গণ,  
 ভাবি সম্রাটের রূপে অক্ষকর শেষ,  
 করিল সকলে যথা পূর্ণিমা গগণ,—  
 পূর্ণশশীভাতি মাঝে তারকা সকল,  
 হারায় আপা দীপ্তি না পায় প্রকাশ,  
 শীর্ণলোক কটিতারা দ্রষ্টব্য কেবল  
 কৌমুদী আবার স্থপে সকল আকাশ,  
 ভিন্নদেশ জয় করি কবিত্তে দর্শন,  
 কত স্থগ মনে । হয়ে রাজাব মতা ॥

১০

আজি কি অগুরূপে রাজপুত্রমণে ।  
 পরাধীন বঙ্গ কবি কেমনে করিবে ?  
 দেবথে বা কতস্থ বসিবে কেমনে,  
 অনুতের স্বাদ মর্তী কিরূপে জানিবে ?  
 একেত ভাবত রাজ্য সকল আপা,  
 তাহাতে কেহই পূর্বে আগমন কবি,  
 করে নাই আদি পতা কথা ঘোষণ,  
 যুব রাজ শনয়েতে আনন্দ লহরী ।  
 উর্দি উর্দি আঘাতিয়া চালায় যো,  
 স্থথ পরে স্থথ চিন্তা হৃন্দয়ে তেমা ।

১১

ভারত স্থথের দিা রাজার দর্শন,  
 ঘটিল ভারত ভাগ্যে দীর্ঘ কালপর,  
 করিবে রাজার কাছে স্থথের জন্ম,  
 ভারাক্রান্ত, লব্ধার হইবে, অস্তব ।

দেখলো বল্লো আজ পচিৎ প্রদেশে  
রক্তিম বরণ রবি হইল উদয়,  
সাজাও ভারত অঙ্গ মনোহর বেশে,  
সকল ভাবত হৌ আজি সুখময়।  
ব্রিটন শাসন বাণে যে সুখ কখন,  
ঘটেনাই সেই হ্রব হইবে এখা।

১২

আটশত বর্ষহয়, ভারত ভাবব,  
ডুবিয়াছে শূভ্রায়ত আবন নাগরে।  
আজি কি ভাবত ভাগ্যে সেই দিবাকর,  
উদিত। আশ্চর্য্য কথা। অস্তাচল শিবে  
সাজলো বিবিধসাজ ভাবত হুন্দরী,  
কবক মলয়া িল সুবাস বিস্তার,  
শুশোভিত সাবিয়ারি সম্পূর্ণরূপী,  
হুনিয়া চুখিবে সুে। চরণ তাহার।  
ভাবত ভাবি সৌভাগ্য রবি যবরাজ,  
উদয় মলয়া চলে শুভশ্রণে আজ।

১৩

নাচিল আবব্যানিক্ লহরী খেলিয়া,  
নাচাইতে বাজ তরি নাচিতে সকল,  
উচ্চ কণ্ঠ বাজ ভক্ত কানন গঞ্জিয়া,  
পাইল বধের কুলে রাজাব মঙ্গল।  
আনন্দ করোল উচ্চ উত্তিল গগণে—  
কামিনীর সুধুধনি কুমারের জয়,  
ছুটিল আতোষ বাজী ভাবত প্রাঙ্গণে—  
বজ্রিয়া আকাশ পথ, কিবা সুখোদয়।  
ভাবত ভাবি সৌভাগ্য রবিধুববাজ,  
উদয় মলয়া চলে শুভশ্রণে আজ।

১৪

আহা আহা কিবাসুখ। কি সুখেব দিয়া,  
হুহুর্কে বিজাত বহি এহুখ সখাদ,  
সান্ত ভারত, পূর্ন, উত্তর, দক্ষিণ—

নাচাইল, ডুবাইল সুদি অবসাদ।  
ভুলোক বৈবুঠ এট গোয়ার ভারত,  
কোটি বোহিচুর শোভি পদ নবোষা,  
ধনের জ্ঞানের, সর্গ সুখের নিরত,  
বিরাগিত ধরাধানে অতুল ভাণ্ডার।  
আজিকো সে ভারতে দেখি দীর্ঘবেশ,  
হইল কি ভারতের সম্পদের শেষ?

১৫

ভিগন্ন। কিন্তু আজি শুভ্র সবতনে  
শৌণ অঙ্গ অধিশেষ। তথাপি তবর  
দীপত্য মান। কিন্তু বিকাশ বদনে,  
যুববাজ সুনাগমে হাসি মনোহর।  
নাই রত্নক্ষতি নাই, কিন্তু পরিতাপ,  
কি দিবে ভারত আজি রাজ পূত্রকবে।  
যবা, হৃদয়ে দিয়া প্রস্তরের চাপ,  
লইয়াছে ভারতের ধারালি হবে,  
হু পিনী কুটিবে তবে বাজার উদয়  
কি দিবে রাজাব ভাবি এইরূপ (ই) হয়

১৬

রাজ পুত্র। বাজ গীত শাস্ত্র, ইতিহাস,  
সকল কণ্ঠস্তব জা সসুন্দার।  
ব্রিটনোতে রোমীয়েস সত্যতা প্রকাশ  
নোণ ভাবতেব পুত্র পুত্র তুল্যময়।  
মিসর বুনা গী যবে জাণী জঠরে  
ভারতেব জাণালোকে বিশ্ব আলোময়,  
শত কোটি স্বর্ণ দান যবনেব ববে,  
একদা ভাবত কবে হু খেব সগ।  
আজি নেই ভাবতব দীপত্য দেখিয়া,  
সহুদয় হুদি হায়। বায় বিদরিয়া।

১৭

কি দিযাভারত আজি ভেটিবে তোণায়,  
মাগুদ, তৈমুদ, আব নাগিবের সত,

অর্ধ অপর্যায়ী পত্র ভারত আশিরা'  
 সুমিমা মৌর্যগণে ছিৎসনবৎ ।  
 ভারতে সেবল আছে সরল দেশ,  
 অসপট রাত্তি রাম নপোণায় ।  
 দীনতা বেবিয়া পাছে দুবার উদয়,  
 বসনে অসুতা'মধ হু কি সে কারণ ।  
 জাতিগে দেশগণ পুর্নিমারশনী,  
 ঈদিকে ভারত সী বিহলো'ত বসি ।

১৮

শত পুত্র । ক্রিয়ালি বিদ্যে দক্ষ,  
 কবির কল্পনারে উচ্চ বেষ্ট হাণ,  
 'সিগাটা' নামেতে খ্যাত বেশ পুণ্যমদ,  
 ভারতে এখন পর্ব সুতীর কেবল ।  
 কোথা শাহী অর্ধ ময়ী সোণা গোমনাধ  
 গাসিতন লোভে পদ গালের মত  
 পাঠায়েনা সৈন্য আর আটসেন পদ,  
 আটল শিলা আছে ব্রিটনীয় ।  
 যে গোভে দমিতা বিদ্যা গভীর তবে  
 োশীয় আশিরাহিল কোথা তা'শ এসে ।

১৮

দুবরাজ । অর্ধ ভূমি বাগিচা লইয়া,  
 ত্রিগিগ গিসর বত করিগ স গা ।  
 ঈ রাম গিগক বধা চুরি বদগিয়া,  
 লইল ভারত রাজ্য গিক্কাবতায় ।  
 সে ভূমি কি আছে আর পুণের মত ?  
 মহাসভা বলে এ'ব আসা লভিয়া,  
 যবে উঠে ইতিয়াব কথোপকথন  
 লৌহের বলিক এবে গড়ে ঘুটাইয়া ।  
 সুনিব এখন তারা দরিদ্র ভারত,  
 কো' গিত্তা ব্যাঘাতিবে ভারত বিপদ ॥

২০

সদস্য, দেখি ঐসে সদস্যের ক্রেশ,

বলেছেন মহাবাস্য "বনি শক্তি থাকে,  
 ধেন জাতি মদ করি হুখে অবশেষ,  
 দিতেপারি আদীতা এমন জাতিকে ?"  
 শ্রুতজন ! এ'বো'র মহত দেখিয়া,  
 আদীতা শাব করি মগত পুজিতা,  
 এ বিনী যোমীমগণে শিকিত করিয়া,  
 দেখাইল রামবক্তি বিদুরি অজতা ।  
 ভারতে ছাশা নাই, আর্ধনা এমন,  
 করিবো'র দুবরাজ । ভারত কথা ।

২১

আদীতা হইতে বন্ধু চায়না ভারত,  
 তাহার আর্ধনা নিম্ন অবস্থা যেমন,  
 তাহার আর্ধনা মহা নায়েব মদত,  
 অতঃপরে সরলতা গা পায়ে সেদা ।  
 ভারত আর্ধনা জাত গতিতে প্রণয়,  
 অল্প কিছু ভারতের গর আকাজিত,  
 বনি ভারতের প্রতি সজাট মদয়,  
 ভারত বাগতা তবে হইল পুর্নিত ।  
 আদীতা বনিয়া যদি দরা পাশে মনে,  
 ভারত বণিবে হুখে বিনাক্তের মনে ।

২২

কনোজের অত পুরে ভারত কানো,  
 শেনেছো'র এ'বদিগ পু'র হইতে,  
 রূপে শুণে জাগিতায় তা'ত উজলা,  
 ভীষণ আহব তার জিগিয়া লইতে ।  
 গা বরি আদর পু'র সানাত যৌতুক,  
 গা শুণি অজের কথা প্রকৃত্ত অস্তর,  
 লভিয়া কমলা দেবী হুখে স্মিত মুখ,  
 প্রণয় কুহুণে গুলেছেন নিরস্তর ।  
 আবার ভারত লক্ষী দী'বেশে আজ,  
 তোমার প্রণয়প্রার্থী তেয়াগিয়া লাজ ।

২৩

গা'বিলে তোমায় বন্ধু যৌতুকে ভুবিতে,

দীর্ঘা ভিখারিণী যদি আদব,  
 কর সেই হেতু তাম তোমায় হৃষিতে,  
 শিকটি গিহ্না লিপ্ত হবে গিরস্তর।  
 জানে তবে খুবরাজ। প্রণয় পথা,  
 ফেগায়। সেই হেতু সচিব তনয়,  
 লভিলা হৃদয় দানে অনুন্ধ্য রতন,  
 রাজার বিনীত পানি বাল্য হৃদয়।  
 জাক জননী এক, সহোদরা যদি,  
 দেহ পরায়ণা, ভূমি হইবে হুমতি।

২৪

চার্চ বণা শিশু প্রতি অমুরাগ তরে,  
 বাসনা জ্ঞাপন করি যিশুর প্রণয়,  
 লভেছো ভারতে ও সরল অন্তরে,  
 দেখিয়া সকল প্রীতি সকল সময়,  
 খুবরাজ। অগ্রহ থাকে যো গণে,  
 প্রকৃতির প্রিয়তম রায় নিকেতন,  
 ভারত রাজার প্রীতি গভিবে আপনে,  
 এ আশা ভারত হৃদে করে জাগরণ,  
 দেখ বিচারিয়া নরনাথ একবার,  
 আপন বাজখ সর্গ দেশেতে তোমাব,

২৫

হোণ গাবনী এই অবনী গওলে  
 গা পাইবে কোন স্থান দেখাতে আদব,  
 কোন হৃদেহেন প্রীতি জাগিছে বিরলে,  
 কোথায় পাইবে হো সরল অন্তর ?  
 খেত দ্বীপ মাঝে তব আপন আলয়,  
 তব প্রজাগণ মুখে হাসী-কায়ীশা,  
 দাঁড়ায় তোমাব পাশে সকল সায়,  
 নিবোধিত অসি হস্তে তোমায় বেষ্টিয়া।  
 নিবন্ধ ভারতে কোথা ভেদেব কাবণ—  
 তবে কো শঙ্কায়ুত বব আদম ?

২৬

পলাশিত লভেছো ইংল ও ট্রায়,  
 বিপুল ভারত রাশ্য শাস্তি নিকেতন,  
 এক শত অষ্টাদশ বর্ষ তার পর,  
 গুত হয় ভারতের অদঠে বণন,  
 ঘটে গাই রাজ সেবা অবহিত চিতে,  
 মুছে গাই অশ্রু বেহ রূপায়িত মনে।  
 তথাপি ভারত ববে দোষী কোণতে ?  
 আটদিন গণ লভে রাজ অগ্রহ।  
 বাজায় বিরক্ত করে প্রত্যহ প্রত্যহ।

২৭

ভারত হু গি গী পর গৃহে চিবদিন,  
 গাই গাতা পিতা তার গাই পিতামহ,  
 দীর্ঘায় যাতায় বদন গলি,  
 খুবরাজ। বক্ত আ গামে এ সময়।  
 দেখিয়া তোমায় যথা হৃদেব চীবা,  
 গদ গীল সকাণে গাচে কুচুহণে।  
 কুমুদিনী শীপশি সবগী সলিলে।  
 গাচিছে গাবত হৃদি ভাবত উজ্জল,  
 উঠেই হবে গায় গুব রাজেব মঙ্গল  
 দেখ খুবরাজ। রাজ দশিণে বিস্তারি  
 গাই অঙ্গ বঙ্গ, বিশ্বকশিদ্ধ কণোজ,  
 গাই ধরাবাব, সিন্ধু বিদর্ভ গগনী,  
 উজ্জল হস্তিগা মণ্ড্য, গন্ধাব, বদোজ  
 ইন্দোব, সিন্ধিয়া, বিখা বিবাবেব দেশ,  
 বিস্তৃত নিজায় রাজ্য পুনা মনীসুর,  
 সিদ্ধাঘে সরসীসম কিবব বিশেষ,  
 সুদ্রায়ত, স্রোত শূ্য, প্রান বচদুর,  
 অযোধ্যা, চিতোব গায় ব্রিটনের যণ,  
 ব্রিটনকি হবে তবে বঠিা গাঙ্গ।

৩১

যুববাহ। রানী যিনি জ্ঞানী সৌন্দর্য,  
ভাবত জ্ঞানী তিনি বহুদিন হতে,  
মেহায়াসী সি হাস্যে যদি অঙ্গীকার,  
আঠাব আটায় কবিচো এই মতে,  
“যেমন অত্রায় দেশে কর্তব্য বরুণে,  
বাধ্য আছি আগামের প্রজাব সহিত,  
ধাক্কির ভারত বাজে অবা ত্রমমে,  
ঈশ্বর হায় আর বিবেক বিহিত।  
খৃষ্ট ধর্ম দূত আত্মরাপি নিরন্তর,  
গাধিন প্রবৃতি অয়ে হস্তে জাত্যন্তর।

৪০

“যৌবনা কবির এই আশ্রয় বাসনা,  
বাহকীয় রুদ্রেতে আছে নিরন্তর,  
পশপাতে শত্রুগ্রহ কেহ বক্তিবো,  
গাইবে কেহ উপক্রম শান্তিহী  
নে যন্ত্র হউক তাব কতিগাই তাব,  
সবার সত্য ভাবে আশ্রয় আইন,  
যদি কেহ অবহেলি এসব কথায়,  
ভ্রমও অস্যাখা এর করে কোনদিন,  
বাহকীয় ফ্রোদাশনি তাহার উপব,  
পতিত হইবে। ইথে গাই অসায়র।

৪১

“আরও বাসনা অন্য করিব প্রচার,  
আগামের প্রকাশণ যে জাতীয় হয়,  
নে রূপ ধর্মতে আহা যে নপ আচার,  
শ্ৰুতিনাই তার, তবে স্নেহ সময়,  
নভিবে সাত্বাচ্য মধ্যে কার্য সনাত,  
গাই পশপাত জাতি বিশ্ববের প্রতি,  
আপনার বিদ্যাবুদ্ধি স্মরণনত,  
গুট্রা প্রকাশ ফ্রম নভিবে উন্নতি।

শপাতায় পদলাত পদো গোবদ,  
সবলে সমা ইথে একা সব।

৪২

“জানি ভাল, কবে থাকি সর্কদা সন্ন্যাস,  
দেশ বৎসলতা গেই দেশেব কাবণে,  
ভাবত বাসীব যাহা প্রাণের সমা,  
লভিয়াছে আর্ষ্য পূর্ন পূববেব স্থানে।  
তাহাতে যে তাহাদের স্বকআছেতার,  
গায়্যাত বাহকীয় প্রাণ্য বাবদিয়া,  
রাগিতে বাসনা আছে, শাস্যকরায়,  
আইন প্রস্তুত কবি গায়্য বিচারিয়া,  
এদেশেব বীতি গীতি, সহ সনুদয়,  
রশিতে করিব চেষ্টা শিষ্টয় শিষ্টয়। #

৪৩

বাহ পুত্র। দেখ গাতা কোণে স্নান,  
কোণ প্রতিজ্ঞা করি আখানোহুতে,  
অপর তাঁহার উদ্যবতা মাব দয়া,  
কোণ গতে পাবে কি এ অন্যাণা হইতে  
কেবল ভারত পিত প্রতিবিদি দোষ,  
পূর্ণচন্দ্র রাজী যশে কলঙ্ক রোগিত,  
গাতা বহুদেব কেবা বলে তাঁর পাশা—  
কিরূপে ত্রিটিগাম হেণা কলঙ্কিত।  
নানোয়া কহুভাবভেব হুতানে—  
দেহ কি কনিবে, হায়। জাতীরগণে,

৪৪

বুজপুত্র। করো কি ভারত প্রচার,  
এবো মণীবা শক্তি অকুমা চগতে,  
‘মিত্র সনকর জা করেছে বিচার ?  
একাজ বদবাগী উচ্চ আদানতে।  
বুদ্ধিতে ভারত বাগী সর্গজ উত্তর,

তাহাদের দেশে তারা আপাত আগত,  
বিচার সাগরে। কোথা ভারত মঙ্গল,  
আশ্রমি ইহুদি ববে ভারত শাসন।  
যুবরাজ। মজি দোমে ভাবতের ক্লেশ  
দেখ বিচারিয়া, আর দিবস বিশেষ।

৪৫

ধর্মেতে প্রকৃতি দান অখ্যাত বনিয়া,  
গাতা দিয়াছেন অতি সুস্পষ্ট ঘোষণা,  
তবে কোন্ ধর্ম প্রচারকেরা আসিয়া,  
বটতলে করে খুঁটধর্ম গবেষণা,  
তবে কোন্ বাজুজুতি প্রচারকগণ—  
ভোগকরি লাভকরে উৎসাহ ববিত্তে,  
দীক্ষিত পণ্ডিত ধর্মে হিন্দুকি যবন,  
তবে কোন্ যত্ন এত স্বধর্মে আনিতে ?  
মুদ্রিদোষে বাজে ঘটে এত বিশ্বাস,  
সর্বদা কিস্তিত অপযশ অমঙ্গল।

৪৬

ভাবতের ভবিষ্যৎ আশাব বিকাশ,  
স্বভূমিমাঝে জন প্রাপণের প্রায়  
মেঘের বিজুলি সমস্কণিক প্রকাশ,  
শীঘ্র আশাজ্যোতি একদিকে, কিঙ্ক হায়।

নৃত্য নৃত্যরূপ শাসন প্রণালী,  
বিদ্যা আলোচনা পথরোধ কবিবার  
পাইছে প্রয়াস ভায় ঘোর বনস্থলী,  
চইবে ভারত ভূমি, ছু খের আগাব।  
দীন দশা ভাবতের দেখিয়া গমনে,  
যুবরাজ। দয়াধেন থাকে তব মনে।

৪৭

যুবরাজ। দেখ পুনাবহেব গমনে।  
যে ভাবতে কশিল শৌভম আবির্ভাব  
বিরাজিত বস, জইমুণি ধেই স্থানে,  
এবেসে ভাবত বিখে অন্ধকার ভাব।

ব্রহ্মগুপ্ত গাই গাই বান্ধিনী গরম,  
নাই কালিদাস গাই রাগ সুধিঙ্গিব,  
ভারত গৌরব রবি যত্নমিত প্রায়,  
ইংরাজ রাজহে আ || অন্তাচণেবাথ।

৪৮

আপণা হইতে যার এত পতন,  
বি কাজ করিয়া তার পতনের পথ,  
বি কাজ ভারত পূর্বে করে নিমন্ত্রণ,  
প্রাসিবে ভাবত যদি অনন্ত বিপদ।  
যুবরাজ। গিরঙ্গ করিয়া এই দেশ,  
শশ ত্রিটীয় সেবা রক্ষে গিরঙ্গব,  
বলশূন্যবায় জাণ্ডোতি অবশেষ,  
আবাব অশনিকো তাহাব উপব ?  
পতিতে উদ্ধাব সদা বাজার গজতি,  
হবেকি ভারত ভাণ্ডে বিক্রীত গতি।

৪৯

শবীর বাজায় দিয়া মনেব যে বল,  
ভাহাতে উশতি লাভ ভাবতের আশা  
উজ্জ্বলিতা উঠাশ্বাসে সুখ সখল  
শেষহলে কি হইবে ভারতের দশা।  
সত্য বটে নুসন্ধ্যাছিল অচ্যাবী  
কিন্তু রঘুনাথ রঘুনাথ প্রবীন—  
চৈতন্য, বৈষ্ণবতব ববি কত ব্রহ্মচাবী—  
হয় দেব প্রাহুভূর্ত হন সেই দিন।  
যদিও ভারত আছে সুখেতে এথা  
ভাবত মণীষা কমে হতেছে পতন।

৫

উৎসাহ বিচীণ ভারতের এই দশা,  
গাইকি এথনো লোক জানেব আকাব,  
জ্যোতিষি এথনো ভাবতের ভাগবাসা,  
দেখায উজ্জল এক উত অন্তব।  
এতি বিভাগে বচ

করুণত লস্ক নিত পুত্রের বিচার,  
 অথবা অধিক মন্যে বোধের পূর্ণী  
 এখনো উল্লিখিত হইছে তাহা সম্যক ।  
 উৎসাহ, উৎসাহ, মাত্র উৎসাহে বেৎস,  
 তাহার উল্লিখিত পতি বহিবে লক্ষণ ।

৪১

অনিশান বহুদায়ী পত্নীকার পাত  
 করা হইবে যোগ্য স্ত্রী নিশান বহুদ  
 মনুষ্যের হৃদয়ে স্ত্রী অধিক পত্নী  
 সে স্ত্রীকি উপায় মনুষ্যের পত্নী  
 তাহা মনুষ্যের পত্নী বিচার করা,  
 হইত তাহার হইত তাহার স্ত্রী পত্নী,  
 হইত হইত হইত তাহার পত্নী মন,  
 হইত হইত হইত তাহার পত্নী মন,  
 হইত হইত হইত তাহার পত্নী মন,  
 হইত হইত হইত তাহার পত্নী মন,  
 হইত হইত হইত তাহার পত্নী মন,  
 হইত হইত হইত তাহার পত্নী মন ।

৪২

করুণাক্ত ভাষায় তাহা বর্ণনা এখন,  
 যেখানে পুত্রের হস্তে বহুদায়ী মাতার,  
 কি স্ত্রীকে স্ত্রীকি হইবে তাহা নিশান,  
 কি স্ত্রীকে স্ত্রীকি হইবে তাহা নিশান ।  
 উপায় বিধান করে আপনি বর্ণা,  
 রামাংগে পালিবে এ স্ত্রীকি বিস্তার,  
 কখন স্ত্রীকি নিশান প্রমাণ তাহা,  
 বহুদায়ী বিপদ হইতে সর্বদা নিস্তার ।  
 পদপাত পুত্র হইবে সেদিন সর্বদা,  
 স্ত্রীকি পাইবে হইবে তাহার মঙ্গল ।

৪৩

পুত্ররাজ্য। দুইদায়ী করেই—  
 মানবের, দুই আদে এখনো ভারতে ।  
 উপায় বিধান করে বাড়াইতে বল,  
 আপন প্রাণের মাছে হিত সর্বদা হতে ।

কপিত্রাণে লোনিষ্ঠ বহন করীকার,  
 গণ্য লোক, হইত করিছে বহন,  
 মুখ হইত পুত্রের পুত্র বোধের,  
 একথা পুত্রের পুত্র বোধের  
 তাহা পুত্রের পুত্র এই নিশান হইবে,  
 যেন হইত পুত্র যেন একই প্রকার ।

৪৪

বহুদায়ী হইবে পুত্র কবে হইত,  
 হইত পুত্র পুত্রের পুত্র একই বহন,  
 বিচারিত এক মাত্র পুত্রক নিশান,  
 পুত্রনিশান অস্ত্রের হইত বিচার ।  
 হইত পুত্র হইত পুত্রের পুত্র মন,  
 হইত পুত্র হইত পুত্রের পুত্র মন,  
 হইত পুত্র হইত পুত্রের পুত্র মন,  
 হইত পুত্র হইত পুত্রের পুত্র মন,  
 হইত পুত্র হইত পুত্রের পুত্র মন,  
 হইত পুত্র হইত পুত্রের পুত্র মন,  
 হইত পুত্র হইত পুত্রের পুত্র মন,  
 হইত পুত্র হইত পুত্রের পুত্র মন—  
 পুত্র করি, বহুদায়ী করে আস্থানে ।

৪৫

দুঃখাত্মক। আধিক্যে পুত্রের পুত্র  
 নানান কষ্টে পুত্রের পুত্রের পুত্র,  
 নানান কষ্টে পুত্রের পুত্রের পুত্র,  
 বহুদায়ী পুত্রের পুত্রের পুত্র ।  
 বিধ পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্র,  
 পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্র,  
 পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্র,  
 পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্র,  
 পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্র,  
 পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্র,  
 পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্র,  
 পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্র,  
 পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্র,  
 পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্র, ।

৪৬

বহুদায়ী হইবে জাত পুত্রের পুত্র,  
 বহুদায়ী হইবে পুত্রের পুত্রের পুত্র,  
 সর্বদা পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্র,  
 সর্বদা পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্র, ।



( ১৩ শাৰ্গ্য হুত এক আশি নি সমা । )

বাহি হয় বিবেচিত রাম গীতি যত,  
কলিক্ত সখ্যে সখ্যে নাম কার্ত্ত নাম,  
লগীড়িত ভারতের বিস্তৃত বিষয়,  
বনেবা পুচিলে তাশদের পরমাদ ।  
কুমায় অনিচে দিবানিশি নিরন্তর,  
উদয়, ভারত তায় শীঘ্র কলেবর ।

৫৭

যে ভাবে এসেচ সুবরাদ । সঙ্গগ্রহ  
গোষণা করিছে তায় উদারতা তব,  
ভ্রাতৃ ভাবে দেখে তবে উপেক্ষি গলে  
সেই হেতু ভারতের অধিকাণী সপ,  
নাহ বলি সখোদিয়ে আশা ভ্রাতৃ য়েচ  
লভিবে ভারত শাসী সন্তিত বদা  
ভ্রাতৃ ভাণ বাস্য লাভ করে যদি কেচ  
কে বলে তাহাব আর অরণ্যে রোদন ?  
দয়াবতী মাতাবাজী তাঁহার তায়  
সবল ভায়ত গাবে মহারাজী জয় ।

৫৮

পায় যো এক দিন ভাবত আগন,  
পাঠ্যসূত্রে প্রতি গিদি মহাসভাসলে,  
জাতীয় জীবন চক্র যাহে চানক্য

করি'তে অদ্বিত 'কমল'র মলে' ।  
সুবরাদ । কি বলিব যদি শুলন,  
সুবক এতদ্বয় সখ্যবর্তীকয়,  
এ দেশীয় বিদ্যাতের সম্প্রদায় ।  
বিপদ কাশনা সখে সকল সময় ।  
বলে অদিকার নাহ দেশ অদিশার,  
প্রদায় শত্রু নাম বর্তব্য বাতার ।

৫৯

ভিন্ন দেশ শাসী রাজা আচা' নিয়ম,  
বিস্মিত সকল, শত্রু দয়া বিস্তরণ—  
দূর করি মনে শোভ, যনের বিদম,  
ভাবচয় প্রজাগণে সখিব আগম ।  
হিন্দু কিবা মুসলমান সকলে সমা,  
গাম্য মতা ময় যো ব্রিটিশ রাজোতে,  
বিরাজি শাসী বক্ষা করে দাদা মান,  
দেশে যো শান্তি স্থপ থাকে সর্বমতে ।  
বেশল বর্তব্য পালি স্থপ সমুদয়,  
ভাবত সুপেতে গাবে ব্রিটিশের জয় ।

শ্রীভ্রত্যা । বিখ্যাস

চাকা বাকুব যদ্বায় ।

শ্রীতাবিতী অসাদ গিয়োগী

লিখিত ।

কো হে ভাবত' বাণী, যখনেব জলে ভাসি,

আশি মনে ববিছে রোদন ।

উঠ উঠ উঠ এবে, আব না আকুল হবে,

। এক বাব স্থির কব মন ॥

নাহু হীন শিশু প্রায়, কো পতি বৃত্তিকায়

সুকেমল শরীর বুটীও ।

মাটির শবীৰ হয়, অবিলম্বে হবে লয়,

কো নাহি ঠৈরয় ধবাও ।

আহা যে মাযেব ভবে, কাঁদিছ বিলাপ যবে,

আসি কি মা, কবিবেব কোলে ।

কাড়িয়ে অঙ্গের ধূলি, ভূতল হইতে তুলি,

বাধিয়ে কি তবেব অক্ষয়ে ॥

হায় হায় বহুধায় সেই দিন পূবায়,

আব নাহি আসিবে ফিবিয়া ॥

আব কি তেদ্যাবে, আব কি সে না ভাবে

আনন্দেতে উঠিবে হাচিয়া ॥

ছরস্ত যখন যদি, পাব হয় সিদ্ধিদায়ী,  
 তা আসিতে পারিত এদেশে।  
 তা হলে কি জনগণ, এই দু'খ হত হিব,  
 এই দশা ঘটত কি শেষে ॥  
 অতএব জাগরণ, হইয়ে প্রাণ মন,  
 উঠ উঠ ত্যজি ধরাগণ।  
 চল চল একবার, লয়ে ভক্তি উপহাস,  
 রাজ পুত্র করি মনশ্য ॥  
 আনাদের দুঃখভার সহোয় ক্ষমণে তাঁর,  
 তাই তিনি দেখিবাব তরে।  
 নগ্ন সমুদ্রের পারে, এসেছো কষ্টকর,  
 এত দয়া বাহার অন্তবে ?  
 যে জা যগায় বণ্ড, স্বরায় প্রস্তুত হও,  
 চল চল তাঁর কাছে বাই।  
 যত্নের কপাট খুলি, জনয়ের চ'খ গুলি,  
 একে একে সকল মিটাই।  
 যার যে গালিস আছে এথা তাঁহার কাছে  
 করপুটে তবিলে প্রার্থা।  
 এব দিয়া যদি হবে, সমুদয় দু'খ বাবে,  
 মন গত পূরিবে বাসনা ॥  
 জগীশ্বর অত্যাচার, বিচারক অবিচার,  
 ব্যক্তিচার কিছু না রহিবে।  
 সত্য ঈশ্বর স্থানে, ইচ্ছাকব যনে প্রানে,  
 রাজ পুত্র চিরজীবী হবে ॥  
 শ্রীতারিণী প্রসাদ নিবেগী

১

কেও আজি বাজে মঙ্গল বাজন ?  
 কেও ভাবে সবে স্বথের ভাবনা ?  
 কেও বা স্বধায় স্বথের বাণী ?  
 কোন্ স্বথে আজি ভাবত সস্তা,  
 জুড়াইছে সবে সস্তাপিত প্রাণ ?  
 করিছে সকলে আনন্দ ধনি।

২

আহা মরি মরি অপূর্ব শোভায়,  
 কেও চার সাজে সাজিল সবায়ে,  
 ভারতের মুখ কেন হাসিল ?  
 কেন আজি হয় মলিন বদনে,  
 হাসি বিকাসিল পরম যতনে ?  
 দেখিয়া জীবন গোহিত হল।

৩

কেন হর্ষ বধে আজি পুবজা,  
 কবিছে সকলে মঙ্গলায়োজন,  
 জয় জয় রব করিয়া স্বথে।  
 কেহ হলু ধ্বনি কেহ বাণীবাণি,  
 কেহ আরাধনা করিছে অমনি,  
 উৎসব আদোদে সান্তিয়া স্বথে।

৪

কিশি শু, কি যুবা প্রাচীনা প্রাচীন,  
 কিবা ধনী কিবা দিয়া পরাধীন,  
 সবলেই আজি প্রাণ য়া।  
 কেহ গাইতেছে, কেহ গুলিতেছে,  
 কেহ হাসিতেছে কেহ খেলিতেছে,  
 প্রভাতে যে সতি বিহঙ্গণ।

৫

কেও কেন আজি পাই এ প্রকার,  
 ভারত কি ঘুমে জাগিল আবার ?  
 সহসা স্বথের স্বপন হেরি।  
 একি কথা! আহা আর কি হইবে!  
 ভাবত কি ভবে আবার জাগিবে ?  
 স্বাধীনতা প্রাণ বস্যা পরি।

৬

ভারত অসীম বাজ ভক্তি জানে,  
 পাবে প্রাণ দিতে রাজার চরণে,  
 রাজার বারণে ভিনাবী হতে।

ভাই আজি তার এত হলদুল,  
উৎসবের ধুম আনন্দ অতুল,  
তুমুল ঘটনা ঘটিছে এতে ।

৭

অতএব সবে সাজবে সাজ,  
চল চল আর কাজ নাই ব্যাজ,  
'প্রিন্স অব ওয়েলস' দেখিতে যাই ।  
শনকাল তাঁর নিকটে যাইয়ে,  
এস সব আশা পুরিগে ভাই ।

৮

অগ্নি দেখ তিনি আসিছেন অগ্নি,  
এস মোরা যেয়ে আশ্রয় হই,  
ভক্তি উপহার ধবিয়ে কবে ।  
মাথা গোয়াইয়া কবি যোড় হাত,  
ভক্তি ভাবে তাঁরে করি পূজিপাত,  
এই কথা বলি চরণে ধবে ।

৯

এত দুবে থেকে এদয়া তোমার  
দেখিয়া বডই হু চাৎকার,  
ভাবতের কথা মনে যে লখ ।  
আর কি আছে সে ভাবত এখন ?  
সকলেই সেই শোকেতে মগন—  
যে ধ্য যখন কবেছে লয় ।  
"ধন্য ধ্য্য তুনি, ধ্য্য তব পাতা,  
শিখেছিলে বোথা এ হো মমতা,  
প্রজার কারণ জীবন দিতে ।  
সুধার আহার, আর জল দান,  
পরিভ বসন চনিবার যা,  
পরম যত্নে সদা রাখিতে ।

১০

"এই আশা করি চির জীবী হইও,  
এই মত বো চির দিা রও,

প্রজার হৃদয়ে হইয়ে প্রাণ ।  
কিন্তু এই কথা থাকে যেন মনে,  
বিপদে পড়িলে ডাকিব যখনে,  
তখন করিও উত্তর দা ।

১২

অতএব সবে সাজরে সাজ,  
চল চল আর কাজ নাই ব্যাজ,  
'প্রিন্স অব ওয়েলস' দেখিতে যাই ।  
শনকাল তাঁর নিকটে যাইয়া  
আনন্দে গনব কপাট খুলিয়া,  
এস সব আশা পুরিগে ভাই ।

১৩

অগ্নি দেখ তিনি আসিছেন অগ্নি,  
এস মোরা গিয়ে আশ্রয় হই,  
ভক্তি উপহার কবিবে করে ।  
মাথা গোয়াইয়া কবি যোড় হাত,  
ভক্তি ভাবে তাঁরে করি পূজিপাত,  
এই কথা বলি চরণে ধরে ।

১৪

যাবত্বাহা থাকে মনের বাসনা,  
হু বের গানিশ স্নেহের প্রার্থনা,  
স্ববেশের হিত সত্যের জয় ।  
ঐ সত্যের তরে ধবিগে তাঁহারে,  
অবশ্যই তাহা পাইব এবারে,  
যুটিবে আগদ যাইবে ভয় ।

১৫

স্বর্গপর যত জমীদার গণ,  
পারিবে না পার্শ্ব বৃত্তিতে কখন,  
প্রজার জীবনে দ্বিগ্বিতে হাণা ।  
পারিবে না আদি বিচারক যত,  
বিচারে অস্তায় করিতে দ্বিগ্বিত,  
রাজ ব শ বলে হবে না নানা ।

অতএব সবে মাচবে মাচ,  
চল চল আর কাজ নাই বান,  
(পুণস্ অব্‌ওয়েলস্) দেখিতে যাই।  
ক' কাল তাঁর শিবটে যাইয়া,  
আনন্দ মনের বপাট খুলিয়া,  
এস সব আশা পুরিগে ভাই।

সন্নম সিন্ধু শ্রীতাবিনী পুসাদ নিয়োগী  
গবর্ণগে ট পুণ ॥

১

দাঁড়াও গা গঙ্গ। এবে চলি ও'আ আর।  
দেখ চেয়েছির নোজে,  
অতুল ভাবত ক্ষেত্রে,  
অতুল ত্রিদিব শোভা শোভিছে এবাব।

২

সদশ জনম বর, দেখ একবার।  
ত্রিটনের রাজ্যেখরী, প্রসাদে বাঁহাব,  
উন্নতি সোপানে স্থান,  
পাইয়াছে হিন্দুস্থান,  
ঐ দেখ, দেখ চেয়ে তাঁহারি কুমাৰ  
দেখিবাবে ভাবতেবে এসেছে এবার।

৩

ভাবত উৎসব গদে গজেছে এবাব,  
তাঁহার সমস্তা গণ,  
সচকিত নোজ মন,  
দেখিছে ভারত শোভা উপস্থিতে তাঁর।  
ভূমি ও দাঁড়ায়ে এবে দেখ একবার।

৪

বিমল পবিত্র বারি বো'হে তোমা'ব,  
লবণাক্ত সিদ্ধু সনে,  
শিশাইতে ব্যাগ্র মনে,  
দৌড়িছ দক্ষিণে ভূমি বো'অবিবাব ?  
একটু দাঁড়ায়ে শোভা দে। এবাব।

৫

বেন এত দূচ তব সাগবে গমা ?  
তবু ও কেনই যাও ?  
একটু দাঁড়ায়ে চাও,  
একটু দেখিয়া যাও শোভিছে কেমনা,  
ত্রিটনের ভাবী বাজা ভাবতে এগা।\*

৬

অতুল অতুল গিরি মেদি'নী মাঝাব,  
কঠিন প্রস্তব ময়,  
অভভেদী হিমালয়,  
চিরস্থায়ী বরিকর গন্তবে যাঁহাব,  
ভূমি কি তবলা যদি। হুহিতা তাঁহাব ?

৭

তবে কি গেলিয়া তার স্থিব নোজ্জবয়,  
দেখিয়া ভারত হুখ,  
বিদবে পাৰাণ বুক,  
পাঠান কি তবে তিনি ত্রিটনে নো'বাব  
ভাবতের যত হুখ জা'তে মাতায় ?

৮

গলে কি পাৰাণ দেহে অস্ত্র বাবি তা'ব ?  
বহিয়া লইয়া ভূমি,  
তাজিয়া ভারত ভূমি,  
যাও কি ত্রিটনে তবে বলিতে তাঁহার,  
গহাবাগী বাছে যত চ। সমাচাব ?

৯

দাঁড়াও তা'লে এবে চলিও'আ আ'ব।  
দেখ চেয়ে স্থিব নোজে,  
অতুল ভাবত ক্ষেত্রে,  
অতুল ত্রিদিব শোভা শোভিছে এবাব।  
ভাবত কথনি গহে অস্থ'নী এবার।  
এত কাল সহিয়াছে যে ব'ষ্টে, এগা,  
হেবে তা'ব চক্রা'গা,  
হইয়াছে বিস্ময়,

দেখিছ, আমদ ভবে, ভরিয়া গমন,  
ভারত রাজ্যের ভাবী বাজার বদা,

১১

গোয়াব ভারত ছিল স্বাধীন বধা,  
• তাহার সম্মান গণ,  
করিয়া জীবন গণ,  
বিল অতুল তার শ্রীকৃষ্ণি সাধা,  
ভুলে অতুল ছিল ভাবত তথা !  
স্বাধীনতা সূর্য্য যবে আসিয়া যবন,  
বাহ রূপে গরশিল,  
অন্ধবাব আবিল,  
বাধুগতি অসিতাব সৌভাগ্য তপা,  
ভুলে অতুল শ্রেয় ভারত তথা ।

১০

অত পর ই-রাজের শুভ আগমন,  
শোভিল ভাবতে আসি,  
উজ্জল দশ দিশি,  
তাড়া ন যবা রাহ, মোচিল তপা,  
ভুলে অতুল পূর্বা ভারত এথা ।

১৪

ই বাজেব সূত্রশ সা বিদিত ভূবা,  
যবা রাহর কবে,  
ভাবতেব সুধাকবে,  
দেখিয়া আসিল যেন শ্রেচণ্ড তপন,  
করিতে, ভারতে খর কর বিতরণ ।

১৫

আর্য্য সূত কীর্ত্তিযত অন্ধকারে ছিল,  
তাদেব কৃপায় এবে,  
বিচিত্র বসন সবে,  
পরিয়া অতুল হয়ে ভারতে শোভিল ।  
তাহাদেবি যত্নে সবে পূর্ণ প্রজ্জলিল ।

১৬

শ্রেষ্ঠতম হিন্দুধর্ম্ম যবা শাসনে,  
কতশত অত্যাচার,  
সহিয়াছে অবিবার,  
বত দৃঢ় ভক্ত হিন্দু, যবা অধীনে,  
ধর্ম্মে অত্যাচার ভয়ে ত্যাগিল জীবনে ।

১২

মহাবাহনী বিক্টোরিয়া, দয়াব আধাব,  
ব্রিটেনের সি হাসনে,  
বলিলেন দৃঢ় মনে,  
'হবে না ধর্ম্মেব প্রতি কোণ অত্যাচার ।  
জাতি ভেদে হবে না গো বিভিন্ন বিচার ।

১৮

দৃঢ় সে প্রতিজ্ঞা তাঁর আছে এত দিা ।  
যবা নৃপতি যারা, থাকিয়া ভারতে তার,  
পাবে সি, করিতে ইহা উত্তম শাসা ।  
বৎসরেরক দূরে এবে রাজ সি হাসন ।

১২

তথাপি দেখা চেয়ে, হুধারে তোমার,  
নিবাসে যে বরণণ,  
আছে বিধে এক জা  
অসুখী শাসনে ভাব, তাহার ভিতর ?  
ভারতে ই রাজ রাজ্য সুখের আকর ।

২০

আছে কি হুধারে তব হেন একজন,  
পিতা পিতামহ যাব,  
যবের অত্যাচার,  
সহিয়া, আপনি শেষে ত্যজেছে জীবন,  
বলে না, 'ব্রিটিস রাজ্য সুখের সদন ?'  
নিশিতে বিমল বারি স্থির তব হম,  
ভাসে তাহে শোভা ময়,  
অসংখ্য তারকা চয়,

জান কি কিসের সেই প্রতি বিষ হয় ?  
কিবা সেই ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ভাবকা গিচয় ?

২০

উর্দ্ধমোক্ষে দেখ যবে সূচার গাণে,  
যন্ন যনির মাঝে,  
যন্ন মোহন গাজে,  
ভাসে চাব প্রতি বিষ ভাহার তখনে ।  
ভাণে যথা প্রতি বিষ মানব যমনে ।

২৩

রজত পাণাব ব্যায় গগন মাঝাবে,  
দেখ সেই পূর্ণ শশী,  
বিবাজে নিশিতে আসি,  
জান কি কিসের সেই প্রতি বিষ ধরে ?  
কিবা সে গগন যাবে তারকা বিহরে ?

২৪

বিজ্ঞানোহুধাই না আসি বলিতে তোমায়,  
কিবা সেই হুধা যব,  
পূর্ণ শশী শিশাবর

কিবা সেই ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ভাবকা গিচয়  
বিজ্ঞানো হুধাই না আসি বলিতে তোমায় ।

২৫

দিশমে গগনে দেখ প্রথম ভাণ,  
স্ববিত্ত ভারতের,  
মধ্যাহ্ন প্রের কর ।  
নচারণী প্রতিনিধি করে শাসন,  
ভাহানি ঐ প্রতিবিষ ধরিছে গগন ।

২৬

ঐ তারকা গণে বেষ্টিত নিশিতে,  
গণে উবার ধনি,  
কলিকাতা রাজধানী,  
অসংখ্য নগরী যত আছেছে ভারতে,  
উদ্ভাস ই রাজ রাজ্য, বিধিত উহাতে ।

২৭

ভারত ই রাজ রাজ্য একপ উদ্ভাস ।  
গগণেব শশীভাবা,  
বিজ্ঞানোতে গ্রহ যাবা,  
বোধ হয় প্রতিবিদ অজড় দেবল ।  
বাজ্যের দর্পণ হয় আকাশ গড়ল ।

২৮

ভাবতবে এ উন্নতি, প্রসাদে পাঁহাব,  
উচ্চ শিক্ষা, স্বশাসনা,  
বিবাজিছে অহুশা,  
ঐ দিগে, দেখ চেয়ে, ভাচাবি কুমাব,  
দেখিবারে ভাবতবে এসছে এবাব ।

২৯

পড়ে বিহে যবে তব বিচুদিয়া হয়,  
চক্ষণ বিনর্গ জলে,  
প্রতি বিষ ধবেছিলে,—  
বিশাল অর্ঘব পোত কিবা শোভা ময় ।  
এসেছিল যুবরাজ সোদর হে ায়

৩০

যুবরাজ হির যোজে দেখেছিলে তনে ?  
দেখিয়া ছিলে শি তুমি,  
সোনাব ভাবত ছুনি,  
সেজেছিল শোভাময় অতুণ বিভবে ?  
( চিরদাগ এই ছুনি অতুণ এ তবে । )

৩১

ইহারি দ্বিতীয় ভাণা, দেখেছিলে তাকে ?  
ভদ্রিয়া ছিলে বি তুমি,  
এই হেত অর্ঘ ছুনি,  
ভাসিয়া যন্ন জনে বণেছিলে তাকে,  
ভাহার ছু খের কথা বলিত মাতাবে ?

৩২

বিধির স্বজিত এই মাত ভিতবে,

নিশাচাণ সুধাকর,  
ধবে শোভা নবোহর,  
অতুল পূর্ণিমা ধবে গগন পাঝারে,  
বিরামে কলক দে। ভাণব ও ভিতরে,

৩৩

ই-রাজ শাণব মাত্র, সৃষ্টিত তাণব,  
কোণে সম্ভব ভবে,  
নির্দোষেতে বিবাজিবে,

ভাবত ভবনে মুখ সুশাসনে তার ?  
কি জানি তাহাই বা উনি ঘটান এবার

৩৪

বাজার সন্তান ইনি রাণীধ কুণাব,  
শুণিরা সোদব মুখে,  
সতত দারুণ হু খে,

সোণাব ভাবত বাসে, দ্রবিল অস্তব,  
ভাসিণ হুখের জলে হৃদয় ইহাব।

৩৫

তাই বুঝি দয়া কবি এসেছে এবাব,  
ভারতের মনো লোভা,  
এহো হৃদয় শোভা,

উজলিতে, অন্ধকার যাহাবিছু তার।  
ভাড়াইতে একবারে এসেছে এবার।

৩৬

ভাণত ই বাজ বাজ্যে অতুল উজ্জল,  
বিবা ভবে অন্ধকার,  
বিবা সেই হু খ ভার  
জান কি কিগেব তরে নয়ন যুগল,  
স্বর স্বব ফেলে সদা নয়নের জল ?

৩৭

পূর্ণাঙ্গর ভাবতেই রাজান আবাণ,  
দিয়াছিল আর্ধ্য গণে,  
বিশ্বশী যবন গণে,

বেথেছিল সদা তাহে দিয়া রাজাবাণ।  
ভাবত বাজার এবে চোখায় নিবাণ ?

৩৮

পূর্ণ কলা সুধাকর বাজার বদন,  
রাজ সভা, শাস্ত্রিগণ,  
বাজ ছত্র, সি হাসা,  
ভাবতের ভাগ্যে আব তাই দবশা,  
ই বাজ রাজত্বে ধনি দেখেনি কখন।

৩৯

নর্দাম সুদবী বেই বমী রতন,  
শশীমা তুলনায়,  
ভাগ্যে যদি অন্ধ হয়,  
আছে কি দগতে তবে হেব একজন,  
আজন্ম দারিা হুখী তাহাব মতা ?

৪০

ভারত তাহার সম তুলনায় এবে,  
তাই বুঝি ভাঙ্ক মুখে,  
শুনিয়া অতুল হুখে,  
ভারত নিবাসে সদা, আসিয়াছে এবে,  
ভাবতের হু খ বুঝি সব ভাড়াইবে।

৪১

দেখনা হাসিছে ধনি, প্রফুল্ল আনন,  
পূর্ণ বারি পাজ ন্যায়,  
ত্রৈবে তাব শোভা পায়,  
প্রতি বিশ্ব পড়ে তাহে, তাহাব বদন,  
ভারত মাণ্ড - যনে দেখিছে যে জন।

৪২

বুঝলে নোজে সদা তাহাকে দেখিতে,  
ভারত নিবাসী যাবা,  
ত্রমিতেছে পথ হারা।  
ভুলে এশোভা সনে তুলনা তুলিতে।  
দেখিয়া কিছুই আনি গভীর চিন্তাতে।

৪০

বাজ্জ ভক্তি পবানগ প্রকৃতি নিচয়,  
 গণি মুক্তা, স্বর্গহার,  
 দিতে তাকে উপহার,  
 তাহার সম্মুখে লয়ে, উপস্থিত হয়।  
 (বেহই এদেব-্যায় বাজ্জ ভক্ত গয়।)

৪৪

আগা সকলে, দেখ, ভরিয়ান নয়,  
 দেখিতেছি যুব রাজে,  
 শোভিতে ভাবত মাঝে,  
 একবার দেখ তুমি। কিবাও নয়।  
 কেন এত দূত তব সাগর গমনা ?

৪৫

ঐ দেখ হাস্য মুখে, প্রফুল্ল নয়,  
 তব পিতা হিমালয়,  
 দেখিতেছে শোভাময়,  
 সোনার ভারত, ভাবী বাজার বদনে  
 এক বার দাঁড়াইয়া দেন গো এখনে।

৪৬

ভাবিওনা দেখ বত ই-রাজ আসিতে,  
 চিব দিব বাস করে,  
 সম্পত্তি স গ্রহ করে,  
 লুটীয়া ভারত, যায় ফিরিয়া দিলাতে,  
 ইণ্ডিও তাদের যায় এসেছে ভারতে।

৪৭

বিধির স্থিত এ লগত ভিতরে,  
 নিশাণাপ অশাকর,  
 ধরে শোভা মনোহর,  
 অতুল পূর্ণিমা যবে গাণ মাঝারে,  
 বিরাজ কলক দেখ তাহারও ভিতরে,

৪৮

মুপতি-উচিত-বীর দর্পে আগমন,  
 ব্যস্তছো যুববাজ,  
 -ধরিয়া মোহন মাজ,  
 ভারতে নির্দোষ অশু ববিত্তে স্থাপন  
 বিধি বিনিমিত স্থষ্ট কবিত্তে সজ্জা,

৪৯

দাঁড়া ও মা স দ্বৈ তব চলি ও গা আব  
 দেখ চেয়ে স্থির গেজে  
 অতুল ভাবত শেজে,  
 অতুল জিদিব শোভা উপস্থিতে তার,  
 জ্ঞান সফল কর, দেখ এক বাব।

৫০

বব হে তাহার কাছে এই বিবেদন,  
 স্থচিব মুপতিগণ  
 নিবাসি আ ন্দ ননে,  
 পাবেবা সন্তিতে সতী বিরহ বেদন,  
 ভাবতে স্থাপিত হক রাজ সি হাসন।

৫১

ভারত ব্রিটিশ ছই একট তোয়ার,  
 ব্রিটো বহুদি,  
 পতি সবে স্থপে নীত,  
 ধরিয়ছে সি হাসন অনেক রাজ্য।  
 ভাবতে নির্দিষ্ট হক নিবাগ তোদাব।

৫২

ব্রিটোতে সন্ন তব তাহে বাস স্থান,  
 স্বর্ণ ভূমি হিন্দুস্থান,  
 হ'ক তব বাসস্থান,  
 এফে ব্রিটোনি তব মেহেব সদন,  
 ভারতে ব্রিটো ভেদ রবে গা তথা।

৫৩

দয়ালু ই শাহ রাজ সুল্য মা



ভাষা যদি গাই কব,-  
ভারত দুখিনী বড়,  
বলিছে, "ই-রাজ রাজা কহু দেখিগাই,

বৎসরে বৎসরে যেন দেখা তব পাই।  
( শ্রীশিবেন্দ্র নাথ দাস গুপ্ত।

ভারত বর্ষে প্রিন্স্ অব্ ওয়েল্ মেব  
শুভাগমন।

" Hail, Royal Prince !

সেয়গীর।

চির হুব সয়ে, পাগলিনী হয়ে,  
বুঝিরে ভারত এম্য কয়ে ?  
ভারত হাশিল কিসের তরে ?

৩

অমুদিত শশী আর তামসী,  
আজি পৌর্ণ মাসী শশাঙ্ক কোলে,  
অবস্মাৎ এবি, কেন হেন দেখি ?  
কো ভাবেতব আঁচল দোলে,  
যে আঁচল ছিল গড়ি ভুতলে ?

৪

কেন রে ভারত উত্তিয়া বসিল ?  
কো বা ঝাড়িছে গায়ের ধূলি ?  
মুছিয়া গমন, চাহে ঘন ঘা,  
সাগরের পানে শিবস তুলি ?  
পূর্ক ভাব সবি গণ বে ভুলি।

৫

নেখে ভাবগতি, বোধ হয় মনে,  
ভারত হইল উৎসাদিনী।  
তা যদি না হবে, কেন দেখি তবে,  
হেন বেশ, বাহা কভু দোখিনি।  
ভাবত হইল উৎসাদিনী।  
অধীনতা বিষ নিসেবে নিসেবে,

৬

ভাবতের দেহে প্রবেশ কবি,

১

রজনী প্রভাত, কো অবস্মাৎ,  
ভারতের মুখে হাসি প্রতি ভাত ?  
জাম অবধি হেরিনি নয়নে,  
এ মধুর হাসি ভারত বদনে,  
হেরিনাম আজি তার রে,  
ভাবত জাগী, গলি বদনা,  
বহু দিন হ'তে সহিছে বেদনা।  
তাঁবি মুখে হাসি ? একি অঘটা,—  
অবাক হলেম বুঝিনা কাবণ।

কে বুঝাবে কব কায় রে ?  
গগন ছাইয়া উঠে কলরব,  
আনন্দে মেতেছে ভারত মা'ব,  
আ'জের ভারত সে ভাবত গম,  
নূতন ভারত ভারতে উদয়,—  
এমনি ঐ দেখায় বে।

একিরে প্রকৃতি ? অথবা স্বপন ?  
কিবা মায়াবী ব মায়াব স্বজন ?  
কিছুই বুঝিনা, কিছু বুঝিবার,  
বাসনা জাগিল হৃদয়ে আমার,  
বুঝিবাবে চিত্তচায় রে।

২

জান যদি কেহ, জানাও আমায়,  
ভারত হাশিল কিসেব তবে ?

দুখিল শোণিত, নাশিল সখিত,  
দীরতা বীরতা নইল হরি,  
তাই রে ভাবতে এমা হেরি।

৭

ভূখিনী ভারত মাৎ শ বরষ  
ভাবিয়া, সহিয়া পর বশতা,  
হইল এমা, বুকিহু কারণ,  
নিদায়ে শুকল কনক মতা।  
ভাবিয়া, সহিয়া পর বশতা।

৮

বেগার লক্ষণ হেরি সমুদয়,  
কাঁদিয়াছে কা'ল, আজিরে হাসে ?

যাতনা দহন দহিত হৃদয়,  
অতুল আনন্দ সাংগরে ভাসে।  
নিরবি এ সব কি মনে আসে ?

৯

যা ভাবিছ মনে, ভারত তা নয়,  
ভারত জানী, ভূখিনী বটে,  
কিন্তু পাগলিনী, কে তোমারে কয় ?  
কো'ন মুচ, ছি ছি এ বণা রটে ?  
কে ভাবে এ কথা মা'স পটে ?

১০

চেয়ে দেখ ঐ নয়ন তুলিয়া,  
যুবরাজ আ'জ ভারত মা'রে ;  
এ'লা দেবিতে, তাই দৃষ্ট চিতে,  
ভারত ভাসিল সুখের স্রয়ে,  
মলিা বদনে সুহাস করে।

১১

ববহার শেষে সুনীল আকাশে,  
শবতের টাদে পাইলে বণা,  
সুখী চকোরনী ; আজবে তেনা  
সুখিনী ভূখিনী ভারত মাতা ;

বহদিন হ'তে আশা ছিল মনে,—  
যুবরাজ যদি কখন আসে,  
হৃদয় বেদনা, হৃদয় যাতনা,  
খুলিয়া কহিবে তাঁহাব পাশে,  
যুবরাজ যদি কখন আসে।

১০

আর্য্যকুল প্রহু ভাবত জননী,  
যুবরাজে আজি পেয়ে মখে,  
প্রশ সি ধাতায়, মধুর কথায়,  
তাইবে জাগিল হসিত মুখে,  
ভূখিনী ভারত ভাসিল সুখে।

( গীত )

রাগিনী বোগিজা, তাল আড়াঠেকা

১

মা'য় রে ভারতবাসি। আয় বে সকলে আয়,  
বিণবে ষি প্রয়োজা, সময় বহিয়ে যার।

আজিরে প্রসন্ন বিধি,  
সে হেতু অনুল নিধি,  
হেরিব কি সুখ তাঁয় ?

২

হয়ে সবে একতান,  
করহ মঙ্গল গান,  
লহ কবে দুর্গা ধান,  
শিরসে দিত্তে,  
হইয়ে যত' পব,  
সবে আয়োজন কর,  
বস'া ভূষণ পর,  
সময় বহিয়ে যার।

৩

তড়াগ সলিল থেকে,  
পদা তুল দেখে দেখে,  
চন্দা তাহাতে মো'ধ,

সাজাও সাজী , -

বিবচ কুম্ভধর,  
যতনে চয়া বর,  
পাখিরে গধব ধার,  
অঙ্কব নাখাও ভায় ।

৪

ভরিয়ে জাহ্নবী বারি,  
পূর্ণঘট মাঝি সারি,  
বঙ্গাও হরম গায়ে,  
সঙ্গল আশে ,—

তুল গালা ছাব'গবে,  
সাজাও যতন করে ,  
সাজাও বদনী তরু,  
রাজ শুভবানায় ।

৫

মিলিয়ে ভাবত বাসি,  
ঝাঁজব বাঁচব বাসী,  
বৃন্দঙ্গ ববাব বাণী,  
বাজাও সবে ,—  
ঐক্যান বাদ্যসহ,  
গাঙ্গলিক গান গাহ ,  
এহো স্থখের দিগ,  
সামান্যে কি পাওয়া যায় ?

৬

ক নো দেবিনি যাঁহা,  
আজি রে হেবিব তাহা ,  
স্বভাগ্য এমত কার,  
জগতে আঁছ ?—  
শাস্ত্রীয় বিবাহ এই —  
নে ভূপতি বিহু পেই ,  
আজি ভাবী ভূপে হেরি,

হেবিব রে সিখাতায় ।

৭

যার বা মাগসে আছে,  
বব ভাবী রাজ কাছে ,  
হুগ চপ একে একে,  
জায়াব সবি ,  
সওয়া শিব রব প্রায়,  
যেকপে গময় যাহ,  
ভারতে বৃট্টাধীনে,  
সকলি বহিব উয়

৮

আয় রে ভারত বাসি ? আয় রে সকলে আয়,  
বিলখে কি প্রয়োজনা, সার্য বহিয়ে যার ।

১৫

তুলিয়া নয়ন, কর গিরীক্ষণ,  
দিলা দরশা কুমাব আজি ,  
ছাডিয়া স্বাণ, পুঁথিয়া গগন,  
গধুব বদন উঠিল বাজি ।  
শুভ আশন, শুভ দরশন,  
সফল গয়া, সফল সবি ,  
হেরি যুববাজে মাজি সব সাজে,  
আজিরে বিরাজে প্রকৃতি ছবি ।  
হুথিগী বেমা পাইলে বতা,  
হরম সাগরে ভাসিয়া যায় ,  
ঢাবত জাগী আজিবে তেমনি,  
পবে গঙ্গাপি হবয়ে চায় ।  
নিপীড়িত কোল হইল শীতল,  
হইল উজল কুণাবে ধরি ,  
অজস্র হিলোলে আনন্দ উবলে,  
ধবোয়া হৃদয়ে—পড়িছে ঝবি ।

১৩

রাজ বাঘা বাঁচে, পতীর আশ্রয়ে,  
 মৃদু আশ্রয় উগার কামা,  
 আশা ছাড়া, নয় রমিয়া,  
 উড়ে পত পত রছিল শিখা।  
 মেগা গারে গার তুরা চীৎকার,  
 ককে সরবার রদির কিরণে,  
 আশে পাশে পাছে, নয়নে কাছে,  
 চুটাই শকট দ্বিত গানে,  
 সুবরাজ ববে হেরিবার তরে,  
 "তুভনি আ জ, তয় সুবরাজ ?"  
 স্মৃতিত একথা সবার বদনে।

১৭

এস এস সুবরাজ ? রাজকুশ না,  
 স্বেভিতে তোমার,  
 বহুদা আশা চিন, স্মৃতি বিদি পুষ্টি,  
 এনা সুদা ভাগ্যে হয় কি ঘটন ?  
 ভারত ভবিষ্য রাজ ? স্বেভিত সোমায় আ চ  
 ভারতব জিন কোটি দীপ প্রজাগা,  
 ভুলিল যতন চপ, আনো গণা।  
 এনা সুদা ভাগ্যে হয় কি ঘটন ?

১৮

আনন্দ আকর তুগি তপ দব ।  
 ভাবত বাসীৰ,  
 বিজ্ঞান পীড়িত নিত স্মৃতি গণা আনন্দে,  
 বিদায় পদ । যথা বর্ষা পরশ না।  
 আনন্দ আকর তুগি, তব দব ।  
 সন্ধি আনন্দময়, সাক্ষাৎ আনন্দময়,  
 প্রকৃতি আনন্দময়ী নিরবি তয়নে,  
 নিবান্দ অন্তর্হিত নিবান্দ মনে।  
 ভাস ববিনে স্বেভি থাকিবেন কেমনে ?

১৯

বহুদা যাবা চপেব পাখাবে,

পীড়িত সন্দেহে বিধানে সাঁতারে,  
 উষ্ণিত গণিতে শয় কবিত্তে,  
 দেহিতে তনিতে যাইতে ভাবিত্তে,  
 অসহ যাতা গায়ে স্মৃতিছে।  
 শতশৈলাঘাত হৃদয়ে লাগিছে ?  
 তপত শোণিত শীতল হয়েছে,  
 চীৎকার অথ সকলি গিয়াছে ?

আজি তারা তব আগমন,  
 নিরপ কুমার বাবেক নিবধ,  
 কত সুখী হৃদ ধরে না পূনক,  
 তব দবশো আনন্দে না।  
 তোমারে দেখিয়া, হৃদয় খুলিয়া,  
 গাতা বন্দনা হৃদয়ে চালিয়া,  
 বাঁচিছে আনন্দ যতনে তুলিয়া,  
 অধীনা ভীতি গিয়াছে ভুলিয়া,  
 আজি তাপ তব আগমনে।

যে ভারত বাসী তোমাৰে পাইয়া,  
 'না' বন ভুলে গগন ছাইয়া,  
 কোন মুচ বলে বাজ স্বেভী যাবা ?  
 ভূপে যাবা সাবে দেবেব মত্তা,  
 তাবা বান স্বেভী ? একথা কেমনা ?  
 রাজ স্বেভী হলে তব আগমন,  
 কো সুখী হবে হসিত বদনে ?  
 বাবেক, কুণাব, চেয়ে দেখ ঐ,  
 রাজ স্বেভী নয়, রাজ ভক্ত বই,  
 আজি তারা তব আগমনে।  
 ভূপতি গুলিতে যে সকল চাই  
 এ ভারতে আঁবে সে সকল নাই।  
 বহুদা হ ল সখলি গিয়েছে,  
 বস বিহী কোটা রয়েছে ?  
 ভারত বাসীরা ভাতেই তোমাৰ,  
 ভবতি হৃদয়ে পুঞ্জিবাবে যাব।

কৃতজ্ঞ এমণ আছে কি ধবায় ?  
 ভবত এমণ দেখেছ কোথায় ?  
 ছ'ী ভাবতের দীন স্তম্ভণ,  
 কৃতজ্ঞ ভবত নির। কোথ,  
 আজি তারা তব আগামে।

২১

কুণাব। জোমার আগামে,  
 সুপ্রভাত ভারত ভবণে।  
 পূবব আকাশে কিবা ছাঁড়ানে অক্ষয় বিভা,  
 ছুটে ববি তব দবশনে।  
 বহু কর্ণা শীতল পবণ,  
 গেয়ে আজি তব দবশণ,  
 আনন্দে অঙ্গীর হয়ে, কুণ পবিত্র লগ্নে  
 তব শিবে করে ববিষণ।  
 স্বভাবের গাঙ্গক চতুৰ, তব দবশণে স্মরণে,  
 গাইছে মঙ্গল গাঁ, সুদগি পুবিছে বাণ,  
 বরষিছে আনন্দ প্রচুর।  
 প্ৰণবতী স্রোতপিনীচয়,  
 লহবী ছশায়ে আচি বয়,  
 আজি বিক্রা, হিমালা, অতুল আনন্দময়  
 জয় জয়, বুণাবেব জয় ?"  
 হিমাচল কুণাবিকা'বদি,  
 গাহি আ'জ হুকে শবদি  
 আনবে ভারত ভূমি দেবেব স্ববগ ভূমি,  
 নিবান্দ ভারত ভবণে,  
 বুর রান, তব দবশণে,  
 মাণা- আনন্দ আজি,  
 অমর জ্যোতিতে সাজি,  
 বিরাজিছে অচল চবণে।  
 নিঝারে আগণ বয়ে, কুহুনে আনন্দ শরে,  
 নীলাকাশে আনন্দ বিকাশ,  
 সলিলে আনন্দ গাচে,  
 আনন্দে গেলিছে গা'ছ

লভিকায় আনন্দ বিলাস।  
 তপনে আনন্দ গেলে, তবঙ্গে আনন্দ ধোলে  
 শা'নদ বহিছে সঙ্গীরণে,  
 আনন্দেব উচ্চববে, ভূবব গঙ্গীর ববে,  
 ধাইতেছে আনন্দ শগণ।  
 অশঙ্ক্যেতে প্রতিধ্বনি,  
 অগচ নিকটে শুনি,  
 আনন্দে লইয়ে কবে গেলা,  
 ত খের ভারত দেশ,  
 আনন্দিত এনশেষ,  
 আজি যে আনন্দের গেলা।  
 যে দিকে কিবির্য চাই,  
 আনন্দে দেখিতে পাই,  
 আনন্দেতে পূরেছে নগণ,  
 তবে বাকী কিবা আর ?  
 সকলি আনন্দননে,  
 আনন্দেব ভাবত ভবণ ?  
 ভবিষ্যৎ হুপাল, ভূমি,  
 অশেষ শা'নদ ভূমি,  
 ভারত জননী আজি চাই,  
 জুলিছে চপেব ওব  
 আনন্দে হগেছে ভোর,  
 নিবান্দ একটুও গাই।  
 ভারত হুগিনী বটে,  
 বিত্ত আজি চিত্র পটে,  
 ওই দে। আনন্দ অক্ষিত,  
 বিধেব শা'নদ যত, হয়ে আজি একীকৃত,  
 ভারত হুদয়ে বিরাজিত।  
 ভারতের দীন স্তম্ভণ,  
 লভি তব শুভ দরশণ,  
 "জয়, সুবরান জয়।"  
 সকল আনন্দে কয়,

কেঁ নরি বব প্রসাবণ ।

আনন্দের ভারত ভবনী ।

২২

হুয়ার, তোণাব আজি মশা পাটমে  
তোণাব মঙ্গ। গাণ গা খুণা গাণিয়ে  
কুণিছি নতেক চা, অর্থে ব কল্পিত স্তব  
কুণাচি, ভুলেছি মবি তোণা মণে শেবিয়ে,  
ভারতে শানন্দ থাবা বাধ আজি বণিয়ে ।

২৩

বিন্দু গুণিত কণা গিবদন করিব,  
তোণা বই করে কট ? নাবেই বা চেবিব,  
ভারতের হিত আশী, ভাবতের ছা নাশী,  
বিপদে আশাস ভাষী বাবে বা পাইব ?  
তোণাবে পেয়েছি আন তোণাবেই কহিব ।

২৪

ভবিষ্যৎ বেদিত, তুণি এই থানে শাসিত  
করণা বটামপাতে আনন্দন চেবিনে,  
পীড়িত ভারত্যা রে, সুরমাশে শাস্তিবাবে,  
সুতাপিত বোণ তাঁর শীতলিয়া বসিনে,  
নধুর বচন রসে ক্লেশ রাণি গাণিয়ে ।  
শামরা সেদিন হ তে বেখেছি হুনিয়া গিতে

সুদানব গণোছ। যতন পেয়েছি,  
ফেনিয়া হাজাব কান,  
তোণাব জাণতে আ'ন,  
সুদব কণাট পুলি তব ক ছে এসেছি ?  
বহু কাণ ছুণ পেণে,  
বিদি চান মুখ তুণে,  
নবু'বতে সেণবা কণে"  
বুধি আ ম ললিগ  
বুধি আ'ন চণ বাশি চিবতবে চণিগ।

২৬

কুণাব, তোণার গা'ব স্তশাসিত ভাবকে,  
হুণী হয়ে হুণী গাই, এ ছুণ কাণাবে কই,  
আ গানের গত কই দীা ছুণী জগতে ?  
জাণী তোণাব আন আনন্দের জাণী,  
গাহাণী ভিকটোরিয়া, লক্ষী কণা বণী,  
তাঁব বাজ্যে কবি বান, হই যদি হতাশ,  
পীড়নে পীড়িত যদি হই দিা বণী,

২৭

মত্যা বটে, মবনের অত্যাচাব প্রবাহে,  
ভাবতের এক শেষ হবেছিল গহাংশ,  
মত্যা বটে, হিন্দুজাতি প্রণীডন প্রদাহে,  
বহুদিন জনিয়াছে, বহুদিন মহিয়াছে,  
গবক বাত্যা ?

মত্যা বটে, ভাগ্যবশে জালা বিস্মৃতিজলে,  
ভুবিয়াছে, কিন্তু তপু আ ছো গণোণামা,  
পূর্ণ কই ? কাঁদে ওই হিন্দুগণ লশা ?

২৮

কুণাব, বাত্রেব গুণ বিদ্যাবি গণাবে,  
তব শুভ আশমনে আনন্দের সুবিবানে  
ভারত হুতেরা আজি হয়েছে গণাবে,  
কিন্তু ওই গাণে তার ববহ শবণবে,  
সুদীর্ঘ বিখাস বন, আধ বণা মুখে জয়  
ছুণ কঠ শবণে বরিছে মোদন বে ?  
এত সুখে ছা কেন ? আছে যে কারণ বে ।

২৯

সে কারণ বলিব না—বলিব না তোণাবে,  
আকার দৈর্ঘ্য দেখে, গণয়ে মন্য বেণে,  
ভাদিয়া বুঝিয়া লহ গিচ চিত্ত মাণারে ।  
যে গর্ভে জাণ তব, গাণে হুণ গণতব,  
গিচের গুণিয়ে গুণি গণতব

ভাবত বাসীব দশা এ ভাবত আগাবে ?

৩০

শহি হনোছে সাব, ছুখি নী ভাব-বাগর,  
অশ্রনীবে অবিবাব, ভাসিছে যলিয়া সু।।  
তবুও ও তোমার পেয়ে,  
আজি পুৰ্বিত হয়ে,  
বাবেক গিব। লয়ে, ভুলছে সকল ছা।  
অপার ছুখেব পবে, অপার আনন্দ ভবে,  
ছুখিনী ভাবত গাতা, চাহে তব মুখ পানে,  
মুহমুহ যে আশায়, স্থির দৃষ্টে তোমা চান,  
যে আশা পূনাও তাঁব,  
ববণা কটাক দানে।

দেশে গিয়ে জা নীরে, জাহাইও ধীবে ধীবে,  
ভাবত বাসীব দশা কবিলে যা শিবদগ,  
গনিয়া কহিব ক'টি ? ভাবতের ত্রিশকোটি,  
পীড়িত প্রজাব দশা বব' তাঁবে বিবেদা।

৩১

কয়ো ভাবে নয়তো, ভাবত ভায়াগণে,  
ববণা কটাক দানে এক বাব হেরিতে  
তিনি না কবিলে দয়া,  
কোণায় পাইব ছায়া ?  
তাশিত হৃদয় জালা কে পাবিবে হবিতে ?  
তোমার জননী যিনি,  
আমাদের মাতা তিনি,  
ভবে কেব আনাদের না দেখে চাহিয়া ?  
তুমি তাঁব মেহ লাগী,  
শাববা বিসের মাগি

সে মেহ বকিত রহি, ছা হৃদয় সহিয়া ?

৩২

কতএব দুবমাছ ? ব র ক'র এই ক'চ  
মায়ের উচিত যথা ব ল তাঁবে করিতে,  
ব ল তাঁব মাতা, ভাবত সন্তানগণ,

ববণা কটাকদানে একবার বিতে।

তিনি না কবিলে দয়া,

কোণায় পাইব ছায়া ?

পীড়িত হৃদয় জালা কে পাবিবে হবিতে ?

৩৩

৩খ বাশি দুবে গাবে, শতল আনন্দ হবে,  
গাবিতে ভাবিতে আব হইবে না বিবাদ,  
এহেতু গিযতি কবি কসো ডান্দ স্তবিতবি,  
আমাদের বিবেদা, পাই যো প্রসাদ।  
ভুলেছি ছুখেব ভাব, বিবাদে হবিষ লাভ,  
তাহলে বাড়িবে পূ শতগুণ মাতন।  
এহর্ষ বিবাদ হ'লে, মবিষ বকলে গিলে,  
ছুখিনী ভাবত মাতা পাগলিনী হইবে ?  
জীবন বাহির হবে, কেবল কলঙ্ক ববে,  
সোণার ভাবত মোর বক জুগি হইবে।

৩৪

এই হেতু কার মন বচনে তোমার কাছে,

কবিশ্যম বিবেদা,

পূবে যো আকিঞ্চা,

অভাগা জাতির বকু তুনি বই কেবা আছে ?

চান্দব দেখিছ যথা চান্দব কহিও তাশা,

দয়াময়ী জননীয়ে,

এহেতু হৃদয় বাধা, এহেতু চণের কথা

বহিতেছি বাব বাত, কি জানি

গো তুণ পাছে।

৩৫

প্রার্থনা।

সামিনী কল্যাণী হাল একতাশা।

ঈশহে তোমার ববণা অপার,

তোমার এগাদে ভাবত মাকান,

হেরিছ ব'শা ব এ' শে আবার,

দিশু' মাত্রে দেখি'ব পাই ?

বিঃ সুখী যথা তোমাব শাসনা,  
সেটকপ আশা কবি মনে গনে,  
সুখী শৌক সবে ভারত ভবনে,  
স্বাধীন প্রসাদে বাসনা তাই।  
বিলাতেব প্রজা সুখী যেই মত,  
স্বাধীন হয়ে ও স্বাধীনের পত  
কাকাব থাকিতে বাসনা তাই ?  
শশাধী সহ রাজ পরিবারে,  
ভাষ্যেব ভারী ভূপতি কৃপায়ে,  
চির আশু কর স্নেহে আগাবে,

কলি বাতা,  
পাবুবিয়াটা। } শ্রীবাজকৃষ্ণ বায় ॥  
I

এন স্বরা কবি গয়া সার্বিক কবি জুড়াই জীবন।  
নিদাঘ চাঁদ নিবন্ধিমে সোমাব বদন ॥  
হে ভারত সুভগণ, কব তাই মরশন,  
গে গয়া দ্বিগত বৎসব,  
শের তাই ভাব তাই, ভাবিতেও চাই তাই,  
হাসাইয়ে হৃদয় কনক।

চপ পদ ব্রজে, সবে উল্লাসে কব নিবীক্ষণ,  
নিরীপহে, ভারতের প্রভু-আশ ভাবন সদা।

II

যথা কবির মন্ত মদোদ্রুত, সোহিতে অল্পসা,  
যথা এর শ্রোত বতী বেণবতী  
আশয়ে সহসা।  
সেই কপ দেখি আজি, হেবিবানে সববাজ,  
আসিতেছে বাণ বৃক্ষগণ।  
আসিতেছে, হাসিতেছে, আগলেসে,  
ভাগিতেছে,

সব আজ হরষে গগন ॥

উনাসিত সুবরাজ! মাও কৃষ্ণি শুভ মরশন।  
চ পবাক, হউব ভারত ভূমি আগত কৃষ্ণ।

III

ওই মেখ যুগা ৷ তোমা দব। গো।  
কত বশে আজিতাছ স্ববিত্ত গগন ॥  
কত অবতী গোহিনী আহা কাগেদ কাগিনী  
অমৃত ভাবিনীটব যাবা।  
তোমা দেখিবাবে, স্রদৃশ্য জাণালা পবে,  
ববিত্তেচ বদন স্থাপন ॥  
গো গোপনা শক্তিটা সব মাঝাজিনী।  
পবি চবি গীব বাস মেদিনী শোভিনী ॥

IV

ভাবিওনা সুবরাজ সুদু দেখিবাবে।  
ভারতের স্তম্ভ ভাসে হৃথ পারাবারে ॥  
ব্রিটিশের প্রজাগণ, করে মহা নিবেদন,  
কবগাব কবহে শ্রবণ।  
কিছু তাই চাহি আর, মিতি এবাগার।  
হৃথ রাশি কবিব বর্ণা ॥  
তোমার প্রসাদে সুখী হোক প্রজাগণ।  
ভভাকাজী। শুভ হোব্ তব আ গগন ॥

V

সুসেবর শূদ্র ইব মার গৌধগণ।  
গণণ ভেদীয়া ছিল কোণায় এখন ॥  
কো ॥ উচ্চ সি হাসা, কোথা সেই কবি। গ  
কোথা সেই মূণ সুবোধন।  
কো ॥ সেই বীরবর, পার্ব আদি মহর্ষির,  
ভীম গী হ বণ গী হ গণ।  
সুবরাজ আছে কি গো ভারতের আর।  
গোনার ভারত ভূমি গেছে হারি পাশ ॥

VI

সে দিন ভারতে আসি পশিল দব,  
সে দিন মরশন সেন কবে গলাহণ,  
সে দিন সেই পুণ্ডর স্ববনস চক্ৰাচ



শোভ দশে ভাবত তাজিল,  
যে দিন সিদ্ধর পতি, সজ্জুয় যদ্যতি,  
এসো বেতে শ্রাণ হাবাইগ,  
সেই দিন মুখ রবি হলো শস্তমিত।  
নিবিলো ॥ ফিহাবা হবো উদিত ॥

I

দুবস্ত পাণিষ্ট দশ্য যবা দশ্যে।  
প্রািব মনব শা' ভারত ভবনে ॥  
স্ববর্ণ গড়িত স্থা' স্ববর্ণ বিচী'।  
দেদ নিচে তাহি হ'র শা'ধে প্রবীণ ॥  
যে কাণোত এক কালে ভারত ভূষণ।  
যাব বীব দাপে হত পরা বন্দমান ॥  
মৌদ্য' যুবীয়ার ছিল শগ'।  
বগির আবাদ চাল হয়েছে এ'। ॥

II

যে চিতোর ছিল কাশে হীবক বঞ্জিত।  
পরা'কা বাস শা' বিদ্যম পুবি'। ॥  
দিক্রা বেশরী লক্ষ বাব প্রমবিণী।  
বোদ' টকাবে যার মুচ্ছিতা' গোদী' ॥  
ভঙ্গুব' বাস স্থা' 'য়েছে এ'।।  
পালে ২ দেব পান ক'বেছে ভ্রাণ ॥

III

উজ্জয় শোভিনী অতি দশকে রচিতা।  
উজ্জয়িনী নাম যাব' ভাবত ভূষিতা ॥  
যশ' বাস কবেছো' ববি কালিদাস।  
হাবব জঙ্গ' যার কবিত্ব পকাশ ॥  
পুস্তিকা সি হাস্য প্যা'ত চবাচব।  
উচ্চায় যে জিণি' অত্যাচ্চ হু'ধর ॥  
কোণায় এখা' তার বোণায় এ'।।  
উগলিছে ছ' প' সিদ্ধু' ছই'য়ে স্বব'। ॥  
যশ' ই রেপ' গ' ভাবত গশিল।

ভাবিশ্য। ছ' ব' যিশী প্রাশ'ত শইল ৯  
বিলাশী পলাসী শেজে গিগাজ'। মে।  
সারতের রা'জ্য ভার' ক'রিয়' প্র'ণ ॥  
কিছু মুখ ভোগীতে ছি' হতে দে' দি'।  
শ'।।স'ো কিছু হ'রী আছি' হে' রাতন

I

বি দেখিবে ভারত' আ'ছ' কি এখা'।  
হু'ল বি'ো হু'ল তরু শোভে' কি ক'পা ॥  
ভারত প'হ'াবাসে মোহিতা' মেদী'।  
ছিল কাশে, এবে তার' চ'র্প' এ'। বি ॥  
বিদ্যমান আছে বটে সেই তরবর।  
কোথা' তা'ধা' যাতে হ'ত উদ্ভাদ' অমর ॥  
হু'দয় শোভিনী ওগো' অস্তর মোহিনী'।  
কোণায় লুকালে করি' ভারতে ছ' যিনী'।

VI

আসিয়াছো' যুববাজ' তুণিও' প্র'ণ।  
আসিনো' অস্তর তা'ব' ক'ব' বিনোদ' ॥  
তুণিইতো' ম' বোবা' গটগী'জ' গ'নে।  
ক'বে এ'।ছিলে' এ'ই ভারত ভবনে ॥  
মু'মিইতো' আছ'র'ান' ব'বিলে' য'ত'নে।  
মাসিউ'পতি' আর' ক'ত' বীব' গ'ণে ॥  
তুণিই' ক'বিলে' মু'খ' দেখ' য'তো'ব'ে।  
পার'সে'ব' অদী'খ'র' ডে'ব'ায়'ম' বীব'ে ॥  
তুণিই' সুল'বী' দে'নী' তুণি'ট' গো'হি'নী'।  
তুণিই' ক'বিলে' হা'য়' ভাবতে' ছ' যিনী' ॥

VII

যুববাজ'। উপহাব' বি' দিব' তো'ণায়' ৭  
৩ব' মো'।। উপহা'র' আছে' কি এ'।।য়' ৭  
২২' যাজি' সূ'য়ে'।।।।। ভারত' তো'ধিনী'।  
নাই' আব' নাই' আর' এ'।। মে' ছ' যিনী' ॥

কবিতা কুশল হার দিই উপহার ।  
কুপায় গ্রহণ কব নাই কিছু আর ॥  
হু নী প্রজ্ঞাদের কর তু খ বিগোচন ।  
হউক হউক তব শুভ আগণ ॥

JALUDHUR SAHA

প্রিন্স্ অব্ ওয়েল্‌সের ভাবত  
বর্ষে আগমনোপলক্ষে ।

১

সুব্রাহ্মণ্য ।

ঐশ্বর্য তরঙ্গে সদা কল্লোলিত,  
সহস্র যোদ্ধা পবিধি সাগর,  
সে তৈররব ধ্বনি পবাজিত বরি,  
হইল কি উচ্চ ভাবতের স্বর ?  
হু বিনী ভারত হু বের সাগরে,  
তাদি দিব্যাশি করিছে চিৎকার,  
এতদিন পরে সে কবণ ধ্বনি,  
গেল কি বুটনে তবি পারাবার ?

২

শুনিলে যাহায় পাষণ্ড বিদরে,  
শুনিয়া ভাহায়, ভাবত জননী,  
পাইয়াসি বেগা কোণ অস্তবে ?  
তাই কি এনার হইয়া সদয়,  
দিয়া, সুব্রাহ্মণ্য । পাঠায়ে তোমায়,  
দেখিবার ভবে হু ঐশ্বর্য ভারত,  
নায়েব শাসনে আছে কি দণ্ড ?

৩

এসো ভ্রাত । জায়ে করি আলিঙ্গ্য,  
ভিজাসি মায়েব কুশল বারতা  
ভিজাসি—কেমন আছে বুটবিয়া,  
কেমন আছেন আর ভ্রাতা,  
ঐশ্বর্য সাগর—ভাবিতে বিদয়—

মকর বুস্তীব ঢাচে বাস কবে,  
কোণে তরিয়া সে সব সঙ্কটে,  
শ্বাদিয়াছে ভ্রাত । ভারত ভিতরে ?

৪

হাসি একবার গণেব শ্বাহাদে,  
এটা হুদি হবেনাত আব  
যে ভারত চক্ষে সদা বহে বাবি,  
দেখ আজি মুখে কত হাসি ভাব ।  
হাসিতেছ সাজি দিগঙ্গাগণ,  
গাইতেছ গান বিদ্বন্দ নিচয়,  
আগ্নে বহিছে মূহল পবন,  
ভাবতের আজি বক্ত ভাগ্যোদয় ।

৫

দে । স্থানে স্থানে, গগবে গগরে,  
পলিতে পলিতে ভারত সন্তান,  
বালক, প্রাচীণ, নর নারী—সবে,  
করিছে শ্বাহাদে ভোগাব সন্মান ।  
পবি পূর্ণ বুস্ত মুখে আভগাব,

বাধিছে সাজায়ে, রোপিছে কদনি,  
গাঁধিছে যতনে কুশলমেব হাব,—  
অই দেখ বত গেলে হেলি ছলি ।

৬

নারীশূণ মিলি দিছে হুধ্বনি,  
খেত বৈজয়ন্তি উড়িছে গগণে,  
মঙ্গল কামনা বরি দিগঙ্গণ,  
হইয়াছে সবে রত বস্ত্রধরে,  
ব্রাহ্ম, মহাদেী, পৃষ্ঠান—সকলে,  
উপাসনা গৃহে একত্র মিলিয়া,  
ভুলিয়া সন্তাপ, মনের শ্বাহাদে,  
গাইছে সীত গণ তেদিয়া ।

৭

হ ল বহুদি, শ্বাহাছে আনক,

চাৰিছে ভাৰতে গীৰ অঁপাব,—  
 ১০ উৎসব আজি ভব আগাগো,  
 জাণিয়া, কথা হবে কি না আর।  
 আশিয়াছ বঁদ ভাণ্যে ভাবতের,  
 জাহাইব হু ১, কবিব বোদা,—  
 চক্ষু ভবি আগে দেখি চাঁদ মুখ,  
 ভুলি শোক তাপ, ছুড়াই জীবা।

৮

আসিছ ভাবত দেখিবে বলিয়া  
 কি আছে ভাবতে, কি দেখিব হায় ?  
 হু খিনী ভাবত এবে ভিখাবিনী ?  
 কি আছে তাহার দেখতে তোমাৰ ?  
 সুখেব আকব, চিত্তবিনোদন,  
 যে কিছু দেখিতে পাইছ ভাৰতে,  
 হাবাইবা ছিগ ভাবত এসব,—  
 পাইয়াছে পুা বুটন হইতে ?

৯

বাগ পুত্র চির হু। বাক,  
 আসিছ ভাৰতে দিয়া হুই তবে,  
 দেখিবা শুনিয়া ভাবতের হুণ,  
 পাছে বেথা পাও বোমল অন্তবে,  
 তাই আশঙ্কিয়া ভব হয় নো,  
 বেহুই কাহিণে, সাহস না পায়,  
 অথবা মনলে দেখিবা তোমাৰ,  
 ভুলিয়াছে গিগ হু ষ সমুদায় ?

১০

দেখিয়া তোমাৰ ভুলিয়াছে হুণ ?  
 ভুলিবা ১০১ — বেণা না হুনিবে ?  
 দরিদ্র লচ্চিলে বয়স না আর,  
 দরিদ্রতা অরি হু ষ পায় কবে ?  
 দীৰ্ঘ নিশা অশ্রু শালোকেৰ দেখা,

দীৰ্ঘ হু ষপবে শুখেব মিলা,  
 বেমা গধুব, কে বুঝিতে আর,  
 বিয়া সেইজা, ভোগিছে বে জা।

১১

কোণল হৃদয়ে বেথা হবে বলি,  
 এবে না কাঁদিলে, কাঁদিব ক'না ?  
 আশিয়াছ যদি বহু ভাগ্য বলে,  
 শুনিতেই হবে এসব ক্রন্দন।  
 ভাৰত পাশ্চীমী বাজী বিবুটোবিয়া,  
 গিণে অবসব কিছু দিয়া পরে,  
 বিপুল রাজ্যেব হুববহু ভাব,  
 ববে, যুধবাজ ? আগাণাৰি কবে।

১২

বলি ভবে শু—

রত্নগৰ্ভা বটে ছিল এ ভাবত,  
 এনা সে বহু গৰ্ভে গাই তার।  
 কে নিল ?—জাণিয়া, কিন্তু দেখি সদা  
 ভিন্ধা উপবাসে গণিয়া আকাব ?  
 মাণ্ডত অভাব হলে উপস্থিত,  
 কন্দোতে কবে বেদিয়া বিদাৰ,  
 বুটন শুণিলে প্রতীকাব ঘটে,  
 তাহিলে কেবল বিফল চিন্কাব ?

১৩

ভাকুত ঐশ্বৰ্য্য শুনিয়াছ যত,  
 পাইবে না ভাব কিছুই দেখিতে,  
 তাই দালুকাতে হীৰক মিশ্রিত,  
 তাই স্বৰ্ণ বেহু গদীৰ ভলেতে ?  
 সোণা, রূপা হীৰা পুণ পরিমাণে,  
 আছিল ভাৰতে—কথা মিল্যানয়,  
 ভাৰে ভাৰে সব গিয়াছে বিদেশে,  
 এখন সে সব অশ্রু বোধ হয় ?

১৪

তবে এ ভারতে কিছুই কি নাই ?  
আছে, কিন্তু তাহা হচ্ছে সুপ্রভূব,  
কেবল দেখিলে প্রকৃতির শোভা,  
কণ মাত্র হয় ছু থ রাশি দূব ?

এই যে উত্তরে শগণ পবনে,  
প্রাচীরের বেশে আছে হিমালয়,  
হিমালী টোপের পাবিয়া পাণায়,  
অকুণ শোভায় চোষিছে স্বদয় ?

১৫

আবো অই মধ্যে বিকা গিবির,  
প্রহরীর মত আছে দাঁড়াইয়া,  
তাহার দশিণে জুই ঘাট গিবি,  
আছে জুই কুলে সাগর বাসিয়া ।  
প্রকৃতি আপনি বাঁধিরাচে গড,  
নিবারিতে যো শক্র আগমন,  
যুবরাজ ? আর শক্রভয় নাই,  
নির্ভয়ে করণ ভারত শাসন ?

১৬

যা ব্রহ্ম পুত্র সিকু গোদানবী,  
যনুয়া, শরমু রামদা, বাবেবী,  
বৃষ্ণা, সুপ্রভাতা, গতাগী আদি  
আছে ভারতের বণ শোভা করি ?  
শ্যাম শত্রু পূর্ণ বিস্তীর্ণ প্রান্তর,  
গত্র পক্ষী আর নহী রহ গণ,—  
বভাব দিমাছে এই অলঙ্কার,  
এই মান আছে ভারতের ধন ।

১৭

তনি সুখী হবে, বলি তবে তা,  
আর তার আছে একটি রতন,—  
সুখে কিবা ছু থে, সম্পদ বিপদে,  
রাজ ভক্ত সনা আর্থা সুত গণ ।

ক্রম দেশে দেশে, মেথ ইতিহাস,  
এমণ বত্না সিলিবে না আব,  
নারী পুত্র ধন প্রাণ আশা ছাতি,  
বাছে আর্ধ্যগণ মঙ্গল রাজ্য ?

১৮

আর্কট গগর অববোধ কলে,  
আর সুব ভুলি সিপাহি সকল,  
আ দানো পালি প্রভুব জীবা,  
অন মও পানো বাঁচিল কেবল ?  
প্রভু ভক্তি এত, বল সুবরাজ ?  
ইতিহাস আব কত দে ॥ যান ?  
বিদেশীও গুণে ভুলি কোণ ভাতি,  
দেশের বক্রা ছাতিবাবে চায় ?

১৯

হোণ, ব্রত, যাগ, তীর্থ পর্যটন,  
ধর্ম লাভ তরে কবে আর্ধ্যগণ,  
এ সকল কিন্তু বিফলেতে যাব,  
না করিতে পারি বাজ দবশন ।  
শাঙ্ক্রে বলে মুগ দেখিলে রাজার,  
পুত্র লাভ হব, পাণি দূরে যায়,  
এই পুত্র লাভে আর্থা সুতগণ,  
বহুদিন হ'তে বঞ্চিত ধরায় ।

২০

আসিছ ভারতে, আশেদ সবলে,  
নয়ন ভবিয়া দেখিবে তোমাং,  
বিস্ত, দরিত্রের দরশন আশা,  
রয়েছে গগবে — গগরের লোক,  
স্বয়ং বিশীর্ণ হবে পুনরায় ।  
দেখিয়া তৈয়্যার জুলাইছে মন,  
কোঁটা কোঁটা ছু থী পলি গ্রাম বাসি,  
না দেখি তোমাং করিছে তোমাং

চাৰিছে ভাৰতে গণীৰ আঁপাৰ,—  
 যে উৎসব আঞ্জি তব আগতে,  
 জাতিয়া, কথা হবে কি গা আৰ।  
 আসিয়াছ যদ ভাণ্ডে ভাবতেব,  
 জাহাইব হু ব, ববিব বোদা,—  
 চক্ষু ভবি আগে দেখি চাঁদ মুব,  
 জুলি শোক তাপ, হুড়াই জীবা।

৮

আসিছ ভাবত দেখিবে বলিগা,  
 কি আছে ভাবতে, কি দেখিব, হায় ?  
 হু খিণী ভাবত এবে ভিখাবিণী ?  
 কি আছে তাহাঁৰ দেখ'তে তোঁতাৰ ?  
 হুখেব আকর, চিত্তনিমোদন,  
 যে কিছু দেখিতে পাইছ ভাৰতে,  
 হাবাইয়া ছিল ভাবত এসব,—  
 পাইগাছে পূৰ্ব বুটা হইতে ?

৯

বাগ পূৰ, চিব হুবে বাক,  
 আঁচিছ ভাৰতে দিা হুই তবে,  
 দেবিয়া শুনিয়া জাবতেব হুপ,  
 পাছে বেথা পাও নোমল অন্তবে,  
 তাই আশঙ্কিগা ভয় হয় মনে  
 কেহই বাহিৰে সাহস গা পায়,  
 অপয়া সবলে দেবিয়া তোমাৰ,  
 জুলিয়াছে গিৰ হু ব মনুদায় ?

১০

দেবিয়া তোমাৰ জুলিয়াছে হুৰ ?  
 জুলিয়াব কথা,—কো গা জুলিবে ?  
 দৰিত্র গম্বিলে বয় গা আৰ,  
 দুরিত্ততা অরি ৭ খ পায় কৰে ?  
 শীৰ্ষ নিশা মন্তে আলাকেৰ দেখা,

দীৰ্ঘ হু বপরে হুখেব মিলা,  
 বেমা মধুব, কে বুঝিতে আব,  
 বিয়া সেইজা, ভোগিছে যে জন।

১১

কোণাল কদয়ে বেথা হবে বলি,  
 এবে গা বাঁদিলে, বাদিব কথা ?  
 আসিয়াছ যদি বহু ভাগ্য বলে,  
 শুনিতেই হবে এসব ক্রন্দা।  
 ভাৰত পাশ্চিমী বাজী বিবুটোবিয়া,  
 গিলে অবসর কিছু দিা পরে,  
 বিপুল রাজ্যের ছুববহ ভাব,  
 ববে, যুববাহু ? আপাৰি ববে।

১২

বলি তবে গুা—  
 বহুগৰ্ভা বটে ছিল এ ভাৰত,  
 এথা সে বহু গৰ্ভে গাই তার।  
 কে গিল ?—জাতিয়া, কিছু দেখি মদা  
 ভিলা উপবাসে মনিয়া আকাৰ ?  
 সাংগাত অভাব হলে উপশিত,  
 ক্রন্দাতে কবে গোধিনী বিদাব,  
 বুটা শুনিলে প্রতীকাৰ ঘটে,  
 তাহিলে বেবল বিফল চিৎকাৰ ?

১৩

ভাৰত ঐখৰ্য্য শুনিয়াছ যত,  
 পাইবে গা তার কিছুই দেখিতে,  
 গাই বালুপাত হীৰক মিশ্রিত,  
 গাই স্বৰ্ণ বেগ হীৰা অলতে ?  
 সোণা, রূপা, হীৰা পুত্র পরিণামে,  
 আছিল ভাৰতে—কণা নিখ্যানয়,  
 ভাৰে ভাৰে সব গিয়াছে বিদেশে,  
 এখন সে সব স্বপ্ন বোধ হয় ?

১৪

তবে এ ভারতে দিছুই কি নাই ?  
আছে, কিন্তু তাহা নহে সুপ্রচুব,  
কেবল দেহিলে প্রকৃতির শোভা,  
ক্ষণ নাজ হই ছ'খ বাশি দূব ?  
এই যে উত্তরে গগণ পরসে  
প্রাচীনের বেশে আছে হিমালয়,  
হিমাণী টোপের পারিয়া সাপায়,  
অতুল শোভায় তোষিছে রুদয় ?

১৫

আবো অই মধ্যে বিদ্যা গিবির,  
প্রহরীর মত আছে দাঁড়াইয়া,  
তাঁহাব দক্ষিণে ছই ঘাট গিরি,  
আছে ছই কুলে সাগর বাঁধিয়া ।  
প্রকৃতি আপনি বাঁধিয়াছে গভ,  
নিবারিতে যেন শক্র আগমন,  
যুবরাজ ? আর শত্রুভয় নাই,  
বিতর্য়ে করা ভারত শাসন ?

১৬

গঙ্গা, ব্রহ্ম পুত্র সিদ্ধু গোদাবরী,  
যমুনা, শব্দু গন্দকা, বাবেদী,  
কৃষ্ণা, তুঙ্গভদ্রা, তাহাদী আদি  
আছে ভারতের বক্ষ শোভা করি ?  
শ্যাম শত পূর্ণ বিস্তীর্ণ প্রান্তর,  
পত্র পশী আর নদীকহ গণ,—  
সভাব দিবাছে এই অলঙ্কার,  
এই মাত্র আছে ভারতের ধন ।

১৭

তনি সূনী হবে, বনি ভাব জন,  
আর তার আছে একটী রতন —  
সুখে কিবা হু খে সম্পদ বিপদে,  
রাত ভক্ত মদা আর্ধ্য হুত গণ ।

ভ্রম দেশে দেশে, দ্রব ইতিহাস,  
এমা বতন মিলিবে না আঁব,  
নারী পুত্র ধন প্রাণ আশা ছাডি,  
বাছে আর্ধ্যগণ মঙ্গল বাঁধাব ?

১৮

আর্কট গগর অববোধ কালে,  
আত্ম সুখ ভুলি সিপাহি স্কল,  
অন দানে পালি প্রভুর জীবন,  
অন মও পানো বাঁচিল কেবল ?  
প্রভু ভক্তি এত, বল যুববাজ ?  
ইতিহাসে আর বত দে ৥ যার ?  
বিদেশী ব গুণ ভুলি কোন ভাতি,  
দেশের বন্দন ছাডিবাবে চায় ?

১৯

গোণ, ব্রত, যাগ, তীর্থ পর্যটন,  
ধর্ম লাভ তরে করে আর্ধ্যগণ,  
এ সকল কিন্তু বিঘনেতে যার,  
না শরিতে পানি রান মরশন ।  
শাস্ত্রে বলে মুখ দেখিলে রাজার,  
পুত্র লাভ হয়, পাগ দূরে যার,  
এই পুত্র লাভে আর্ধ্য স্ততগণ,  
বহুদিন হ'তে বঞ্চিত ধরায় ।

২০

শাসিছ ভারতে, আনন্দে সবলে,  
গরু ভরিয়া দেখিবে তোমার,  
শিষ্ট মরিত্তের মরশন আশা,  
যেহেছে নগরে — তা হের লোক,  
হুমর বিশীর্ণ হবে পুনশায় ।  
দেখিয়া তোমার ছুঁয়াইছে মন,  
কোজী কোজী ন বী পনি গ্রাম বাসি,  
না দেখি তোমার বরি ছ বোধ ?

২১

ধন, মান, আৰু বিদ্যা আছে য়াৰ,  
সেইত পাইল রাজ দরশা,  
অৰ্থ বায় কৰি যাইয়া গগন,  
কৰিল সফল শ্রবণ গয়া ?

দিনান্তে যাদেয় ঘটে না আহার,  
বল যুবরাজ ! তাপের কি হবে ?

বহু আঁ দিয়া বহু দূরে বেয়ে,  
কেমনে তোমার বন্দা হেরিবে ?

২২

দেখিছ নগরে যত আড়ম্বল,  
পল্লিগ্রামে তার কিছুই ত নাই ?  
যদ্যপি দেখিতে বর পদার্পণ,  
না মিলিবে তথা বসিবার ঠাই ?

যুবরাজ ভূমি ! বহু মূল্য মণি,  
মানিক্য ঋচিত তোমাব আসন,  
কাম্বল ক্ৰমক কি বলে তোমাব,  
বসিবারে দিবে জীর্ণ কুশাসা ?

২৩

ধত বৃটনিয়া ধল্ল ভাগ্য তোর ?  
কত স্মৃথে চুই কাটান্ সময়,  
সদা স্মৃদী তোর সন্তান সকল,  
বড় হু খ সহ নাই পবিচয় !  
যাবে না দেখিয়া গােব বেদনে,  
সমস্ত ভাবত করেছে রোদা,  
তুই পুত্র বলে তাহার চরণ,  
হৃদয়ে ধরিয়া বসিস বহন ?

২৪

তবু যুবরাজ ! ভাবতের ভালে,  
কত পুত্র ছিল, দেখিল তোমায়,  
ধাক কিছু দিয়া, হাতক ভাবত,  
থাকুক ভুলিয়া হু খের জালায় ?

বিচু দিয়া থাকি দেখি তুনি বাও,  
ভারত তোমার থাকে কোণ হুখে,  
চিন্তাসা করিয়া জাণ এসায়,  
সদাই ভারত কীদে কোণ হুবে ?

২৫

আব এক কথা,—বলিব বলিব,  
মনে কৰিবেছি, কিন্তু ভয় হয়,  
যাহ'ক,—যখন পেয়েছি তোমায়,  
বলিব খুলিমা, কবিব্যা ভয়,—  
যাহারে বলিলে গনের বেদনা,  
যুচিবে হাতা, হবে প্রণীকার,  
তাহার বিবটে বসিয়া বাঁদিব,  
কি লজ্জা তাহাতে, ভয় কৰি কৰি ?

২৬

বিত্তীর্ণ ভারত — প্রজা বহু ভাণ,  
সহজতায় শাসন তাহার,  
ছাড়িয়া তাগাবে থাক বৃটনেতে,  
গণে ব্যবধান থাকে পাবাবাব ।  
অদৃষ্ট আবর্তে যুবিতে যুবিতে,  
পড়িছে ভাবত তোমাৰি কবেতে,  
শুভতর যনি শাসন তাহার,  
এ ভাখে তাহাবে হয় কি ছাড়িতে ?

২৭

বলি, যুবরাজ ! কব অবধান,  
এবব কন্দন রাখ বাথ মনে,  
বৃটা দেখিয়া ভুলোনা ভারত,  
কহিও এসব জাণীৰ স্থানে ।  
কহিও—যে ভাব দেখিলে ভাবতে,  
যে হু খ তাহার কৰিলে শ্রবণ,  
তোমার বিকট গুলিলে এ চুখ,  
নিশ্চয় গলিবে জাণীৰ মনে ।

২৮

বহিঃ—যাদের হাই দিবেচা,  
 দ্বিত প্রতি হাই দরা গায়া দেশ,  
 সে সব (শোক) নোক আসিয়া এখানে  
 কেন আর দেব ভাবতের রেশ ?  
 "নিগার" বলিয়া ভাবত সন্তান,  
 বিজাতীয় দুঃখ ঘটায় প্রকাশে,  
 "নিগার" নিপাতে আনন্দ খাদের,  
 আব যো তাবা গা আসে এদেশে।

২৯

কহিও—মায়ের গতা/নব প্রতি,  
 মায়ের হো থাকে চিবকাল  
 বুটা চইতে দু'ব আছে বলি,  
 ভাবতের যো ভাঙ্গা বপাশ।  
 ভাবত যখন বোদা কবিবে,  
 কাণ পাতি তাহা কবিলে শ্রবণ,  
 নঙ্গণ ঘটিবে, নতুবা বিপদ।—  
 মায়ের ভাবত হলে নিগণ ?

৩০

অবশ্যেব জাত এক ভিফা আছে,  
 চাহিতেছে তাহা, চার বাব বাব,  
 কহিও মায়ের, মেই ভিফা এই—  
 বুটা ভাবতে ময় অধিকার।  
 বদ্যপি মন গী পায়ের অপিতে,  
 এই অধিকার অকাতব মনে,  
 তবেই ভারত বনে তির দিন  
 এক হারে গাখা বুটোর মনে ?

৩১

তবেই ভারতে ঘুটিবে আঁধার,  
 সুখ দিবাকর ভাবাব উড়িবে,  
 ঘুটিবে অসাত্তি, যাবে হু প ভাব,

শান্তির পতাকা আঁধার উড়িবে ?  
 অধীনা বলিয়া ভারতের মনে,  
 হবোনা হাবা চ খেব উদয়,  
 মহিচে ভারত যো ব সাত্তা,  
 কিছুই নবো—যাবে সমুদয় ?

৩২

দীর্ঘ ভাবতের গলিন বদা,  
 আনন্দ প্রহর হইবে আবার,  
 তেরিবে বুটো মহোদরা যো,  
 সুখে ছুখে হবে সা ভাগীতার  
 যত দিন ভবে ববে তার জাতে,  
 আনন্দে ভারত বলিবে সবা,—  
 "হাবাইয়া নব ছিলো ছিনী,  
 বুটা এমুখ দিয়াছে আঁধার ?"

শ্রীশরচ্চন্দ্র চৌধুরী

বেরলয়া—হাইস্কুল।

প্রিন্স অব ওয়েলসের ভাবত-  
 বর্ষে আগমন।

শ্রীযুত বর্ড রানদাগ সো  
 লিখিত

পূণবিত গা, করিয়া শ্রবা,  
 হইবে গোদের রাজ দরশন।  
 ভারত তপন, চইল এখন  
 গৌড়াগ্য করণে উজ্জল বরণ।  
 আর্ধ্যগণ সবে চইমানিনিত,  
 গাই সবে এস আনন্দের গীত।  
 আশ্রয় পা দিয়া নগর বোরণ,  
 মুসজ্জিত কর সকলে এখন।  
 বাবা মনোহর, কর অবিরত,  
 মুরদ, মনিবাবিশি সিবণ,  
 যত পুর বালা লয়ে হেম মালা  
 বর প্রিন্স শিব পুঙ্গ বশিষণ,



ভারতের প্রজা তবে বাজ ভক্ত,  
বাজগুণ গাওে সদা অহুবক্ত,  
কৃতজ্ঞ অন্তরে সকলে এনা,  
সবে বাজ গুণ করিব কীর্তন।  
যত গৃহ ছাবে, কুম্বমেব হাবে,  
সুসজ্জিত কব বিবিধ প্রকাবে,  
কবদীপদান, উড়াও নিশান,  
কবি পূর্ণ ঘট বাব চারিধাবে,  
সাদবে সম্ভাবি এস সুব বাজ,  
ধ্বজ কব আজি ভারত সমাজ,  
তব পদ স্পর্শে ভাবত ভবা,  
করিবে ধারণ উজ্জল বরণ।

যুব রাজের শুভাগমনে  
ভাবত সম্মানের সঙ্গীত।

ওহে যুব রাজ। আজ কি সুরুতি,  
নভিল ভাবত,—পাইল নীৰিতি।  
হ'ল সুপ্রভাত অন্ধকার রাতি,  
ঐ দেখার্যায় হু। স্বর্য্য ভাতি।  
শুভক্ষণে তব শুভ আগমনে,  
ক্ষরে সুখ ধারা ভাবত ভবনে।  
আনন্দ লহবী ছুটিয়া আদরে  
বিলাস সন্দেশ প্রতি ঘরে ঘবে।  
তব আগমনা ঘুমিবার তরে,  
দে। যুব রাজ গগরে গগরে,  
সহকাব শাণা পূর্ণ ঘট মুখে,  
বাক বদলি দাঁড়ান সুখে ?  
আর কিবা আছে ? দিতে উপহার  
সোনাব ভাবত এবে ছার খার ?  
ভুমি গৃহী শ্রেষ্ঠ বাজ কুল-মণি,  
( কপাল দোবেতে ভারত হৃদিণী ? )  
ভাবতীয় গণ প্রসন্ন বদন,

সাজিতেছে বটে রাজ দরশনে,  
কি দিবে হতুক ? তাহি কোণ ধা ?  
কোণা পাব তব যোগ্য সিংহাসন ?  
তাহি তব যোগ্য অশা বদন,  
তাহিক তুমিতে বতন ভূষণ।

বহুশ ববয যবন তাড়ণে,  
প্রচণ্ড হরস্ত কঠোব শাসনে,  
শুকা'য়েছে বক্ত, আছি সীণ নেহে,  
এনে দেখহে শোকাশু প্রবাহে,  
ভাগিছে ভাবত। নাহি গাজে বল,  
তাহিক বাণিন্য, তাহি শিল্প বল,  
তাহি তব জ্ঞান, তাহিক বিজ্ঞান,  
গদার্থ দর্শন, সাহিত্য নিদান,  
কিছু মাত্র নাই, গিয়াছে সকলি,  
আছি মাত্র কটা দবিল কাঙ্গালি।  
তাই বলি পুন দরিত্রের ঘবে,  
কিছু তাই মোবা আছি রিক্ত কবে।  
গেয়ে তোমা'হা অমূল্য বতন,  
কি আছে হে কিসে দেখাব যতন ?  
অথবা যা আছে সবলি তোমাবি,  
অথগু ভারতে তুমি অধিকারী ?  
কিবা কো ধা ? ঐখণ্যে কি কাজ ?  
দরিত্রের ধন বিখ্যাত সমাজ,  
আশীর্বাদ কবি হও চির জীবী,  
চিব হু হ'য়ে পালহ পৃণিবী,  
কবচে প্রহা ভাবতের ভার ?  
রাজ বুরজ্বব গীতি জ্ঞানধাব ?  
দয়ার সাগর দয়াবতী স্তন ?  
ভাবতে পালিতে হও প্রতিশ্রুত।  
প্রগত প্রজারে লও কোণে তুণ  
ঐ বর পুটে মুঠিতেছে ধুলে ?  
বিপদে সম্পদে ছাতিবাব তয়,

একান্ত ভোমারি ভারত ভাষা ।

শুভাদৃষ্ট গুণে যদি পুণ্য ফলে,  
ভোমাহো ধনে পাইয়াছি বোলে,  
যা হে তবে বাস্যাপুরাই,  
হৃদয় বিদারি খুলিয়া দেখাই,  
অনন্ত কালের আস্ত বারতা,  
সকলি আছে হে হৃদয়েতে গাঁথা ?  
শত শত শত যুগ বলিলে ও রবে  
সে পূর্ন কাহিনী শেষ বাহি হ'ব ।  
যাহা হোক যদি গুণি বাজা ?  
দৈবে হইয়াছে তব আগমন,  
অচণে দেখহে ভারতের দশা,  
এক মাত্র তুমি ভারত ভবদা ?

আর এক কথা ওহে গুণবান  
চিব রাজ ভক্ত আর্বোয় সম্ভান ।  
শুনিয়া থাকিবে আর্ব্য ইতিহাসে,  
শত শত স্থা পূর্ণ এই বসে ।  
যাগ যজ্ঞ আদি শ্রাক্ত অস্থ্যানে,  
বাজার সমান দেবতাব গানে,  
অদ্যাণি ভারতে আছে সেই প্রজা—  
অদ্যাণি মাংসে কবে রাজ পূজা ।  
সেই রাজ ভক্তি মাত্র এ ভারতে,  
আলো আছে, তাই সেই ভক্তি হতে,  
কবিতা কুহ্মে গাঁথিয়াছি হার—  
তব পদ্য করে দিতে উপহার ।  
সামান্ত ফুলেব সামান্ত এহার,  
সৌরভ বিহী তাহাতে এবার,  
একি তব যোগ্য ?—দিব কোন গুণে ?  
তবে যদি হয় হৃপবিজ মনে,  
সামান্ত হৃশেও দরিজের ধন,  
ব'লে গ্রাহ্য । তবে কর হে গ্রহণ ?  
দিই তুলে, দাও ও কর কাল,

হোক হে কবিব জীবা সফল ।

শ্রীবালকৃষ্ণ মিশ্র

দেব গ্রাম ।

যুব রাজ

বহু, পরিাল বহু লস্ব অনিল,  
কাপিয়া কাপিয়া চশ নদীর সলিল,  
সরোবরে মুখে মুটে ভাসগো মলিনি—  
উদিয়ে ভাবতে যুবরাজ দিনমনি ।  
বিমানিষা চার ঘনকেশ, সীমস্তিতি,  
সুন্দবি সিন্দুর বিন্দুকটিয়া মোহিণি,  
বিনোদিয়া পর বেশ, উষাবিনোদিনি—  
উদিয়ে ভারতে যুবরাজ দিনমনি ।  
নিমীলিত কলি গুলি, মাংব জাগাও,  
মনোহর ফুল সাজে ভারতে মাজাও,  
মধুবব কর তাহে গুণ গুণ ধ্বনি—  
ভারত উদিয়ে যুবরাজ দিনমনি,  
যদুর মূল তালে কোকিল মদলে,  
কছু উড়ি, কছু বলি গাও বৃহ্মলেনে—  
যুবরাজ গুণ গাও—হ'ক প্রতি ধ্বনি—  
ভারতে উদিয়ে যুবরাজ দিনমনি ।  
তরনীল পাতা গুলি, উড়ি বায়ু ভরে,  
যুবরাজ গুণ গাও মুহু, মধু স্বরে,  
ওহে দিবাকর, হরে গগনেউ খাও,  
ধরি মনোহর বেশ আলোক ছড়াগা—  
এত দিনে প্রত্যাতিগ-হৃথের রজনী,  
উদিয়ে ভারত যুব রাজ দিনমনি ।  
ধন্য মা ছাহুণী কিষা সরস্বতীতীরে,  
চক্রবাক হৃথে রবে স্বীয় প্রেরণীরে—  
অধারে ভূবিয়া, প্রিমে, আছিল ভারত,  
ক্রমে দেখ হয়, মনোহর আলোমত,  
সুটিল জনম গদ্য মন্দ তারাগণ,

অ্যা শশধর বণা কী প্রতপা।  
 প্রেমসিনের আর যো তাহম যোগী-  
 রাজুক ভারতে যুববাহু দিয়াণি।  
 বেদার তাগ বাগলী

যুব রাজ

বুঝি আজি এত দিনে তব গুণ আগাগো  
 অন্তর্মিত সুখ সূর্য্য ভারত আকাশে,  
 মনোজ্ঞ নবীত ভাব, পূর্ণ প্রভা প্রকাশিবে  
 বুঝিবা ভারত পূর্ণ পুরিবে উমাগে।  
 সমগ্র ভারত আজ মবি বি হৃদয় সাধ  
 ধরিয়াছে বাজপুত্র ডেটিতে কোণেব।  
 আপনি প্রকৃতি সতী ঐ দেগ বহুতি  
 মাজাবেছে মনোহর বিচিত্র আকাষে।  
 হু দিগীর অনঙ্কাব কিছুই তাহিব আবি  
 ভারতের পূর্লর্ক সৃষ্টি সকলি।  
 তাহিক অযোধ্যা আর ইন্দ্র প্রস্থ চাংকার  
 তাহিসে হস্তিনাপুর ভাবত উজলি।  
 কি দেখাব বন আর ভাবত কদাল সাব  
 দেখাবার জ্বা আর পাইব কোণায়।  
 মবিলে পূর্কের কথা মাংসে উপদে ব্যাণা  
 ভারতের শেষ দশা এই হ ল হাণ।

বাজপুত্র

বুজব দলিত বর্থা কণক গালিনী লতা  
 ববি কর দস্ত হরে জনেতে গুনা,  
 ছরস্ত যবন গণ মদা কবি আক্রাণ  
 ভারত কণক লতা মলেছে ছুপায়।  
 হিমাচল পাসে বসি বেদি বাজিক ঋষি  
 গাইল মধুব ভাণে ভাবতের জয়।  
 কোণা পাব সেই দিন সুখ সূর্য্য চিব দিন  
 কোণায় উদিত থাকে সবশ সমুদয় ?

যশসী ভাগ্যসীত আজি হে ভাবত দীপ  
 আজিসতী দাসী মা পুজিছে কোণায়।  
 বিস্ত্র ভেবে বেগ মনে ভারতের গুণ গাণে  
 এবদিন পূবে ছিগ এ মগংগর।  
 কি বাজ অরণে আর গুণ সুখ বারবাব  
 বাজ পুত্র এবে তব ধরিয়া চরণে।  
 বলিছে বিদায় করি রাখি পদে দয়া করি  
 দেথ হে দয়ার চশেভাবত সন্তানে।

বগদদ

ঐগোপাল চক্র চট্টোপাধ্যায়  
 ৭ ৭ পটল ডাঙ্গা ট্রাট  
 যুববাহু এলবাটের বিকট  
 বিবেদা।

১

গাইব আনন্দসুখ সবদের শশি,  
 আজি এ ভাবত গাব ত্রিটা বিজয়  
 এত দিনে ভাবতের বুঝি হু প গিশি,  
 পোহাইল সুখ সূর্য্য হইল উদয়।

২

গবি। কি সুখের দিন তব আশ্রয়  
 অষ্টাদশ মত পঞ্চ সপ্ততি জীষ্টাপ,  
 ধত্র এ ভারত বর্ষে, রবে অসুখণ,  
 সকলের হৃদে গাণা এই সুখ শব্দ।

৩

দেখিলাম সত্যিক বর্ষ প্রায় গত,  
 ই লগু সুখ ছত্র আশ্রিত ভারত,  
 বিস্ত্র হায় কবে হেগ সুখ উল্লাস,  
 হযেছে কাহাব হৃদি উক্ষুসিত এত,

৪

ধত্র আজ ভারত-বর্ষ। সার্বিক জীবা,  
 ভাবত বাসী। আজ পেয়েছে বিকটে,

জাবাধনের ধা, হুদি খুলে বিবেদ্য,  
করিবে আপা চ ধ কৃতজ্ঞনী পুটে।

৫

শুনিয়া বি ভাবতের ছ বেব বিলাপ,  
সুচর নাগব ভী ব অথবা দেপিতে,  
শুনিয়াছ ইতিগমে প্রচণ্ড প্রতাপ,  
আসিয়াছ রাজপাট ই লও হইতে।

৬

দেখিবে ভারত, কিহু দেখিতে কি আছে ?

হুর্গিবার বাল রাছ চক্র আবর্তনে,  
কীর্তি খ্যাতি আদি যত সব গ্রাসিয়াছে,  
দহিছে ভাবত বাসী অগস্ত আশুগে।

৭

গহে গৌরবের কথা, বাহা এ ভারতে,  
ছিল এক দিা তাহা সাহ শিকদর,  
জানিয়াছিলো আর পবেসোর নাগে,  
আব জেগেছিল যত গজ্জী ব সধর।

৮

কে দেখেছে ? কে বলিবে কেবরে বিশ্বাস ?  
ছিল এ ভারতে যাহা, কিহু বাসি বাসি ?  
ভাগীরথী ছই কুলে রয়েছে প্রকাশ,  
আজি ও অক্ষয় গাসে কাল মর্ক্যাসি।

৯

এখানেই উদেছিল শার্গ্য বশ শশি,  
আবার এখানে কাল চক্র আবর্তনে,  
অন্তমিত সে শুধা শু কাল তমোরাসি,  
আছাদিয়া রহিয়াছে ভারত এখনে।

১০

এখানেই আর্গ্য কুল তেজ হতাসন,  
প্রদীপ্ত হইরাছিল আবার এখানে,  
নির্ধারিত সে অনন বিধির নিধা, -

ভঙ্গ গাজ অবশেষ বয়েছে এথা।

১১

হায়। যে ভাবতবর্ষ ছিল একদিা,  
আস্ত রচা খানি হুপের আগাং ,  
নাহি সে সকল কিছু আজি দিাহীন,  
হু খের অতল জলে দিয়াছে গাঁতার।

১২

কি কৃষ্ণবে ডেবায়ছ সাহ সিকন্দর,  
উচ্চারিা মহাগ্রন্থ আসি সিকু তীরে,  
সে দিা হইতে আর্গ্যাত্ত বিবধর,  
প্রণত ববিগ গীব সতব অস্তরে।

১৩

সেই দিা হইতে হায় এ ভারতবর্ষে,  
প্রেবেসিল কৃষ্ণপক্ষ তিল ২ করি।  
কীর্তি খ্যাতি আদি যত কালতমোগ্রাসে,  
শিশেপিল চাতি দিক তিমিব আবরি।

১৪

উচ্ছৃশিত বিচী গালা বরি ভীম রব,  
নাসে যথা তীর পুা ২ মস্তাভুগে,  
গািয়াছে বিদেশীর ভারতের সন,  
এই রূপ বার ২ ভীম আক্রমণে।

১৫

ববোর প্রপীডণ অগ্নি হুর্গিবার,  
যে জানাথ আর্গ্যাত্ত হল আলাতা,  
ধকসত বর্ষ জল চালি অবিবার,  
অধন জাহ্নবী জালা করিতে বারণ।

১৬

গা জানি ভারত বাসীর কোা ভাগ্যবলে ?  
পেয়েছিল প্রিটোর সুধর আশ্রয়,  
মনে নয় কোন দিন এই কৃপাছলে,  
গীতল করিবে সবে দগধ স্ববর।

১৭

৭৪ বারি সমাগমে দাবাদখ বব,  
অক্ষুরিত হয় যথা, তেমনি ভারত,  
ব্রিটনের কৃপা জল করি পবসা,  
হইতেছে দিন ২ প্রাণ সঞ্চারিত ।

১৮

কি স্থখের দিন সে দিবে যে দিবে আপন,  
প্রাণা হু । নিবারণিনী মাত বিক্টরিয়া,  
নইলেন এ ভারত দীনা হীন জানি,  
আপা কোমল জোড়ে যত্ন করিয়া ।

১৯

যথা ভীত স্থতে কবি জোড়ে সযতনে,  
“ভয় নাই” বলি মাতা করে সাধনা,  
তেমনি মা বিক্টরিয়া ঘোষণে বচনে,  
নির্ভয় করেছেন যত ভারতীয় গণ ।

২০

স্থখে আছি ব্রিটনের অসীতল ছায়ে,  
আমরা ভাবত বাণী রক্ষ স্থবিচারে,  
কিন্তু এক হু থ মোদের সদাই হৃদয়ে,  
নিবেদিব তব পদে বাসনা অন্তরে ।

২১

বাহি চাই ধন জন সহায় সফল,  
ই লও হইতে ভাবতের ধন জনে,  
কর ভারতের রক্ষা মিতি বেবল,  
বশিতে পারিবে ভাবত ভারতীয় গণে ।

২২

দেখ দূরে থাকি ( পিতা যেন সম্ভাব্যে ),  
ভাসিবে ভারত আজ স্থখের সাগরে,  
গাইবে আনন্দে উর্ধ্ব করি হুই করে,

ব্রিটন বিজয় ধ্বনি মোহিয়া সংসারে ।

২৩

৭হে রাজ ভক্তি শূন্য ভাবত হৃদয়,  
কোণ কালে, তবু যদি সফা হয় মনে,  
দেখ বিচারিয়া যত বেদ তদ্ব চয়,  
কি ভাবে ভাবত ভাবে নর পতিগণে ।

২৪

নচে উপেক্ষার ধা ভারত তোমাব,  
ভারত ঈশ্বর, করে এ রাজ্য শাসন,  
রাম যুধিষ্ঠীর আদি নৃপতি সভার,  
আজি ও রয়েছে নাম অক্ষত অবণ ।

২৫

বসে এই স্বর্ণ ময় ভাবত আগনে,  
কর স্থখে রাণা বাজ্য যগযুগান্তরে,  
রচিতবে অক্ষয় কীর্তি এই ত্রিভুবনে,  
হইবে হুচীর জীবী রাজ লক্ষী ববে,

২৬

হি মা ঘেব অবিচার হবে অদর্শন,  
ধর্মের প্রধবল বলে, দী্যতা দুর্গাব,  
হবে সম্মার্জিত স্থখ সম্মার্জেনী গুণে,  
ভাবত আনন্দ নীরে দিবেক গাতাব ।

২৭

আস্ত আকাস প্রান্তে আছে যত দিন,  
তাবা শশি দিবাকব, বিজয় ব্রিটা,  
পতাকা অবাধে হউক ভাবত উড্ডীন,  
দিবারিদি আমাদের এই আকিকা ।

প্রীগোলোক চন্দ্র সম্ভা

ছাতব,

প্রীহট

## ( প্রিন্স অফ ওয়েলসেব শুভাগমন সম্বন্ধে । )

"There belongeth to Kings from their servants both tribute of duty and presents of affection

Bacon

অকস্মৎ কেন কেন,  
ভাবত হইল হেন,  
আমাদের ধনি আজি পূবে চারিধার,  
যেদিকে ফিরিয়া চাই,  
সে দিকে দেখিতে পাই,  
তপের সাগর হবে দিবেছে সঁতার।  
অমূল্য রতন রাতি,  
পরিষে ভারত আজি,  
মেতেছে আপন মনে আনন্দ উৎসবে,  
ধবেছে হুতার বেশ,  
গাহি আর শোক বেশ,  
তে প্রানিত হেন দিগ ভাবেতেব হবে ?  
ওই দেখে ভোষণি,  
নবীন সুষমা ধরি,  
হাসি হাসি মুখ ধানি—শোভে শাধব  
তারবার দল যত,  
হাসি তছে অবিরত,  
বিতরিছে সারানিধি স্খাময় কর।  
ওই দেখে তরু পরে,  
হুটমাছে ধরে ধরে,  
গোলাপ চামেচী ঝুই ফুল যত গা,  
সে বাস লইয়া কোলে,  
মুহূন অনিশ ম্যেলে,  
বহিতেছে ধীরি ধীরি করি মুহূরব।  
ময়ুর বলিয়া গাছে,  
পেকয় ঢুলিয়া গাছে,  
মুর অন্ত কণ্ঠে বোঝিবারা গায়,

অবিনতা রেশ ভুলি,  
হরে নিশান ভুলি,  
ওই দেখে দিনমনি আকাশেতে ধার।  
ওই জাহ্নবীর জগ,  
করি রব কল কল,  
মূহূন গতিতে যায় সাগরের পাশে,  
মকলে মোহিত আজি আপনার গাঁশে।  
বি কারণে কো কেন,  
সকলি হইল হেন,  
মবশেরি মুখে কেন আনন্দের ধনি ?  
ওইয়ে নিশিয়ে মবে,  
গাইতেছে এক রবে,  
পরিছে সে পরে আজি আকাশ অবনিঃ—  
এস এস যুব রাজ,  
এসেছ ভারতে আজ,  
বি মূপের দিন আজি—হেরিচ তোমায়,  
বরেছিন্ন মনে মনে,  
হেরিব গো বত দিনে,  
দয়া করি দয়াময় ঘটাইল তায়।  
কি হুথের দিগ আজি হয়েছে উদয়।  
ধরকর হু ধরবি,  
এবে লুকায়েছে হবি,  
ভাগ্য বশে আমাদের হুদিন উদয়।  
নবে মিলে গাই ঘোরা কুমারের জয়।  
ভারতের প্রতি ঘরে,  
আনন্দ বিবাহ করে,  
দীপের শোকরাপি আজিয়ে বিলায়,

সবে মিলে গাই নোবা কুমারের জয় !

ভুলেছি অধীন ক্রেশ,

নাহিক দু ধেব দেশ,

এমা স্থমিন আর কার ভাগ্যে হয় ?

সবে মিলে গাই মোরা কুমারের জয় !

এসেছ কুমাব তুমি,

হেবিত্তে ভারত ভূমি,

কি আনন্দ ভারতের হেরগো যয়া,

যতক ভাবল বাসী,

আনন্দ উৎসবে ভাসি,

যাতিয়াছে মুখে আজি আনন্দের স্ববে ।

দ্বিস্ত্র যুববাজ ।

বলিব একটা বখা,

দারুণ হৃদয় বেখা,

মর্যোযোগ দিয়া শুনি রাখিও অরণে,

বিশাতে কিরিবে যবে,

মাভাব নিবটে কবে,

কত দিলে ছেড়াগণ, ভাই ভাবে আলিঙ্গ্য,

করিবে ভারত মাঝে বিজিতের সখে

শ্রীমণিলাল শেট ।

০ ন প্রসন্নকুমার ঠাকুরের ছিট,

পাণ্ডবিনা ঘাটা, কলিকাতা ॥

যুবরাজ ।

## THE PRINCE OF WALES

১

এস এস যুবরাজ ভারতের গনি হে,

ভারত দু ধিনী,

ভারত কি ধা ধরে, তোমারেরই পূজা কবে,

জুড়াই তাগিত প্রাণ চির কাঙ্গালিনী ।

২

কি দিলে পৃথিব বল নাহি হো বন হে,

বাঙ্গালি হৃদয়ে,

লেখী প্রস্তুত যাহা, অবাধে বলিব তাহা,

প্রেম ভক্তি সব এই "বাঙ্গালি হৃদয়ে" ।

৩

বাজাও ভারতবাসি । বিজয় বাজনা হে,

সবে য ব যবে,

তোমাদের প্রাণ ধন, কবিত্তেছে আগমন,

গাও যশো গায় তাঁর স্থলনিত স্বরে ।

৪

জয় জয় জয় রবে কাঁপাও বেদি গী হে,

বীপুক ভারত ।

ভাবিব তরঙ্গ তুমি, জয় জয় এই বুলি,

উঠুক আকাশ গাও উঠুক সদত ।

৫

বললে তুমি গো দেবী বিশ্ব বিমোহিনী,

যাত দেও পদাশ্রয়,

এ দাম তোমার বনে, দিবে যুববাজ বনে,

বাঙ্গালি হৃদয়ে যাহা হইল উদয় ।

৬

মোরাব ভারত পব অমূল্য বসন গো,

যুববাজ তরে,

আলোক আলোকায়, ভারতের দিকচয়,

কিবা অণকণ হেরি প্রফুল্ল অন্তরে ।

৭

যুবরাজ জননীরে হের একবার হে ।

করণা গমনে,

ভারতের যাহা ছিল, তব পদে বলি দিল,

তবু যা পূরিল আশা ভাবে মনে মনে ।

৮

"কোথা আর্ধ্য হৃতগণ কোথায় এখন হে,

ভারত রতন,

ভারতের শিরামনি, অনন্ত রত্নের ধনি,

কোথা কালিদাস আদি আর্ধ্য হৃদীগণ ।"

৯

কোথা ভারতমতী দেবী বিদ্যা বিনাদিনী গো,  
বিদ্যার সাগর,

তোমাদের যুবরাজ, এশো ভাবতে আশ,  
হেরিতে প্রাচীন কীর্তি বিদ্যা নানোহব।”

১০

বাঞ্ছিত বিদ্যয় ভেদী বাঞ্ছিত এবাব হে,  
ভারত কন্দবে,

বাঞ্ছিত প্রতি ঘবে ঘরে, বাঞ্ছিত কি মধুব হবে,  
গোশন বাশরী আশা ভূধর শিখবে।

গগনাজ তুলি শীর গগন উপরে হে,  
করে জয় ধনি,

গগনে উঠিল রব, দেবতা গাব সব  
আইল ধাইয়ে তাবা সেই বব শুনি।

১২

পুষ্টি ভারত আজ কি মধুব হবে হে,  
স্ববর স্বন্দর,

সাগর সঙ্গমে উঠে, আশি চৌদিকে ছুটে,  
আনন্দ লহরী পূর্ণ ভাবত অন্তর।

১৩

বিদ্যয় নিশা তুলে ভারত গাচিছে হে,  
হরষিত মন,

ভারতের সখ শশী পচিণ আকাশে বসি,  
চুমিছে সবারে তাব বিদল কিরণে।

১৪

ছি ছি ছি ভাবতবাসি বাদিও না আররে,  
হহাবের তলে,

তোমাদের যুবরাজ, এশো ভারত মাক,  
ছ প ত্যদি উঠ শাও স্থলনিত বরে।

১৫

ভাবত মহিলা আজ হবে গরে ঘবে,

গাও স্থলনিত ববে,

মহাবের কথা ভোল, হৃদয়ের ছাব খোল,  
শ্রেণ ভক্তি উপহাব দেও নৃপবরে।

১৬

ভারতের ছ প নিশা অন্তর্নিত হলো রে,  
সৌভাগ্য উদয়,

আর কি ভাবনা বল, ভাবত পবিত্র হল,  
আনন্দ উৎসবে মাতে ভারত অংশল।

১৭

ওই দেখ, পালে পাশে পদপাল সাং বে,  
যত রাজগণ,

হেরিতে ভারতের, সজ্জিত তুরঙ্গ গরে,  
অপূর্ণ মাতঙ্গ চড়ি করিছে গমন।

১৮

ওই দেব, কত শত ত্রিংশ সোণী রে,  
সাজ বৃত্তহলে,

বিচিত্র সমব সাজে, বিচিত্র সোণী মাঝে,  
দাঁড়াইয়ে অর্থক্রক লয়ে দল বলে।

১৯

গভীর বিনাদে উঠে জয় জয় ধনি বে,  
আবাশ ভেদিয়া,

অশীব রব প্রায়, যুবরাজ বর্ণে যায়,  
আনন্দ লহরী হৃদে উঠে উৎসিয়া।

২০

সোণার ভারত আজি কি আনন্দ হলো বে,  
ভাবে মনে মনে,

এ হো স্থণের গর, গাহি বিশ্ব চরাচর,  
একি হেরি সব স্বর্ঘ্য উদ্ভিত গগনে।

২১

‘জয় ভাবতের জয়’ শুনি চারি দিকে রে,  
বাঁপিল ভারত,

প্রত্যক্ষ হৃদয়ে বাঞ্ছিত, প্রত্যেক হৃদয় মাঝে,



অপূর্ক ভাবের স্রোত বহে নদী মত ।

২২

সে নব দক্ষিণ পূর্কে পচিগ উত্তরে রে,  
উঠে নিনাদিয়া,  
বন উপবন যত, স্তম্ভ বিস্তাবে কত,  
চৌদিকে বৃহৎ চয় উঠে প্রক্ষুটয়া ।

২৩

হিমাশয় শৈল হতে কুমারি\* অবনি রে,  
যত জ্ঞাপদ,  
আনন্দ উৎসবে ভরা, যুববাজ তব ধরা,  
পরেছ বিচিত্র নাজ জিনি কোবাদ ।

২৪

কি অপূর্ক শোভা হেবি ভারত ভিতরে বে,  
নয়ন গোহা,  
পূর্ণশশী যো আজ, উদ্ভিত ভারত নাথ,  
আহা কি স্বন্দর স্বেবে পুনকিত মন ।

২৫

কিছ বে ভারতবাসি কাহার রমণী,  
ওই গহন কাবনে,

আলু গানু কেশ পাশ, ভূমেলোটায়েছে বা  
উদাস উদাস, হাসি তাহিক বদনে ।

২৬

গাতিশ ভারতবাসী আনন্দ উৎসবে রে,  
গাতিল যথা,

বেন এ নিবিড় বনে, বসে ওই একাসনে,  
কি লাগি হয়েছে আজ বিরম বদন ।

২৭

জান্যা ভারতবাসি তোমাদের প্রাণ বে,  
ভাষত জননী

স্মরি পূর্ক বাজ গণে, স্মবি স্বাধীনতা ধনে,  
বিষম বদনে হায় বসে এবাকি গী ।

\* কুমারি Cape Comorin

২৮

স্মরিয়ে ভাবত ভাগ্য বিবাদিত হয়ে রে,  
ভাবে গনে গনে,  
'কোণা স্ময়া গণনাগ, চন্দ্র আদি দিব্গাল,  
বোখা সে বীন্দ্র, কোণা স্বাধীনতা ধনে ।'

২৯

"চির বিজা ত্যজি হায় উঠ একবাব হে,  
উঠ নিনাদিয়া,  
ওই দেখ দিব্গয়, সৌভে সৌভগয়,  
আনন্দ পূর্ণিত স্রোত উঠে উছলিয়া ।"

৩০

কি হবে ভারত গাতা বসিয়ে বিবলে গো,  
বিবাদিত মনে,  
এসগো মা কুতুহলে আনন্দ গাতি সব ল  
ভক্তি উপহার দিষ্টানুপেবি চরণে ।

৩১

যা কপালে ছিল গাত হয়েছে গাবলি গো  
পড়েছে ভারত,  
পড়িল ভারত আজ, রশা কর যুবরাজ ।  
তোমার চরণে মাতা হলো পদাঘত ।

৩২

'যুববাজ জগীবে ত্যজ গা মিত্তি গো,  
কবি ও চরণে,  
শোবেতে কাঁচরা হায়, অতি জীর্ণ শীর্ণ কাগ,  
ভবগা আছে হে দিবে স্থা ও চরণে ॥

শ্রীকদার গা। বহু

হবিগাতি স্থা, ৫৭ শিশক ।

—•—

যুববাজ ।

আজি কি আনন্দ ভারত ভবনে ।  
গাচিছে সবলে পুশদিত মনে ।

রাজ্য পরশা কবিবাব তরে ।  
 কেহ ঘবে ঘাবে, গবে প্রান্তবে ।  
 স্বদেশী বিদেশী, পাঠায় ঘব ।  
 বত যে চলেছে কে করে গণ ।  
 দীপালোকে পূর্ণ বারাগণী পুরী ।  
 কি শোভা হয়েছে গরি সব গরি ।  
 ঘোড়া গাড়ি সব কাতানে বাতায় ।  
 চলিতেছে বত স, যা নাহি তাব ।  
 গানবিধ স্বরে বাজিছে বাজা ।  
 আহা । কি গুর শ্রবণ রজা ।  
 "জয় ই শওর জয় জয় জয়"  
 এই শব্দ তিন স্তা নাহি যায় ।  
 ভক্তি মা ॥ মালা করিয়া রচা ।  
 দেয় ব্রজ গল আর্ঘ্য স্তম্ভগণ ।  
 অববোধ থাকি ফুল বধু গণ ।  
 বাজোদ্দেশে দর গঙ্গলাচরণ ।  
 যে ভারত ছিল অরুবার ময় ।  
 স্থগ রবি এবে হইল উদয় ।  
 এত দিবে মুক্তি ভিত্তৌবিয়া গণে ।  
 পড়িয়াছে যত ভাবত সম্ভানে ।  
 পাঠায়েন ঢাট আগা কুমাৰ ।  
 ভারত দুর্গতি দেবাব তবে ।  
 কি দেখিবে ত্রাত । কি আছে এ ।  
 হয়েছে সকল নিষ্ঠুর যণ ।  
 আর্ঘ্য ফুল লক্ষ্মী গিরাছে ছাড়া ।  
 স্থান মাজ সব রমেছে পড়িয়া ।  
 বন্ধাকর সা ছিল যে ভাবত ।  
 অযায় লুণ্ঠনে হইয়াছে হত ।  
 তবুও যা ছিল করিয়াছে স্ময় ।  
 দুর্ভিক্ষ ভীষণ, আব নারিতয় ।  
 ধন গাণ বশ গিয়াছে সকল ।  
 ভারত চরণে পরেছে শূন্য ।

মরিলে হৃদয় যায় বিদরিয়ে ।  
 রয়েছে সকল উপকথা হয়ে ।  
 কি হবে বলিয়া বলি নাক তাই ।  
 তব হৃদে ব্যথা দিয়ে কাজ গাই ।  
 জাম ড খিী ভারত কাশিণী ।  
 গেল চিা কাল হয়ে পরাধীণী ।  
 মনের গতা বিদ্যা আলোচনা ।  
 পারে গা করিতে কুল বালাগণ ।  
 যদি ভাণ্যবনে এসেছে স্মার,  
 বরে যাও দেশে স্মৃষ্টি প্রচার ।  
 ভারতের যাতে হয় গো উত্তি,  
 কা এই কাজ রাজ মহাশি ।

১

সুবাজ মুখ কবিয়া দর্শা,  
 গিটাইব যত মোরি আশ ।  
 সব হু থ কথা বলিব পুলিয়া  
 আগের বসিয়া জাতার পাশ ।

২

এই আশা সদা করিয়া গাণ  
 ধৈর্য ধরিয়া ছিলাম মবে ।  
 আইলে কুমার জাগিব সকল,  
 অবশ্য বাস্যা পূরণ হবে ।

৩

মনের বাস্যা মতোই রহিল,  
 বার দোষ দিব ৭ বিধি বিড়ম্বা ।  
 অজ্ঞতা বসত হৃদয় বেদা  
 হইয়া বহিল বোবার স্বপন ।

৪

ভ্রমিগণ হু থ গা তনি শ্রবনে,  
 অন্য চলিলে নিজ বিবেকতনে ।  
 এই বি উচিত জাতার কাজ ?  
 স্ত রে । ভোগে ভারত শব্দা

দেখিলে না চক্ষে ভারত রাজ ।

৫

তব সমীপেতে শিক্ষা অবসার,  
শ্রীশিক্ষা প্রচুর কর গো দা।  
পিঙ্গব বাসিনি বিহগীব গত,  
পাকিতে পাবিনে বেবল প্রাণ ।

৬

কি পোবে করিল ভারত বানী  
ভাবিয়া সুজিয়া পাটনে গাে।  
বলিও মায়েরে ওচ্রে যুবরাজ,  
হয় নাকি য়েহ এ কঠাগাে।

কোৱ ভারত মহিলা ।

যুবরাজ আসিবেন শুনিয়া ভাব  
তের উক্তি ।

১

উন্নত চরণে ভাসি, ছাড়াও কিবণ রাশি,  
মম স্বপ্নে সুখী হয়ে আজ দিৱমণি ।  
সুৱতি মাঝিয়া গায়, বহু হে গলয় রায়,  
উন্নতি সবসি হুদে হাঁস সবেজিনী ॥  
বতনে ভারত বানী, সান্নাও ফুলের ডাশা,  
উৎসবে গাতিয়া সবে দাও হলুধশি ।  
বড় শুভদিন আজ, আসিছেন যুবরাজ,  
শতবনে আজ মম পোহাল রজনী ॥

২

চৌদিকে মঙ্গল বাণ্য বাছুর সঘনে ।  
যত দিগাপ্রাণ গণ, হয়ে প্রফুল্লিত মন,  
সাজাও সুন্দর অঙ্গ বদন ভূষণে ॥  
ধরহ বরণ ডালা, কেহ লহ হুঁ মালী,  
বরহ স্বরায় গিয়ে তাঁরে সযতনে ।  
বড় শুভদিন আজ, আসিছেন যুবরাজ,

কৃপা ববি অদীনে হেরিতে নয়নে ॥

৩

অঙ্গ বঙ্গ শলিঙ্গের কবিচূড়া গণ ।  
ললিত মধুর ঢানে, ভাবী ভূপ শুণ্গানে,  
যথাসাধ্য কব তাঁর চিত্ত বিদোদন ॥  
বিদ্যায় চাঁচব বেশ ধরিয়া মোহিনী বেশ,  
তোষিনাবে পূজ্যপদ অদীনের মন ।  
যে আছ তাঁরকী বশে, গাচ সবে রস রশে,  
বিদ্যাতে কব তাঁর চিত্ত বিদোদন ॥  
বড় শুভদিন আজ আসিছেন যুবরাজ,  
দীনা হীনা অদীনে দিতে দরশন ॥  
শ্রীরাধিকা প্রসাদ চট্টোপাধ্যায় ।

উপহার ।

এস বঙ্গ বাসী গণ, এস বঙ্গ বাসী গণ ।  
সবলে কবিরে ভাবী বাজাৎ দর্শন ॥  
ছাডহে গলি বেশ, ছাডহে গলি বেশ ।  
তাঁহাকে জানাও সঙ্গ স্বদেশের রেশ ॥  
যাহা কিছু আছে য়ার,  
যাহা কিছু আছে য়ার ।  
সবলে গিলিয়া তাঁকে দেও উপহার ॥  
মোমা বাঙ্গালি হুর্লণ,  
গোঁরা বাঙ্গালি হুর্লণ ।  
কিবা দিব উপহার বিহীন সফল ॥  
বাজতক্তি উপহার, রাজতক্তি উপহার ।  
তাহা দিয়ে কবি সবে অভ্যর্থনা তাঁর ॥  
তিনি প্রসাদ বৎসল, তিনি প্রজা বৎসল ।  
দয়া করিবেন, সবে দেখিয়া হুর্লণ ॥  
তাঁর বদন কমল, তাঁর বদন কমল ।  
দেখিয়া সবলে কবি জীবন সফল ॥  
হয়ে ভক্তি মুগ্ধচিত্ত, হয়ে ভক্তি মুগ্ধচিত্ত ।

তাঁহার সবচেয়ে সবে এই উল্লীত ॥  
 তাঁর হেরিতে বদা, তাঁর হেরিতে বদা ।  
 উছনিছে আশামিদ্ধ স্বনয়ে মদন ॥  
 তাঁরে করি নিরীক্ষণ, তাঁরে করি নিরীক্ষণ ।  
 আনলে মাতিয়া তাগে নাচ বজ্রাণ ॥  
 দয়ানীল তাঁর মা, দয়ানীল তাঁর মা ।  
 দয়ানীল করে সর্বা সর্কিত জাণ ॥  
 সবে তাঁহার দয়ায়, সবে তাঁহার দয়ায় ।  
 কত স্বব ভোগ করি এই বহুধার ॥  
 দেখ ভাঙ্গাত ছুর্দন, দেখ ভাঙ্গাত ছুর্দন ।  
 যলে বাড়ি লতে পারে সকলেব ধা ॥

বিস্ত তাঁহার যতনে, বিস্ত তাঁহার যতনে ।  
 সকলে রহিছে সধা কোণা শায়ণে ।  
 গত চর্ভিক দুর্গতি, গত চর্ভিক দুর্গতি ।  
 তাঁহার কৃপায় সবে পেয়েছি মুক্তি ॥  
 পূর্নতন আকিঞ্চন, পূর্নতন, আকিঞ্চন  
 বহুদিন পরে তাহা হইল পূরণ ॥  
 হেরি ছু ধীর অন্তর, হেরি ছু ধীর অন্তর ।  
 অতুল আনন্দ লয়ে যাবে ধীর ঘর ॥  
 অধীনের আশিঞ্চা, অধীনের আকিঞ্চন ।  
 বদেব দারিদ্ৰ বিনী স্বরেন মোচা ॥

### যুবরাজ শ্রিন্দ্র অব ওয়েন্সেব শুভাগমন উপলক্ষে ।

১  
 কপাল ফিরেছে,—এস এা উঠি,  
 ভারত শাকাশে নবী রবি ।  
 দোষাব বরণে উষারে সাভায়ে,  
 উঠ দেব, দেখি মোহা ছবি ।  
 ২  
 যে রূপ পরিণে অযুত কিরণে,  
 উঠেছিলে তুমি সবসু তীরে,  
 সেই রূপে আজ উঠ উঠ, হেরি,  
 স্মরি সবে রাম রুবর বীরে ।  
 ৩  
 রুবুর মাই,—হাই কি সে তেজ ?  
 গিয়াছে বশে কি আসিবে না আর ?  
 আপ জ্যোতি লয়ে কি করিবে দেশ ?  
 পূর্ব রূপে এস ভারত আঁধারে ।  
 ৪  
 শিখরে সাগরে গহনে কাঁনে,  
 জলে হলে বদ্র জীবা সফার,  
 রুবু শির ভূষা কোথা সে বিরণ ?

সব লয়ে এস—ভারত আঁধার !  
 ৫  
 হাও কি তপা । সে তপা তুমি ?  
 বহুবা তোমার কোথা সে কিরণ ?  
 উঠেছে মগণে তথাপি কো যে,  
 আঁধারে রয়েছে ভারত ভবন ?  
 ৬  
 রয়েছে ভারত আঁধারে পড়িয়ে,  
 তোজোময় । তাহে যদি দেখা দাও,  
 থাকিতে কিরণ আঁধারে ফেলিয়া,  
 কোন প্রা । পূব কোথায় লুকাও ?  
 ৭  
 এস এা এস বসো নীলাকুশে,  
 তোমারে হেরিয়া উঁচু মুখে চাই,  
 গৌরবের সাক্ষী শ্রাচীন ভারতে,  
 তুমি বিা, দেব, আর বেহ নাই ।  
 ৮  
 ভারতের ধা ভারতে এল না,  
 যাবে না এ ফোভ চির দিন, তাই,

সাধিয়ে সাধিয়ে বিধাদে ডাবিয়ে,  
অল্পখে কান তো কাটাতে গাই।

৯

প্রজাগত প্রাণ, প্রভাবে ছাড়িয়ে,  
কভু কি কোথাও থাকিতে পারে ?  
নৃত্য নীশায় ভারতে তাবিত্তে,  
আবার শ্রীরাম আনিত্তে পারে।

১০

এবে মে ভবগা দূর দেশে রাখি,  
সাগর সঙ্গমে দেখে যা চেয়ে।—  
ভারত নরেশ কুমারে লইয়া,  
আসিছে তরঙ্গী উল্লাসে ধেয়ে।

১১

উঠ উঠ উঠ শীতের তপন।  
শবৎ শশী রে। উঠ আকাশে।  
বৃষ্ণ বৃষ্ণ বহু মলয় সমীর,  
বসন্ত কুম্বা অনিয় বাসে।

১২

অবি শশবর। দিবেশ মগল।  
রাব অরুবোধ ধরিয়ে বিকাব।—  
তোমবা তো পাবে যথা কালে কাল,  
মে বালে এখানে ববে যা কুম্বার।

১৩

বসন্ত বিটপে বাসন্তী কুম্বা,  
হবয়ে বিকাশে কুম্বাবে হেব,  
অকাল বেটনা বেবিয়া আমোদে,  
হাসিয়া মলয় অনীল ফেব।

১৪

অথবা আকাশে একদা উজ্জলি,  
রবি, শশী, তারা, স্থির ভাবে রও।  
অনীল সঙ্গমে গিলিগী বসিয়া,

কুম্বিদী নবো হেনে বখা কও।

১৫

শীতল সগীবে হেলিয়া ছলিয়া  
শ্যাংল প্রান্তর সোয়ার সাজে,  
বিবিধ গতিতে পাবা উড়াইয়া,  
ছুলাবে বিহগ, ভারত বাজে।

১৬

বিপীনে বিটপী চাদেব কিরণে,  
গেগে মালা, হিম হিবাং ফলে,  
পাব যদি, ভারে সজতবে লয়ে,  
দাও উপহার কুম্বাবের গলে।

১৭

বৈশাখ শব্দে হৃদয়ে ধরিয়া,  
যবে ভাগীরথী ধীরে ধীরে যাব,  
ঝাকে ঝাকে পাবী তীরেতে বসিয়া,  
গাইও হবিষে বিবিধ গাব।

১৮

প্রকৃতি সুন্দরি। ভারতে তোমাব,  
মোহিনী মূবতি, অনিয়া কানে,  
অনন্ত সলীলা সাগর বাহিয়া,  
আসিছে কুম্বাব বস্পীয় যানে।

১৯

যা আসিত্তে এবে, ছাড়ি দীং বেশ  
ববীন বগন ভূষণ পব,  
আসিলে লুকায়ে নয়নের জল,  
হুদিন হরব দরশন ধব।

২০

কৈদনা কৈদনা,—বদি পুং পুং,  
বখা গুন, দাও দীং বেশ ফেলে,  
যোদ্য তোমাব বপালেব লেখা  
বাদিও আবার কুম্বার গেলে।

২১

অহুলা গুণে অপরূপ রূপে,  
মোহিয়াছে যদি সকল ভুবন,  
এবে যুবরাজে দিও না বাইতে,  
রাধ নিয়ে তাঁরে বাজার আসন।

২২

যুবরাজ তুমি আসিছ ভারতে,  
এস, হাথ ধবে ঢুলিয়া লই,  
বহু দিন পরে, আজ জাতুবরে,  
মতের বারতা খুলিয়া কই।—

২৩

মনে বলে,—ঐ সুনীল আকাশে,  
ধরি যদি থাকে তপন শশী,  
গড়ি তাব নীচে সোনার আসন,  
ফেরি, তরুণরি যুবরাজ বাসি।

২৪

মনে বলে,—এবে বাংলার বিপাকে,  
ছুরে সাগরে ডুবিয়া যাই,  
চন্দ্র স্বর্গ দেবে সহায় করিয়া,  
যতে, রাজ পানে, মাথা তুলে চাই।

২৫

তবায় আপন ভাগ্য ঘোষে যদি,  
আশা করে শেষে বিরাশ হই,  
অসীম বোঝনে অন্তরীকে চেয়ে,  
“অহুলা ঘোষাতি” রে বেদনা কই।

২৬

সব আশা মিছা সকলই পূর্ণ,  
এস যুবরাজ আপনার ঘরে;  
পথে ঘাটে ঘারে দিতলে দ্রিতলে,  
তালোকে পূণক হোমার তরে।

২৭

কলিকাতা আদি প্রসিদ্ধ গগনী,  
হেরিবে তোমারে হবধিত মনে,  
পল্লী স্থান যদি দেখিবে না তুমি,  
হুখে, ধরি ছবি, দেখ দরপণে —

২৮

ঐ দেখ ঘোর জঙ্গলের মাঝে,  
পাতার কুটীরে মলিন বাস,  
নিশ্চল নয়নে জল ধাবা চেবি,  
কতই বিষাদে ছাডিছে খাস।

২৯

ভাঙ্গা ঘরে ঐ কাঁদিছে ছেলেটা,  
কান্দানী মায়ের আঁচল ধরি,  
ফোটে ফোটে ফোটে পড়িছে মায়ের,  
বুক ফাটা ছল যখন ঝবি।

৩০

ঐ দেখ কেবা কাবে বা মারিছে,  
কার বা উঠিছে শিকল পায়।  
পথ ভুলি দেখ নয়ন বিহীন  
দস্যুর হাতে জীবন হারায়।

৩১

ঐ যে কাননে স্বভাব স্বন্দর,  
বা হুল, নীল নয়ন মেলি।  
নিদ্রয় পূরষ ভীষণ বিচারে,  
জনস্ত আশুখে দিতেছে ফেলি।

৩২

ও দিকে, কুমার। তা, দেখ চেয়ে—  
প্রণয় পুতনী বাসলা ঘরে,  
সখিরে ডাকিরে অমির বচনে,  
কি ভাবে কতই আলাপ করে।—

৩৩

“আসিলে এখানে যুবরাজ ভাই,

যশের ছয়াবে দিতাণ বাটা,  
ভ্রাতৃ দ্বিতীয়া পর্বত সুদিনে,  
দিতাম লনাটে ভাইয়ের ফোটা।”

৩৪

আবার দেখা কাহারে দেখেবা,  
সহসা আলাপ ভাসিয়া দিল,  
লাজের আভাবে অপক্লম ছবি,  
ঘোটা টানিয়া ঢাকিয়া দিল।

৩৫

মন কথা এক কহি যুবরাজ।—  
বিদেশী নিবধি হেন নবো লয়,  
আমাদের যা যা দেখি যেমন,  
তোনাদের মন তেমন নয়।

৩৬

তাঁই আশা, শুভ অভিব্যেক দিলে,  
বগায়ে ভোগারে বেদির উপবি,  
“ম-ব-ল” মন্ত্র উচ্চারণে,  
ভারত পথাণ প্রতিষ্ঠা করি।

৩৭

সে আশা ছয়াশা।—এস যুবরাজ।  
ভগিনী সকল পড়িছে পায়,  
তাঁহাদের গতি দেখিয়া বাণে,  
হৃদয়ে ভারত অধিপাতে যায়।

৩৮

যে মনে সেই সাগরের পারে,  
ভ্রাতৃ বিকর পাতে চাপে,  
আমাদের পানে সেই ভাবে চেয়ে,  
তেননি মস্তা বিচাৰ দাও।

৩৯

সত্যাবে দেব, সুবিচাবে দাও,  
দেখিবে কি ভাবে আদেশ পালি,  
সরল সাধুতা ধরু উড়াইয়া

“বোকলের” লেখা আগুণে জালি।

৪০

ভারতের শিবে দেব দেব তুনি,  
তাই এ কাননা প্রথম নাথে—  
অবিচারে যবে জ্বল নয়ে যাই,  
বাঁচাও সবাবে ছুতের হাতে।

৪১

শীতল প্রদেশে সাগরের পাতে,  
সুবা সেবি যদি উপকাব পাও,  
গরমে আশা গরি তার তাপে,  
তাহারে এবার সাপে লবে যাও।

৪২

যুবরাজ। ভ্রাত। শুভ কালে যদি,  
হু পিনী ভারতে দিলে দুবশা,  
সেবা বাহাবে,—কবক হববে,  
বা পত্র পানী বা বিচরণ,

৪৩

কি করে খাপা?—ভারত ভবনে,  
অমূল্য রতনে হরিছে যে কাল,  
এটা যদিবা গাশিলে, কুমাৰ।  
স্বপ্ন রহিবে আশ্রয় কাল।

৪৪

কত উঠে মনে। কহিব না আবা।  
কহিতে সবে না সকল কথা।  
যবে যাঁহা চাই—দাও বা না দাও—  
শুনিও,—দিওনা মরণে ব্যথা।

৪৫

ভারতের দিন ছিল এক দ্বি,  
পুণ্ডিত যে দ্বি সকল কান—  
ইহ যুবলাভ ছিল য। শুধা,  
পর হু। তবে বারান্দী ধা।

৪৬

হায় নাহুতুমি । সে দিন তোমার,  
 দিবে কি কথা আসিবে না আর ?  
 টিঠিবে না আব, ভীষণ নাগরে,  
 কপালের দোষে ডুবি একবার ?

৪৭

কাটিছে জানী, কাঁদিছে বমণী,  
 হাসিছে কুমাৰ তোমার ভয়ে ।  
 অহো কি মাধুরী । বিদেশীর হাসি ।  
 আমাদেরি কেব নয় আরে ?

৪৮

অনন্ত রতা প্রকৃতি ভারত,  
 স্বদেশ আমার মনোরম স্তা ।  
 নিরাপদে আছে । তথাপি বিবলে  
 অরণে, কেন যে কাঁদে মা প্রাণ ।

৪৯

গিরীশ শিখরে মহীরুহ শিবে  
 বিরলে বিনয়ে পাখী করে গান  
 সানাহু সনীরে কালে পশি ডাই  
 কি বলে ?—কেব যে কাঁদে না প্রাণ ।

৫০

গভীর নিশীথে নিরজ্ঞা দেশে,  
 জাহ্নবী যথা কুলু কুলু যান  
 অদূরে বাশরী মনমোহী ভাণে,  
 কি বলে ?—কেব যে কাঁদে মা প্রাণ ।

৫১

কাঁদে না পরাণ কাঁহাব কাবণে ?  
 কিছুই দেখি না—চাবি দিকে চাই  
 সকলই তো আছে । তবু মনে লব  
 কি ধো ছিল না তা যেন গাই ।

৫২

যবে এস মনে বহুধা রত্না ।

দেহ ছেড়ে প্রাণ যেন উড়ে যায়,  
 আধার প্রদেশে । তবু কানে শুনি,  
 বে যেন কাঁদিয়া বিনাইয়া গায় —

৫৩

“সোমাব প্রতিমা করিয়া ভারতে,  
 কেব, রে বিবাত । পাঠালে ছুববে ?  
 সাধ কবে যদি মোহিনী সাজালে,  
 কোন প্রাণে তাতে দিলে হতাশনে ?

৫৪

“সাধ করে যদি মোহিনী সাজালে,  
 কোন প্রাণে তাতে দিলে হতাশনে ?  
 জনিলাম—তাব সাথে কাঁদিতাম  
 আশামধী গীতি পশিল কাণে

৫৫

“প্রিয় ভ্রমভূমি । কেঁদে না কেঁদে না ।  
 এবার পেয়েছি আশালতা বনে ।  
 শুনেছি বলনে নবলল দিয়ে,  
 সাজাবে তাহাবে কুলু ভূষণে ।

৫৬

যুববাহু । আজ এই শুভদিনে,  
 কহিয়া সকল ছু থের কথা,—  
 হুদিং দেখিয়া যদি চলে যাবে—  
 দিবনা তোমার পবনে ব্যথা ।

৫৭

এসেছিল যবে সারদীয়া দেবী,  
 কুমাৰ । তোমাবে দেখিবে বশে,  
 চাবিদিগা থেকে না দেবে না দেবে,  
 ছুবেছে বিবানে সাগর ভাণ ।

৫৮

সহসা এখানে বিদেশী আসিলে  
 তখন পবন শরীর দহে,



ছাণিয়া তোমার শুভ আগমন,  
ভারতে শীতল অনীল বহে ।

৫৯

বাকদ খেলায় নানারূপ ফুল,  
আধারে যেমন লুকিয়ে বয়,  
নানা আভরণে তেমনি ভারতে,  
অদৃশ্য রয়েছে কুসুমচয় ।

৬০

এস যুবরাজ । ঐ হাতে লয়ে,  
৩৬ স্নানার্শন আগুণ দাও,  
পুন কালীদাস, পুন ভবভূতি,  
ভাবত ভবনে রাণিয়া যাও ।

৬১

যাও যদি ভূমি পিতাস্তম্ভে যাবে,  
অন্তমিত ববি যেওনা ভুলে,  
কি দেখিতে এলে কিবা দেখে গেষে,  
স্নেহময়ী গায়ে কহিও খুলে ।

৬২

শেষ অল্পরোধ, কহি যুবরাজ ।  
শুভেছি আমরা কালেক বাছে,

ভারত বমলা ভারত ছাড়িয়া,  
নাগর পারেতে লুকিয়া আছে ।-

৬৩

খুঁজিও তাঁহারে পথে পথে পথে,  
দেখিলে বোখাও হাত ধরে বলো  
“ভারত বাসীরা খুঁজিয়ে খুঁজিয়ে,  
গা পেয়ে বাঁদিয়ে শুকিয়ে মল ।”

৬৪

“ধন মান লয়ে এসেছ বমলে ।  
ভুলেনি ভারত ও রাঙ্গা পায় ।  
মনোরমা রমা গড়িয়া কমলে,  
শতদল দলে পুঁজিছে তায় ।”

৬৫

পুণ্য শ্লোক বল মানসে রয়েছে,  
যুধিষ্ঠির দেবে প্রভাতে সবি,  
বাথ কীর্তি হেথা, অগ্নি যুবরাজ ।  
রাধিব হৃদয়ে যতনে ধরি ।

ঐঐঐঐঐ চৌধুরী,

ভাবেঙ্গা, পাবনা ।



## { 10 INDIA

The Prince is standing at thy head,  
'Thou weeping Indira, rise ,  
Thy bitter tears no more do shed,  
Noi groan with heavy sighs

Thy sobbings cease, thy wailings still,  
The Prince with joy receive ,  
Ict foreign steps thy blood not thrill,  
Thy morning heart aggrieve

It is the sympathizing foot,  
That treads upon thy breast ,  
The Prince with joy and reverence greet,  
They sons this day are blest

Retain thy tears , but let them be  
Of joy and not of grief ,  
Beside the Prince's pitying eye,  
'They shall be thy relief

Upon thy lap, with joyful tears,  
The Glorious Prince receive ,  
This day shall end thy piteous fears,  
Thy breast no more shall heave

The Sun is rising in the West,  
Ah, lo ! the golden glare ,  
The morning lark lo ! from her nest,  
Sons singing 'bove the air

Of happiness it is the dawn,  
That smiles with Western light ,  
How sweetly laughing golden dawn,  
Thy night hath winged to light

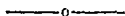
Now raise thy head ( in sorrow hid ! )  
The Royal Prince is come  
To warm thee in a happier shade,  
Beside the Ganges' hum

No more the Eastern Sun shall catch  
 Thy mild and gentle breast,  
 Benignant 'rosy-fingered' torch  
 shall light thee from the West

To wipe thy tear He's come so kind,  
 And soon will he thee leave  
 But he will leave for thee behind,  
 A happy eternal eve

Unveiled this day thy daughters' cov,  
 His anthem rise in glee,  
 Thy length and breadth is spangled with joy  
 The National Jubilee

A B C



Welcome on of our gracious Sovereign,  
 Behold the land of India our native realm  
 Poets have sung and warriors have sought  
 Its fabled riches that surpassed the wealth  
 Of every other country on the globe  
 The land which stood the stout blows of strangers  
 Attracted by her gold, for centuries  
 The Macedonian came with a mighty train  
 To whom victory seemed sure, to him  
 Upon her his potent hand, but her son  
 The brave Porus, before him stood to stem  
 The torrent of his pride and ambition  
 That rolled unheeded, unchecked, o'er Asus plains  
 And firm and strong, the torrent he withstood  
 Which unmolested lay out of our bounds,  
 Until at last some other way it found,  
 For India no match to Europe's skill  
 Was mandated and thus overthrown  
 There raged the battle whose doubtful issue  
 Insured both on to victory or death,

Until Jhelum's banks were strewn with the dead ,  
 Ah Courage that will ne'er be satisfied  
 Till crown'ed with the laurel or the Cypress !  
 The Greek felt the weight of our lusty blows,  
 And thought to conquer us was much for him ,  
 Thought that a fight with us was fight indeed ,  
 And victory with us was victory  
 Then came those of the Prophet wave after wave,  
 For plunder which this splendid land did give .  
 This mighty rock withstood those dashing waves  
 That came on furiously one by one,  
 Till it was undermined and it once more  
 Was left of her rich natural splendour  
 Then came one by one from the furthest end,  
 For lawful prize Europe's civilized sons ,  
 For our dear land's wealth was worth their labor  
 So many drew this land with whom we fought  
 And many hardships we endured from them ,  
 Such we and such the land that produced us  
 And drew to her so many from all parts  
 A land the cradle of philosophy  
 And sciences that modern nations boast of ,  
 Where lived great sovereigns of pure wisdom  
 And sants of intellect performing worthy acts  
 Discoveries, philosophers now boast  
 Of having found out were ours, long ago  
 In those primeval times in some fine arts,  
 Attuned we perfection, so that then,  
 We were a star and light to all around,  
 And now to modern nations a wonder  
 Who stood amazed that we did so much ,  
 Such then the matchless wisdom of our sires  
 Come Prince come and behold their progeny ,  
 We will greet thee with shouts and acclamations  
 Rising up so high as to tend the air,  
 And reach heaven's roof bursting from our hearts

Come to this land whose ten score millions of sons  
 Know well how to honor their queen's son, when  
 He deigns to be among their cheerful haunts ,  
 In whom you will find linked many virtues  
 Truthloving, gentle, and in manners simple  
 O'er whose whole frame pervade religious thoughts  
 And far and wide has spread the joyful news  
 Of thy arrival, and has sent to all  
 A thrill of joy, for hospitality  
 Is much delighted to display itself  
 And days, and months, and years will toll away,  
 But thy arrival, ne'er shall we forget  
 Years after to his grandchildren may tell  
 Some hoary head who saw thee in his land,  
 Of thy visit and all regarding thee  
 And the youngsters whose youthful fancies love  
 To range everywhere and know all things,  
 With beaming eyes and cheerful countenances,  
 Will gaze upon him with attentive joy  
 And sighed they lived not then to have beheld thee  
 Long may you live and your illustrious mother '   
 This is a wish of mine and of all India

T RAMA KRISHNA PILLAI

# V GANNAPATHY PILLAY,

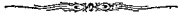
Mahavidvan,

MADRAS

- 1 பக்த ராசல மெனவொளிர் மகதர மமரும  
சக்த ராசல சக்ததொளிர் சக்தன தகனப  
பக்த ராசல பரவிடு மஹிஷிமுன பயக்த  
செக்த ராசல விளவர செனுமபெயாத திபலோய !
- 2 நாக முக்திடு நிறிழற சேகர நளினப  
போக முக்திடு புயகாதம பஞ்சலம புளாய  
சுக் முக்திடு கவகையே யமுனையே யலைசால  
வேக முக்திடு துறகபத திராசனம விரவும
- 3 மண்ட லம்புகழ வராசன சராசன சேஷ  
குண்ட லம்புளா யுவாமதி கோடுற ஷிரிசுக  
தண்ட லம்பெறு மிமாலய தராதர மிதுகாண்  
விண்ட லம்பெறு திரிதசா வீதினமே ஷுடரால
- 4 வீர வெணடுகிற கேதனந திசாமுகம விரவச  
11 ஶ்ரீ கிங்கவெஞ் சாபமே யெனலிவா தஞ்சுமு  
பூர பகையப பூதவி சினனபுகழ கவிஞ்சா  
வார பகைய மெனவமா உறகமே யிதுகாண்
- 5 அறக மேயிவ ருணமே யவகதியாக திரமே  
துறக மாதரு மிலாடமே கவிக்கமே தொஞ்சிரப  
புக மாதரு கிடதமே புலிந்தமே போடவ  
கவகமாசமா புரிதரு காசமே யிவைகாண்
- 6 வக்தவீரவெங் குருகிலே ! மஹிஷிவீன நெடுதத  
சக்த மராபுய யெனவன சரோருக முகனே !  
பக்த நானமறைப பராயணம புரிதரு பணவா  
இந்த வீதியோ தாக்ககிக ரிவொன வெணனே
- 7 முலலை வாணகை மடகதையா முகிழ முலைப போக்த  
சுலை நறகுக மெனவுரை சகாசன மெயதிப  
பலலை ஞானமாம பயோததி பநுநதவ ரிலாகாண்  
கலலை புநதிர வியஞ்செயக கவிசு ரிலாகாண்
- 8 மாஜு சேகர மலியனி வரனதிட மலிசோப  
பாஜு சேகர பனாமரு டப்பளி பணியும

வேறு சேகர வித்தகா வித்தமாய வினாவோன  
ராஜ சேகரன ராஜவொன பின்னவ னிவனே

- 9 புணனி யம்பெறு வேதமார புகமுமபா ரத்தது  
கண்ணு மங்கிலே யத்தனி நாயக ! நாககள  
கண்ணு வப்புற விருதயங களிப்புறக கணஞ்சான  
'மணனு வப்புற வழங்குநு வரிசைகொண டருளே
- 10 பார ஞனிய பயோத்திப பயோத்திப புகுசார  
மார ஞனியம புரிசிவன வாரணு சிவிலவாம  
தார ஞனிய வரிசசந்தார றகையிராமப்போப  
பாரஞரிய மியற்றிடு கிருஷ்ணபாக கவனே '
- 11 கவகை மாருல முத்திதிடு கவினறிகழ மேலாம  
செவகை யானாக னகமுக மலாததசோப பரிதி !  
றுவகை நீதியும துவலரு நீயுதுங குமும்  
சவகை வினறியெக காலமுந தழைத்ததுவா முகவே



T CHINNASAWMY PILLAY,  
Tamil Pundit  
Free Church Mission Institution  
MADRAS

வெண்பா

ஓவருபுகழ்பரினஸதுபவேலஸ உத்தமனேநினவதன  
மாங்கமலமேஷ மருட்டேனை யங்கமரும  
எவகனவிழியாமவண டினிதருந்தசசெயதவிதைக  
கனகனிந்த வந்தனரு செயவாம

ஆசிரியவிருத்தம்

- 1 சாமருவு கிரேடபரிட்ட னெனவேயாருரு  
செயிடு தண்டலே வி வாகவியேயமெனஹ  
போமருவு தடததுவும ஒப்பி சாததி  
பெழமரகிலிகடோரியா வொளசைகம  
கோமையொடு தாத பிரினல ருபவேலு முத்தம்  
கிகரி ிந்த தேசமதி மெவலாலே  
சாமருவு மதனி வர வினடுளளோதம்  
எழியவன மெனுஉருமுத்தமொத்தமாதே

- 2 குலநாயமை, பெண்பாதி குண்டாநேனமை  
 குலவுமணியாரசி விகடோரியாளாம்  
 இரகு பாதகடலதனில உருபீனலுபவேஸ  
 ஏறமயிாதமே யிலை? பெயதலாலித  
 கலமுளா துன்பமெனு மரணீககித  
 தாலிவ களிமேலி யிறமயார யாநா  
 நிலவுமெழிவரம பையு மாரதழகதாயி  
 சீவமுமகக விண்ணகரபோற பொலிநககனறே
- 3 கையறிவு வாயமைகொடை சரதமாதிக  
 கழறு சுருணகக றுருககொண்டாலன  
 இலகுசீ பரினஸ சூபவேலஸ எனனுக்கோவே  
 எழிலுது கறபகததரு வெனறுநாததே னீனீன  
 இயயெபபதிலகாயாந சினமருடபி  
 வெனறும வோ கொளவதிகை யாதலாலித  
 தலமிசை பைகருவெனன வேலா தெனறா  
 சாரறு மிடததகளுணமை யறிவிலாரே
- 4 பூதலசதி னுயிரகள ள்முதவா னெண்ணிப  
 புரிசது கைமமாறுசவாமற பொழிபு மேகம  
 ஆதவனில பொலிபரினலுபவேலஸ உனககொப  
 பறைவா பலா எம்போல வாரா மென்பாரோ  
 ஏதமில் செநதாமராயிந முகமலாததே  
 இனசொலலுடன சொானமழை பொழிஇறமுய நீ  
 பேதமுறத தெழித்தறபபிக கறுததுமேகம  
 பெருமிய நீமழைமைய பொழியுமணறே
- 5 உளமருவு இரேட பரிட்டன வாழி வ ழி  
 உணமைசெறி விகடோரியா ஆரசி வாழி  
 இாவரசாம பரினலுபவேலஸ வாழி வாழி  
 ஏறறுமலா புதநிர மிதநிரரும் வாழி  
 ஓரியமரும் பாலியமெண்டாரும் வாழி  
 ஓகருமிககிலே கவானமெனமெ வாழி  
 குளிர பொழி வகனிதை யீநது தேசம வாழி  
 கொற்றவா மறறவா யாவரும் வாழி வாழி



P JAGANADA PILLAY,

Tamil Munshi

F C Mission School,

CHINGLEPUT.

பிலஹரிஸ-ர வராவிறததிரியம

ப ல ல னி

ஆதிபதமே துதிசெய ஆலபாட பிரிளஸய வேலஸ அருரோ

ஸரகஸத ஸநதஸ- தஸ குகர ஸரஸநதஸ

அதுபலலனி,

ஜோததி மருடாநிபவிச டோரியாதரும ரூயவிகரும (ஆதி)

ஸரகஸ குகஸத தி ஸநத ஸகுகர

ச ர ன ம

|        |      |       |         |       |
|--------|------|-------|---------|-------|
| நினமணி | அனமா | நினகா | னனகீர   |       |
| கஸதர   | ஸஸஸ  | குகா  | ரரரி    |       |
| உனுமே  | வனகோ | கனகா  | வனிதநி, | (ஆதி) |
| ஸஸஸ    | குகா | ரஸஸ   | ரஸநத    |       |

2

தாலமெதகெகரும - புகழ - சாலவுககரும - மகி

ஸரக குகா-ரக ஸஸஸு ஸு தஸ

3

ழாவினரும - தலமைய - பலமும மலைவறு புவமும  
காமொடு நிலவுற (ஆதி)

ஸ-ஸஸஸ-ஸு - கரஸநி-நிதஸ - ஸஸஸ - கர தி - கஸகுக - ரஸரக

விநிநீக திரைரும தரு நிலை - மரிவையி னெருதனி புருஷனெல

ஸஸ ஸு ரர தி கஸகுகா-கஸகுக குகர ஸ ரகரஸ ஸு,

வருபதையும் - அருசி திருமொழியும் - அருவின! இருவென்ற  
 ல்லநகல - ல்லநகல - ல்லநகல - ல்லநகல - ல்லநகல, (ஆதி)

3

ஆதரமில் - கேதமியரை சேதனைசெயல போகாது ?

புகுநகல - புகுநகல புகுநகல புகுநகல

ஆதரமெனமை - யேதமையென - காதுவினருள வாநகல!

நல்லநகல - ல்லநகல - ல்லநகல - ல்லநகல

வதமகன மனனே ஒதுவியன பௌனனே தீதறநுனகலினனே,

நல்லநகல - ல்லநகல புகுநகல

உதவெனயாம - நிதமுனையே-பணிவொடு துதிபுரி குவமுயா

நல்லநகல - ல்லநகல - ல்லநகல - ல்லநகல, (ஆதி)

5

சீர புகையடு புஜமகதரா!

புகையடு புகையடு ல்லநகல

புகையடு முகசகதரா!

புகையடு ல்லநகல,

சீர பெருக வேபுரிய நலயகதரா

புகையடு புகையடு ல்லநகல

தீரமா - வரமே வருமா கரமுறு

நல்லநகல - ல்லநகல - ல்லநகல

கேதம - மிகும இநகல!

புகையடு ல்லநகல,

கோதரு பரபுகக . . . தயாக : முடைய போக!  
 டிப னி கஙதா... : காபநி ய ர - டி

ஆரவ தாககரனே! :

சாங்க ஸர ஸநி வ' . . . டி . . . டி . . .

வாமிரு காதரனே! - இளவரச! வருக (ஆச)

சாக னி வகவக கி . . . வகவக கி . . . ஸாங்க,

இறங்கிலீஷ்மெட்டு சுரத்தூடன்!

- ப வ வ வி . . .

படசமுடைய எமை எலம பாசி சாஸி கோலு மாவின (படச)

XX Xக Xக Xக ஸா ஸீ ஸ டிப ஸா ர கா ஸ  
 . . . . .

- அ த ப வ வ வி . . .

அடசய அரசரிமை மருவும் ஆலபாட எடவாட அரசனே (படச)

XX Xக Xக Xக ஸர X க க X க ஸ வஸி ஸா,  
 . . . . .

சாணம -

காச வேகத பக்தியும்

ஃ னீ ய ஸ்ரீ டி

திரு ிகான சுகதியும்

ஃ டி ய ஸ்ரீ டி

சோ தனமை யோதி சுருண தோய

ஃ வ வ க வக கி டி

நிகழும் விசய குடிசளாய (படச)

ஃ டி ஸநி னி ஸநி ஸா

N THAVAPPARUMALIAH,

Telugu Pundit

Free Church Mission,

MADRAS

సీ స ప ద్య ము

(1) విష్ణోరియాగర్భవిశ్వులా ధ్విహర్షతరంగసరతతులనుస్పాంగకున్నె |

విసుతిఁగాంచినకవిజనతతిచారిద్ర్య సంతకుసంజ్ఞెసమయకున్నె |

మిశ్రైరవములమిశ్ర సరోజిమూర్ ముదముచఘఃఖాసఁబాదలకున్నె

సద్భంధుకోటిలోచనచకోరకకదంఁములు దృక్తినిజెందిప్రబలకున్నె

తే నీ ప్రికాసుఆటవేల్పునాఁగనుచేరుగన్నె |

రాజచంద్రుండుబుధకపుర రకుణఁగొలువ |

నిజవినిర్మలకీర్తిచంద్రికలుదిశలఁ |

ఎరవఁజేసికన్నప్పనిర్వక్రలీల |

చంపకమాలావృక్షము

(2) అరయఁగరాజ్లిగర్భకునుసత్తిసరస్సునమాన్తినాశముం |

విరఁగజినంచెచానఁగడు భానిలుఁబ్రికాసపువేల్పువక్త్రా |

జురసముతేజువృద్ధువమందముగాఁగనుదేలపానాహ |

తొరసయినద్విశేషములుగ్రాలుచుఁ గ్రోలెమఁగాతిఁదృక్తిగఁ ||

తేటగీరవద్యము

(3) వరులకుపకారమొసరించు పట్టిసుఘుఁ |

నోల్పగావచ్చుఁబ్రికాసపువేల్పుతోచ |

జనమనోద్బృష్టలచేకల్పకౌలునట్టి |

గర్జితంబులు మెచ్చులు గలుగకున్న ||

ద్వీపక

(4) జయమునకొకటి  
జయమునకొకటి

జయమునకొకటి

జయమునకొకటి

జయమునకొకటి

జయమునకొకటి

జయమునకొకటి

జయమునకొకటి

జయమునకొకటి



# AN OFFERING OF FLOWERS .

## सुमनोऽञ्जलिः ।

श्रीमन्महाराजकुमार ड्यूक आथ अडिनवरा चरणकमले समर्पित

TO

HIS ROYAL HIGHNESS, THE DUKE OF EDIN-  
BURGH, K G, K T, G C M G, K G C S I

“ किमासन ते गरुडासनाय । किम्भूषणद्वैस्तुभूषणाय ॥  
लक्ष्मीकालत्राय किमस्ति देय । वागीश कि ते वचनायमस्ति ॥ ”

( निबन्धे )

BY

HARIS CHANDRA

जिसको हिन्दी भाषा के प्रेमी तथा रसिकजनों के मनोपिलास के लिये  
क्षत्रिय-पत्रिका सम्पादक श्री म० कु० बा० रामदीन सिंह ने  
प्रकाशित किया ।



पटना—“खड्गविलास” प्रेस—बांकीपुर ।

साहन प्रमाद सिंह ने मुद्रित किया ।

१८८८



# AN OFFERING OF FLOWERS .

## सुमनोऽञ्जलिः ।

श्रीममहाराजकुमार ड्यूक आफ एटिनबरा चरणकमले समर्पित

TO

HIS ROYAL HIGHNESS, THE DUKE OF EDINBURGH,  
K G, K I, G C M G, K G C S I

“ किमासनन्ते गरुडासनाय किम्भूषणङ्गोस्तुभूषणाय ॥  
लक्ष्मीकलत्राय किमस्ति देय वागीशक्तिन्ते वचनीयमस्ति ॥ ”

( निबन्धे )

BY

HARIS CHANDRA

पटना—‘खड्गविलास’ प्रेस— बाकीपुर

साहय प्रसाद सिंह ने मुद्रित किया ।

१८८८





## PREFACE

The short stay of H R H the Duke of Edinburgh at Benares prevented me from personally presenting him this " offering of flowers " on the occasion of his visit to this city. With the co operation of some of my esteemed friends, I convened a meeting at my house on the 20th January, and invited many respectable and learned Pundits and Gentlemen to attend it. The meeting was formally opened by me by reading the biography of the Royal Prince in Hindi, and in conclusion requesting the gentlemen present on the occasion, to adopt suitable measures for the address. The Pundits of the city expressed their great satisfaction, and read individually some Shlokas ( verses ) in Sanskrit expressing their heart felt joy on the advent of the Royal Prince to this city. The verses are entered systematically into this book. The meeting then broke. The gentlemen present on the occasion evinced great joy and loyalty to the Royal Prince for which, this small book containing the expressions of their sincere loyalty, is most respectfully dedicated to his Gracious feet.

BENARES  
10th March 1870

} HARIS CHUNDRA

Names of the gentlemen present on the occasion of the meeting held for presenting an address to H R H the Duke of Edinburgh

Professor Shri Bapu Deva Shastri, F R A S and Fellow,  
Calcutta University

Pandit Shri Raja Ram Shastri

„ „ Basati Ram

„ „ Govind Deva Shastri

„ „ Bal Shastri

„ „ Setai Prasad

„ „ Bechan Ram

„ „ Krishna Shastri

„ „ Dhundhi Raj Dharmadhikari

„ „ Ramapati Dube

„ „ Ram Krishna Shastri Patburdhan

Shri Shiva Ram Govind Rande

- „ Narayan Kavi
- „ Hanuman Kavi
- „ Hari Ram Bajrue

Rai Nur-anhar Das

- „ Jyoti Krishna Das
- „ Lakshmi Chandra
- „ Murari Das
- „ Valkrishna Das
- „ Radha Krishna Das

Babu Vishweshwar Das

- „ Madhava Das
- „ Madhusoodan Das
- „ Gokul Chandra
- „ Shyama Das
- „ Loke Nath Moitra

Munshi Sankata Prasad

Moulvi Ashraf Ali Khan

Babu Balgoyind

श्री ।

स्मरन्तं महामतिं निष्पत्तायानामुत्तमसर्वार्थपत्यसर्वमहादनीयर्गोया  
स्मरन्तं चक्रवृट्टामणिपरचन्द्रचन्द्रिकाद्वाडितपाठकुमुदाया अपूर्वविद्योद्योतखद्यो-  
स्मरन्तं ज्ञानमानसोदनकार्या श्री ६ गद्विजयिर्नादेव्या मततपरिशीलितविधिविद्या  
मयुक्तात्सुदग्गुणैर्योगोभमानोऽङ्गठनज्ञानदानिकरः मन्दनाधि-  
पनश्रमान् ड्यूकाभिप्राणोऽदनोऽदनयगिभानद्वयगिप्रासिनागदाकिनीतीर-  
वृत्तानाना मानमा ज्ञानन्टयिनुमिर श्रीविश्वेशपुरीमाजगाम । ततस्तदागमनसमुत्पा-  
जलदकन्दकदम्बाकृत्स्निमहो मयप्रो साहित्यमागमेन मया तत्तमहितशास्त्रप्रवी-  
णसमासादितविधिपरिष्कारममानितानेकार्यद्वज्जनसमाजविराजिता विधिगुणि  
गणनापितगाणितिक्रमोममाणा रगकृत्वेचिामदाचारप्रचारसपाडितथनप्राप्यनदान्य  
धन्यनिकममलटना सुमा ममागिता । तस्या च प्रथम परमप्राचीनसमीचीनसमय-  
सुविधेनेतिहासविचारोविद्वद्रोचरीभूय परमा चित्तचमकृतिमावहति स्म, ततः श्रीम-  
महाराज्ञीतनयप्रचरितकीर्तिकल्यानिनिर्वाहितापूर्वदर्शनम तातकौतुकानिर्गन्तुपा मान-  
सेननाशमप्राप्य काव्यन्यायेन प्रकाममानोनिमित्तानमन सप्रानानन्दयाचकार ।  
तृतीयमागे च तस्या विधिपरिश्रमहर मरुल्लगमनोनुरजनकरोपायनादनप्रचार-  
स्तामलचकार ।

इत्थं च ममामर्णं परमप्रमत्प्रदायी य कतिपयकारकलाकदम्बो व्यन्यत्तस-  
वनीनि पण्डितरूपरिक्वदिवतकाव्यमुगार्सोकीटय तज्जालि श्री ६ युतमहाराज्ञी-  
कुमारचरणारविन्दयो ममर्पयितुमु महने ।

श्रीरिश्वाद्रगुप्तः



## श्रीपण्डितबापूदेवशास्त्री ।

नित्य पूर्णकला कलङ्करहिता तुल्य दयोत्थामृत  
 वर्षन्त्यङ्गलभारतात्मजनयो शुक्लाययो पक्षयोः ।  
 स्पृष्टा नैव कदाप्यरातितमसेत्याचैरनल्पैर्गुणै  
 देवी चन्द्रमसं प्रकाममधरोक्त्य स्वय राजते ॥ १ ॥  
 परमेश्वरेण सृष्ट सकलद्वीपग्रहौघकेन्द्रे य ।  
 अङ्गलदेशस्तदधिष्ठातृत्वाच्च स्वयप्रकाशत्वात् ॥ २ ॥  
 बहुलप्रतापवत्त्वात् सकलभुवनजीवनप्रदातृत्वात् ।  
 सूर्यसमापि विजयिनी जनसताप पर हरति ॥ ३ ॥  
 तस्यास्तनूजो युवराज एङ्गिम्बरोपुरङ्कूक इति प्रसिद्धः ।  
 प्रशान्तिदान्तत्वगुणैरपेत शौर्यादिभिश्चाखिललोकमान्यै ॥ ४ ॥  
 सप्राप्य विश्वेशपुरीमिदानीमल जन तर्पयति स्म धन्यः ।  
 ईशप्रसादाच्चिरजीवितां स प्राप्नोतु नित्य च जयाभिनृद्धिम् ॥ ५ ॥

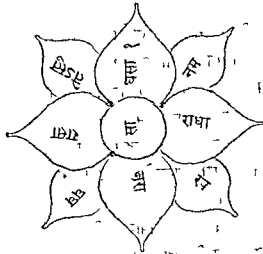
## श्रीपण्डितराजारामशास्त्री ।

श्रीमत्सर्वनियन्तुर्नियमनशक्तिर्ध्रुव नृमूर्तिधरा ।  
 श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीमद्विजयिनिदेवीस्वरूपेण ॥ १ ॥  
 सैत्र च लीलावशतो बहुधात्मान विधाय त्रिबुदिव ।  
 सऋलधरातल्लोक प्रशासत्यमुक्त्वा स्वक धिष्ण्यम् ॥ २ ॥  
 श्रीपालिभेष्टनामा ससत्सद्वृन्दमण्डिता जयति ।  
 निष्पक्षपातसारा गुरुत्वकेन्द्रे यतो भवति ॥ ३ ॥  
 श्रीमद्विजयिनीदेवीदयोदधिसमुद्भवे ।  
 दोषशून्योदिते चन्द्रे दोषाशून्योदितो वृधा ॥ ४ ॥  
 रसायनादिविद्याभिर्विद्युद्यन्त्रादिकर्मभि ।  
 शौर्यधैर्यादिभिर्युक्ता गुणैरप्ययजातय ॥ ५ ॥  
 तथार्पीग्लण्डदेशीये सहजा या दयालुता ।  
 सस्पर्शो ऽप्यन्यदेश्याना न तथा सह जायते ॥ ६ ॥  
 प्रभुवर निजकोशादातुमीहाऽपि नो चेत् ।  
 सकलविधधनाना वार्निधेर्ना निधेर्वा ।

शृणु वचनमत्रापि त्वत्पदाब्जे नत सञ्ज ॥  
 झपयति जगदेतत् तत्कुर द्राक् प्रिय न ॥ ७ ॥  
 भारतरपीयाणामायुष चादाय दण्डमेकैकम् ॥  
 कुर चिरजीवितयुक्तामत्रर्षा विजयिनीं ससुताम् ॥ ८ ॥

श्रीपण्डितवेचनराम ।

श्रीमन् राक्षीतनय कनयो ह्यक्रसाहेवर्य  
 प्रोचुक्षु कगलमिा यत् तन्न दृष्ट मयासीत् ॥  
 देवादय त्वयि नयनयोगोचरे जातमात्रे  
 प्रेमानन्दानलिविक्रमितैरस्ति सप्तस्य साक्षात् ॥ १ ॥  
 नृपतिततिनुताविक्रमताप प्रथितगुणाग्य महामहद्विशालिन् ।  
 जयजय मनुजेश्वरीतनुज स्वयमलोक्य वय कृता कृतार्थाः ॥ २ ॥  
 साधसा नमधारासा साराधा रज्जु जमा  
 सांजरौ घघमारासा सारासा तेस्तु माघसा



श्रीपण्डितवस्तीरामधर्मा ।

श्रीशम्भोराजप्रानी सुरपतिनिःश्रयत्यातकीर्ति समोगा  
 च्छीराश्या वर्षपुत्र सकलरिपुजयी सर्वलोकानुरागी ॥  
 रक्षादक्षः प्रजाना शरणदशरण शोभिता येन काशी ॥  
 सोय सेव्य समस्तेः सकलगुणयुतो मोदता दीर्घकालम् ॥ १ ॥

## श्रीबालशास्त्री ।

|  |       |
|--|-------|
| विद्वीदार्यदयोद्रेकैर्भास्वती काप्यधीश्वरी | ।     |
| श्रीमद्विजयिनी देवी भृश निजयतेतराम्        | ॥ १ ॥ |
| तस्याः समस्तसामन्तचूडामणिमरीचिभिः          | ।     |
| समुल्लसत्सर्वभौमसाम्राज्यपदवीजुष           | ॥ २ ॥ |
| अथ तनुजनु श्रीमान् शान्तिदान्तिदयादिभिः    | ।     |
| राजमानो गुणराणैर्महारजोधिधिष्ठिति          | ॥ ३ ॥ |
| काशीस्थनिवासदनमिदं सभूपयन्निन              | ।     |
| लोकोत्तरामनिर्वाच्या वर्षतीव परा मुदम्     | ॥ ४ ॥ |

## अतः किं बहूना ।

|  |       |
|--|-------|
| राजन्सप्रति समद विभ्रमहे भूयो भवदर्शनात्         |       |
| लब्धार्थाः किल वीक्ष्य सुन्दरसुधागर चकोरा इव     | ।     |
| सानन्द पुनरेकमेव विनयैविज्ञापयामो वय             |       |
| स्वीये । हृत्कमले स्थल स्थिरतर दातु प्रसीदादरात् | ॥ ५ ॥ |

## श्रीगीबिन्दुदेवशास्त्री ।

|  |       |
|--|-------|
| सार्धभौमपदवीमधिरूढा सन्तत विभुधरञ्जनचित्ता                 | ।     |
| राजनीतिगुणनद्धनरेशा श्रामती जयति काप्यधिदेवी               | ॥ १ ॥ |
| तस्यास्तनूर्जोऽयमुदारचेत्ता मातु प्रजा स्वीयद्वगन्तपाते    | ।     |
| कुर्वन् सनाथामिहकाशिपुर्याप्राप्तोऽस्मदीयैर्गुरपुण्यपुञ्जै | ॥ २ ॥ |
| त हृष्टा वयमानन्दनिमग्नाः प्रार्थयामहे                     | ।     |
| सर्वेश्वरस्तदीयायु कुर्यात्पूर्णं शत समाः                  | ॥ ३ ॥ |

## श्रीवशिष्ठतथीतक्षप्रसाद ।

|   |       |
|---|-------|
| अत्रनिपतिकिरीटकोटिचञ्चत्प्रपदनरव्रजदेवताङ्गजमन्त्रः | ।     |
| सकुशलमिहतात्रनः प्रवेशः समजनियत्तद्रहोमहर्षयेन      | ॥ १ ॥ |
| पुरा मूर्ति यस्या नृपनुतपदाया शुभतरा                | ।     |
| दृदि स्मारम्मार वयमतुलतोपैरानिलगाः                  | ।     |



भजन्त श्रीमन्त सुतमहह तस्या विधिवशा-

दिदानीमालोक्य स्थिरतरमुद स्मः सुनियते ॥ २ ॥

श्रीश्रेणिश्रित यत् प्रभूतमाभितो दुर्भिक्षमासीदहो

युष्मत्तासभरादरातिरिव तन्मग्न पयोधाविव ।

आकर्ण्यार्गमन शुभैकसदन लोकोऽप्यसौ तावक

शर्मागाद्यदिद तदद्य कुशल को वर्णयेद्भूतले ॥ ३ ॥

ईहामहे वयमिहानिशमेव भव्या यात्रा भवेत् तव भृश विगतान्तराया ।

तस्या समस्तमनुजेश्वरसोविताया भक्तिश्च नोऽत्रभवतैव निवेदनीया ॥ ४ ॥

त्रिभुवनपतिरेको योऽस्ति सर्वैरुशास्ता शरणगजनरक्षाकर्मदक्ष कृपाब्धिः ।

विलसतु सतत नस्तत्र सुप्रार्थनैपा विगतारिपु तदीय स्याच्चिरस्थायि राज्यम् ॥ ५ ॥

श्रीताराचरणतर्करत्न ।

अज्ञाने गतिदायिनी विपदि या सन्त्रासाविष्यसिनी

विद्याया विनियोजिनी शुभगये ऋडे चिर शायिनी ।

क्षुत्याते प्रतिपालिनी प्रभवति ह्येते स्वय दु खिनी

सतोपे सुखिनी श्रिया विजयिनी साम्बा सुतान् रक्षतु ॥ १ ॥

सम्राट्सुताद्य भवदीक्षणजाततोपस्तादृक् समाश्रयति नो हृदयान्तरालम् ।

यादृग् विलोचनविधौ ककुभोऽवकाश स्वच्छाम्बरे शरादि पूर्णशशिप्रकाश ॥२॥

सौभाग्यसारपरिचुम्बिततोपराशिर्यादृग्विलोकनभवो भवतो ऽधुना नः ।

लब्धो न म क्वचन भारतभूमिमध्ये सम्पत्तिपूर्त्तमयता शतजीविना ऽपि ॥३॥

तेजस्त्रिभिर्बहुतरैरभिकाशयद्भि पूर्णा ऽपि भारतधरा न तथा रराज ।

चन्द्रेण हीनरजनीव बुधादिपूर्णा सैपा ऽधुना हसति पूर्णविधुर्गशेव ॥ ४ ॥

तथैव पश्यतु श्रीमान्

प्रसन्नचित्ता स्मितपूर्णवक्त्रा जनास्समस्ता स्तन दर्शनेन

कुर्वन्ति केचित्कुशलस्य चिन्ह शसन्ति केचिद्यशस प्रशस्तिम् ।

पश्यन्ति केचिद्भवदास्यशोभां शृण्वन्ति केचिन्मुराक्षराणि

आयाति केचिद्भवदीक्षणाय मुह्यति केचित्सुगिनोऽनिमेया ॥ ५ ॥

मञ्जन्ति पार्श्वे परिपूर्णकुम्भा राजन्ति मार्गे परितः पताका,  
 नृत्यन्ति योषा कृतवेशभूषा गायन्ति तादृङ् मधुरस्वरेण ।  
 दीप्यन्ति वीथीयुतदीपमाला स्मफूर्जन्ति माला निलयोपकण्ठे  
 वर्मन्ति शोभाभिः गेहवत्याः रर्षन्ति हर्षान् मरुला क्षणाश्च ॥ ६ ॥

अतएव ।

कामनाथप्रभो पार्श्वे प्रातिना भाति यद्विधा ।  
 शीलव्रतहता भूयात्तद्विधा हरिविक्रम ॥ ७ ॥

श्रीगगाधरशास्त्री ।

श्रायणी वसुधामयीः प्रभवप्रवीण्यशात्युञ्जला  
 लालानिग्रहधारिणाम् करुणा लवण्यलक्ष्मीरिव ।  
 सामतक्षितिपालमौलिसुमनोमाल्यस्फुरच्छासना  
 श्रोसाम्राज्यपदेश्वरा विजयिनी देवी वरानृदयते ॥ १ ॥  
 वलयाकृतभूवल्या वत्सपदीभूतवाङ्मिस्तारा ।  
 वीरधारिणः प्रिमला विलसति भुवि विजयिनी देवी ॥ २ ॥  
 सा ऽसूत कुमारराविं कुशल्यमुहसति यदुदये चित्रम् ।  
 प्रसरति कातज्ज्योत्स्ना राजाभ्युदयो विराजते जगति ॥ ३ ॥  
 यत्तेजस्तपनो ऽरिजन्मसदन गत्याश्रयाच्यावय-  
 स्तानासाय धनास्पद निजवलेनाहृत्य सर्गं वसु ।  
 भूयस्तनृपाविक्रमक्षयवशात्सौभ्योऽपि जातो गुरु-  
 श्वन्द्रे ऽमन्दवपुश्च लोहिततनु काव्योज्ज्वलो भूतले ॥ ४ ॥  
 विश्वोहृद्घनजाङ्घिकैरभिनवैः कीर्तिप्रतापोद्गमैः  
 शोभाशोभनरीः विजित्य शिशुता शेषोप्यशेषक्रिय ।  
 विश्वालोकनकीतुकी विजयिनीवीरप्रसूतिप्रभु-  
 विद्वन्मानसहसतामुपगतो विद्योतते ऽद्यावन्तौ ॥ ५ ॥  
 श्रीमन्मध्यमलोकभाग्यनिवहैः साम्राज्यलक्ष्मी वहन्  
 योगनात्मजदृशीमाहितरतिभूयोपि ता वर्द्धयन् ।  
 क्षोणामेकपुरीमिनेव कल्पन्पाथोऽपिकाञ्चीं कृती  
 कार्शीभूषणभारतीयसदस प्राप्त्या स्वया ऽभूषयत् ॥ ६ ॥

नाल्लोकेन महस्त्रगीतमहसा पांयूप्रधाराशत-  
स्त्रानैर्ना घनमारपूरनिविडैरक्ष्णोश्शालाकाञ्जने ।

नो वा कैश्चिदमन्दचन्दनरसैरानन्दमेतादृश

विन्दामो वयमथ यादृगुदभूच्छ्रीमत्प्रभोर्दर्शनात् ॥ ७ ॥

एतावदेव । सततस्पृहणीयमास्ते नाथे समस्तजगता परमेश्वरेऽपि ।

मा भूदमुष्य च सुखानुभवास्य भङ्गो यावज्जनुर्भजतु तत्प्रतिपक्षिणा स ॥८॥

### श्वोरमापतिदूबे ।

यस्ताक्ष्यो विनतानुमोदनविधौ मद्राहिनीप्रलभ

पारावार इनाधरीकृतसमस्तारातिर्कात्तिव्रज ।

आरूपारविहारिभूपतिशिरोरत्नालिनाराजन-

प्रोदञ्चत्पदपंकजो विजयता श्रीङ्गुक्विविष्य प्रभु ॥ १ ॥

श्रीमडङ्गुक्वनेन्द्रवीक्षणवलम्बोदामृतम्प्राणिभिः

प्राप्त केवल मित्युपाशु कत्रयो जल्पन्ति वलान्तिते ।

यकाशोनगरीस्थितासिलगृहश्रेणाभिरेणोदृशां

वाग्व्याजेन च सत्कृतो नरपति सम्पूर्णकुम्भादिभि ॥ २ ॥

श्रीङ्गुक्व एवप्रतापामलशिरिनिचयो ऽयादकूपारपार

प्राप्याशापासपास्य स्वगतवलभरात्तजनीरज्जिगाय ।

ता पातिव्रत्यभाजो ऽपगतवलतया त्वा स्वसिदूरपूरा-

नारत्ताकाशदम्भादनुदिनमुपामि प्रार्थयत्यो रसति ॥ ३ ॥

सजानो ऽनुगता जगद्विजोयिर्नामूनुम्भन्तनृप

वीर्यारमनापुरिष्टमाधिकाताराधिनायो यथा ।

पर्ण पोटशभि कलाभिर्दितो दृशा चतुर्त्राधिक

काश्यामगमितस्त्वदीयटपया पांचम्पुन प्राप्तवान् ॥ ४ ॥

### श्रीवृन्दिहगास्त्री ।

श्रामागामेनुशाताचलनिलयमरीपालश्रोटीरकोटि-

प्रोगमाणिभ्यगोचिर्त्तिलपद्राग्गोकचद्रप्रकाश ।

शिश्रणाणात्तर्त्तक्षायिमभिनभिर्यां शिरमतास्त

गिन्यात्रैशद्यमीमा जगति विजयते शौर्यमार कुमार ॥ १ ॥  
 स्फूर्जर्जदूर्जर्जतिभाल्लोचनमहात्र हेर्विजर्तो ऽत्रा  
 पिण्ठीभूतसमस्तत्राडवशिखाशोचि ममूहो ऽपि त्र  
 भूभृत्पक्षत्रिदारणोद्यदशत्रिजालाकलापो ऽयमि-  
 त्यास्ते त्रस्तविहस्तत्रैरिहृदये यस्य प्रतापो युधि ॥ २ ॥  
 नीरक्षीरात्रिवेकवित्तविहृगश्रेणीजिगीयात्रशात्  
 सारामारात्रिवेचनातिनिपुणो यो राजहमोऽजनि ।  
 विद्वन्मानसनित्यत्रासरसिको विश्वातिशायित्युति-  
 विश्वास किल मूर्त्तिमांश्च विनतक्षोणीभृता विश्वराट् ॥ ३ ॥  
 यत्सातिरर्पजनितामर्क्रीत्तिमुक्ता सामवन्तशेखरनिवर्षणतो ऽतिशुद्धा  
 दिक्वामिनीकुचतटीषु भवन्ति हाराकारा कनान्द्रकवितागुणगुम्फिताश्च ॥४॥  
 सत्यास्मिन्सकलास्त्रधारिणे वृथा धत्ते कुमारोहमि-  
 त्यास्या वक्तृकादम्बवैकृतधरस्कन्दो महासेनता ।  
 सापि द्वेषिचमूचमूरपटलीपञ्चाननस्यास्यया  
 सेनासज्जत्रिकोशखङ्गनिकरा तस्या पुरो निम्प्रभा ॥ ५ ॥  
 धन्या हि सा विजयिनीदेवी यैनन्विजोदरे ऽत्रत्त ।  
 प्राचीव सकलभूभरत्रहनपुरीणन्तमभ्रमातङ्गम् ॥ ६ ॥  
 विश्वम्भरा सपत्नी रमेत्र मा जगति कन्यका धया ।  
 निजितकमलङ्करतलमस्याधत्ते गुणाव्धिजाता या ॥ ७ ॥  
 अक्षणोरासेचनक सुधाकरस्येव यस्य वीक्ष्य वपु ।  
 सत्काविककोरनिकरस्तृप्तोऽपि न तृप्तिमाययौ उचमि ॥ ८ ॥  
 निरर्गलविनिर्गलनिखिलतन्त्रसैद्धान्तिका  
 वचस्तुगुरवोनुधा सदमि यस्य काव्याधिका ।  
 नटीररुपटीतटी मयुरिमापुरीणा सुधा  
 तथा किमु सुधर्मया यदि सभास्य भूभृन्मणेः ॥ ९ ॥  
 नवरत्नमालिकेय नत्रतरणिमसम्पदः कुमारस्य ।  
 प्रीतिं जनयतु परमा न च प्रजाम्यः प्रमीदतु धीमान् ॥ १० ॥

श्रीदुष्टिराजपत्न ।

दर्शदर्श यदीय मुखकमलमहो तुल्यतामासुक्ताम-  
श्वद्रः सगृह्य तेज सवितुरनुदिन मथर वर्द्धमानः ।  
पूर्णाया तादृशाभोऽभवमिति मुदितो ऽभ्येत्य खे नाप शोभा  
क्षीणःक्षीणो बभूव प्रतिकुहु जयति प्राज्ञराश्या स सूनु ॥ १ ॥

यात्रावर्षणम् ।

सम्राट्सुनुप्रलाहके दिशिदिशि प्रारब्धपुण्योन्नतो  
युक्ते प्रोद्यतशस्त्रराजितडिता यात्रामृत वर्षति ।  
स्फीता नेत्रतरङ्गिणी समभवत्तृप्ता पुरग्रामभू  
पूर्णं चार्धिसरः शशाम धरणादुभिक्षदावानल ॥ २ ॥

श्रीविश्वनाथशास्त्री ।

उत्साहप्रभुमन्त्रशक्तिकरणाशीर्य्यादयो ये वरा  
भामन्ते जगतीतले गुणगणास्त्रैलोक्यसौरयप्रदा ।  
ते भ्लाकसुखेच्छया विजयिनीत्यारयासमालङ्कृता  
दधुः श्रेष्ठनृपालसोपेततनु भाग्योदयान्मानुजात् ॥ १ ॥

यद्गात्रयाष्टिमहसा सह योद्धुकामा या केनकी सुमशिखा मनमा चकार ।  
वृत्ति तदैव विजितास्मि तथेति चित्ते लज्जापशेन कृशताकृशनामत्राप ॥ २ ॥  
तस्याः सुतो विजयिनीति सुनामभाजो यः सार्वभौमपदनीममलङ्कृतायाः ।  
प्रल्हादनाद्वृणगणैर्मनसः प्रजानां चद्रे चकार स निरत्सुकता दयालुः ॥ ३ ॥

श्रीविनायकशास्त्री ।

यत्कीर्त्यर्णनसङ्गते सुरनख्याहारगङ्गाम्भसि  
स्नातु वाञ्छति लाञ्छनाऽपहृतये लोके कलाना निधिः ।  
सा देवी सक्कलाग्रणीविजयिनी तस्याः सुत स्वासुत  
प्रीत्या ऽऽधिक्ययुतस्तता निजगुणैर्य प्राप सद्दयूकताम् ॥ १ ॥  
सो ऽय राजसुतो विलोक्य इद वर्षे तत भारत  
दृष्टेन निनिधाय लोक्तमग्विठ पश्यन् ययी काशिकाम् ।

त प्रत्यत्रनिवासिनो बुधजना विज्ञापयन्त्यादरात्  
 ता वाचः प्रसरतु कर्णपदवीं श्रीमत्प्रभोर्निर्मलाः ॥ २ ॥  
 श्रीपाठशाला गगन खगा वय विद्याधिपस्य खलु तारकागणः ।  
 कालनिधिं प्राप्यभयतमत्र सुख लभते पुरवासिनो जनाः ॥ ३ ॥  
 खद्योतराजः सकलापदां गणो द्युतिं निजां न प्रकृष्टाकरोति ।  
 तथारिपुच्छीपु विवर्द्धमान पत्नी प्रशान्ते विरहश्चकास्ति ॥ ४ ॥  
 विवासासमाना कवित्तानलिन्यपि श्रीमत्करोरास्यसर प्रसूता ।  
 अणुप्रमाण वचन प्रभूततामस्माकभिल्येतु भवत्प्रमादात् ॥ ५ ॥

श्रीरामकृष्णशास्त्री ।

पाप्येकानेरुदेशे तडिदिन नितरा राजमानानुकम्पा-  
 सद्द्विधाशौर्यशातिप्रभृतिगुणगणे पालयतोह लोकान् ।  
 श्रीदेवो राजराज्ञो जयति विजयिना तत्सुत सार्वभौम  
 पूर्वाशा पूरयन् यो रात्रिर्व महसा दूरयन् दुर्गद्वन न ॥ १ ॥  
 सद्द्विधापाठमेतन्नतनृपातिजनो भूपयन्मन्त्रभात्रे-  
 लोकेविज्ञाप्यतेय ऋदिनमिह यत्पठ्यतेपाठ्यते तत् ।  
 सत्र ज्ञान्या यथान्तर्लनियमप्रशतो दीयता स्थानमुच्च  
 यच्चैव पाठनाय प्रभवति मतत तन्मनो न प्रसादात् ॥ २ ॥

श्रीनारायणकवि ।

दोहा ।

त्रिमल बनारस में भई, सरम सफाई साज ।  
 बादशाह के कुवर थी, सुनी अवाई आज ॥ १ ॥

कवित्त ।

सगत उनीम सै अनूप तिथि पूरनिमा लगन ललित वार चद्र मुभ मानिके ।  
 लडन निगासा महारानी के कुवर अत्र आइगे बनारस मुलुक सब आनि के ॥  
 गगतें इतरि चटि गजपै नरायनजू लेत चले सुदर सलाम जिय जानि के ।  
 पाठे काशिराज भूप विजयनगर सोहें जटित जवाहिर धराय खान खान के ॥२॥

घर घर तोग्ग पनाक हे नरायनज कलम त्रिचित्र टिंग दीप दमकत हैं ।  
 रतन अमोल मजु मालिक त्रिचित्र जात भात भात वामओ मुयाम गमकत हैं ॥  
 मोतिन की झालर में झूमका झूमत झप जरी त्रादलान के चदोरा चमकत हैं ।  
 आसन अनूप शाहजादे को बनारम में संगलगे अजय अमीर झमकत है ॥३॥  
 बना रम आज देपि परत बनारम में तार नारिनीकी लगी लपति किरारा तें ।  
 कसि कुच कचुकी त्रिराजति अटारिन पै अतर निकारि जग लगति निवारी ते ॥  
 कोऊ झूमि झाकाति झरोखा तें नरायनज कोऊ टाढ बदति बिचित्रता तिनारी तें ।  
 थारी वैमथारी शाहजादे की अयाई सुनि दूनी दिव्य दीपति वढावत दिनारी तें ॥४॥  
 जाकी तेग तकत जकत जैतवार सवै सुदर सुगद साहिजादा सुमसान में ।  
 लडन निजासी महारानी को सपूत पृत त्रिकम अमूत करतूत भो पहान में ॥  
 गाहिर जवर जगजारो लै जहाजी फौज भौज मान मजुल नरायन प्रमान में ।  
 सुजस वढावत कपावत दुवन रुम फूम सो उडावत सु आयो हिंदुवान में ॥ ९ ॥

श्रीहनुमानकवि ।

कावित्त ।

जासों जोर जग जुर्गे जाहिर जे जोमदार तेऊ वैरी वृद कहू वचत न भागेतें ।  
 दिन दिन दूनो दूनो वादत प्रताप जाको मातुपद परूज मे पूरी प्रीति पागेतें ॥  
 लदनतें सुनिके अयाई साहजादा जूकी कहै हनुमान हिये अति अनुगगेतें ।  
 आनद अमेस लीरें नजर सुनेम दीने मिलें देम देस के नरेस आय आगतें ॥१॥

श्रीहरिश्चन्द्रकृत ।

कावित्त ।

काशामे ग्रहणके दिन महाराजकुमार के आने के हेतु ।

वाको जम जल याको रानीकूख सागरतें उह तो कलगी यामें छींट हू न जाई है ।  
 वह नित घटै यह बाढै दिनदिन वह त्रिरही दुखद यह जग सुख दाई है ।  
 जानि अधिकारि सब भाति राजपुत्रही में गहन के मिस यह मति उपजाई है ॥  
 दोखि आजु उदित प्रकाममान भमिचद नभ सभि लाजि मुख कालिमा लगाई है ॥

हरिश्चन्द्र कृत ग्रन्थों का नाम दास, जो विकरी  
के लिये तैयार हैं ।

|                               |     |     |     |     |       |
|-------------------------------|-----|-----|-----|-----|-------|
| १ । नाटक                      | ... | ..  | ... | ... | १७    |
| २ । सत्यहरिश्चन्द्र           | ... | ... | ... | ... | १७    |
| ३ । सुदाराघस                  | ..  | .   | ... | ..  | ( ७ ) |
| ४ । हिंदी भाषा                | ... | ..  | ..  | ..  | ७     |
| ५ । कपूरमजरी                  | ... | ... | ..  | ..  | ७     |
| ६ । चद्रावली                  | ... | ... | ... | ... | ७     |
| ७ । विद्यासुंदर               | ..  | ... | ... | ... | ( ७ ) |
| ८ । भारत जननी                 | ... | ... | ..  | ..  | ७     |
| ९ । भारत दुर्दशा              | ..  | ... | ... | ... | ( ७ ) |
| १० । नीलदेवी                  | ... | ... | ... | ... | ७     |
| ११ । माधुरी                   | ... | ..  | ..  | ..  | ७     |
| १२ । पाखंडविडम्बन             | ... | ... | ... | ... | ७     |
| १३ । धीरनगरी                  | ..  | ... | ... | ... | ७     |
| १४ । दुर्लभ वस्तु             | .   | ..  | ... | ... | ७     |
| १५ । भाष                      | ... | ... | ... | ... | ७     |
| १६ । धनजय विजय                | ... | .   | ... | ... | ७     |
| १७ । सतीप्रताप                | ..  | .   | ..  | ..  | ७     |
| १८ । प्रेमयोगिनी              | ..  | ... | ..  | ..  | ७     |
| १९ । काश्मीरकुसुम             | ..  | ... | ... | ... | ७     |
| २० । मधाराष्ट्र देश का इतिहास | ... |     | ... | ... | ७     |
| २१ । यदोत्तमपद                | ... | ... | ... | ... | ७     |
| २२ । रामायण का समय            | .   |     | ... | ... | ७     |
| २३ । पगरवाली की उत्पत्ति      | ..  | ..  | ..  | ..  | ७     |
| २४ । पत्रियों की उत्पत्ति     | ... | ... | ... | ... | ७     |
| २५ । उदयपुरोदय                | ... | .   | ..  | ..  | ७     |
| २६ । शदगाहदपेप                | ..  | ... | ... | ... | ७     |
| २७ । पुरातन संघ               | ... | ... | ... | ... | ७     |



|     |  |     |     |   |
|-----|--|-----|-----|---|
| २८। | कार्तिक, नैमित्तिक कर्म                                  | ..  | ... | ७ |
| २९। | युगल सर्वस्व   | .   | ... | ७ |
| ३०। | भक्त सर्वस्व   | .   | ... | ७ |
| ३१। | विजयनी विजय बैजयती                                       |     | ..  | ७ |
| ३२। | मनोसुकुलमाना   | .   | ... | ७ |
| ३३। | गोमहिमा  | "   | .   | ७ |
| ३४। | रघुवरसात   | ... | .   | ७ |
| ३५। | प्रेमानुवर्षण  | "   | .   | ७ |
| ४७। | पुरपोत्तम मासबिधान                                       |     | ..  | ७ |
| २६। | मनारजयन्ती कजली, संघ                                     | .   |     | ७ |
| ३७। | वर्षाविनोद   | ... | ... | ७ |
| ३८। | चरितावली   | ... | ..  | ७ |
| ३९। | भक्तमान  | ... | ... | ७ |
| ४०। | हिन्दी व्याकरण   | ..  | .   | ७ |
| ४१। | वैष्णव स्तोत्र   | "   |     | ७ |
| ४२। | तदीय सर्वस्व   | .   | .   | ७ |
| ४३। | वैष्णवता और भारतवर्ष                                     |     | ..  | ७ |
| ४४। | संगीतसार   | .   |     | ७ |
| ४५। | प्रेमप्रनाथ  |     | .   | ७ |
| ४६। | प्रेमफुलधारी   | .   |     | ७ |
| ४८। | सलारवाली   |     | "   | ७ |
| ४९। | मगसोपायन   | ..  | ..  | ७ |
| ५०। | श्रीवत्सभीय सर्वस्व                                      |     |     | ७ |
| ५१। | वैष्णव सर्वस्व   |     |     | ७ |
| ५२। | उत्सवावली  |     |     | ७ |
| ५३। | भक्तिमूत्र वैजयन्ती अर्थात् शांडिल्य मूत्र का भाषा भाष्य |     |     | ७ |
| ५४। | कोशलेस कवितावली  |     |     | ७ |
| ५५। | कविहृदय सुधाकर   |     |     | ७ |
| ५६। | सुजान शतक  | .   |     | ७ |

# जातीयसंगीत ।

( हिन्दी भाषा में )

( १ )

प्रभु रच्छहु दयाल महरानी,  
बहु दिन जिऐ प्रजा सुखदानी;  
हे प्रभु रच्छहु श्रीमहरानी-  
सब दिसि मे तिनकी जय होई,  
रहे प्रसन्न सकल भय खोई,  
राज करै बहु दिन लौं सोई,  
हे प्रभु रच्छहु श्रीमहरानी-

( २ )

उठहु उठहु प्रभु त्रिभुवनराई !  
तिन के अरिन देहु अकुलाई,  
रन महँ तिनहि गिरावहु मारी-  
सब दुख दारिद दूर वहाओ,  
विद्या और कला फैलाओ,  
हमरे घर महं शांति वसाओ,  
देहु असीस हमै सुखकारी-

( ३ )

प्रभु निज अर्नगने सुभग असीसा,  
 वरसहु सदा-विजयिनी सीसा,  
 देहु निरुजता जस अधिकारा-  
 कृषक, राजसुत, कै अधिकारी,  
 कराहि-राज को संभ्रम-भारी;  
 निकट दूर, के सब नर-नारी,  
 कराहि-नाम आदर-विस्तारा

( ४ )

रच्छहु निज भुज तर-सहसाजा,  
 सब समर्थ राजन-के रोजा,  
 अलखराज कर सब बल खानी !  
 विनय सुनहु विनवत सब कोई,  
 पूरव सो-पच्छिम लौं-जोई,  
 राज-भक्त गन इक मन होई,  
 हे प्रभु-रच्छहु, श्री-महरानी --

( युद्ध के समय-योधागण के गाने को )

उठहु उठहु प्रभु-त्रिभुअनराई-  
 तिनके-शत्रु देहु छितराई-  
 रन महें-तिनहि-गिरावहु मारी-

स्वामिनि स्वत्व हेतु जे वीरा,  
 लड़हिं हरहु तिनकी सब पीरा,  
 यह विनवत हम तुव पद तीरा,  
 हे प्रभु जग स्वामी सुखकारी-

( अकाल और उपद्रव के समय गाने को )

उठहु उठहु प्रभु ! त्रिभुवनराई !  
 कठिन काल मे होहु सहाई,  
 देहु हमहि अवलम्बन भारी-  
 अभय हाथ मम सीस फिराओ,  
 मुरझी भुव पर सुख वरसाओ,  
 पिता विपत्ति सों हमहिं बचाओ,  
 आइ सरन तुव रहे पुकारी-

(सन १८७१ में श्रीमान् प्रिन्स आफ वेल्स की पीडित  
हीने पर कविता ।)

जय जय जगदाधार प्रभु, अगव्यापक जगदीश ।  
 जय जय प्रणतारति हरन, जय महस्र पद भीम ॥  
 कारुणा वरुनालय जयति, जय जय परम कृपाक्त ।  
 मुष मच्चिदानन्द घन, जय कालहु के काल ॥  
 सब समय जय जयति प्रभु, पूण श्रद्ध भगवान ।  
 जयति दया मय दीन प्रिय, घमा मिश्रु जन चान ॥  
 हम हैं भारत की प्रजा, सब विधि हीन मलीन ।  
 तुम सौ यह विनती करत, दया करहु लखि दीन ॥  
 हाथ जोरि मिर नाइ के, दात गरे लन राखि ।  
 परम मस्त्र है काइत के, दीन बचन प्रति भाखि ॥  
 तिनवत हाथ उठाइ कै, टोऊ श्री भगवान ।  
 लुषराजहि गत रुज करौ, देहु अभय को दान ॥  
 तिन क दुख सौ मव दुखी, नर गारिन के हृद ।  
 मामा तुरतहि, रोग हरि, तिन कह करहु अमन्द ॥  
 जिग की माता सब प्रजा, गन की जीवन प्राण ।  
 तिनहि निरोगी कीजिये, यह विनवत भगवान ॥  
 वेग मुनै हम जान सौ, प्रिन्स भए आनन्द ।  
 परम दीन है जोरि कर, यह विनवत हरिचन्द ॥





